CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी

संवत् २०५८ : २३ नवम्बर, २००१

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज मैं गाइ चरावन जैहों।
वृन्दावन के भाँति-भाँति फल अपने कर मैं खैहों॥
ऐसी बात कहौ जनि बारे, देखौ अपनी भाँति।
तनक-तनक पग चलिहौं कैसे, आवत ह्वै है राति॥
प्रातः जात गैया लै चारन, घर आवत हैं साँझ।
तुम्हरो कसल-बदन कुम्हिलैहै, रेंगत घामहिं माँझ॥
तेरी सौं मोहिं घाम न लागत, भूख नहीं कछु नेक।
'सूरदास' प्रभू कह्यौ न मानत, पर्यौ अपनी टेक॥

—सूरदास

R.D. Kothari & Co.

Largest Ultra Modern Electronics Showroom

SONY, L.G., BPL, VIDEOCON, IFB, GODREJ, AIWA, HITACHI, PANASONIC, SYNPHONY, CITIZEN, PHILIPS, WHIRLPOOL, BAJAJ, INALSA, SUNFLAME, LIFETIME, BRAUN, MEDIA, USHA, KHAITAN, CINNI, SINGER, SOFTEL, EUREKA FORBS, CLEARLINE, TATA PHONE, BEETAL, ORPET, SUMEET, TITAN, TIMEX, MAXIMA, IFB DISHWASHAR, MOULINEX, NATIONAL
AND
OTHER ELECTRICAL HOME APPLIANCES.

Near Radio Station, Mahmoorganj, VARANASI
Phone : 223037, 223042

Branch
Hathua Market, VARANASI • Phone : 357285

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला

प्रधान कार्यालय
के० ४०/२५, दुलहिनजी रोड, गोलघर, वाराणसी-२२१ ००१

शाखाएँ

सदर (गोलघर)	फोन : ३३३४१३
गोकुल (बावनबीघा)	फोन : ५८५६०३
सारंग	
रामेश्वर	फोन : ६२४२६६
मधुबन	फोन : ६२४३६८
वृन्दावन	
पाँचो शिवाला	फोन : ६२४२६७

११५वाँ वार्षिक कार्य-विवरण

संवत् २०५७-५८

गोपाष्टमी, संवत् २०५८

शुक्रवार, २३ नवम्बर, सन् २००१ ई०

सम्पादक
परागकुमार मोदी
सत्यनारायण झुनझुनवाला
सूर्यकान्त जालान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय-सूची

		पृष्ठ
१. गोशाला संचालन समिति		३
२. संदेश	डॉ० नरेन्द्रकुमार गौर	७
३. विनम्र निवेदन	श्री राकेशकुमार रस्तोगी	९
४. मंत्री का प्रतिवेदन	श्री सूर्यकान्त जालान	१०
५. गाय, गोशाला एवं ग्राम विकास	श्री आनन्दस्वरूप अग्रवाल	११
६. वन्दे धेनु मातरम्	श्री शरदकुमार साधक	१२
७. श्रद्धांजलि		१३
८. जीवन के दो आधार : पशु और वृक्ष	श्री सुंदरलाल बहुगुणा	१४
९. गोवंश हत्याबंदी का सही नुस्खा	स्वामी मुक्तानंद सरस्वती	१५
१०. कृषि के गोवंश पर आधारित पंच संस्कार	श्री हुकुमचन्द्र भारतीय	१७
११. गो संवर्द्धन में रत सेवाव्रती	पांचजन्य से	२०
१२. बूचड़खाने में तब्दील होता देश	श्री कुमार सर्वेश	२१
१३. भारत के लिए जीवन-मंत्र	श्री राधाकृष्ण बजाज	२३
१४. दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	श्री जितेन्द्र सिंह	२५
१५. भारत में गोपालन की पृष्ठभूमि व प्रबन्धन की सम्भावनाएँ	प्रो० रामचन्द्र सिंह	२७
१६. सर्वहितकारी धन गाय	श्री कमलेश बाजोरिया	३१
१७. गौशाला-भ्रमण—एक सुखद अनुभव	श्री अश्विनी डिडवानियाँ	३२
१८. प्रशासन का विकेन्द्रीकरण एवम् उसके सुखद परिणाम	श्री गगनेन्द्रकुमार केडिया	३३
१९. भारतीय किसान और गाय	श्री भरत झुनझुनवाला	३५
२०. गाय और अध्यात्म	श्रीकृष्णकुमार खेमका	३८
२१. सार्वभौम सुख-शान्ति का मूल उपाय—गोसेवा	पं० श्रीकान्तजी शर्मा	४०
२२. गायों को बचाने के लिए छः लाख विदेशी मैदान में	श्री मुजफ्फर हुसैन	४१
२३. रोजगार देने के प्रकल्प	श्री पवनकुमार अग्रवाल	४३
२४. गोरक्षण-गोपालन-गोवर्धन	श्री वसंतराव बोबटकर	४५
२५. गोकुल शाखा, स्वावलम्बन की ओर कैसे?	श्री सूबेदार सिंह	४७
२६. गोवध बंदी से राष्ट्रीय एकता व पर्यावरण-पवित्रता	सम्पादक 'गांडीव'	५०
२७. गाय ग्रामोत्थान की कुंजी है	श्री रामनाथ सिंह	५२
२८. अधिकांश बीमारियों का इलाज है गोमूत्र	श्री वीरेन्द्रकुमार जैन	५५
२९. गोपालन की कुछ बातें		५८
३०. गोवंश से समग्र विकास का अभिनव प्रयोग	सुरभि ग्राम	५९
३१. गोशाला-गोग्रास-गोभक्त	श्री भगवती अग्रवाल	६२
३२. राष्ट्रीय विकास में गोशालाओं की भूमिका	श्री सूर्यकान्त जालान	६४
३३. गोरक्षा के दो आयाम	श्री राकेशकुमार रस्तोगी	६६
३४. अंधकार से प्रकाश की ओर	श्री जटा शंकर	६८
३५. आपका संकल्प : गोशाला का स्वावलम्बन	श्री चंद्रकांती पाल	६९
३६. 'ग्रामवासिनी भारतमाता' की सेवा का संकल्प लें	आचार्य शरदकुमार साधक	७१
३७. मानव सहित समस्त जीव-जन्तु विनाश की ओर		७५
३८. उत्तर प्रदेश में गोरक्षा, गोपालन, गोसंवर्धन	सुरभि शोध संस्थान	७६
३९. दानदाताओं का विवरण		८१
४०. सोसायटी के नवीनीकरण का प्रमाण-पत्र		११५
४१. आयकर अधिनियम १९६१ की धारा ८०जी का प्रमाण-पत्र		११६
४२. वर्ष २०००-२००१ का संप्रेक्षित आय-व्यय		११७
४३. पशु चिकित्सक		१२९
४४. दूध उत्पादन		१३१
४५. कृषि उत्पादन		१३४
४६. विगत पन्द्रह वर्षों में शासक-मण्डल तथा प्रबन्धकारिणी समिति		१३८

मुद्रक : वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिन्टर्स प्रा०लि०, चौक, वाराणसी-२२ १००१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संचालन समिति

नाम	पद	कार्यालय	निवास	मोबाइल
श्री राकेश रस्तोगी	*अध्यक्ष*	४०५९०९	३६०७६३	९८३१०४२३३३
श्री सत्यनारायण झुनझुनवाला	*उपाध्यक्ष*	५८५९७५, २११३१२	२११३१३, २१०४८१	९८३१०५५३१३
श्री सूर्यकान्त जालान	*मंत्री*	३५२९४२, ३५२९४३	३१००७१-७२	९८३१०५६९४२
श्री पवन अग्रवाल	*उपमंत्री*	३५३९२९, ३५३४५४	३१४००३	९८३१०४३६२९
श्री लोकेन्द्र करवा	*कोषाध्यक्ष*	९५५४१४-२५६१९, २४६४९	३७००७१-७२	९८३८०४१८७१
श्री भगवतीप्रसाद अग्रवाल	*गोग्रास मंत्री*	३२७९४२, ३२०११३	२७६२३०	९८३१०५५७४१
श्री अशोक शाह	*सम्पत्ति मंत्री*	३३०७९५	२७६१५०	९८३१०५९५२०
श्री चम्पालाल सरावगी, कलकत्ता	*सदस्य*	२१६५५४६, २१६५५४७	३६७०५९, ३६७०८१	
श्री नारायणप्रसाद डालमिया, ''	*सदस्य*		४७१६१२५	
श्री मदनलाल मोथा, दिल्ली	*सदस्य*	३९६५६१६		
श्री बृजेश माहेश्वरी	*सदस्य*	२०५१८३	२०५१८३	९८३१०४१७७६
श्री राजकुमार कोठारी	*सदस्य*	९५५४१४-४३२६३	२२५८२२	
श्री सत्यनारायण जालान	*सदस्य*	४०२८०५, ३५१८९६	२७५५५८	
श्री अश्विनी डिडवानिया	*सदस्य*	३५२३६८	२२०२४६	
श्री प्रवीण गोयल	*सदस्य*	३५२५९८, ३५२१०५	३११३१५	
श्री प्रभात ढाँढनिया	*सदस्य*	२२०९९७, २२१९९७	२२०९९७, २२१९९७	
श्री नवीन रूँगटा	*सदस्य*	२७६५६०, २७६५६१	२७६५६३, २७६५६२	
श्री रमेश अग्रवाल	*सदस्य*	२७६१६८	२७६३९०, २७६३९२	९८३८०४२२३८
श्री अरुण जैन	*सदस्य*	२७५३४६	३१५१३०	९८३८०४२७४१
श्री विजय गाड़ोदिया	*सदस्य*	३४०२३१, ३४०२३२	३१४५८७, ३१४७८७	
श्री कृष्णकुमार खेमका	*सदस्य*	३५३९५२, ३५३५४६	३५१४०७, ३५०२८४	९८३१०५६५४६

प्रबन्धकारिणी समिति (२००१-२००२)

श्री इन्दरचन्द अग्रवाल	*सभापति*	३१००८६, ३११८८५	३१००३८, ३१२२३८	९८३१०४७३६९
श्री दीपक प्रकाश नवलगड़िया	*प्रधानमंत्री*	३२०५८५	३५४३१	
श्री अंजनीकुमार सर्राफ	*कोषाध्यक्ष*	३२०१३०, ३२०१४०	३३३५५४, ३५०९७०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकुल (बावनबीघा) शाखा समिति

श्री रामअवतार अग्रवाल	*उपाध्यक्ष*	३५१९१३	२११०६१	
श्री मोहनलाल लढ़ा	*मंत्री*	३३५९८८	३३१५६३	
श्री पवनकुमार बाजोरिया	*अर्थमंत्री*	३३०४६६, ३३०८१५	४५५५०१	
श्री किशनजी अग्रवाल	*कृषि मंत्री*	३३५०६५, ३३१२४१	३३१९४१, ३३१२४१	९८३८०४०१४५
श्री सुरेन्द्र जिन्दल	*सदस्य*	५८६००२	५८६००२	
श्री श्याम सर्राफ	*सदस्य*	२२१४००, २२१८११	२२१४००, २२१८११	
श्री ओंकार माहेश्वरी	*सदस्य*	३३०९२९, ३३२६११	५८७०००, ५८७१११	९८३८०६६८११
श्री भरत सर्राफ	*संचालक मण्डल*	३२००४८, ३३४३७६	२७५८३१	
श्री घनश्यामदास शाह	*संचालक मण्डल*	३३२९१७	३६०२६५	
श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव	*सदस्य*	३४११६१		

गोशाला सहयोगी सदस्य, गोकुल (बावनबीघा)

श्री भगवती अग्रवाल	३२०११३, ३२७९४२	३१११११३
श्री शिवशंकर अग्रवाल	३३१६७०	३१४११९
श्री अनिलकुमार जैन		३५४६२३, ३५०९७०
श्री रामजीलाल चाण्डक	३२०१०१	३६०१३१, ३६११३१
श्री सत्यनारायण प्रह्लादका	३९३८०५	३१३९८९

गोलघर शाखा समिति

श्री श्यामसुन्दर अग्रवाल	*उपाध्यक्ष*		३३३१२३	
श्री कमलेश बाजोरिया	*मंत्री*	३३०६१२, ३७०१५६	३६२२३१, ३६१५३१	
श्री प्रकाशजी झुनझुनवाला	*अर्थमंत्री*	३३००४२, ३३०३५०	३३१३४२, ३३२७४०	
श्री आनन्दस्वरूप अग्रवाल	*दूध वितरण मंत्री*	३३०८१६	३३०३१३, ३३३५६३	९८३९०४०७९४
श्री हरिशंकर जालान	*सदस्य*	३३००८५	३२०२९४	
श्री सूर्यकान्त जालान	*सदस्य*	३५२९४२, ३५५६९००	३१००७१, ३१००७२	
श्री आनन्दप्रकाश ड्रोलिया	*सदस्य*	३३१९४४	३३००२५, ३३१८४४	९८३९०४११६०
श्री काशीनाथ चौधरी	*संचालक मण्डल*	३२०१७७	३२१८७४	
श्री परमानन्द सर्राफ	*संचालक मण्डल*	३२०१३०, ३२०१४०	३६०१३८	
श्री गोविन्द जाजोदिया	*सदस्य*	३३००४७, ३३२५९३	४५१११२०, ३२८०९५	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोशाला सहयोगी सदस्य (गोलघर शाखा)

श्री मुकुन्दलाल टण्डन	३५३३९५	३५३३९५, ३५३३७७	
श्री राधेकृष्ण अग्रवाल	३२०१३४	३२०६३६, ३९३७९७	
श्री बसन्त सिंह		३३४४३१	
श्री घनश्यामदास अग्रवाल	५५९२३	३३२८५३, ३३१४५१	९८३८०४०१८३
श्री सुरेश अग्रवाल	३३१८१६	३३१८१६	

रामेश्वर शाखा समिति

श्री गोपीकृष्ण मोरोलिया	
श्री बालमुकुन्द लोहिया	३६२०४०
श्री मुरारीलाल डिडवानिया	

आभार

काशी गोशाला के संचालक मण्डल के वरिष्ठ अनुभवी सदस्यों
तथा
पदाधिकारियों ने गोशाला को मार्गदर्शन देकर
युवकों को उत्तरदायित्व सौंपा।
संरक्षक मण्डल के सदस्यों की इस उदारता के लिए
हम सभी विशेष रूप से आभारी हैं।

• श्री राधेश्याम खेमका • राजकुमारजी जैन • बृजमोहनजी मूंदड़ा
• मातादीनजी अग्रवाल • पुरुषोत्तमदासजी मोदी • गगनेन्द्रकुमारजी केडिया
• परमानन्दजी सर्राफ • काशीनाथजी चौधरी • रघुनाथप्रसादजी प्रहलादका
• नन्दलालजी जालान • दीनदयालजी जालान • श्री गोपालजी गोयल
• श्री श्रीरामजी माहेश्वरी • भरतजी लढ़िया • घनश्यामजी शाह
• भरतजी सराफ • ईश्वरजी गाड़ोदिया

आभारी

राकेश रस्तोगी — *अध्यक्ष*

सूर्यकान्त जालान — *मंत्री*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोशाला विकास समिति (२०००–२००१)

रामेश्वर शाखा

नाम	पद	निवास	कार्यालय
श्री सत्यनारायण अग्रवाल	*संयोजक*	३३०६०४, ३३०९०६	३३०६०४, ३३०९०६
श्री अशोक जालान	*सह-संयोजक*	३८२०२१	३८२०२१
श्री संजीव अग्रवाल		३८२२२५	३८२९४१
श्री संजीव जायसवाल		३८२१०९	३८२१०९
श्री संतोष जायसवाल		५८६२१६	५८६२१६
श्री रामस्वरूप अग्रवाल		३३३५६३, ३३०३१३	३३०६८७
श्री हरिशंकर जालान		३३०२९४	३३००८५
श्री विजय अग्रवाल		३११३०३	३८३८८०
श्री अनूप सर्राफ		३१४९८८	३२१४१६

गोलघर, बावनबीघा शाखा

नाम	पद	निवास	कार्यालय
श्री देवेन्द्र बजाज		३५५००१	—
श्री मदनमोहन बल्दुआ		२२०९२१	—
श्री दीपक भौतिका		३२१७१९	३२१७१८
श्री पुरुषोत्तम धानुका		३१३०३६	—
श्री राजकुमार चौधरी		—	३९०२३१
श्री आनन्दस्वरूप अग्रवाल		३३०३१३, ३३३५६३	३३०८१६
श्री शिवशंकर अग्रवाल		३१४११९	३३१६७०
श्री मोहनदास एडवोकेट		३३०१९४	३३०१९४
श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह गौर
मंत्री
गन्ना विकास, चीनी उद्योग एवं चिकित्सा शिक्षा
उत्तर प्रदेश

दूरभाष : कार्यालय : २३८०६१
सी०एच० : ३३०४
आवास : २२८१७९
इलाहाबाद : ६४०६७६, ४४००४४

विधान भवन
लखनऊ

दिनांक : २२.१०.२००१

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी विगत ११५ वर्षों से गो-सेवा के रूप में सराहनीय कार्य करते हुए भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन कर रही है। गोशाला प्रबन्ध कमेटी द्वारा प्रतिवर्ष गोपाष्टमी के पावन पर्व पर स्मारिका प्रकाशित कराने का कार्य सराहनीय है।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में गाय का महत्व किसी से भी छिपा नहीं है। यही वह जीव है जिसके शरीर का प्रत्येक अंश मानव जीवन के लिए सदैव मूल्यवान है। मैं आशा करता हूँ कि यह गोशाला उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर होती रहेगी।

मैं गोपाष्टमी के पावन पर्व पर गोशाला कमेटी द्वारा प्रकाशित स्मारिका से जुड़े समस्त महानुभावों के सुखी, समृद्ध एवं मंगलमय भविष्य की कामना करते हुए उनके प्रति अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह गौर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमारे प्रेरणा पुञ्ज

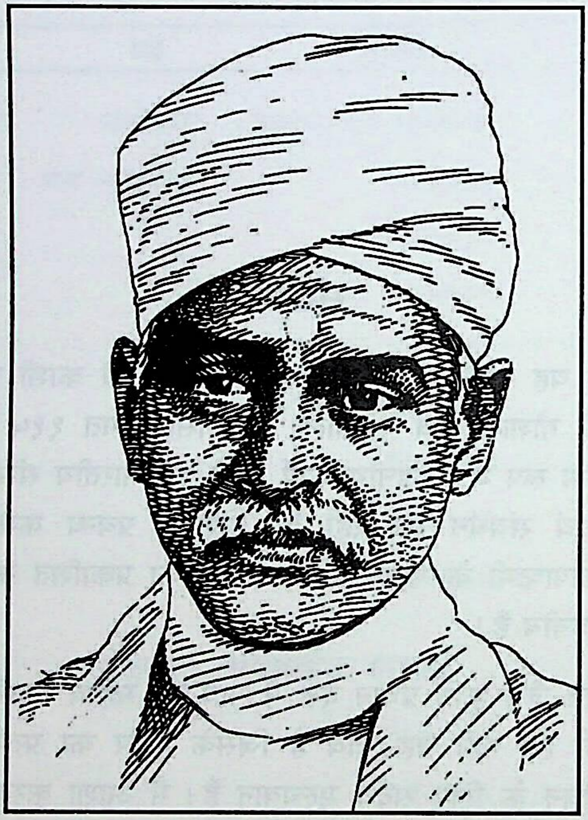

ग्रामे ग्रामे सभा कार्या ग्रामे ग्रामे शुभा कथा।
पाठशाला मल्लशाला गवां सदनमेव च॥

— महामना पं० मदनमोहन मालवीय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विनम्र निवेदन

पं० मदनमोहन मालवीय की प्रेरणा से १५ वर्ष पूर्व स्थापित गोशाला का दायित्व मुझ अनुभवहीन युवक को गोशाला के वरिष्ठ संचालकों ने सौंपा, जिसे अत्यन्त संकोच तथा भय से ग्रहण कर रहा हूँ। अनेक शाखाओं में विस्तृत यह विशाल गोशाला जिसके निर्माण में महामना मालवीयजी ऐसे गोभक्त, काशीनरेश महाराज प्रभुनारायण सिंह तथा विभूतिनारायण सिंह ऐसे धर्मप्राण महान् व्यक्तित्व का योगदान है, पं० झाबरमल शर्मा जैसे गोभक्त की तपस्या है ऐसी गोशाला का दायित्व ग्रहण करने के लिए जिस साहस की अपेक्षा है, वह मुझमें है या नहीं, इसी अन्तर्द्वन्द्व में हूँ। जिस गोशाला के संचालन में आदरणीय राधेश्यामजी खेमका, राजकुमारजी जैन, गगनेन्द्र केडिया, मातादीनजी अग्रवाल, पुरुषोत्तमदासजी मोदी, भगवानदास अग्रवाल, दीनानाथ झुनझुनवाला ऐसे प्रखर समाजसेवी लगे रहे हों। जिस गोशाला के लालन-पालन में तन-मन-धन से श्री बृजमोहन मूंदड़ा जैसे गोसेवक नित्य अर्घ्य देते हों ऐसे काशी गोशाला के अध्यक्षीय दायित्व को सँभालने का सौभाग्य मन को दृढ़ निश्चयी होने की प्रेरणा देता है।

प्रथम बार काशी गोशाला में नयी पीढ़ी तैयार करने का कार्य हमारे वरिष्ठों ने किया है। अपने पूर्व वरिष्ठ संचालकों के विश्वास और आशीर्वाद के धरोहर को सिरमाथे रखकर गो-सेवा के पर्याय युवा साथी भाई सूर्यकान्त जालान (कानूबाबू) का सम्बल लेकर गोमाता, बाबा विश्वनाथ, माँ गंगा को प्रणाम कर इस पद को स्वीकार करने का साहस कर रहा हूँ।

इस महती पद की गरिमा को मैं अक्षुण्ण रख सकूँ इस निमित्त में गोशाला के सभी गुरुजन, पूर्व सदस्यों के मार्गदर्शन एवं आशीष का आकांक्षी हूँ एवं अपने समस्त युवा साथियों के सहयोग से गोशाला के कार्य को गति प्रदान कर सकूँ।

प्रभु से यही प्रार्थना है।

गोमाता की जय!

राकेशकुमार रस्तोगी
अध्यक्ष
संचालन समिति
श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंत्री का प्रतिवेदन

श्री काशी गोशाला विगत ११७ वर्षों से गोसेवा में लगी है। इस गोशाला के प्रेरणा स्रोत महामाना पं० मदन मोहन मालवीय रहे है और उनके दिशा दर्शक वाक्य 'ग्रामे ग्रामे सभा कार्या, गेहे शुभा कथा' के आधार पर गोशाला संचालक कार्य करते रहे हैं। इस पुनीत कार्य को आगे बढ़ाने और गोशाला की एक-एक ईंट को जड़ने वाले महानुभावों को गोपाष्टमी पर हम नमन करते हैं। गोशाला को आर्थिक सहयोग देने वालों के साथ जिन लोगों ने समर्पित भाव से गोसेवा की, उनमें से कुछ लोग गोलोकवासी हो गये, कुछ सौभाग्य से अभी हमारे बीच हैं, उन सब के चरणों में हम श्रद्धावनत् हैं।

गोरक्षण, गोपालन, गो-संवर्धन और गो-उपासना के क्षेत्र में काशी गोशाला की बहुआयामी प्रवृत्तियाँ चल रही है। इन प्रवृत्तियों की गति बढ़ाने के लिए सभी संचालक मण्डल और कार्य समिति के वयोवृद्धि सदस्यों ने अपने पदों की जिम्मेदारी हम युवकों को सौंपने का ऐतिहासिक कार्य किया, वह सारे देश की रचनात्मक संस्थाओं और विशेष कर गोशालाओं के लिए एक उदाहरण है। बुजुर्गों के आशीर्वाद से कार्य संभाला है और उन्हीं की प्रेरणा से आगे बढ़ने को हम सब प्रेरित हुए हैं। इसका लाभ गोशाला को मिलने लगा है।

श्री काशी गोशाला की बहुआयामी प्रवृत्तियों का श्रीगणेश शताब्दी समारोह में हुआ था। विगत १८ नवम्बर १९८६ को समारोह के मुख्य अतिथि तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने कहा था कि "गोहत्या पर रोक लगाने की माँग को लेकर सन्त विनोबा ने अनशन किया था। उस समय सरकार ने गोवध रोकने का आश्वासन दिया और उनका अनशन तुड़वाया। पर रोक नहीं लगी, जबकि हम मानते हैं कि बारत जैसे कृषि प्रधान देश की उन्नति का आधार गोवंश है।" राष्ट्राध्यक्ष की विवशता विनोबाजी द्वारा स्थापित आचार्यकुल के अध्यक्ष श्री शरदकुमार साधक ने समझी और हम सबके साथ सह चिन्तन कर उन्होंने एक कार्य योजना पत्रक तैयार किया, जिसे पहले हमलोगों ने हवाई कल्पना माना। किन्तु धीरे-धीरे उस योजना के अनुसार गोशाला में काम हुआ। गोरक्षा मूलक स्थानीय उद्योग प्रधान लोक शिक्षण के प्रयोग व प्रशिक्षण ने परिणाम दिखाये। एक के बाद एक आयी समस्या का समाधान निकलने लगा तो इस गोशाला की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनी। गोपाष्टमी मेला (१९९८) में जब गोशाला की प्रदर्शनी लगी और उसमें गो-उत्पाद, सुधरे कृषि यन्त्र, कृषि-गो विज्ञान अनुसंधान प्रयोग प्रदर्शित हुए तब मुख्य मंत्री ने उ०प्र० गोसेवा आयोग गठित करने की घोषणा की और देश भर की गोशालाओं के प्रतिनिधियों को भी लगा कि यदि समझ-बूझ कर योजना पूर्वक काम करें, तो वर्तमान की अपेक्षा दूध दुगुना, चारा तीन गुना, भूसा पाँच गुना, दाना सात गुना, रोजगार के अवसर आठ गुना करने में गोशालाएँ महत्त्वपूर्ण योग दे सकती हैं और गोवंश हत्या बन्दी आन्दोलन भी सफल हो सकता है।

गोशाला का लाभ चहार दीवारी के भीतर ही सिमट कर नहीं रह जाता, वरन् वह पूरे गाँव के साथ-साथ दूर-दूर क्षेत्र तक पहुँचता है। गोपालक लाभान्वित होते हैं। कृषि विकसित होती है। परिपूरक उद्योग बढ़ते हैं। गरीब वर्ग के लोगों को रोजी-रोटी मिलती है गाँवों से पलायन करने वाले युवकों को स्थानीय संसाधनों का सम्यक् उपयोग करना आने से स्वरोजगार बढ़ते हैं तथा कृषि-गो विज्ञान का दायरा भी व्यापक होता है। कार्यानुभव से स्पष्ट हो जाता है कि आज गाय एक दूध देने वाली माता ही नहीं रह गयी, वरन् वह बाछे, बाछी, गोबर, गोमूत्र और मरणोपरान्त शरीर के अवशेष से भी इतना लाभ देती हैं कि वैश्विक बाजार में घटते हुए रोजगार के अवसर की चुनौतियों का सामना किया जा सकता है और गोशाला को ऊर्जा केन्द्र बनाया जा सकता है। इस काम को परिणाम दायी बनाने हेतु अर्थशास्त्रियों,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैज्ञानिकों और चिन्तकों से निवेदन है कि वे अपने सुझाव, सहयोग एवं आशीर्वाद दें, जिससे हम सफल हो सकें। गोशाला के पदाधिकारियों के साथ-साथ समय लगाकर उसमें समर्पित भाव से कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं का पुनः अभिनन्दन करता हूँ और जिन महानुभावों ने गाय और गोशाला की किसी भी प्रकार की सेवा की है, मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

सूर्यकान्त जालान
मंत्री
संचालक मण्डल

गाय, गोशाला एवं ग्राम विकास

श्री आनन्दस्वरूप अग्रवाल

पूरे विश्व में भारतवर्ष की एक अलग पहचान है। हमारी संस्कृति, परस्पर सहयोग की भावना, संघर्ष करने और सहने की अद्‌भुत क्षमता, बड़ी से बड़ी विपदाओं को सहते हुए बहुत ही अल्प समय में क्षति की भरपाई करने के साहस के कारण ही विश्वभर में हमारी एक अलग ही मान्यता है। पूरे विश्व में कहीं भी हम गर्व के साथ कहते हैं कि हम भारतीय हैं।

गौमाता भी हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। आदि अनन्त काल से हमारे देश में गौमाता की पूजा होती आ रही है। हमें जन्म देने वाली माता, धरती माता के साथ ही गौमाता को भी परम पूज्य मानते हैं। ऐसी हमारी मान्यता है कि ६४ करोड़ देवी-देवता गाय माता में निवास करते हैं एवं केवल गाय माता की पूजा-सेवा करने से हमें ६४ करोड़ देवी-देवताओं की पूजा-सेवा का फल प्राप्त होता है।

हमारे देश में ही आयुर्वेद का जन्म हुआ। एलोपैथिक भी आयुर्वेद का ही परिष्कृत रूप है। आयुर्वेदिक दवाइयों में भी गौमाता के योगदान को हम नहीं भुला सकते। गोमूत्र से असाध्य रोगों का इलाज होता है। माँ के दूध के बाद गौमाता का दूध ही हमारे बच्चों के समग्र विकास में सहायक होता है।

गाय माता के बछड़े के साथ खेलने के सुख का अनुभव केवल वही लोग कर सकते हैं जिनको अपने जीवन में इसका सौभाग्य प्राप्त हो।

जीते जिन्दगी गौमाता विभिन्न तरीकों से हमारी सेवा करती ही है साथ ही मरने के बाद भी गौसेवा एवं गौदान से हमें मोक्ष की प्राप्ति होती है ऐसी हमारी मान्यता है। खेती में गोबर एवं बैलों का उपयोग सभी जानते हैं। हमारा देश ग्रामप्रधान देश है और यदि हम देश की उन्नति चाहते हैं तो हमें गोशाला एवं ग्राम विकास पर निश्चित रूप से ध्यान देना होगा। हमारी गायें भूखी न मरें, गन्दगी न खायें, कसाइयों द्वारा काटी न जायें, इसके लिये हमें गौशालाओं का समुचित विकास करना होगा। हमें यथा शक्ति तन, मन, धन से गौसेवा का व्रत लेना होगा। जिस देश में हम एक चींटी मारना भी पाप समझते हैं उसी देश में हम सबके रहते हुए हमारी गौमाता काटी जा रही है, यह हम सबके लिये कितनी शर्म की बात है।

आइये हम सब मिलकर संकल्प करें कि हम अपनी जान की बाजी लगाकर गोवंश की रक्षा करेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वन्दे धेनु मातरम्

श्री शरदकुमार साधक

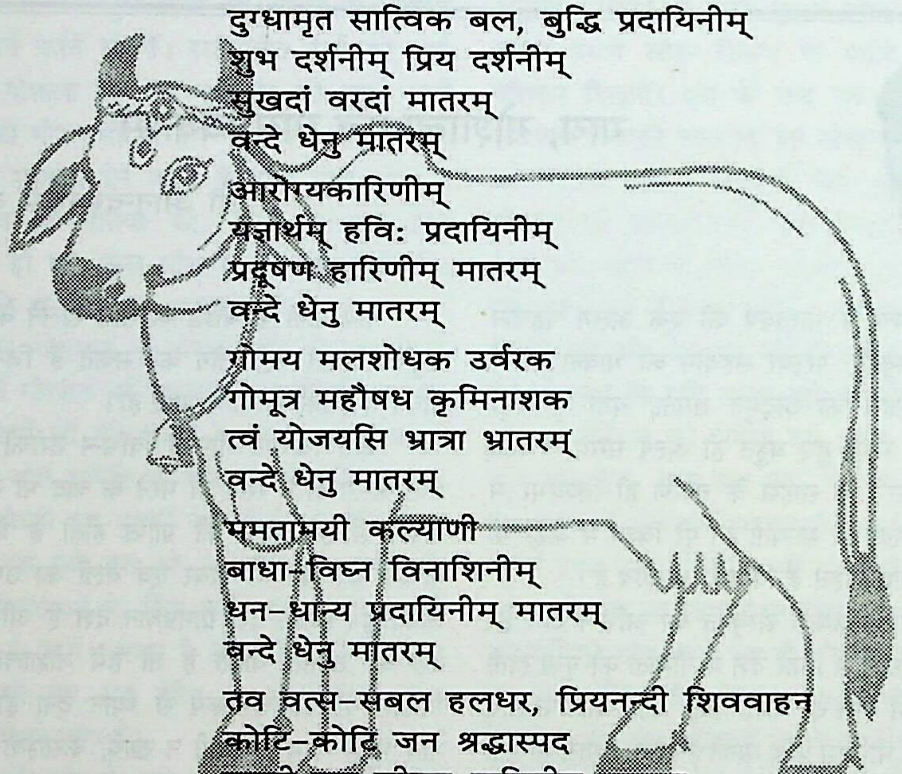

धर्मदां अर्थदां मातरम्
कामदां मोक्षदाम् मातरम्
वन्दे धेनु मातरम्

दुग्धामृत सात्विक बल, बुद्धि प्रदायिनीम्
शुभ दर्शनीम् प्रिय दर्शनीम्
सुखदां वरदां मातरम्
वन्दे धेनु मातरम्

आरोग्यकारिणीम्
यज्ञार्थम् हविः प्रदायिनीम्
प्रदूषण हारिणीम् मातरम्
वन्दे धेनु मातरम्

गोमय मलशोधक उर्वरक
गोमूत्र महौषध कृमिनाशक
त्वं योजयसि भ्रात्रा भ्रातरम्
वन्दे धेनु मातरम्

ममतामयी कल्याणी
बाधा-विघ्न विनाशिनीम्
धन-धान्य प्रदायिनीम् मातरम्
वन्दे धेनु मातरम्

तव वत्स-सबल हलधर, प्रियनन्दी शिववाहन
कोटि-कोटि जन श्रद्धास्पद
जननी सम जीवन-दायिनीम् मातरम्
वन्दे धेनु मातरम्

दुःख दारिद्र्य विनाशिनीम्
दिव्य गुणगण विकासिनीम्
परोपकारिणीम् मातरम्
वन्दे धेनु मातरम्

त्वम् हि लक्ष्मी दुर्गा च शारदा
त्वं करुणा वात्सल्यदा
श्रेय प्रेयदां मातरम्
वन्दे धेनु मातरम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

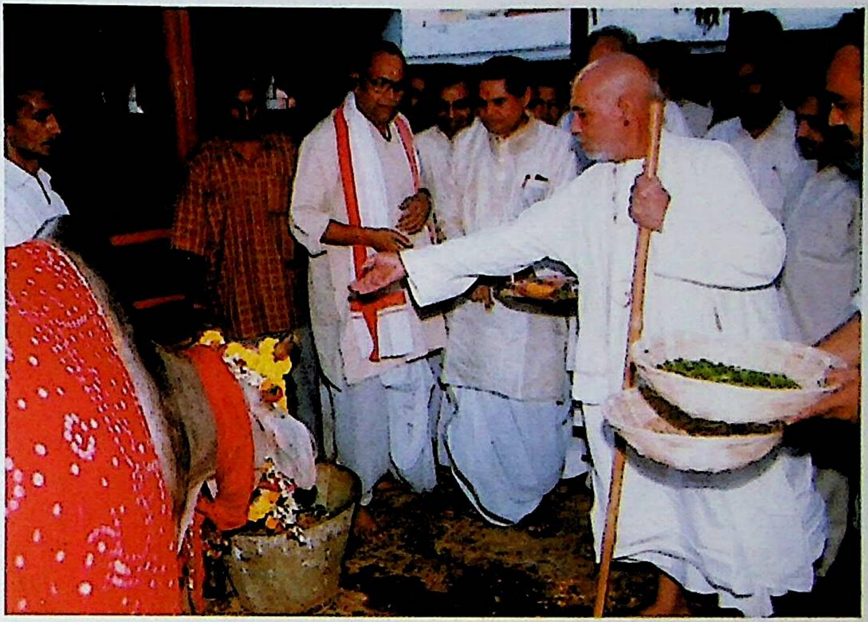

गोपाष्टमी समारोह वर्ष–२०००
गोपूजन करते रामकथा वाचक संत श्रीमन्ननारायण (मामाजी) बक्सर वाले
तथा श्री ओमप्रकाश सिंह
माननीय मंत्री (उ०प्र० सरकार) सिंचाई, उच्च शिक्षा एवं लोक निर्माण

गोपाष्टमी समारोह में माननीय मंत्री श्री ओमप्रकाश सिंह का
स्वागत करते गोशाला शासक मंडल के अध्यक्ष श्री राधेश्याम खेमका, मंत्री श्री बृजमोहन मूँदड़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाल व्यास श्री श्रीकान्त शर्मा के साथ गोशाला शासक मण्डल के मंत्री श्री बृजमोहन मूँदड़ा

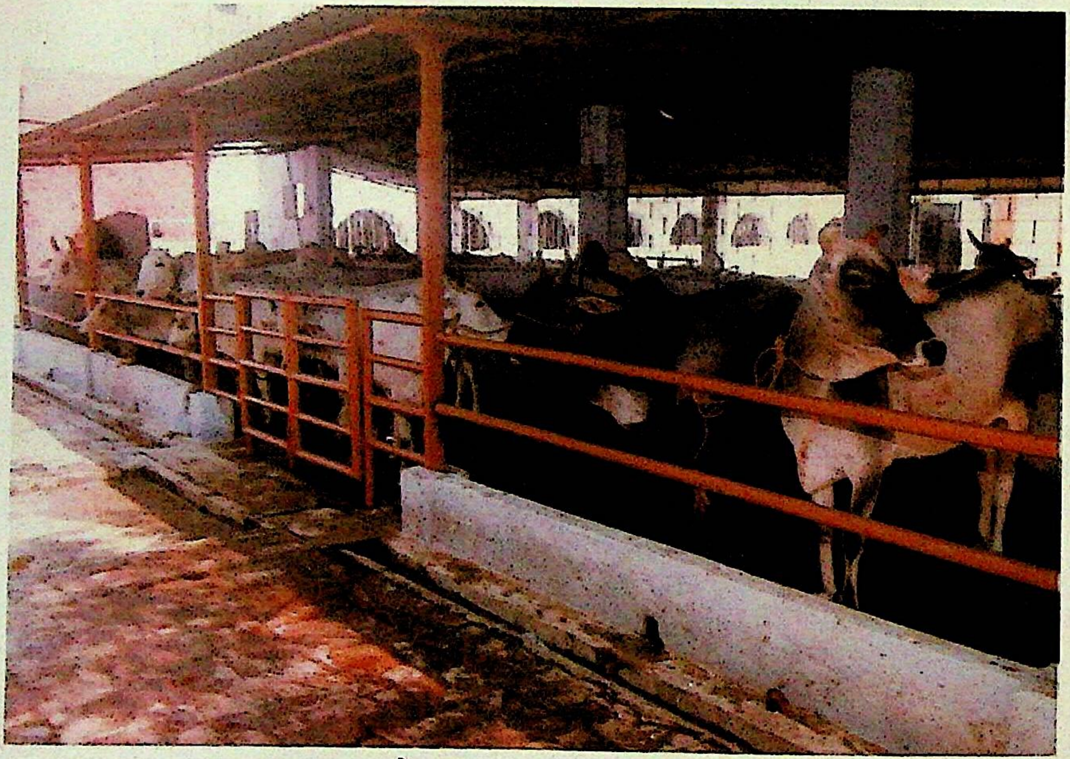

गोशाला खटाल का दृश्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुबन (रामेश्वर) गोशाला के दृश्य

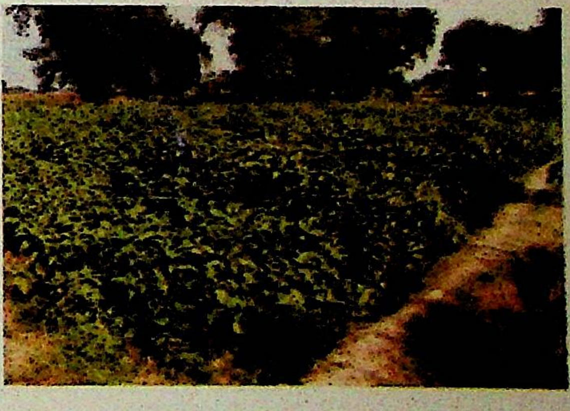

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दावन गोशाला के दृश्य

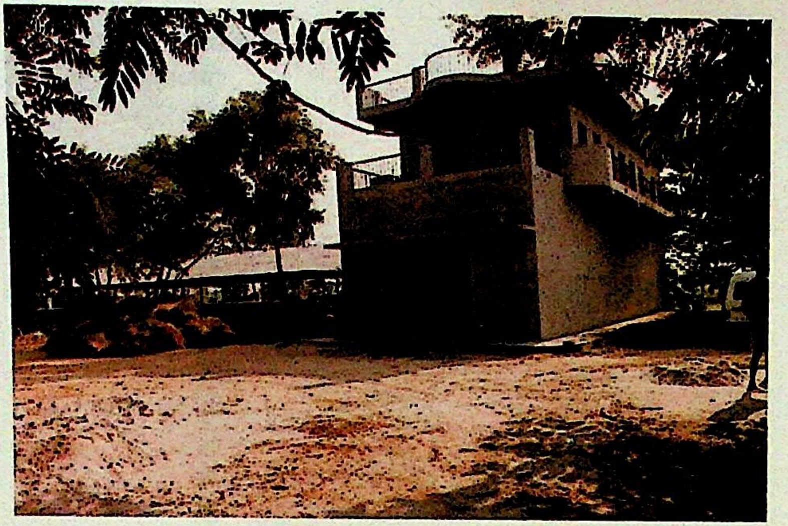

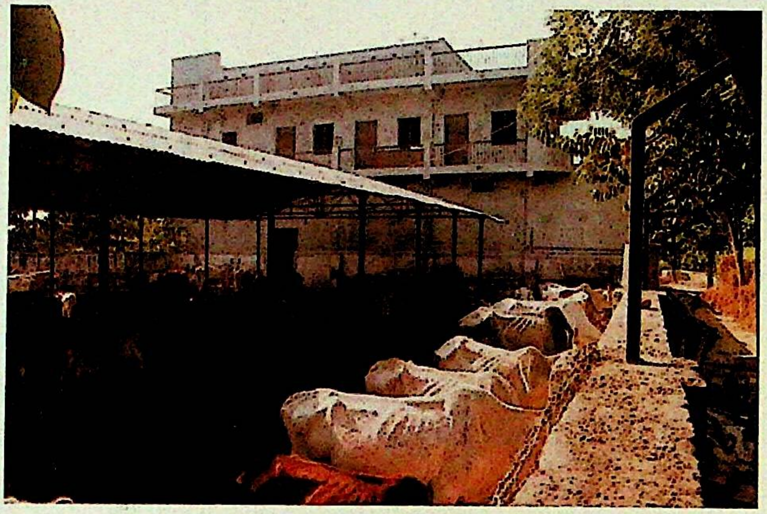

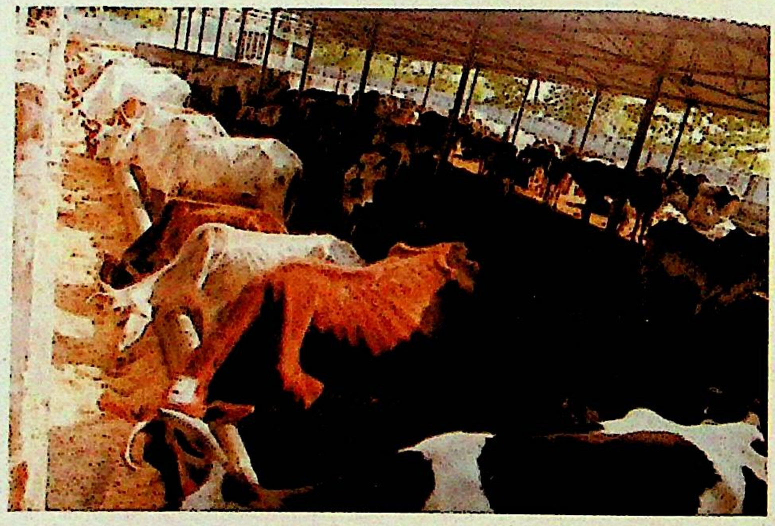

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

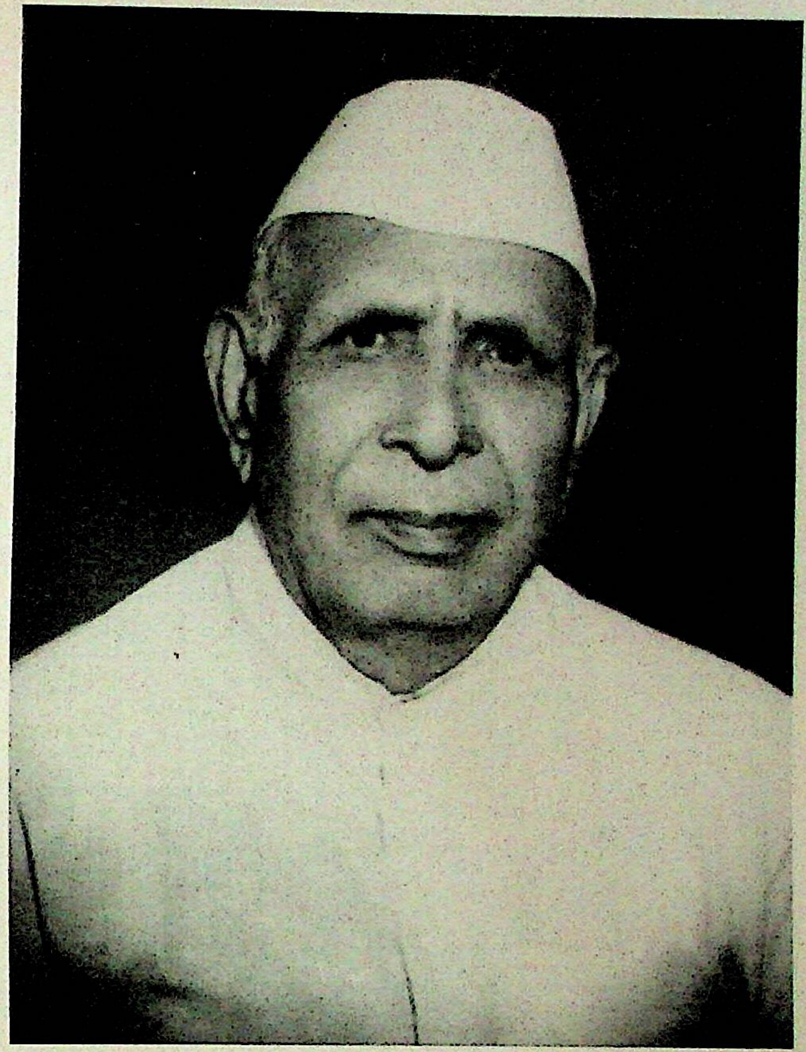

गोशाला शासक मंडल
के वरिष्ठ सदस्य तथा प्रथम नगर प्रमुख
स्व० कुंजबिहारी गुप्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

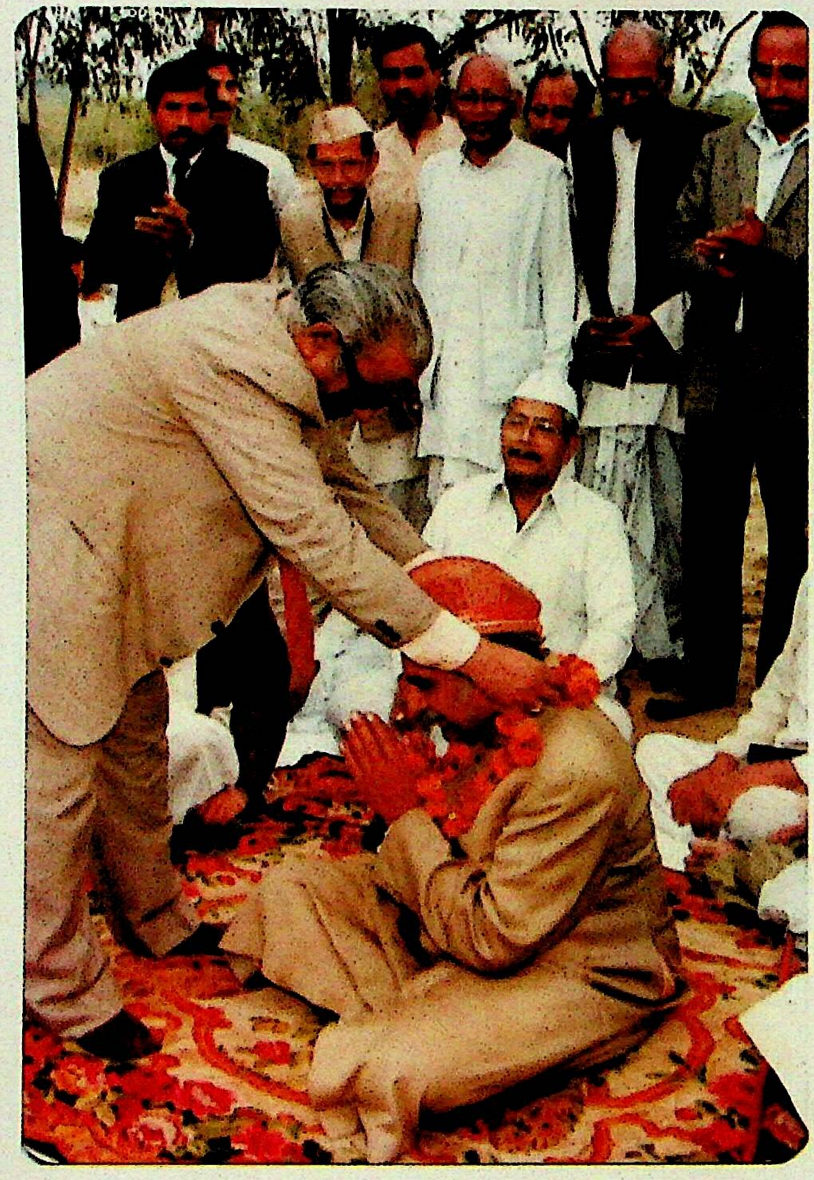

रामेश्वर गोशाला में
काशीनरेश महाराजा विभूति नारायण सिंह को
माल्यार्पण कर स्वागत करते हुए
श्री राजकुमार साह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्मृति शेष

श्रद्धांजलि

काशी नरेश महाराज विभूति नारायण सिंह

गोशाला तथा गोशाला परिवार के संरक्षक का इस वर्ष गोलोकवास हो गया।
बावनबीघा गोशाला जिसे उनके राज्य से ५२ बीघा का एक चक गो-सेवा के निमित्त दानस्वरूप प्राप्त हुआ था, जो उनकी सदाशयता, उदारता, धर्म परायणता और गो-प्रेम को अक्षुण्ण बनाये हुए है। रामेश्वर गोशाला को भी उनका वरदहस्त प्राप्त था।
रामेश्वर गोशाला में उनका अभिनन्दन
गोशाला शासक मण्डल के सदस्य **श्री राजकुमार साह** ने किया था।
पिछले दिनों उनका भी गोलोकवास हो गया।
श्री साह गोशाला के प्रत्येक कार्यों में रुचि लेते थे, परामर्श देते थे। कठिन परिस्थितियों में गोशाला की विभिन्न शाखाओं को दान-अनुदान भी प्रदान करते थे।
काशी में लघु पंखा उद्योग के वे जनक थे, आज काशी में घर-घर पंखों का निर्माण हो रहा है, जो उनकी कीर्ति को अक्षुण्ण बनाये हुए है।
काशी नरेश और राजकुमार साह दोनों ही काशी की विभूति थे।
गोशाला परिवार के वे महत्त्वपूर्ण स्तम्भ थे,
उनके निधन से गोशाला एक विशिष्ट अभाव का अनुभव कर रही है।
उनके प्रति कृतज्ञ गोशाला परिवार शत-शत नमन करता हुआ
अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्री कुंजबिहारी गुप्त कुंजू बाबू के नाम से ख्यात

प्रथम नगर प्रमुख, गोशाला शासक मण्डल के वरिष्ठ सदस्य, ११ अप्रैल, २००० को गोशाला परिवार को असहाय कर गोलोक को प्रस्थान कर गये।
९३ वर्ष की अवस्था में चलने-फिरने में कठिनाई होने पर भी
गोशाला की बैठकों-समारोहों में वे आते थे, गोशाला के कार्यों में गहरी रुचि लेते थे।
समय-समय पर फोन कर जानकारी प्राप्त करते थे।
उनका अभाव आज गोशाला परिवार पूरी तरह से अनुभव कर रहा है।
वे काशी के सामाजिक जीवन की विभूति थे।
गोशाला परिवार के लिए वे निरन्तर स्मरणीय रहेंगे।
उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन के दो आधार : पशु और वृक्ष

श्री सुंदरलाल बहुगुणा

मेरे सामने मुख्य काम हिमालय बचाने का है। हिमालय के लोग मूलतः पशुपालक थे। पशुओं और वृक्षों के आधार से ही उनका जीवन चलता था। लेकिन अंग्रेजों ने आकर उस व्यवस्था को उलट दिया। उन्होंने जंगल काटकर लोगों को खेती के लिए प्रेरित किया। बहुतायत से टिंबरवाले पेड़ लगवाये। ऐसे पेड़ पानी का बहुत शोषण करते हैं और धरती का क्षरण भी होता है। इस तरह डेढ़-दो सौ वर्षों से हिमालय के साथ छेड़छाड़ शुरू हुई। हमारी सरकार भी जंगल को लकड़ी की दृष्टि से देखती है। उसने हिमालय की पूरी हजामत ही कर दी। लेकिन हम वृक्षों को पानी की दृष्टि से देखते हैं। ऐसे पेड़ लगायें, जो जलधारण करते हैं। अगर वहाँ के जंगल सलामत रहें तो ही सारे भारत को पानी मिल सकता है। इसलिए मेरी एक ही तमन्ना है, पूरे हिमालय को हराभरा बनाना।

यह तभी हो सकता है, जब लोगों का पेड़ों के लिए प्रेम हो। और प्रेम तभी होगा, जब वह उनके दैनंदिन जीवन में उपयोगी हो. इसलिए हमने पाँच प्रकार के वृक्ष लगाने का कार्यक्रम चलाया। उसमें प्रथम, मुख्यतः फल, नट, तैलबीज, शहद देनेवाले वृक्ष लगाये। हिमालय में बड़चेरी के वृक्ष होते हैं। जाड़े के दिनों में जब और पेड़ों पर कुछ नहीं होता, तब बड़चेरी फूल-फलों से लद जाते हैं। उसे लोग देववृक्ष मानते हैं। दूसरे, पशुओं के लिए चारेवाले वृक्ष, तीसरा, जलावन के लिए। चौथा, खाद के लिए। पाँचवाँ, रेशेवाले वृक्ष। इस प्रकार ये वहाँ की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने वाले जीवन के साधन हैं। स्थायी व्यवस्था के लिए स्थायी खेती चाहिए। वृक्ष-खेती के बिना वह संभव नहीं है। आज वहाँ भविष्य वृक्ष-खेती का है।

अगर फल बहुतायत से उपलब्ध हों तो स्त्रियों को चूल्हा नहीं फूँकना पड़ेगा। वास्तव में देखा जाये तो अनाज पकाने का आविष्कार स्त्री ने किया है। अनाज यानी घास के बीज। जो पशुओं का चारा होता था, उसके बीज को स्त्री ने पकाया तो वह स्वादिष्ट बना। वह चटपटा बनने से ज्यादा खा लेते हैं। इसलिए रसोईघर में से बीमारी का जन्म होता है। हमारे ऋषियों ने फलाहार को सात्त्विक आहार कहा है। और मानव का मूल आहार फल ही है।

आज रासायनिक खादों के कारण धरती का क्षरण हो रहा है। मिट्टी जिंदा चीज है, उसमें रासायनिक खाद यानी मुर्दा चीज डालने से वह कमजोर हो गयी है। उससे जो अनाज पैदा हो रहा है, वह धरती का रक्त-मांस चूसकर होता है। हम धरती के साथ जैसा व्यवहार करते हैं, वैसा हमारा स्वभाव बनता है। अगर धरती का शोषण करेंगे, चूसेंगे तो अपने पड़ोसी के साथ भी हमारा व्यवहार वैसा ही होगा। और अगर धरती के साथ मातृवत् व्यवहार करेंगे, प्रेम करेंगे तो मनुष्य के साथ भी हमारा व्यवहार प्रेम का होगा।

□□

कामधेनु (सुरभि)-स्तवन

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः। गवां बीजस्वरूपायै नमस्तै जगदम्बिके॥
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः। नमः कृष्णाप्रियायै च गवां मात्रे नमो नमः॥
कल्पवृक्षस्वरूपायै प्रदात्रै सर्वसम्पदाम्। श्रीदायै धनदायै च बुद्धिदायै नमो नमः॥
शुभदायै प्रसन्नायै गोप्रदाये नमो नमः। यशोदायै सौख्यदायै धर्मज्ञायै नमौ नमः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवंश हत्याबन्दी का सही नुस्खा

पू० स्वामी मुक्तानंदजी सरस्वती

प्रजातन्त्र व्यवस्था में सरकार के पास निर्णायक शक्ति नहीं होती, क्योंकि सरकार को प्रजा के निर्देश पर कार्य करना होता है। प्रजा के निर्देश का अर्थ समझना होगा। निर्देश देने वाली प्रजा का अर्थ होता है प्रजा का वह भाग जो सत्ता प्राप्त कराने तथा उसको कायम रखने में सहयोगी हो। इस तथ्य को अच्छी तरह से समझ लेने पर ही सरकार से काम कराने की युक्ति हाथ लग सकती है।

भारत की स्थिति को राजनीतिक दृष्टि से समझे बिना सरकार से काम कराने का आन्दोलन वैसा ही है जैसे भूसे में लट्ठ मारने से उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

भारत की आम जनता राजनीतिक दृष्टि से पाँच भागों में बँटी हुई है।

१. विभिन्न धार्मिक सम्प्रदाय

२. सवर्ण, पिछड़े तथा अनेक जातिगत समुदाय

३. औद्योगिक निहित स्वार्थी समुदाय

४. अल्पसंख्यक बहुसंख्यक जमातें

५. सैद्धान्तिक विचारधाराओं से जुड़े व्यक्ति

सरकार बनाने के लिए पाँचों विभागों का सन्तुलन जो बना लेगा उसकी सरकार बन जायेगी, परन्तु सरकार चलाने के लिये औद्योगिक निहित स्वार्थी समुदाय तथा अल्पसंख्यक जमातों के दबाव में रहना सरकार चलाने वालों के लिए आवश्यक हो जाता है। आर्थिक नीति निर्धारण में औद्योगिक निहित स्वार्थी समुदाय हमेशा सरकार पर हावी रहता है।

गोवंश हत्याबन्दी के लिये कानून बनवाने वालों को इस राजनीति नुस्खे को समझना आवश्यक है। गोवंश की हत्या से धनार्जन करने वाला समुदाय कभी नहीं चाहेगा कि भारत में गोवंश हत्याबन्दी कानून बने, क्योंकि कत्ल किये गये गोवंश का चमड़ा, उसका खून, उसकी हड्डियाँ, आँतें, सींग, खुर, चर्बी आदि की माँग बहुत बढ़ गई है। कत्ल के लिये अधिक मांस वाला गोवंश उतना उपयोगी नहीं होता जितना कि कम मांस वाला गोवंश उपयोगी होता है। इसलिये गोवंश की हत्या मांस के लिये उतनी नहीं होती जितनी कि उसके अन्य सामानों से धनार्जन हेतु होती है। भारत की कम दूध देने वाली गायें आर्थिक दृष्टि से कत्ल करने के बाद बहुत कीमती हो जाती हैं। स्वतः मौत से मरने वाले गोवंश का खून, चर्बी, हड्डी, सींग आदि की कीमत कम मिलती है।

देखना यह होगा कि गोवंश के रक्षण के साथ किनका स्वार्थ जुड़ा है तथा गोवंश का कत्ल होने में किनका स्वार्थ जुड़ा है। गोवंश की हत्या को रोकने वालों की संख्या अधिक हो सकती है परन्तु इस बहुसंख्यक समुदाय का स्वार्थ गोवंश के रक्षण के साथ नहीं जुड़ा है। गोवंश की रक्षा करने वालों के आर्थिक जीवन का आधार किसी दूसरे उद्योग से जुड़ा होता है। गोपालन आदि उनकी आय का माध्यम नहीं है। अतः उनका स्वार्थ गोवंश रक्षण के साथ नहीं जुड़ा है जबकि गोवंश का कत्ल करने वालों का आर्थिक जीवन गोवंश के कत्ल से साथ जुड़ा है। भारत में सभी प्रान्तीय सरकारें तथा केन्द्रीय सरकार अपने बजट घाटे की पूर्ति हेतु चमड़े के उद्योग को बढ़ावा देती है। चर्मोद्योग में गोवंश का चमड़ा सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसका अर्थ यह होता है कि सरकार सहित समस्त चर्मोद्योग से सम्बन्धित इकाइयों का स्वार्थ इसमें है कि गोवंश का अधिक से अधिक कत्ल करके आर्थिक समृद्धि प्राप्त की जावे। उत्तम क्रिकेट बॉल गोवंश के पुट्ठे के चमड़े से बनाई जाती है। इस उद्योग में बहुत से गोभक्त भी लगे हुए हैं। चाँदी, सोने के वर्क बनाने में बछड़े की आँतों के चमड़े का उपयोग होता है। दालों की पॉलिश आँत के चमड़े के माध्यम से होती है। अतः गोवंश का कत्ल इनके आर्थिक स्वार्थ से जुड़ा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक जमाना था जब भारत में समृद्धि का प्रतीक गोवंश था। आज समृद्धि का प्रतीक धन है। उसे कमाने के लिए गोपालन से अधिक गोवंश के कत्ल का सहारा लिया जाता है। गोवंश रक्षण का आन्दोलन करने वालों का आर्थिक जीवन गोवंश के साथ नहीं जुड़ा है। आन्दोलन करने वाले तो अपनी यशकांक्षा की पूर्ति हेतु आन्दोलन करते रहते हैं।

इस समय भारत में करीब १२०० संस्थायें ऐसी हैं जो गोरक्षा के काम में लगी हैं। परन्तु गत पचास वर्षों में गोवंश के कत्ल में एक संख्या की भी कमी नहीं हुई। गोवंश का कत्ल हजार गुना बढ़ा है। कत्लखानों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। सोचने का विषय है कि गोवंश रक्षण के आन्दोलन भी चलते रहे और गोवंश का कत्ल भी बढ़ता रहे। यह सब धोखा है।

एक प्रश्न उठता है कि यह सब धोखा है तो जिनको गोवंश से प्यार है वे गोवंश का कत्ल होते देखते रहें क्या? गोवंश कत्ल न हो, उसका रक्षण-पालन हो हम सब यही चाहते हैं। भारत स्वतंत्र होने के बाद हम सोचते थे कि भारत में गोवंश के कत्ल पर प्रतिबन्ध होगा। परन्तु वह नहीं हुआ तथा गोवंश का कत्ल बराबर बढ़ताचला जा रहा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि गोवंश के कत्ल से धनार्जन करने वालों का सरकार पर इतना प्रभाव है कि सरकार प्रतिबन्ध लगाने की हिम्मत नहीं कर पाती।

यह आर्थिक युग है। येन केन प्रकारेण अधिक से अधिक धनार्जन करने वालों की समाज में प्रतिष्ठा है। किस माध्यम से धन कमाया यह कोई नहीं देखता। जिस माध्यम से धन आता है वह माध्यम धनार्जन करने वालों का निहित स्वार्थ होता है। अत: गोवंश कत्ल से जिनको धनार्जन होता है वह उनका निजी स्वार्थ है तथा गोवंश हत्याबन्दी आन्दोलन चलाने से जिनको यश व धन प्राप्त होता है उनके लिये गोवंश हत्याबन्दी आन्दोलन निजी स्वार्थ है। इस प्रकार से गोवंश हत्या भी होती रहती है और आन्दोलन भी चलता रहता है।

भारत स्वतंत्र होने के बाद गुलाम भारत में मैं गोवंश हत्याबन्दी के आन्दोलन से जुड़ रहा हूँ। अनुभव यह आया है कि हम गोवंश के प्रति श्रद्धा रखने वालों के बीच ही प्रचार और संगठन करते रहे अथवा सरकार को कानून बनाने के लिये कहते रहे। हमने समाज के उस सामर्थ्यवान समुदाय से कभी सम्पर्क नहीं किया जो गोवंश के कत्ल से धनार्जन करता रहा है। आम जनता राजनीतिक दृष्टि से जिन पाँच भागों में बँटी है, इन पाँचों भागों में कुछ थोड़े से व्यक्ति हरेक विभाग में होते हैं जिनके लिये गोवंश हत्या उनके आर्थिक-सामाजिक और साम्प्रदायिक स्वार्थ से जुड़ी है। अत: सचमुच गोवंश हत्या बन्द करानी हो तो तीन कार्य करने होंगे।

(१) गोवंश कत्ल से जो धनार्जन करते हैं उनको यह समझना होगा कि कत्ल के बजाय पालन से अधिक धनार्जन हो सकता है। ऐसे व्यक्ति (उद्योगपति) तैयार करने होंगे जो गोपालन से धनार्जन कर रहे हैं।

(२) गोवंश हत्या से धनार्जन करने वालों की सामाजिक प्रतिष्ठा घटानी होगी तथा गोवंश पालन करने वालों की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ानी होगी।

(३) सरकार पर दबाव बनाने के लिये सामर्थ्यवान धर्माचार्यों, उद्योगपतियों, बुद्धिजीवियों, समाजसेवकों तथा राजनेताओं में से ऐसा समुदाय बनाना होगा जो अपने निजी स्वार्थ से थोड़ा अलग होकर गोवंश हत्या रोकने के लिये समर्पित हों। इनमें से कुछ ऐसे व्यक्ति तैयार हो जायेंगे जिनका निजी स्वार्थ गोवंश-पालन होगा।

भारत में अभी कोई ऐसा सामर्थ्यवान समुदाय नहीं है जिसका निजी स्वार्थ गोवंश पालन से जुड़ा हो। गोवंश हत्याबन्दी का आन्दोलन जिनका निजी स्वार्थ है वह समुदाय निकम्मा है अप्रभावी है। यह समुदाय तभी प्रभावी हो सकता है जब गोवंश हत्या जिनका निजी स्वार्थ है उसको समाज के सामने अप्रतिष्ठित करेगा।

यही वह नुस्खा है जिससे गोवंश हत्याबन्दी के लिये शक्ति प्राप्त हो सकती है।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृषि के गोवंश आधारित पंच संस्कार

श्री हुकुमचन्द साँवला
संयुक्त मंत्री
भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद्

वर्तमान समय के वैज्ञानिकों ने अब सिद्ध किया है जिस भूमि में केंचुआ (अर्थवर्म) और सूक्ष्म जीवाणु (माइक्रो आर्गेनिज्म-बैक्टीरिया आदि) अधिक होंगे वही भूमि ज्यादा कृषि उत्पादन दे सकती है। अभी तक वैज्ञानिक रासायनिक उर्वरक का सिद्धान्त बता रहे थे। यह सिद्धान्त अब अपूर्ण (अधूरा) साबित हो रहा है। भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने केंचुआ और सूक्ष्म जंतु का सिद्धान्त पाँच हजार वर्ष पहले से बताया है।

अब जमीन में कितना एन०पी०के० है, इसकी जाँच की आवश्यकता नहीं है। मुख्य और सूक्ष्म पोषक तत्त्वों की प्रयोगशाला में जाँच की जरूरत नहीं है। अब प्रयोगशाला में जमीन के अन्दर केंचुआ तथा सूक्ष्म जीवाणु की कितनी मात्रा है, की जाँच की आवश्यकता है। अब विकसित देशों (यू०एस०ए०, यूरोप आदि) में भी सेन्द्रिय पदार्थ (ह्यूमस) और सूक्ष्म जीवाणु की उपलब्धता की जाँच का प्रचलन हो रहा है। वे रासायनिक खाद तथा दवाइयों के डालने पर 'रोक' लगाने का सोच रहे हैं।

भारत के प्राचीन ऋषियों के अनुसार अधिकतम कृषि उत्पादन के लिए निम्न पंच संस्कार की आवश्यकता होती है।

१. भूमि संस्कार

जमीन, भूमि (मिट्टी) जीवंत होना चाहिए। निर्जीव भूमि अनउपजाऊ होती है। सजीव भूमि कृषि उत्पादन के लिए आवश्यक है।

अपनी भूमि सजीव बनाने के लिए वट वृक्ष के नीचे की पंद्रह किलो मिट्टी लेकर एक एकड़ भूमि में छिड़क देना चाहिए। वटवृक्ष की मिट्टी जीवंत है तथा करोड़ों जंतु और केंचुओं को पोषण देती है। इस मिट्टी के छिड़कने से भूमि जीवंत हो जायेगी। मिट्टी छिड़कने के बाद भूमि के ऊपर सूखे पत्ते, खरपतवार का ८ से १० सेमी० (३ इंच से ४ इंच) का मल्व कर देना चाहिए। सबसे अच्छा उपाय यह है कि जहाँ सुविधा हो, वहाँ ग्रीन मेन्यूरिंग भी कर सकते हैं। दो दल वाले बीजों से ग्रीन मेन्यूरिंग (हरी खाद) करना अच्छा है। इसके लिए मूँग, उड़द, सन आदि लगाकर इस हरा को ही जमीन में मिला देना चाहिए। वर्षा के बाद या सिंचाई के बाद हरी खाद युक्त जमीन में केंचुआ तथा सूक्ष्म जीवाणु का विकास जल्दी होता है। 'भूमि संस्कार' से संस्कारित भूमि से कृषि उत्पादन अधिक मिलता है एवं फल, सब्जी एवं अन्य फसलों को पोषण तत्त्वों की पूर्ति अपने आप होने लगती है।

हरी वनस्पत दस किलो, गोबर घोल मिलाय।
मिट्टी की पतली परत, ऊपर देय चढ़ाय॥
छोड़ केंचुये दीजिये, लगभग दिवस पचास।
सुन्दर खाद बनायेंगे, एकड़ भर के पास॥
किलो एक-इक लीजिये, गुड़, गोबर और तेल।
दिवस चार जीवाणु को, करन दीजिये खेल॥
मिला संग जल सींचिये, बाढ़े पैदावार।
हो जमीन उपजाऊ भी, करें रोग नहिं वार॥

२. बीज संस्कार : अमृतपानी

निरोगी पोषणयुक्त फसल के लिये बीज संस्कार करने से बीज की अंकुरण शक्ति में वृद्धि होती है। धान के रोपा या सब्जियों की पौध की जड़ों का संस्कार करना आवश्यक है। बीज संस्कार के लिये अमृतपानी बनाना आवश्यक है।

अमृतपानी बनाने की विधि

(अ) दस किलो देशी गाय का गोबर लेना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसमें २५० ग्राम गाय का शुद्ध घी डालकर उसे डंडे से या बिजली की मथानी से २ घंटे घुमाना है।

(ब) घुमाया हुआ घी युक्त दस किलो गोबर में ५०० ग्राम शहद डालकर फिर से चार घंटा हाथ या मशीन से घुमाना है।

(स) घी और शहदयुक्त दस किलो गोबर में दो सौ लीटर पानी डालकर फिर से चार घंटे घुमाना है।

यह हो गया अमृतपानी। इस अमृतपानी में बीज भिगोकर छाया में सुखाकर बोनी करना है। अगर बीज कड़ा हो तो गोबर तथा गौमूत्र के घोल की एक परत कर उसे छाँव में सुखा लें और अमृतपानी में डुबोकर उसकी बोनी करें। पौध को भी इसी अमृतपानी में डुबोकर लगाना है। इससे बीज का अंकुरण अच्छा होगा तथा फसल निरोगी रहेगी।

३. जल संस्कार

बारिश का या सिंचाई का पानी जमीन पर पड़ने के बाद दो सौ लीटर अमृतपानी को एक एकड़ भूमि में छिड़कना है। यह अमृतपानी जमीन के अंदर विद्यमान केंचुओं तथा सूक्ष्म जीवों की खुराक है। वटवृक्ष के नीचे की मिट्टी छिड़कने के बाद तीन-चार महीने में केंचुआ भूमि में बढ़ता है, परन्तु अमृतपानी छिड़कने से केंचुआ दस दिन में ही जमीन में दिखने लगता है।

सिंचाई वाली भूमि में सिंचाई के साथ भी अमृतपानी दे सकते हैं। केंचुआ जमीन के ऊपर स्थित ४ इंच (१० सेमी) सेन्द्रिय मल्व को सेन्द्रिय खाद (ह्यूमस) में बदल देता है। अमृतपानी द्वारा किए गए संस्कार से भूमि तुरन्त सजीव (जीवंत) हो जाती है और दीर्घकाल के लिए उपजाऊ उर्वरक बन जाती है।

अमृतपानी किसी भी फसल का अन्न नहीं है। वह केवल भूमि को सजीव करने का उत्तम माध्यम है।

४. वायु संस्कार-अग्निहोत्र यज्ञ

पर्यावरण शुद्ध तथा निरोगी रखने के लिए वायु संस्कार होना आवश्यक है। वेद में वर्णित अग्निहोत्र यज्ञ प्रात:काल तथा सायंकाल करने से वायु रोग तथा कीटाणु रहित होती है। इससे फसल तथा वनस्पति निरोगी होती है।

अग्निहोत्र यज्ञ की सामग्री—

(१) यज्ञ कुंड ताँबा से बना मिलता है या मिट्टी का भी बना सकते हैं।

(२) देशी गाय के गोबर का सूखा कंडा

(३) देशी गाय का शुद्ध घी।

(४) दो छोटी चम्मच चावल।

यज्ञ-पद्धति—(अ) दो चम्मच चावल में थोड़ा शुद्ध घी सभी चावल के दानों पर लगाना। (ब) सूर्योदय के दस मिनिट पहले यज्ञ कुंड, कंडा कपूर से जलाना। (स) अग्नियोग्य तरीके से जलने के बाद निम्न मंत्र बोलकर २ आहुति देना।

मंत्र—सूर्योदय के समय (प्रातःकाल)

१. सूर्याय स्वाहा सूर्याय इदम् न मम॥

यह मंत्र बोलकर घी युक्त चावल की प्रथम आहुति देना।

२. प्रजापतये स्वाहा प्रजापतये इदम् न मम॥

यह मंत्र बोलकर घी युक्त चावल की दूसरी आहुति देना।

सूर्यास्त के समय (संध्याकाल)

१. अग्नये स्वाहा अग्नये इदम् न मम॥

२. प्रजापतये स्वाहा प्रजापतये इदम् न मम॥

बोलकर आहुति देना।

इससे पर्यावरण शुद्ध होता है तथा फसल निरोगी होती है।

५. फसल-वनस्पति संस्कार

अपनी फसल को निरोगी रखने तथा अधिक उत्पादन के लिए रासायनिक उर्वरक तथा रासायनिक जंतुनाशक दवा का उपयोग बिल्कुल नहीं करना है। फसल संरक्षण के लिए पाँच लीटर देशी गाय का गोमूत्र और एक लीटर नीम तेल को १०० लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ में छिड़काव करना है। यह एक एकड़ के लिये फसल संरक्षक तथा फसल संवर्द्धक दवा हो गई। इससे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फसल निरोगी तथा पोषण युक्त मिलेगी और किसान को बाजार से कोई रासायनिक खाद तथा दवा खरीदने की जरूरत नहीं है।

भारत में गुजरात, महाराष्ट्र तथा कर्नाटक के हजारों किसान कई वर्षों से इसी पद्धति को अपनाकर खेती कर रहे हैं और अधिकतम कृषि उत्पादन ले रहे हैं। किसानों को ५० एकड़ के लिए मात्र एक देशी गाय रखना आवश्यक है।

अतः अपेक्षा है कि अपने देश के किसान भी इसी पद्धति को अपनाकर अच्छा उत्पादन लेंगे और कीटनाशक दवाइयों तथा रासायनिक खाद में होने वाले अनावश्यक खर्च से बचेंगे। इससे मनुष्यों को भी रासायनिक खाद तथा दवाओं से मुक्त स्वस्थ अनाज मिलेगा जिससे सभी निरोगी रह सकेंगे।

□□

भारत में २००५ के बाद दूध का भारी संकट

(पर्यावरण डाइजेस्ट)

कभी दूध की नदियों का देश कहे जाने वाले भारत में कम उत्पादकता और सही आपूर्ति न किये जाने से वर्ष २००५ के बाद दूध का संकट हो सकता है।

मुम्बई की इनिशियेटिव नामक संस्था ने हाल ही में भारत की दुग्ध अर्थव्यवस्था पर देश के विभिन्न भागों में सर्वेक्षण किया। इसमें कहा गया कि भारत इस समय दुग्ध उत्पादन के मामले में सबसे अग्रणी देश है लेकिन इजराइल और अन्य विकासशील देशों में प्रति दुधारू पशु दूध का उत्पादन भारत से करीब १२ गुना अधिक है, वाइट रिएलिटी नामक यह रिपोर्ट दिल्ली, कोलकाता, हैदराबाद, महाराष्ट्र के कई भागों तथा बिहार, तमिलनाडु तथा मुम्बई में लगभग एक हजार उपभोक्ताओं एवं ग्रामीणों से पूछताछ के बाद तैयार की गयी है। रिपोर्ट के अनुसार भले ही भारत दुनिया में सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन करता हो लेकिन कई बड़ी खामियाँ उजागर होती हैं। शहर में दुग्ध आपूर्ति वितरण के लिये तमाम कसरतें की जाती हैं लेकिन ग्रामीण इलाकों में सिर्फ १२१ ग्राम प्रतिदिन प्रति व्यक्ति दूध मिल पाता है। वर्ष २००५ के बाद से प्रतिवर्ष दो करोड़ टन आपूर्ति कम होने लगेगी। इसके पीछे अनुत्पादक पशुओं की बढ़ती संख्या, गाय, भैंस की ठीक से देखभाल न होना, चारे तथा पानी का बढ़ता अभाव और उपभोक्ता तक पूरी आपूर्ति न पहुँचना है। रिपोर्ट के अनुसार तीन वर्ष से कम आयु के ५० प्रतिशत बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। हालाँकि वियतनाम तथा श्रीलंका में भारत जितना दूध नहीं होता लेकिन वहाँ बच्चों को पर्याप्त दूध दिये जाने का भरपूर ध्यान रखा जाता है जबकि अपने देश में आधे बच्चों को भी पूरी तरह दूध नहीं मिलता। रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि पाँच से दस प्रतिशत उपभोक्ताओं में से परिवार के किसी न किसी व्यक्ति को खराब दूध मिलता है, जिससे वह बीमारी का शिकार हो जाता है। देश में दुग्ध डेयरियों की स्थिति दयनीय है। बहुत सी डेयरियाँ इसलिये चलती हैं क्योंकि डेरी मालिकों को प्रतिदिन उनके दूध का पैसा मिल जाता है। कम आमदनी के कारण आमतौर पर डेयरी मालिक साफ-सफाई पर भी ध्यान नहीं दे पाते।

दुग्ध व्यवसाय में महिलाओं के परिश्रम को सिर्फ सामाजिक प्रतिष्ठा या परम्परा की तरह देखा जाता है और उनकी मजदूरी को नहीं गिना जाता। इसके अलावा किसान अपने मवेशी को अच्छा और भरपूर आहार देने में भी कोताही करते हैं, इससे मवेशी बीमार और कमजोर हो जाते हैं, और पूरा दूध नहीं दे पाते। कई दुग्ध उत्पादक यह सोचते हैं कि दुधारू पशुओं की जितनी ज्यादा संख्या रहेगी उतना ही उत्पादन और फायदा होगा जबकि यह धारणा गलत है। पशुओं की संख्या में लागत का बोझ बढ़ता है, सर्वेक्षण के अनुसार देश में ६० प्रतिशत से अधिक दुधारु पशु ऐसे हैं जिन पर अधिक पैसा खर्च करना पड़ता है और इसके अनुपात में उत्पादन कम मिलता है। यह भी कहा गया है कि देश में हर साल एक लाख मवेशी बढ़ते हैं। सर्वेक्षण में यह आशंका व्यक्त की गयी है कि जलसंचयन की बढ़ती समस्या, टीकों की आपूर्ति में कमी और दुग्ध उत्पादकों में शिक्षा के अभाव से अगले पाँच से दस वर्षों में दूध की कमी की समस्या उत्पन्न होने वाली हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोसंवर्द्धन में रत सेवाव्रती

श्री सूर्यकान्त जालान

ग्रामीण विकास व गोशाला के माध्यम से गाँवों की तस्वीर बदल देने की कल्पना साकार करने वाले सूर्यकान्त जालान (कानू भाई) यूँ तो वाराणसी के ख्यातिनाम कपड़ा व्यवसायी परिवार से हैं। किन्तु गाय एवं गाँव की सेवा में वे स्वयं को भूल जाते हैं। एक बार जब वाराणसी में वध के लिए रेल से हावड़ा ले जाई जा रही गायें प्रशासन द्वारा छुड़ाई गईं तो यह समस्या आई कि इन गायों को रखा कहाँ जाए? क्योंकि कई गोशालाओं ने उन्हें रखने में असमर्थता जता दी थी। तब श्री कानू भाई आगे आए और उन्होंने गोशाला में गायों को रखने का प्रबन्ध करने की जिम्मेदारी ली। उन्होंने एक अन्य रामेश्वर गोशाला के प्रबंधकों से मिलकर इस गोशाला के संचालन व रखरखाव में सहयोग का आश्वासन देकर गायों को रखने का प्रबंध किया। बाद में उनके प्रयास से यह गोशाला उस क्षेत्र के विकास का केन्द्र बन गई। गोशाला की भूमि पर वैज्ञानिक ढंग से कृषि की गई जिसका लाभ आस-पास के ग्रामीणों को मिला। ग्रामीणों को गोपालन के लिए प्रेरित किया गया। चारा उत्पादन को बढ़ावा देने का सफल प्रयोग किया। गरीब व बेरोजगारों को गाय देकर दुग्ध उत्पादन का कार्य प्रारम्भ किया गया। उन्होंने गाँवों के विकास का स्वप्न साकार करने के लिए सुरभि शोध संस्थान की स्थापना की। इस केन्द्र के माध्यम से गोरस भण्डार, भोजनालय, सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, विद्या मन्दिरों की स्थापना और कृषि एवं ग्रामीण विकास अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई। कानू भाई का व्यक्तित्व अत्यन्त सरल व स्वभाव मृदु है। वे हर समय गाँव, किसान, गरीब के उत्थान की कल्पना करते हैं फिर उसे साकार करने के लिए जुट जाते हैं। उनके समर्पण का मात्र एक उदाहरण ही काफी है। वाराणसी के सबसे बड़े कपड़ा व्यवसायी घराने के इस सदस्य ने आवश्यकता पड़ने पर गाँव के लोगों द्वारा उत्पादित गायों के दूध को बनारस में बेचकर यह बताया कि गोपालन उनके रोजगार का माध्यम बन सकता है। उल्लेखनीय है कि सुरभि द्वारा वाराणसी में गोरस भण्डार संचालित किए जाते हैं। इन केन्द्रों पर गाँवों से गाय का दूध लाकर बेचा जाता है। गोपालकों को पराग व अन्य सरकारी डेरियों से अधिक मूल्य प्रदान किया जाता है। यह सब किसी लाभ के लिए नहीं, बल्कि ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध कराने व गोपालन को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। गाय के प्रति उनका समर्पण इतना अधिक है कि वे सुरभि के माध्यम से गोशाला प्रबंधकों का प्रशिक्षण शिविर चलाते हैं। गत दिनों उन्होंने लखनऊ में एक गोशाला के संचालन का दायित्व भी संभाल लिया है। उनके इस समर्पण को दृष्टिगत रखते हुए ही उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें राज्य गो सेवा आयोग में उपाध्यक्ष नियुक्त किया है। ग्राम विकास के कार्य में कानू भाई के साथ-साथ श्री शरदकुमार साधक भी सहयोग कर रहे हैं। श्री साधक आचार्य कुल के सदस्य हैं तथा विनोबाजी के साथ रहे हैं। वे सुरभि शोध संस्थान के संरक्षक हैं। सुरभि के साहित्य प्रकाशन का दायित्व भी उन पर है। साथ ही साथ ग्रामीण विकास की परिकल्पना में कानू भाई का मार्गदर्शन भी करते हैं। श्री साधक गोरक्षा आन्दोलन से जुड़े रहे हैं। (पांचजन्य से)

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामेश्वर गोशाला के दृश्य

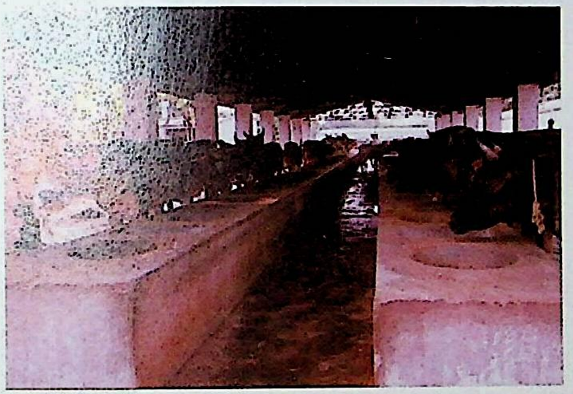

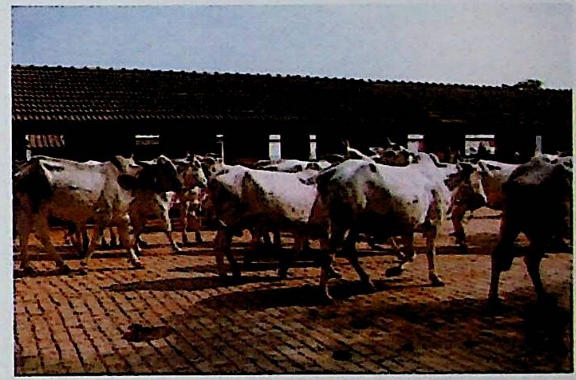

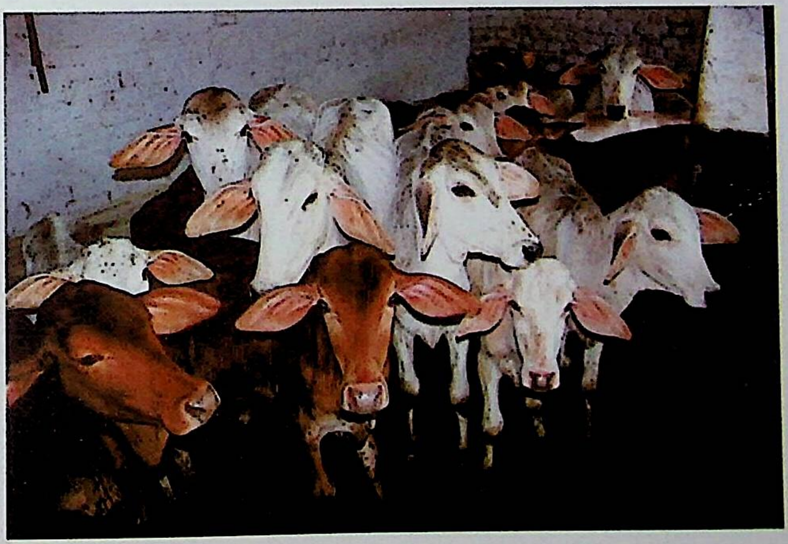

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामेश्वर गोशाला के दृश्य

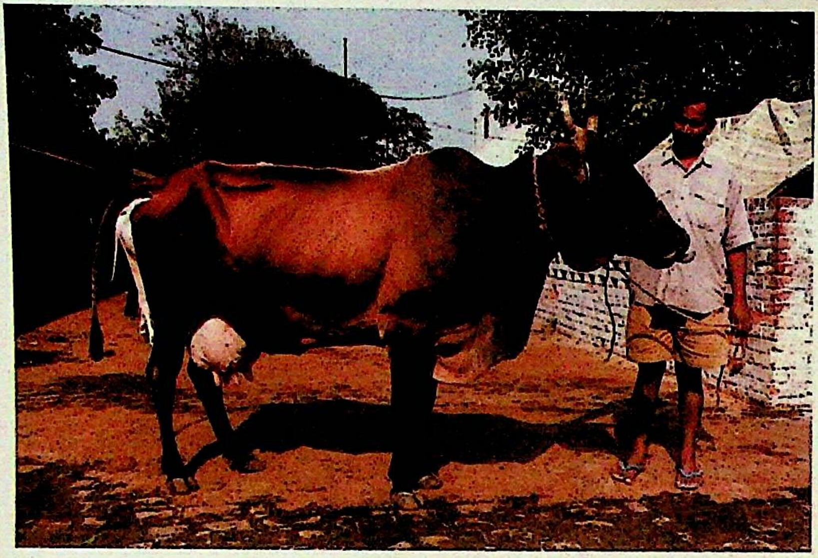

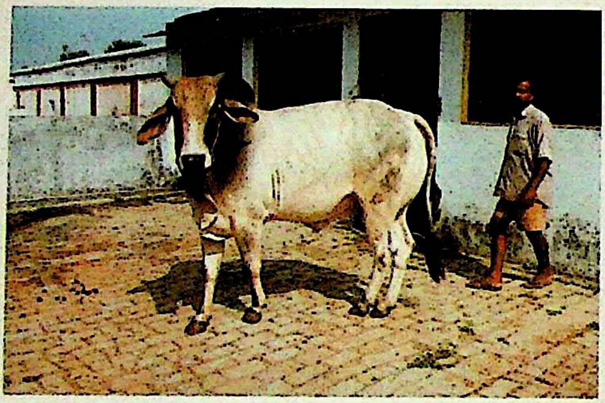

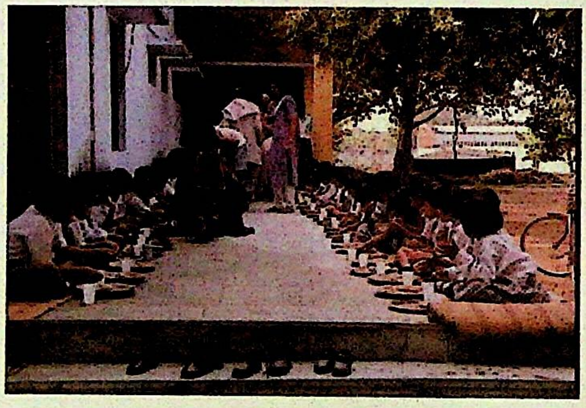

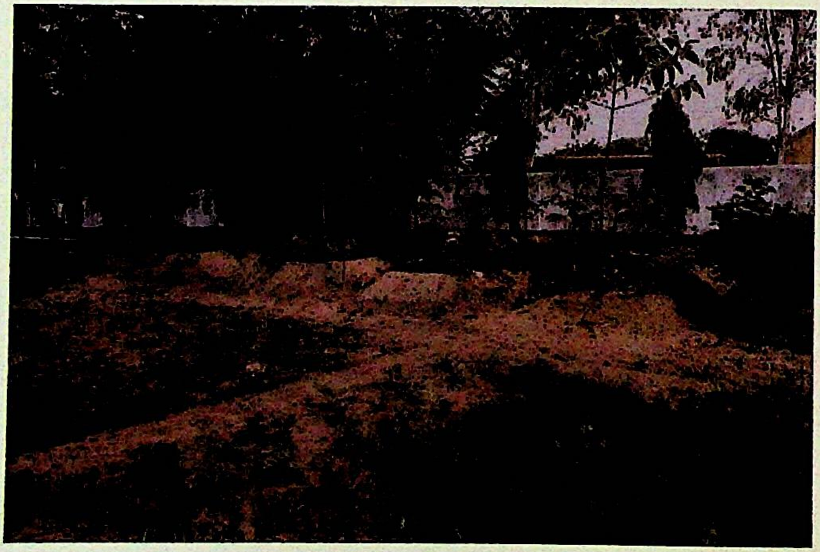

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकुल (बावन बीघा) गोशाला के दृश्य

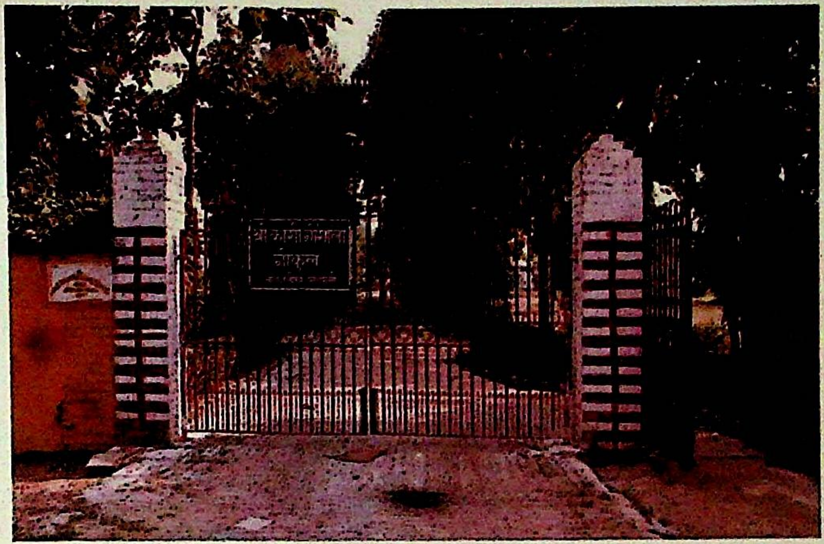

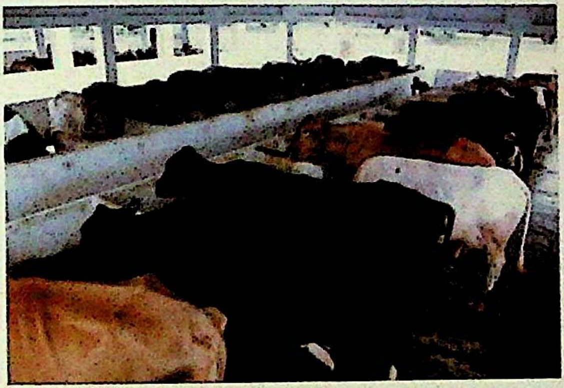

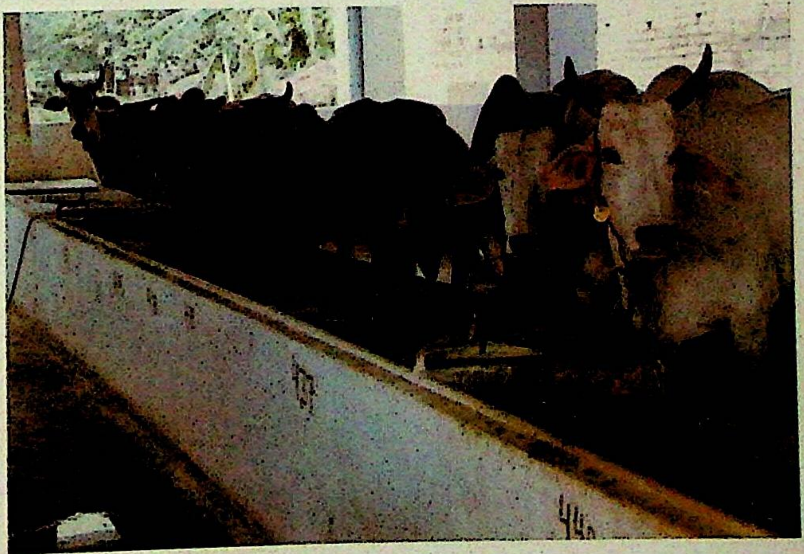

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In.Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकुल (बावन बीघा) गोशाला के दृश्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बूचड़खाने में तब्दील होता देश

श्री कुमार सर्वेश

दूरदर्शी लोग अनुमान लगाने लगे हैं कि भविष्य में पशु-चालित गाड़ियों की माँग बढ़ेगी और पशुओं का महत्त्व तेजी से बढ़ेगा पर उन वाहनों को खींचने के लिए देश में पशु नहीं मिल सकेंगे। १९८५ में राष्ट्रीय कृषि आयोग ने भी यह सभावना व्यक्त की थी। पशुओं की लगातार घटती संख्या को देखते हुए ही १९९४ में पशु कल्याण बोर्ड ने भारत सरकार को यह सुझाव दिया था कि पशु-मांस का निर्यात बंद कर दिया जाए। पर पशु- हत्या बिना किसी कारगर रोक-टोक के अबाध गति से आज भी जारी है और इसके लिए देश के कसाईखानों में रोज लाखों निरीह पशु धड़ल्ले से काटे जा रहे हैं। सरकारी आँकड़ों के मुताबिक आजादी से पूर्व देश में पशुओं की संख्या ४३८ थी। सरकार की मांस-निर्यात नीति की वजह से १९९१ तक यह संख्या घटकर मात्र २५७ रह गयी। यदि पशुओं की यह संख्या इसी गति से घटती रही तो संभव है कि सन् २००१ तक यह केवल प्रति हजार मनुष्य ५२ ही रह जाए। आजादी के बाद देश में कसाईखानों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है। आजादी के समय देश में इनकी संख्या मात्र ३०० थी, जो अब बढ़कर ३६ हजार से भी ऊपर पहुँच गयी है यानी इनकी संख्या में करीब १२० गुना वृद्धि हुई है। इस समय देश में ३६ हजार तो पंजीकृत कसाईखाने ही हैं।

कसाईखानों का 'पंजीकृत' होना भी कुछ सवाल खड़े करता है, जिनका जवाब देने में देश की सरकार को थूक निगलना पड़ता है। संविधान के अनुच्छेद ४८ (क) में स्पष्ट उल्लेख है कि राज्य देश के पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन, वन तथा प्राणियों की रक्षा का प्रयास करेगा। खासकर भैंस, भैंसा, गाय, बछड़ा व दुधारू तथा वाहक पशुओं की नस्ल संरक्षण एवं सुधार के लिए आवश्यक कदम उठायेगा और उनके वध को निषिद्ध करने हेतु प्रयास करेगा, पर संविधान के प्रति अपने इस दायित्व का पालन हमारी सरकारें कर ही कहाँ रही हैं। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि इतनी तेजी से बढ़ रहे पैमाने पर देश से किये जाने वाले पशु-मांस के निर्यात को भारत सरकार शीघ्र बंद करे। कसाईखानों को केवल 'पंजीकृत' कर देने से वे वैद्य तो हो नहीं जाते न ही उनके काम को गैर-पंजीकृत कसाईखानों से कम जघन्य, कम आनवीय व कम कानूनविरोधी ही माना जा सकता है। पशु-वध तो स्वयं में ही एक अमानवीय अपराध है और पशुओं के जीवनाधिकार का क्रूर विरोधी है तो फिर यह जघन्य कार्य करने वाले कसाईखानों को पंजीकरण लाइसेंस देने का क्या इरादा और क्या औचित्य है। क्या यह उस संविधान के साथ धोखाधड़ी नहीं है जिसके प्रति हम सब जवाबदेह हैं? अकेले अकबीर बूचड़खाने को हर साल डेढ़ लाख भैंसे तथा ७ लाख भेड़-बकरियाँ काटने का लाइसेंस प्राप्त है। पंजीकृत कसाईखानों के अलावा बेहिसाब अनधिकृत कसाईखानों में भारी संख्या में पशु काटे जाते हैं। हालत यह है कि देश के कसाईखानों में प्रतिदिन साढ़े तीन लाख से अधिक पशु काटे जा रहे हैं। सालभर में यह संख्या १३ करोड़ से पार हो जाती है। प्राप्त आकड़ों के मुताबिक देश के १० बड़े यांत्रिक कसाईखानों में रोज ढाई लाख से ऊपर पशु काटे जाते हैं। इन कसाईखानों में हर साल एक करोड़ से ऊपर गाय-भैंसों एवं ४ करोड़ से भी अधिक भेड़-बकरियों का वध किया जाता है। सबसे बुरी हालत बकरी व भेड़ों की है जिनकी संख्या तेजी से घटती जा रही है। अब तो इन कसाईखानों में खरगोश जैसे छोटे प्राणी भी बहुतायत में काटे जा रहे हैं। देवनार (मुंबई) का यांत्रिक कसाईखाना हर साल २५ लाख भेड़-बकरे, सवा लाख गोवंश तथा ६० हजार से अधिक भैंसे काटता है। इसी तरह कलकत्ता के बूचड़खाने में भी हर साल १२ लाख से ऊपर गोवंश काटे जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरकारी सूत्रों के मुताबिक देश में गोवंश १.४५ प्रतिशत, भैंस ३.४५ प्रतिशत, भेड़ ३२.५ प्रतिशत और बकरे-बकरियाँ ३५.५८ प्रतिशत की दर से लगातार काटे जा रहे हैं। अकेले अलकबीर बूचड़खाना ही हर साल १५ हजार मीट्रिक टन मांस निर्यात करता है। इसके अलावा औरंगाबाद का 'फ्रिगोरीफिको अलना लिमिटेड' २४ हजार मीट्रिक टन, अलीगढ़ का 'हिन्द इंडस्ट्रीज' २५ हजार मीट्रिक टन और दिल्ली, महाराष्ट्र व आंध्र प्रदेश स्थित 'अलना एण्ड सन्स प्रा०लि०' तो ४५ हजार मीट्रिक टन से भी अधिक मांस निर्यात करता है। इसके अलावा देश में अवैध रूप से चल रहे हजारों बूचड़खानों से किये जाने वाले पशु-मांस के निर्यात का तो कोई हिसाब ही नहीं है। चेन्नई स्थित लेदर इंस्टीट्यूट के मुताबिक १९५१ में देश में प्रति एक हजार व्यक्ति ४३० गाय-बैल, १२० भैंस-भैंसे, १४१ बकरा-बकरी एवं १०८ भेड़ें थीं। संस्थान का कहना है कि यदि पशुओं का वध इसी प्रकार जारी रहा तो सन् २००१ में प्रति एक हजार व्यक्तियों पर ११० गाय-बैल, ६० भैंस-भैंसे, ३० बकरा-बकरी तथा ३० भेंड़े रह जाएँगी। देश में लगातार बढ़ते बूचड़खानों को देखते हुए इस संस्थान का कहना है कि अगले तीन महीनों बाद भारत दुनिया के सबसे अधिक बूचड़खानों वाले देश का दर्जा पा जाएगा यानि सन् २००० में यह देश एक विशाल बूचड़खाना होगा? बढ़ते बूचड़खाने और घटता पशुधन सीधे-सीधे आम आदमी के जीवन से जुड़ता है। एक तरफ तो जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। ऐसे में खाद्य सामग्री की किल्लत होना स्वाभाविक है। दूसरी तरफ पशुधन की कमी दूध, दही, घी, मक्खन के स्रोतों को तो बंद कर ही देगी। क्योंकि वन कटाव के चलते पहले ही धन की कमी से गरीब आदमी को जूझना पड़ रहा है। दूसरी तरफ गोबर आदि के मार्फत से ईंधन के उसके पास जो साधन थे वह भी छिनते जा रहे हैं, साथ ही ग्रामीण तथा पिछड़े इलाकों में गाय, भैंस या बकरी पालने की अनिवार्यता भी लगभग समाप्त होती जा रही है। एक तो लोगों के पास जमीन तथा खेत पर्याप्त मात्रा में नहीं रह गदे हैं। या फिर जानवर पालने की स्थिति में वे नहीं हैं।

संविधान के अनुच्छेद ५१ (क) एवं (घ) में यह स्पष्ट उल्लेखित है कि भारत के हर नागरिक का यह मूल कर्त्तव्य होगा कि वह प्राकृतिक संपदा जिसमें वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, का संरक्षण एवं संवर्धन करेगा तथा प्राणी-मात्र के प्रति दयाभाव रखेगा पर कितनी लज्जाजनक बात है कि जिस देश का दयाभाव पर आधारित संविधान पशुधन के संरक्षण व संवर्धन की बात करता हो, वह देश अगले कुछ ही दिनों में दुनिया के सबसे अधिक कसाईखानों वाला देश होने का खिताब पाने जा रहा है। फिलहाल तो इससे यही जाहिर होता है कि दया, अहिंसा व प्रेम से उर्वर रहने वाला यह देश नयी सदी में पशुधन के मामले में एक बंजर देश कहलाने का भी दर्जा हासिल करने वाला है।

□□

प्रतिदिन गोग्रास निकालना हमारी सनातन परम्परा है।

Nand Lal Bhagwan Das
Jan Sewa Trust

Plot No. 73, Jawahar Nagar Extension, Bhelupura, VARANASI
Phone : 320113 (O), 276230 (R)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत के लिये जीवन-मंत्र

श्री राधाकृष्ण बजाज
गोपुरी-वर्धा-४४२००१

वैभवसम्पन्न भारत पर सदियों से आक्रमण होते रहे हैं। आक्रामक विजित क्षेत्र से लूटपाट करके जाते रहे। सत्ताकांक्षी मुगलों ने विजय के बाद वैभव का भोग यहीं रहकर करना तय किया। दो-तीन सौ वर्षों के उनके शासन का पराभव धन के लालची अंग्रेजों के हाथों से हुआ। अंग्रेज व्यापारी बनकर आए पर धन-सम्पदा की लूट के लिये शासन हथिया लिया और विकास का प्रलोभन देकर हर योजना लूट की बनाई, आर्थिक दृष्टि से भारत को खोखला कर दिया।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद भी विदेशियों की लूट बंद नहीं हुई, अंग्रेजों के कानून, उन्हीं की शासन-व्यवस्था और अंग्रेजियत के रंग में रँगे नेता और नौकरशाही के कारण विदेशियों की लूटमार निरन्तर बढ़ रही है जिसमें भारत का जनमानस भी जाने-अनजाने लुट जाने को गौण करता जा रहा है। गुलामी का शिकंजा पुनः कसता जा रहा है। जहाँ महात्मा गांधी, राजनैतिक आजादी की पूर्णता के लिये चरखे को प्रतीक बनाकर, आर्थिक स्वावलम्बन-समृद्धता-आजादी की ओर ले जाना चाहते थे, वहीं लुभावने पश्चिमी-औद्योगिक क्रान्ति और विकासवाद के नारे से लाखों लाख लोग बेरोजगार होते जा रहे हैं और आज पुनः भारत विदेशी ऋणों का मोहताज और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का गुलाम होता जा रहा है। जहाँ गांधीजी ग्रामस्वराज्य द्वारा सत्ता का विकेन्द्रीकरण, न्यूनत्तम शासन का सपना सँजो रहे थे, सत्ता का केन्द्रीकरण और उससे उत्पन्न भ्रष्टाचार, सत्ता-पलट की समस्या से घिरता जा रहा है।

इन विकृतियों से उबरने के लिए, सच्ची स्वतंत्रता की स्थापना के लिए, आर्थिक आजादी के लिए पाँच मंत्र अपनाने होंगे—

१. भारतीय दंड संहिता को जला दो

सर्वप्रथम भारतीय दंड संहिता (I.P.C.) को आग लगा देनी होगी। आज पुलिस की सहायता/साझे/साँठगाँठ/प्रश्रय/लापरवाही/अक्षमता से अपराध होते हैं। सत्य नहीं, रेकार्ड पर सत्य, कानून के शब्दों के अनुसार सत्य को सत्य माना जाता है। विद्यमान दूषित कानूनी-न्यायालयीन प्रक्रिया से अपराधी या तो अपराधी घोषित ही नहीं हो पाता या छूट जाता है। न्याय नहीं मिल पाता तो उग्रवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार पनपता है। डाकू समस्या का भी कारण यही है। इसलिए न्यायालयों का लक्ष्य सत्यनिष्ठ न्याय हो, असत्य सबसे बड़ा अपराध माना जाए। न्याय विलंबित नहीं हो।

२. बहुमत के निर्णय को गुण्डा-निर्णय माना जाए

'सर्वेशाम अविरोधे न, ब्रह्म कर्म समारथे', अविरोध से होने वाला कोई कार्य शुभकार्य है ऐसी शास्त्र की आज्ञा है। इसलिए ग्रामसभा से लगाकर संसद तक सभी राजनैतिक-सभाओं में, सभी सामाजिक संस्थाओं में आम-सहमति से निर्णय करने की पद्धति अपनाई जाए। इससे चुनावी अपव्यय, चुनावों में हिंसा टलेगी। स्वार्थगत-दलगत राजनीति नहीं चलेगी। सरकारों का बार-बार बदला जाना नहीं होगा, स्थायित्व आएगा। देश-प्रदेशों के टुकड़े नहीं होंगे।

३. मैकाले की शिक्षा-पद्धति को गंगा में बहा दें

इससे शासन तंत्र नें सुख-सुविधा की इच्छाकामना लिए करोड़ों अनुपयोगी युवक-युवती तैयार हो रहे हैं, जिनमें सृजनात्मकता/मौलिकता/चारित्रवान देशभक्ति का तो पूर्णतः अभाव होता है। कुछ जानकारियों को दिमाग में एकत्र करवा दिया जाता है। इनमें आत्मविश्वास और कुछ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर-गुजरने का भाव नहीं होता है। यदि शरीर में कुछ शक्ति भी हो तो विध्वंस में लग रही है, भोग में ही जा रही है। इनके हाथ में यदि शस्त्र भी दे दिए जाएँ तो आत्मविश्वास के अभाव में ये चला नहीं सकते। मातृभाषा के प्रति भी इन्हें प्रेम नहीं है।

यदि मैकाले की शिक्षा-पद्धति को बदल दें तो बुनियादी बहुआयामी, भारतीय संस्कृति आधारित शिक्षा पद्धति के कारण नवमानव बलवान, बुद्धिमान, शीलवान और देशभक्त नागरिक होगा।

४. केन्द्रीय अधिकार विकेंद्रित हों

मूल और मुख्य अधिकार ग्रामसभाओं में निहित हों। केवल ग्रामसभा ही ऐसा संगठन है जो भगवान्-निर्मित है बाकी सरकारों के सभी संगठन चुने हुए प्रतिनिधि याने मुनीमों द्वारा बने हैं। गाँव में रहने वाला १८ वर्ष का कोई भी पुरुष-स्त्री स्वत: ग्रामसभा का सदस्य और गाँव की प्रत्येक व्यवस्था करने, समस्या सुलझाने का अधिकारी हो जाता है।

अधिकाधिक अधिकार गाँवों की सभाओं के पास रहें, ऊपर के प्रतिनिधि/अधिकारी/न्यायाधीश का उसमें हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। राज्य और केन्द्र की सरकारों के पास न्यूनतम अधिकार होना चाहिए, शेष सब स्वशासन से, आत्मानुशासन, न्यायनीति और धर्माचरण के अनुकूल चलना चाहिए।

इससे गाँवों की अर्थव्यवस्था भी स्वावलम्बी और सुदृढ़ होगी। सच्ची राजनैतिक और आर्थिक आजादी की नींव पड़ेगी। सबको रोजी-रोटी सुलभ होगी, कोई बेरोजगार नहीं रहेगा।

५. रासायनिक खाद, कीटनाशक समाप्त हो, भूमि-रक्षा, गोरक्षा से मानवरक्षा होगी

रासायनिक खाद और जहरीले कीटनाशकों से एक ओर तो भूमि की उर्वराशक्ति घट रही है और दूसरी ओर अनाज, फल-सब्जी, भूमि-जल-हवा सभी प्रदूषित हो रहे हैं। प्रदूषित पर्यावरण और जहरीली उपज के भोजन से सैकड़ों रोग, प्राणघातक रोग हो रहे हैं, जिसके उपचार हेतु डॉक्टरों-दवाइयों-अस्पतालों की व्यवस्था पर अरबों-खरबों रुपयों का व्यय हो रहा है।

रासायनिक खाद और यंत्रों के द्वारा कृषि के कारण गोवंश निरर्थक होता जा रहा है और कत्लखानों में कत्ल होता जा रहा है। आरोग्यवर्द्धक गोरस का नितान्त अभाव हो रहा है।

इसलिए रासायनिक खाद के स्थान पर स्थानीय गाय के गोबर-गोमूत्र से बनी खादों, गोमूत्र से बनी फसल-रक्षक-औषधियों, गोमूत्र-आधारित मानवौषधियों, जड़ी-बूटियों का प्रयोग होना चाहिए। इसके कारण भूमि में पाए जाने वाले मित्रकीटों, उर्वराशक्ति को बढ़ाने वाले, पानी को जमीन में जमा करके रखने वाले केंचुओं का नाश होता जा रहा है। गोबर खाद से इन मित्रकीटों की रक्षा होती है।

गोपालन, गोसंवर्धन से मनुष्यों को आरोग्यवर्धक गोरस और कृषि में अति-उपयोगी बैल मिलेंगे। कृषि का अनुपयोगी कचरा, घास-भूसा ये पशु खा लेते हैं। इनसे निकला कचरा गोबर-गोमूत्र पुन: खेतों में जाकर उनकी उर्वरता बढ़ जाती है। रासायनिक खाद और ट्रैक्टर ने इस नैसर्गिक चक्र को तोड़ दिया है। इसे पुन:स्थापित करना होगा। इससे सबको रोजी-रोटी भी मिलेगी। भूमिरक्षा, गोरक्षा होगी, भूमिरक्षा से वृक्षरक्षा और वनरक्षा होगी। पर्यावरण संतुलित होगा और हमारे देश की समृद्धि बढ़ेगी। किसान का खर्च बचेगा, आत्मदाह से बचेगा। गुलामी की जड़ें कटेंगी, सच्ची आजादी आवेगी।

□□

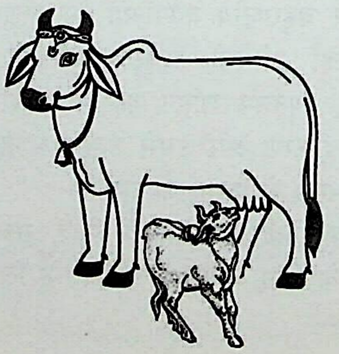

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुधारू पशुओं का प्रबन्धन

श्री जितेन्द्र सिंह

देश में लगभग ७५ प्रतिशत छोटे एवं मझोले किसान हैं, जो शुरू से ही पशुपालन एवं खेती में सामंजस्य बनाकर जीविकोपार्जन करते चले आ रहे हैं, लेकिन बदलते परिवेश में किसानों में इसकी जागरूकता कम होती चली जा रही है। फलस्वरूप कृषि एवं पशुपालन दोनों की उत्पादकता में गिरावट आ रही है। पशुपालन की वैज्ञानिक आधुनिक तकनीक को अपनाकर आज की खाद्य प्रदूषण जैसी समस्या से काफी हद तक छुटकारा मिल सकता है। अपने देश में छोटी कृषि जोत होने के कारण यह संभव नहीं हो पाता कि आम किसान महँगे उपकरणों एवं रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कर सके। कम लागत में सीमित भूमि से ही अधिकतम कृषि उत्पादन करना उनके लिए एकमात्र विकल्प है।

पशुओं की देखभाल—जन्म से लेकर डेढ़ वर्ष तक पशुओं के शरीर की वृद्धि होती है. इस अवधि में यदि समुचित पोषण न दिया जाए तो इसकी क्षतिपूर्ति जीवन में कभी भी नहीं होती है। बच्चे के जन्म के तुरन्त बाद तथा एक घंटे के अन्दर उन्हें खीस पिला देने से विभिन्न रोग जैसे निमोनिया, दस्त, बुखार इत्यादि से बचाव होता है। फलस्वरूप मृत्युदर में भी कमी आती है। कम से कम चार दिनों तक बच्चे को खीस अवश्य पिलानी चाहिए। जन्म से एक सप्ताह के अन्दर इन्हें कृमिनाशक औषधि पिलाने से कृमि के प्रकोप से बचाया जा सकता है। जन्म के पश्चात् ही बच्चों की नाभी में टिंचर आयोडीन लगा देना चाहिए जिससे संक्रमण की आशंका नहीं रह जाती। कृमिनाशक औषधि का उपयोग प्रत्येक माह में एक बार करना चाहिए। तीन माह के पश्चात् बच्चों को हरा चारा और दानों का मिश्रण आधा किलो से एक किलो प्रतिदिन देना चाहिए। संक्रमण रोगों से रोकथाम के लिए छह माह उम्र के पश्चात् प्रतिवर्ष टीकाकरण अवश्य करना चाहिए।

गाभिन पशुओं की देखभाल—जब गाय, भैंस या ओसर के ब्याने के दो माह शेष रह जाएँ तो उन्हें अतिरिक्त पोषण एवं देखरेख की आवश्यकता पड़ती है। गर्भस्थ शिशु के समुचित विकास एवं अगली ब्यान व समुचित दुग्ध उत्पादन के लिए डेढ़ से ढाई किलोग्राम दानों का मिश्रण अथवा २५-३० किग्रा० हरे चारे की आवश्यकता होती है। गाभिन पशु का आवास साफ-सुथरा नमी रहित एवं फर्श फिसलनरहित होना चाहिए। गाभिन ओसरो के थनों में हाथ सहलाना चाहिए जिससे ब्याने के पश्चात् दूध दुहने के समय न करें। जब ब्याने के १-२ दिन शेष रह जाएँ तो उसकी सतत निगरानी करनी चाहिए ताकि किसी भी प्रकार की प्रसव कठिनाइयों से बचाया जा सके। ब्याने के दो सप्ताह तक पाचन एवं विरेचक आहार जिसमें दलिया एवं गुड़ का शीस सम्मिलित हो, देना चाहिए। तत्पश्चात् आहार में खली का समावेश करना चाहिए। दुधारू पशुओं की देखभाल दुधारू गाय एवं भैंस से अधिकतम दुग्ध उत्पादन प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि उन्हें वांछित मात्रा में संतुलित आहार दिया जाए, आहार का निर्माण पशुपालकों को स्वयं ही करना चाहिए जिससे बाजार में बिकने वाले महँगे और अनिश्चित गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थों के क्रय करने से बचा जा सकता है। पशु के आहार में ४० ग्राम जौ या गेहूँ की दलिया, ४० भाग खली या सोयाबीन की दलिया, १५ भाग गेहूँ का चोकर या चावल का कना, ३ भाग निजर्मीकृत हड्डी चूर्ण तथा २ भाग साधारण नमक का समावेश होना चाहिए।

इस मिश्रण की एक किलोग्राम मात्रा प्रति दो से ढाई किलोग्राम दुग्ध उत्पादन की दर से प्रतिदिन प्रति पशु देना चाहिए। साथ ही डेढ़ से दो किलोग्राम दाने का मिश्रण शरीर के रखरखाव के लिए भी देना चाहिए। मोटे चारे के रूप में ५-१० किग्रा० भूसा तथा १०-१५ किग्रा० हरा चारा भी देना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्याने के दो-तीन माह बाद पशु को पुनः गाभिन करा देना चाहिए ताकि १० माह दूध देने के बाद २ माह का शुष्क काल अवश्य रहे और वर्ष के अन्त तक पशु से पुनः बच्चा प्राप्त हो जाए। पशु के पानी की चरही में यदि हर सप्ताह कुछ चूने का पाउडर घोल दिया जाए तो ऐसे पानी को पीते रहने से पशुओं में थनैला रोग कम होता है।

प्रजनन सम्बन्धी देखरेख—सामान्य रूप से पशु ब्यान के बाद २-३ माह में गर्भित हो जाने चाहिए। गर्भ धारण न होने की स्थिति में पशु पुनः २१ दिन बाद गर्मी में आता है। कुपोषण के कारण प्रजनन समस्याओं का उपचार आधार में पर्याप्त प्रोटीन खनिज लवण, विटामिन आदि का समावेश करके किया जा सकता है। पशु को गर्मी में लाने के लिए लुगाल्स आयोडीन का जलीय घोल जननांग के ग्रीवा में डाला जाता है।

□□

एक और स्वतंत्रता संग्राम की आवश्यकता

अंग्रेज भारत में अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति की पूरी व्यवस्था कर अपने मानसिक व बौद्धिक उत्तराधिकारियों को सत्ता हस्तान्तरित करके चले गये। उन्हीं के चलाए राजतंत्र, अर्थतंत्र, शिक्षातंत्र, चिकित्सा पद्धति, न्यायप्रणाली, कानून, कृषि नीति, वाणिज्य नीति आज भारत में अपने निकृष्टतम रूप में फल-फूल रही है। **लोककल्याण की मंगलमयी भावना से शून्य इन सारे विदेशी तंत्रों तथा उनसे उद्भूत दुःख-दैन्य से त्रस्त एवं ऋण-भार से लदा भारत, आज लुटा हुआ, ठगा हुआ, विवश दिखाई दे रहा है। स्वार्थी राजनेता, अफसर और अपराधी मिलकर समाज का शोषण कर रहे हैं।** आज तो भ्रष्टाचारियों, जमाखोरों, कालाबाजारियों, आतंकवादियों, धोखाधड़ी करने वालों, बलात्कारियों, तस्करों, लुटेरों तथा हत्यारों का बोलबाला है। **गोहत्या कानूनन बन्द होते हुए भी ३ करोड़ गोवंश इस देश में प्रतिवर्ष नृशंसतापूर्वक मारा जा रहा है। एक और स्वतंत्रता संग्राम की आवश्यकता है।** हमें विदेशी तंत्र का बहिष्कार कर स्वदेशी तंत्र स्थापित करने हैं जिनमें सभी को पौष्टिक आहार, उपयुक्त वस्त्र एवं आवास, अपनी योग्यता के अनुरूप राष्ट्र के लिए कार्य करने के लिए अवसर, भारतीय पद्धति की चिकित्सा, वास्तविक न्याय एवं जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा मिल सके। लोककल्याण ही सारे तंत्रों का उद्देश्य हो।

Rathi Marble Industries

Dealers in : Marble, Granite & Cota Stone

Office

B-38/1, Mahmoorganj Road, (Opp. Birla Upawan)

VARANASI-221010 • Phone : (Office) 360024, (Resi.) 360242

Factory : B. 37/200, Birdopur, VARANASI-221010

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत में गोपालन की पृष्ठभूमि व प्रबन्धन की सम्भावनाएँ

प्रो० रामचन्द्र सिंह

गाय और अध्यात्म

सम्पूर्ण जीवधारियों में गाय का एक विशिष्ट स्थान है। ज्ञान और विज्ञानसम्मत यह मान्यता है। ज्ञान और विज्ञान के पश्चात् अध्यात्म तो उपस्थित हो ही जाता है। इस प्रकार ज्ञान, विज्ञान और अध्यात्म की तीनों बराबर रेखाओं के सम्मिलन से जो जैविक त्रिभुज निर्मित होता है, उसे गाय कहते हैं। त्रिकालग्य ऋषि व मुनियों ने गाय को साक्षात् पृथ्वी स्वरूप बतलाया है। जंगम जगत् के भार को अपने स्वरूप में जो समेटे हुए है तथा जंगम जगत् के सम्पूर्ण गुणों की जो जीवित खान है, उसका नाम गाय है। भारत के वैदिक ऋषियों व मुनियों ने पृथ्वी स्वरूपक को गाय तथा पृथ्वी धारण करने वाले को शेषनाग बतलाया। गाय और नाग की प्रजातियाँ नन्दनीय बतलायी गयीं। इन दोनों के पारस्परिक संबंधों की याद ''नाग पंचमी'' के पर्व के रूप में संपन्न होती है। नागपंचमी के पर्व पर गाय के दूध को नाग देवता के लिए पूजन के रूप में समर्पित किया जाता है। अनादि काल से गाय और नाग की स्मृति नाग पंचमी में जुटी हुई है और वह वर्तमान में भी प्रवहमान है। ऋषियों व मुनियों के ज्ञान से नाग और गाय का समीकरण नागपंचमी के रूप में प्रगट हुआ। लेकिन ग्रेट ब्रिटेन के महान् जीवविज्ञानी प्रो० जे०वी० हाल्डेन ने तथ्यों के ऊपर प्रमाणित किया कि सुदूर अतीत में गाय और नाग एक ही प्रजाति के थे। प्रो० हाल्डेन के अनुसार पृथ्वी के भीतर जब कोयला बनने की प्रक्रियायें प्रारम्भ हुईं तब नाग और गाय के जातीय सम्बन्धों में अंतर उपस्थित हो गया। लगभग 20 करोड़ वर्ष पीछे की घटना है। इस प्रकार के तथ्य आधुनिक ब्रिटिश वैज्ञानिक हाल्डेन ने स्थापित किया है। इस स्थापना में भारत के वैदिक ज्ञान और पश्चिम वैज्ञानिक खोज की एकरूपता दिखलायी पड़ती है। वस्तुतः विकासवादी, जीव वैज्ञानिक और आधुनिक तथ्यान्वेषी प्रो० हाल्डेन के इस मत पर गो-रक्षक संगठनों को विशेष रूप से ध्यान देने और दूसरों को दिलाने की जरूरत है। क्योंकि गाय के बिन्दु पर प्राचीन वैदिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान एकमत हैं। नाग देवाधिदेव भगवान् शंकर के आभूषण हैं और गायपुत्र वृषभ भगवान् शंकर का वाहन है। इस सृष्टि के आधार रूप में भगवान् शंकर का पारिवारिक प्रतीक भी कम रहस्यपूर्ण नहीं है। क्योंकि भगवान् शंकर ने अपना वाहन गायपुत्र नंदी को बनाया और आभूषण नाग को रखा। उनके पुत्र गणेशजी ने अपना वाहन चूहा बनाया। दूसरे पुत्र स्वामी कार्तिकेयजी ने अपना वाहन मोर को बनाया। भगवती पार्वतीजी ने अपना वाहन सिंह को बनाया। ये सब के सब पारस्परिक द्वेष वाले जीव शंकर परिवार के सदस्य हैं। पारस्परिक भोज्य भी हैं। लेकिन शंकर की महिमा सब के सब एक स्थल पर रहते हुए और द्वेष बुद्धि के कारण भी समायोजनपूर्वक संतुलन में रहते हैं। इनके संतुलन के शेषांश को ही पृथ्वी का धारणकर्ता माना जाता है। उल्लेख्य है कि भगवान् शंकर का वाहन नंदी और उनका आभूषणस्वरूप ''नाग'' प्रत्येक स्थिति में अवध्य रहते हैं। शंकर के महाप्रलय तांडव में भी नंदी (बैल) व नाग सुरक्षित रहते हैं। यह मान्यता यद्यपि भारतीय चिंतन पर आधारित है, तथापि प्रो० हाल्डेन के वैज्ञानिक तथ्यों की रोशनी में जब इस पर विचार होगा तो स्पष्ट हो जायेगा कि गाय और नाग सनातन काल में एक प्रजाति के थे और सृष्टि के प्रारम्भ से ही सृष्टि रचयिता भगवान् शंकर के सान्निध्य में रहते हुए मानवीय समाज में इनका आगमन हुआ। गायों और नागों की पूजा अत्यंत श्रद्धा के साथ भारत में प्रारम्भ हुई। मानवीय समाज ने ज्ञात और अज्ञात सभी कारणों के संदर्भ में गाय और नाग की अभ्यर्चना प्रारम्भ की। कमोवेश रूप से इसे आज भी नागपंचमी के रूप में मनाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बीस करोड़ वर्ष पूर्व हुए गाय व नाग के संबंध विच्छेद का प्रतीक पर्व नागपंचमी है। नाग को गाय का दूध पिलाकर सम्बन्धों की स्मृति जगायी जाती है। यह जागरण कर्मकांड है। तथ्यों की अनभिज्ञता भी इसमें है।

वर्तमान अध:पतन और गाय

वैसे प्राचीन ग्रन्थों में अनेकों बार ऐसी घटनाओं का वर्णन है, जिनसे पता लगता है कि विक्षुब्ध पृथ्वी गाय का रूप धारण करके परमेश्वर के पास न्यायार्थ उपस्थित हुई। लेकिन उन सभी घटनाओं में गाय एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत हुई है। सीधे-सीधे गाय पर संकट उस समय उपस्थित हुआ जबकि राजा परीक्षित के स्वर्णमुकुट में राजा परीक्षित की ही गलती के कारण कलियुग ने प्रवेश कर लिया। उल्लेख्य है कि छद्म वेष में कलियुग राजा परीक्षित के ही सम्मुख गाय की हत्या करने जा रहा था। राजा ने गाय की रक्षा की। लेकिन कलियुग के गिड़गिड़ाने के कारण उसे स्वर्ण में रहने की अनुमति दे दी। उसी समय के आस-पास परीक्षित को शापवश तक्षक नाग के कारण मृत्यु को वरण करना पड़ा। परीक्षितपुत्र राजा जनमेजय ने नागों को नष्ट करने के लिये यज्ञ किया। ये घटनायें ईसा से ५ हजार वर्ष पूर्व की हैं। गाय का बन्धन स्वर्ण से हो गया। नाग का बन्धन नागसूय यज्ञ से हो गया। दोनों शाश्वत प्रतीक समय के सन्दर्भ में संकटग्रस्त हो गये।

यद्यपि राजा परीक्षित और राजा जनमेजय के पूर्व और अनेक शताब्दियों पश्चात् तक इस देश में पूर्ण ब्रह्म भगवान् कृष्ण का आदर्श व व्यवहार गाय के प्रति उसी प्रकार से जागृत रहा है, जैसा कि भगवान् कृष्ण मथुरा, वृन्दावन व मधुवन में प्रदर्शित किये थे। लेकिन गाय को स्वर्ण से बाँधने के पश्चात् गाय को गोश्त के रूप में कालान्तर में बाँध दिया गया। यह अध:पतन की पराकाष्ठा है। परतन्त्र भारत का अनेक शताब्दियों का इतिहास इसका क्रूर साक्षी गोमांस का निर्यात व्यापार फल-फूल रहा है। गोमांस का आन्तरिक उपभोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कत्लखानों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है तथा कत्लखानों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। स्वतन्त्र भारत में स्वतन्त्रता के प्रारम्भिक दौर में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ० सम्पूर्णानन्दजी ने गोरक्षार्थ सार्थक कदम उठाया था। लेकिन ऐसा लगता है कि कलियुग की सभ्यता ने गोवंश के विनाशार्थ कमर कस ली है। अत्यन्त दुख का विषय है कि स्वतन्त्र भारत में आज तीन हजार से कुछ अधिक कत्लखाने अहर्निश गायों और बैलों तथा कुछ अन्य पशुओं की हत्या कर रहे हैं। मुम्बई के देवनार कत्लखाने में लाखों-लाखों की संख्या में गाय व बैलों की हत्या की जा रही है। कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद, केरल और मुम्बई में आधुनिक उपकरणों व मशीनों के द्वारा अबाध गति से गाय-बैलों की हत्यायें हो रही हैं। लेकिन देश के सभी हिस्सों में खुले या छिपे रूप से गोहत्या जारी है। लगभग सभी बड़े होटलों में गाय के गोश्त का प्रबन्ध रहता है जिसे 'वीफ' कहते हैं। वीफ का प्रचलन धड़ल्ले से बढ़ रहा है। भारतीय संस्कृति का यह अत्यन्त ही घिनौना पहलू है। उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रचार-प्रसार ने अखाद्य और अप्रयोजनीय को प्रयोजनीय बना दिया।

लेकिन अन्धकार में भी प्रकाश का अंश छिपा रहता है। अध:पतन के इस घटाटोप अन्धकार में अनेक गोशालाओं ने जन्म लिया। गायों की हत्या रोकने के लिये गोशालाओं के संस्थापकों और संचालकों ने नाना प्रकार के कष्ट उठाये। पशु-तस्करों की निर्दयता के वे शिकार हुये। नाना प्रकार के झूठे मुकदमों में उन्हें फँसाया गया। गोपालकों को प्रताड़ित किया गया। लेकिन गोशालाओं व गोपालकों ने अपने निश्चय को मजबूती से कायम रखा। सम्पूर्ण झंझावातों को झेलते हुए गोपालकों व गोशालाओं की संस्थाओं ने 'गायोत्थान' की विधियों को ढूँढ़ा और अत्यन्त ही विपरीत परिस्थितियों में उन विधियों का पल्लवन व पुष्पन किया।

गायोत्थान की समस्याएँ, समाधान की दिशायें

निर्बाध गति से चलने वाले कत्लखानों के कारण गाय की प्रजाति पर अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। गायों को ढोने वाले मशीनीकृत वाहनों, कत्लखानों की मशीनें, गाय के गोश्त द्वारा प्राप्त आन्तरिक व बाह्य धन का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोभ और खेतों व खलिहानों में मशीनों के प्रयोगों के कारण 'गाय' प्रजाति इस देश के 'चक्रव्यूह' में फँस गयी है। यद्यपि यह सर्वविदित है कि देश की बहुसंख्य आवादी का जीवन-परिधि खेत और खलिहान से आवृत है। हजारों-हजारों वर्षों तक इस जीवन-परिधि का केन्द्र-बिन्दु गाय रही है। कृष्ण की वंशी की ध्वनि से पूरा का पूरा परिधि आप्लावित था। आज के जीवन का केन्द्र मशीन बन गया है और पूरा का पूरा जीवन वृत परिधि के साथ-साथ सम्पूर्ण प्रदूषण से पूर्ण हो गया है। पुराने जमाने में जिसे पाप कहा जाता था, उसे आज प्रदूषण कहते हैं। पुराने जमाने का पाप लगभग अप्रकट रहता था, लेकिन आज का प्रदूषण प्रत्यक्ष उपस्थित हो गया है। वस्तुत: शिव के सृष्टि मॉडल में मानवीय हस्तक्षेप के कारण प्रदूषण रूपी पाप प्रत्यक्ष हो गया है। क्योंकि जो जीव शिव-सान्निध्य में पूज्य थे वे आज के मानवीय सान्निध्य में भोज्य हो गये हैं। शिव के बैल और शिव के नाग की दुर्गति दर्दनाक स्थिति तक पहुँच गयी है।

भारत में गाय की दुर्दशा यद्यपि पिछले कई शताब्दियों से शुरू है, फिर भी साम्राज्यवाद और औद्योगिकीकरण तथा नगरीकरण के चलते इसकी प्रस्थान बिन्दु स्थायी बंदोबस्त के समय से मानी जाती है। यह १७९३ ई० की घटना है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भूमि व्यवस्था में स्थायी बंदोबस्त की शुरूआत की। भूमि के स्थायी बंदोबस्त होने से भूमि स्वामियों ने भूमि पर स्थायी कब्जा प्रारम्भ कर दिया। इस व्यवस्था के अन्तर्गत गायों के चरने वाली भूमि पर तत्काल प्रभाव पड़ा। पुराने जमाने से लेकर हिन्दू काल और मुस्लिम कालों में भूमि का एक बड़ा भाग 'गोचर' के रूप में छुटा रहता था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भूमि बंदोबस्त में गोचर भूमि संकटग्रस्त होना प्रारम्भ हुआ। फिर भी गाँवों और नगरों में गोचर भूमि और गोशाला़ओं की मर्यादा लगभग बनी रही। लेकिन इनमें क्षरण प्रारम्भ हुआ।

गोचर भूमि और गोशालाओं के क्षरण में वैचारिक रूप से आधुनिक अर्थशास्त्र ने अनर्थपूर्वक योगदान प्रदान किया। उदाहरणार्थ : प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ० वी०के०आर०वी० राव ने अपनी प्रकाशित पुस्तक 'इण्डियाज नेशनल इन्कम' वर्ष १९३२ के पृष्ठ ८८ पर लिखा कि भारत की गायें जो लगभग दूध नहीं देती हैं, उनकी संख्या प्रतिशत के हिसाब से कुल संख्या का सत्तर प्रतिशत है। डॉ० राव के अनुसार ये गायें देश की अर्थव्यवस्था पर बोझ हैं। इसी क्रम में उक्त अध्ययन में बतलाया गया कि गाड़ी खींचने और हल जोतने के लिये अनपयुक्त बैलों की संख्या का भी प्रतिशत अनुपात सत्तर के ही आस-पास है। दूसरे अर्थशास्त्री डॉ० आर०के०मुखर्जी ने अपने अध्ययन में बतलाया कि एक जोड़ी बैल यदि ८ घंटे हल जोतता है तो न्यूनतम आर्थिक उत्पादकता की दृष्टि से एक एकड़ या पौन एकड़ खेत की जुताई करनी चाहिए। लेकिन उनके द्वारा सीतापुर (उ०प्र०) में कराये गये एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि एक जोड़ी बैल दिनभर में आधा एकड़ खेत की जुताई करते हैं। उन्होंने आगे बतलाया कि ८७% बैलों की यही उत्पादकता है तथा ऐसे बैलों से खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त नहीं की जा सकती है। ऐसी ही रिपोर्ट सर मनीलाल बी० नानालती और जे०जे० अंजारिया की रही है। नानावती व अंजारिया ने भारत के पशुधन के घनत्व के संबंध में आँकड़ा प्रस्तुत करते हुए बतलाया कि प्रति १०० एकड़ फसल वाले क्षेत्र पर भारत में ६७ पशु, मिश्र में २५, चीन में, १५, और जापान में ६ हैं। उन्होंने आगे अपनी पुस्तक में कहा कि आधे तो एकदम ही व्यर्थ हैं। लेकिन इन भारतीय अर्थशास्त्रियों के सोच के विपरीत डॉ० राइट ने बतलाया कि भारत को प्रतिवर्ष गाय व बैलों के द्वारा, दूध, दूध से बने पदार्थ, हड्डी व चमड़ा, बैल श्रम तथा खाद के माध्यम से १९३५ ई० के रूपये के मूल्य पर १०१० करोड़ रूपये की प्राप्ति होती है। डॉ० राइट ने आगे बतलाया कि सम्पूर्ण कृषिगत आय का यह आधा भाग है और इसमें यदि सुधार कर दिया जाय तो कृषकों की आय में भारी वृद्धि हो जायेगी तथा बेरोजगारी के उन्मूलन में बड़ी सहायता प्राप्त हो जायेगी। गायों के दूध उत्पादन क्षमता पर भी सर्वेक्षण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुआ। एक विचारधारा के अनुसार भारत की गायें दूध देने के प्रश्न पर बहुत ही पीछे हैं। इस मत के लोगों ने बतलाया कि अधिकांश गायें वर्ष भर में मात्र ६०० पौंड दूध देती हैं, जबकि ब्रिटिश गायें वर्ष भर में ५४०० पौंड दूध देती हैं। लेकिन उन्हीं वर्षों में मिलिटरी के डेयरी फार्म में पाया गया कि भारतीय गायें प्रतिवर्ष ५००० से ६००० पौंड तक दूध देती हैं। फिरोजपुर के डेयरी फार्म में ७००० पौंड का औसत आया। कुछ जगहों में ८००० पौंड से १०००० पौंड तक का औसत प्राप्त हुआ है।

उपर्युक्त अध्ययनों के अध्ययन से यही निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अनेक लेखकों ने अपने ढंग से गायों और बैलों का या तो कत्लखानों की तरफ से ढकेलने का प्रयास किया, या तो अपने अध्ययन के बल से भारतीय गायों और बैलों के जीवन में सुधार लाने का कार्य किया। डॉ० राइट इन लेखकों में दूसरी श्रेणी के हैं। इन्होंने भारतीय गाय और बैलों के गुणों को उजागर किया और पशुपालन की तरफ ध्यान आकृष्ट किया।

दूध न देने वाली, हल और गाड़ी न खींचने वाले गायों और बैलों को समाप्त करने की सिफारिश करने वाले अर्थशास्त्रियों के नकारात्मक दृष्टिकोण का करारा जवाब आर्थिक आधार पर वाराणसी स्थित रामेश्वर गोशाला के संचालक श्री सूर्यकान्त जालान एवं उनके सहयोगियों ने व्यावहारिक व सिद्धान्त रूप से दिया। उन्होंने अनुपयोगी गोवंश से समग्र विकास की संरचना को संभव कर दिखाया है। गायों के गोबर-गोमूत्र से ऊर्जा उत्पादन करना, गोबरगैस प्लांट लगवाना, उससे स्लरी खाद बिजली का उत्पादन बढ़ाना, गोबर से केंचुआ पालन व उपयोगी खाद तैयार करना, नडेप कम्पोस्ट खाद बनाना, गोमूत्र से कीटनाशक दवाओं को तैयार करना, गोमूत्र के छिड़काव से फसलों का विकास करना तथा गोमूत्र से शैम्पू व साबुन तैयार करने के काम भी गोशाला में हो रहे हैं। प्रमाणित हो गया कि अनुपयोगी गायें भी आर्थिक इकाई हैं।

श्री रामेश्वर गोशाला ने अनुपयोगी गायों की छिपी हुई उपयोगिता को वर्तमान समय में प्रमाणित करके अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कार्य गोपालन के क्षेत्र में किया है। आज स्थिति यह है कि अत्यन्त उपयोगी व युवा गायें तथा युवा बैल अहर्निश कत्लखानों में जा रहे हैं। भयावह स्थिति है। गायों और बैलों की प्राण-रक्षा के लिए आचार्य विनोबा भावे ने तो अपना प्राण ही उत्सर्ग कर दिया। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि स्वतन्त्र भारत में जितनी अधिक संख्या में गायों और बैलों की अब तक हत्या हुई है, उतनी हत्या मुस्लिम व अंग्रेजों के राज्यकाल के सम्पूर्ण वर्षों में भी नहीं हुई। आगे दुर्भाग्य है कि यह हत्या नित्य बढ़ती जा रही है।

गोपालन में प्रबन्धन की भूमिका

१९३५ ई० में पशुधन से देश को १०१० करोड़ रुपये की वार्षिक आय थी। १९९७ ई० में पशुधन से १४० अरब ३० करोड़ रुपये की वार्षिक प्राप्ति थी। स्पष्ट है कि मांस के निर्यातजन्य आय को अलग करके इतने धन की प्राप्ति पशुधन से राष्ट्र को प्रतिवर्ष हो रही है। यदि देश के कत्लखानें बंद कर दिये जायँ और सुरभि शोध संस्थान और श्री रामेश्वर गोशाला के प्रबंध के अनुरूप देश की लगभग ३६०० गोशालाओं को खड़ा कर दिया जाय तो देश का कायाकल्प हो जायेगा। कत्लखानों की बन्दी और गोशालाओं के गोपालकों को प्रबन्धशास्त्र से जोड़ देने से देश के किसानों, खेतिहर, मजदूरों और बेरोजगारी से ग्रस्त युवकों के ७०% भाग में जीवन का नया सवेरा प्रारम्भ हो जायेगा। राष्ट्र ऋणमुक्त हो जायेगा।

लेकिन गोपालन में प्रबंधन की विद्या तभी पूर्णरूपेण सफल होगी जब गायों की हत्या बंद हो। साथ ही साथ गाँवों की हत्या बंद हो। क्योंकि गाँवों के नष्ट होने से गायों के लिये न तो गोचर भूमि की प्राप्ति होगी और न ही गायों को चारा प्राप्त होगा। इसलिये गाय व गाँव की रक्षा एक साथ करनी होगी। आचार्य विनोबा का मूल मंत्र ही ग्राम स्वराज्य तथा गोरक्षा का था। स्पष्ट है कि गोरक्षण के पश्चात् ही गोपालन आता है। गोपालन की दिशा में बिहार सरकार ने तो 'चरवाहा विद्यालय' खोला था। लेकिन वह प्रयोग कागज पर ही रह गया। वस्तुतः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपालन का आदर्श और उसकी विधाओं को भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कर रखा है। उनकी विधाओं के अनुशरण की आवश्यकता है। पंचायतीराज व्यवस्था में गोपालन हेतु 'गोचर भूमि' का वैधानिक व व्यावहारिक प्राविधान होना चाहिये तथा श्री रामेश्वर गोशाला के मानक के अनुरूप गोपालन के क्षेत्र में प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना भूमंडलीकरण के युग की महती आवश्यकता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के चारों पुरुषार्थों की प्रदायिनी गौ माता के लालन व पालन से भारत २१वीं शताब्दी के श्रेष्ठतम् राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित होगा। गोरक्षण और गोपालन से दरिद्रता, दुर्बलता व दीनता का नाश होगा।

□□

सर्वहितकारी धन-गाय

श्री कमलेश बाजोरिया

गाय अपनी माता से भी श्रेष्ठ है। माता का दूध बच्चे थोड़े दिन तक पीते हैं, परन्तु गौ माता का दूध जीवन भर पीते हैं। गाय के बछड़े से खेती का काम लिया जाता है। गाय के गोबर से घर-द्वार की लिपाई करते हैं। खेत में खाद का काम उसके गोबर द्वारा होता है। गोबर के खाद से उर्वरा शक्ति बढ़ती है। परन्तु आधुनिक कृत्रिम खाद से जमीन की जीवनी-शक्ति घटती है। इसलिये सबको चाहिए कि गाय का पालन अवश्य करें। बूढ़ी गाय और बैल को नहीं बेचना चाहिए। जिस तरह बूढ़े माता-पिता का पालन करते हैं, उसी प्रकार बूढ़ी गाय और बूढ़े बैल का भी पालन करना चाहिए।

गोवंश-ह्रास से देश की आर्थिक समृद्धि में व्यवधान उत्पन्न होगा। यह ध्रुव निश्चित है कि गरीब-से-गरीब लोग जितनी आसानी से बैल द्वारा खेती कर सकते हैं, उतनी आसानी से किसी वैज्ञानिक यंत्र से नहीं कर सकते। गो-पालन से यह लाभ है कि खेती करने के लिये उसके बछड़ों से हल चलवा सकते हैं, उसके दूध से जीवन-निर्वाह कर सकते हैं। गाय खाती है घास और देती है अमृततुल्य दूध। इसलिये गाय का पालन सर्वहितकारी जानकर सबको करना चाहिए।

आयुर्वेद में अनुपान के रूप में गाय के दूध, मक्खन, मूत्र, गोबर, घी, छाछ आदि के प्रयोग निर्दिष्ट है। गो-मूत्र से कठिन-से-कठिन उदर रोगों की चिकित्सा की जाती है। चर्म रोगों में गोमूत्र का उपयोग किया जाता है। इसलिये स्वास्थ्य की दृष्टि से भी गोपालन अति आवश्यक है। भगवान् श्रीकृष्ण गाय के महान् रक्षक थे। वे गाय चराते थे। वे गोपालन करके संसार के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत कर गये हैं। वृन्दावन, गोकुल, ब्रज आदि ऐतिहासिक स्थान भी हम लोगों को गोपालन की स्मृति का बोध कराते हैं। भगवान् श्रीराम के गुरु महा ज्ञानी मुनि वसिष्ठजी की कामधेनु नन्दिनी की कथा से हम उपदेश पाते हैं कि प्राचीन काल के ऋषि-मुनि भी गोरक्षक और गोपालक थे। सारे विश्व में गाय के समान उपयोगी जानवर कहीं भी उपलब्ध नहीं है। जो कोई गाय का पालन करते हैं वे लक्ष्मी का आदर करते हैं क्योंकि गाय के गोबर में लक्ष्मी का निवास है। गोमूत्र में गंगा का निवास है।

आध्यात्मिक, आर्थिक और शारीरिक उन्नति एवं लाभ के लिये गोपालन सभी वर्गों के लिये आवश्यक है। गाय रखने तथा उसकी सेवा-मात्र से ही परोपकार की साधना स्वमेव सिद्ध हो जाती है। गो माता व्यक्ति को अपरिग्रही और परोपकारी बना देती है।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौशाला भ्रमण—एक सुखद अनुभव

श्री अश्विनी डिडवानिया

काशी गौशाला का इतिहास बहुत पुराना है उसका ऐतिहासिक महत्व होने के साथ-साथ रामेश्वर की पवित्र भूमि पर यह स्थित है। कई वर्षों से गौभक्त सूर्यकान्त जालान (कानूबाबू) से अनन्य प्रेमवश मैं भी गौशाला से मन से जुड़ा रहा जिसके कारण मुझे कई बार इनकी सभाओं, अनेक बार विशेष कार्यक्रमों व सामाजिक संस्थाओं के साथ सपरिवार जाने का अवसर प्राप्त हुआ। गौशाला की पवित्र भूमि, इसका विशाल प्रांगण, मन को मोह लेने वाली पुष्पवाटिका, पेड़-पौधे, सैकड़ों एकड़ के खेत-खलिहान, शोर-कोलाहल की शहर की प्रदूषणयुक्त जिन्दगी से दूर शान्त व उन्मुक्त वातावरण, हजारों गौ-माताएँ, बाबा भोलेनाथ के प्रिय विशाल नन्दी, साँड़, छोटी-छोटी प्यारी बछियाएँ बरबस आपको अपनी ओर आकर्षित कर लेंगी।

इस अनुभव को प्राप्त करने के लिये आप समय निकालकर अच्छे मन के साथ सपरिवार जायँ। अक्सर लोगों के मन में रहता है कि गौशाला में केवल गायें देखने को मिलेंगी और चारों तरफ गोबर-मूत्र की गन्दगी होगी लेकिन आपको ऐसा कुछ भी काशी गौशाला की तीनों शाखाओं (बावनबीघा, सदर, रामेश्वर) में नहीं मिलेगा। यहाँ की साफ-सफाई, खटालों, अतिथिगृह आदि सब जगहें। आपको आकर्षित करेंगी आप अपने साधन के साथ गौशाला भ्रमण को सपरिवार जायँ साथ में चना-गुड़ ले जायँ ताकि गौमाता को आप अपने हाथों से खिलाकर परम सुख का अनुभव कर सकें।

आपके मन में अगर कुछ सेवा करने की भावना है तो गौशाला से उत्तम स्थान आपको सुलभ नहीं होगा। यहाँ की सहस्त्रों बूढ़ी, बीमार, निरुपयोगी गायें जो कसाइयों से छुड़ाकर यहाँ लाई जाती हैं, इनकी सेवा में लगे हुए गौ भक्तों को आपका प्रोत्साहन प्राप्त होगा। यहाँ की सहस्त्रों गायें आपको गौरक्षा हेतु प्रेरित करेंगी। आपके द्वारा आगमन की सूचना-मात्र से यहाँ आपको उचित आतिथ्य सत्कार भी मिलेगा।

□□

गाय हमारे दुग्ध-भुवन की देवी है। वह भूखों को खिलाती है, नंगों को पहनाती है, बीमारों को अच्छा करती है, उसकी ज्योति चिरन्तन है।
—सम्पादक 'होडर्स डेयरीमैन', अमेरिका

गोरधनदास लक्ष्मीदास

लक्खी चौतरा, वाराणसी

फोन : (दुकान) ३३३२१२, ३३३४८७, (निवास) ३२०१०८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रशासन का विकेन्द्रीकरण एवम् उसके सुखद परिणाम

श्री गगनेन्द्रकुमार केडिया
संरक्षक एवं भूतपूर्व मन्त्री, शासक मंडल

अक्टूबर १९८६ में मेरे पिता श्री मुरारीलाल जी केडिया का गोलोकवास हो गया। उस समय वे शासक मण्डल के मंत्री थे। बैठक में आए भाई भगवानदासजी अग्रवाल ने मुझसे यह वचन लिया कि इस रिक्त स्थान की पूर्ति मैं करूँगा। तद्नुसार १९८६ के अन्त में मुझे शासक मण्डल का सदस्य मनोनीत करके मंत्री पद दिया गया।

१९८५ तक गौशाला की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी। न तो प्रचुर मात्रा में दुग्ध एवं हरे चारे का उत्पादन होता था और न ही पर्याप्त संख्या में पशुओं का संरक्षण होता था।

इस दयनीय अवस्था से गतिशीलता की ओर बढ़ने के दो कार्य भाई दीनानाथजी झुनझुनवाला के प्रबन्ध समिति के प्रधानमंत्रित्व काल में हुए। एक तो गोशाला का शताब्दी समारोह विशाल स्तर पर तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिससे काशी के प्रत्येक व्यक्ति को गौशाला के प्रति पुनः उत्सुकता जागृत हुई।

भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों से गाय-बैल कटने के लिये वाराणसी-मुगलसराय होते हुए पश्चिम बंगाल जाते थे। गोरक्षा समिति, मुगलसराय इन पशुओं को रोककर उनकी हत्या होने से बचाने का कार्य कर रही थी। परन्तु इसके पास पर्याप्त स्थान एवं धन सुलभ नहीं था। इस कार्य के लिये काशी गौशाला आगे आई और भाई दीनानाथजी झुनझुनवाला के प्रधानमंत्रित्व काल में १७१ पशुओं को बरामद कर सदर गौशाला में संरक्षित किया गया। ३ महीने बाद इनकी नीलामी में भाई दीनदयालजी जालान के आर्थिक सहयोग से गौशाला ने इन पशुओं को क्रय कर लिया।

उपरोक्त दो कार्यों से जनमानस में तो गौशाला की छवि निखरी ही, गौशाला भी लम्बी निष्क्रियता के बाद जागरूक होकर पशुपालन एवं पशु संरक्षण के कार्य में तीव्र गति से आगे बढ़ने लगी।

पूरी गौशाला की ३ शाखाएँ हैं—सदर गौशाला (गोलघर), बावनबीघा गौशाला (आजमगढ़ रोड) एवं रामेश्वर गौशाला (पंचक्रोशी मार्ग)। अपने मंत्रित्व काल में मैंने यह अनुभव किया कि इतनी दूर-दूर तक फैली सैकड़ों बीघा तक विस्तृत गौशाला के विकास कार्य को अकेले प्रबन्धसमिति का मंत्री नहीं कर सकता। इन शाखाओं के विकास का कार्य करने के लिये अलग-अलग विकास समितियों का होना अनिवार्य है जो प्रबन्ध समिति के अधीन अपनी-अपनी शाखाओं के विकास का कार्य लगन से करके उसे गति प्रदान कर सकें।

मेरी इस परिकल्पना के अनुरूप तीनों शाखाओं के लिये विकास-समितियाँ गठित की गईं, जिनमें प्रबन्ध समिति के संयोजक सहित ३ सदस्य एवं शासक मण्डल द्वारा नामित एक सदस्य की व्यवस्था की गई। प्रबन्ध समिति में अध्यक्ष एवं प्रधानमंत्री, इसके पदेन सदस्य थे। इस समिति को बाहर से एक सदस्य लेने का भी अधिकार था।

बावनबीघा गौशाला में श्री जानकीवल्लभ करवा, श्री लक्ष्मणदास अग्रवाल, श्री बालकिशन लोहिया एवं श्री रघुनाथप्रसाद अग्रवाल के संयोजककाल में अपार विकास किया गया। समस्त भूमि को उपजाऊ बनाकर प्रचुर मात्रा में हरे चारे का उत्पादन किया गया। बहुत बड़े टीले को समतल करके कृषियोग्य भूमि में वृद्धि की गई। गोबर गैस प्लांट, जेनरेटर, सिंचाई के लिये पम्प आदि की व्यवस्था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की गई। इस समय बावनबीघा गौशाला में हरे चारे के उत्पादन के साथ बड़े पैमाने पर दुग्ध-उत्पादन भी किया जा रहा है।

इसी बीच भाई भगवानदासजी अग्रवाल का एक पत्र मुझे मिला जिसमें उन्होंने रामेश्वर शाखा का कार्य, जो कई गाँवों में फैली हुई थी एवं पूर्ण रूप से उपेक्षित पड़ी थी, अपने जिम्मे लेने का इस वचन के साथ प्रस्ताव किया कि वहाँ के हानि-लाभ का उत्तरदायित्व उनका रहेगा। शासक मण्डल एवं प्रबन्ध समिति द्वारा उनका प्रस्ताव स्वीकृत कराके उन्हें रामेश्वर विकास समिति का संयोजक बनाया गया। यहाँ से आरम्भ होती है रामेश्वर की विकास यात्रा जिसने अन्ततोगत्वा उ०प्र० शासन एवं पशु कल्याण बोर्ड द्वारा रामेश्वर शाखा को आदर्श (मॉडल) गौशाला के रूप में मान्यता दिलाई।

कालान्तर में भाई भगवानदासजी ने श्री सूर्यकान्त जालान के रूप में एक छिपे हुए रत्न को ढूँढ़ निकाला और उसे रामेश्वर शाखा का कार्य सम्भालने के लिये तैयार किया। श्री सूर्यकान्त जालान ने ५ गाँवों में फैली सैकड़ों बीघा जमीन का समुचित उपयोग किया। असमतल भूमि को समतल कराया, अनुत्पादक भूमि को उपजाऊ बनाया, अनेक खटालों एवं अन्य भवनों का निर्माण किया तथा कृषि संधान एवं साँड़ों की नस्ल-सुधार किया। इनके कार्यकाल में दुग्ध एवं हरे चारे का समुचित उत्पादन हुआ। इनका खुला ऐलान था कि वध के लिये पश्चिम बंगाल जाने वाले जितने भी पशु सुपुर्दगी में दिए जायेंगे, उन्हें रामेश्वर शाखा में रखने के लिये वे वचनबद्ध हैं। गौशाला द्वारा प्रदत्त इस सुविधा ने मुगलसराय गोरक्षा समिति एवं प्रशासन को अधिकाधिक पशुओं को रोकने के लिये प्रेरित किया जिससे हजारों पशुओं की प्राण-रक्षा हुई। श्री सूर्यकान्त जालान ने तन-मन-धन तीनों से रामेश्वर शाखा को जिस प्रकार विकास के शिखर पर पहुँचाया, वह अध्याय गौशाला का स्वर्णिम अध्याय है। रामेश्वर शाखा को ४ उप शाखाओं के रूप में विकसित किया गया। 'सदर' गौशाला में दुधारू पशुओं को, 'मधुबन' में विकासयोग्य पशुओं एवं 'वृंदावन' में अपाहिज पशुओं को रखने की व्यवस्था की गई। पाँचों शिवाला में कृषि-कार्य को प्रधानता दी गई।

आगे चलकर रामेश्वर शाखा के तीव्र गति से बढ़ते हुए विकास कार्यो के सुचारु रूप से संचालन के लिये प्रशासन का और विकेन्द्रीकरण करते हुए रामेश्वर शाखा का कार्यभार प्रबन्ध समिति से शासक मण्डल ने सीधे अपने अधीन करके रामेश्वर विकास समिति को एक विस्तृत समिति के रूप में गठित किया। इसमें सदस्य संख्या तो बढ़ाई ही गई, कोषाध्यक्ष के पद का भी निर्माण किया गया।

प्रशासन के विकेन्द्रीकरण के सुखद एवं सफल परिणामों को देखते हुए श्री बृजमोहन मूँदड़ा के शासक मण्डल के मंत्रित्व काल में गौशाला के नये संविधान में तीनों शाखाओं के लिये विस्तृत उप प्रबन्ध समितियों के गठन की व्यवस्था की गई है, जिसमें हर समिति में सामान्य सदस्यों के अतिरिक्त १-१ उपाध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष, तथा कृषि/दुग्ध मंत्रियों की व्यवस्था की गई है। प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष एवं प्रधानमंत्री को इनका पदेन सदस्य बनाया गया है तथा नवगठित संचालक मण्डल के सदस्यों के प्रतिनिधित्व का प्रावधान भी किया गया है।

इनके परिणामस्वरूप संप्रति गौशाला में लगभग १५० दुधारू एवं ८५० अनुत्पादक पशुओं का संरक्षण एवं संवर्धन हो रहा है।

मुझे पूरा विश्वास है कि प्रशासन के विकेन्द्रीकरण को इसकी तार्किक परिणति तक पहुँचाकर तथा गौशाला के प्रबन्ध से अधिकाधिक व्यक्तियों को जोड़कर, विकास-कार्य को और पूरे उत्साह के साथ अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतीय किसान और गाय

श्री भरत झुनझुनवाला

एक व्यक्ति ने अपना बचपन गायों को चराने में व्यतीत किया। दूसरे को जन्म लेते ही गरम रखने के लिये गाय की नाँद में डाल दिया गया। एक हुए श्रीकृष्ण और दूसरे ईसामसीह। लेकिन आज वध से बचाई गई गायें लावारिस घूमती हैं और धीरे-धीरे मरती हैं। समाज उन्हें पालने को तैयार नहीं है। इसका कारण यह है कि तकनीकी बदलाव ने गाय को नुकसानदेह बना दिया है। दूसरा कारण यह है कि समाज को गाय के लाभ का ज्ञान नहीं है और सरकारी नीतियाँ इस अज्ञान को प्रोत्साहन दे रही हैं। गाय-प्रेमियों को चाहिये कि समाज के गाय के प्रति इस अज्ञान को दूर करें तथा सरकारी नीतियों को ठीक कराएँ। कानून से गोवध नहीं रोका जा सकता।

किसान पशुविरोधी नहीं है। गाँव में जितना चारा उपलब्ध है वह किसी न किसी पशु को खिलाता ही है। मुख्य प्रश्न पशुधन की सार्थकता का नहीं है, बल्कि गाय बनाम भैंस का है। जैविक खेती के लिये गोबर, भैंस और गाय दोनों से बराबर मिलता है। देशी नस्लों के सुधार से गाय-भैंस दोनों के दूध में वृद्धि हो सकती है। अहिंसा एवं जीवदया के सिद्धान्त बछड़े एवं पाड़े दोनों पर बराबर लागू होते हैं। इसीलिये हमें देखना यह चाहिये कि आज किसान गाय के स्थान पर भैंस को क्यों पसन्द कर रहा है।

गाय से पहला लाभ दूध की गुणवत्ता का है। दूध के दो हिस्से होते हैं फैट तथा सालिड नान फैट अथवा एस.एन.एफ.। गाय तथा भैंस के दूध में फैट की क्वालिटी एक सरीखी ही होती है। वनस्पतियों से मिले तेल से भी फैट की पूर्ति हो सकती है। आधुनिक डेरी में दूध में फैट कम होने पर वनस्पति तेल डालकर उसकी पूर्ति की जाती है। दोनों के दूध में अन्तर यह है कि भैंस के दूध में फैट अधिक होता है जबकि गाय के दूध में एस.एन.एफ.। बच्चे के स्वास्थ्य के लिये लाभकारी यह होगा कि उसे गाय का दूध पिलाया जाए जिसमें एस.एन.एफ. ज्यादा होता है। फैट की आपूर्ति वनस्पति तेलों के माध्यम से की जा सकती है। भैंस का दूध मूल रूप से अच्छा नहीं है। कारण यह है कि हम पशु से फैट उत्पादन का कार्य लेते हैं जिसे वनस्पतियाँ कर सकती हैं; और जो एस.एन.एफ. दूसरे स्रोतों से नहीं मिलता है उससे हम बच्चे को वंचित करते हैं। यूँ समझिये कि वनस्पति से सीधे फैट उत्पादन करने के स्थान पर भैंस के माध्यम से उसका उत्पादन करना अकुशल उत्पादन पद्धति है। जो कार्य वनस्पतियाँ सीधे कर सकती हैं वह उनसे सीधा कराया जाना चाहिये। चूँकि वनस्पतियाँ एस.एन.एफ का उत्पादन नहीं कर सकती हैं अतः यह कार्य पशुओं के माध्यम से कराना ही होगा। इसलिये गाय के दूध तथा वनस्पति का मिश्रण अधिक लाभकारी है। गाय के दूध की उत्कृष्टता का प्रमाण यह है कि गाँव के उच्च वर्ग के लोग अपने बच्चों को गाय का दूध पिलाते हैं। मान्यता यह है कि उनके बच्चे औसत से अधिक बुद्धिमान होते हैं अथवा उनका आई.क्यू. अधिक होता है। नवजात शिशु एवं सौरी में स्त्री को भी गाय का दूध पिलाया जाता है।

परन्तु हमारे विद्वानों ने दूध की खरीद एस.एन.एफ के आधार पर नहीं बल्कि फैट के आधार पर करना शुरू कर दिया है। गृहिणी को इस बात की जानकारी नहीं दी गई कि यदि वह अपने बच्चों को गाय का दूध पिलायेगी तो उनका आई. क्यू. बढ़ जायेगा। उसे यह बताया गया कि भैंस के दूध में मलाई अधिक पड़ेगी और दही गाढ़ा जमेगा। नतीजा यह हुआ कि भैंस का दूध महँगा बिकने लगा और गाय कटने लगी। आवश्यकता इस बात की है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि गृहिणी को बताया जाये कि गाय का दूध पिलाने से बच्चे का विकास अच्छा होगा, वह तीव्र बुद्धि वाला होगा। फैट की पूर्ति वनस्पति तेलों से की जा सकती है। गाय का दूध महँगा होने पर भी बच्चे की आई. क्यू. में वृद्धि से वह खर्च वसूल हो सकता है। इसी प्रकार गाय के गोबर और गोमूत्र से अनेक उपचार हो सकते हैं जो भैंस के मूत्र और गोबर से नहीं हो सकते हैं। कुछ किसानों ने प्रयोग किये हैं कि गोबर एवं गोमूत्र का छिड़काव कीटनाशक का कार्य करता है। गाय के इन लाभों का आकलन करके समाज को समझाने से गाय के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। कत्लखाने से छुड़ाई गई गाय सड़क पर घूमकर लावारिस नहीं मरेगी। भैंस के पक्ष में दूसरा पहलू मांस का है। बैल में मांस कम तथा शक्ति अधिक होती है। भैंस में मांस अधिक तथा शक्ति कम होती है। यदि ऊर्जा के दूसरे स्रोत सस्ते होंगे और मांस महँगा होगा तो किसान भैंस पालेगा। यदि ऊर्जा महँगी होगी और माँस सस्ता तो किसान बैल रखेगा और उसे पैदा करने के लिये गाय पालेगा।

वर्तमान सरकारी नीतियों में ऊर्जा के दूसरे स्रोतों पर भारी सब्सिडी दी जा रही है। पेट्रोल पर टैक्स लगाकर डीजल सस्ता बेचा जाता है। सस्ते डीजल के उपलब्ध होने से कुएँ से पानी निकालने का कार्य डीजल पम्प द्वारा सुलभ हो जाता है। किसानों को बिजली मुफ्त दी जाती है। इससे भी बैल की शक्ति ठुकरा दी जाती है। थ्रेसर को बिजली की मोटर से चलाया जा सकता है। निर्यात खोलने से देश में मांस का मूल्य बढ़ा है और तदनुसार भैंस से होने वाला लाभ भी बढ़ा है। इन सरकारी नीतियों का सीधा परिणाम यह है कि किसान के लिये गाय का रखना नुकसानप्रद हो गया है। यदि सरकार तेल का आयात करके मुफ्त बिजली देने के स्थान पर भूसे का आयात करके किसानों को मुफ्त भूसा बाँटे तो परिस्थिति पूरी तरह बदल जायेगी। किसानों को सब्सिडी पूर्ववत मिलेगी परन्तु अब उसके लिये गाय पालना लाभप्रद हो जायेगा। उसे बैल की पशुशक्ति की आवश्यकता होगी जो उसे गाय पालने से ही मिल सकेगी। मांस का निर्यात बंद करने से भी मांस का दाम गिरेगा और भैंस पालना लाभप्रद नहीं रह पाएगा।

यह ध्यान रखना चाहिये कि पशुशक्ति का एक नकारात्मक पक्ष भी है। सफल कृषि के लिये जुताई, बुआई, सिंचाई, कटाई सही समय पर होनी चाहिये। बैल-शक्ति से इन कार्यों को करने में अधिक समय लगता है। इससे किसान को बैल कम पसन्द है। एक और पक्ष यह है कि शहरों में जीवनयापन के अनेकानेक अवसर खुल जाने से गाँव के श्रमिकों के लिये पलायन की संभावनायें बढ़ गई हैं। बैल से खेती करने में अधिक संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है। इसलिये शहर पर टैक्स लगाने से यह पलायन थमेगा और गाँवों में श्रमिकों की उपलब्धता बढ़ेगी।

आवश्यकता इस बात की है कि इन तमाम आर्थिक नीतियों का गहन अध्ययन किया जाये। गाय-प्रेमियों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे आकलन करें कि डीजल के स्थान पर चारा सब्सिडी का क्या प्रभाव पड़ेगा, मांस निर्यात रोकने से क्या होगा, बैल से खेती करने से समय पर जुताई कैसे होगी, शहर पर टैक्स लगाने से गाँव में श्रमिकों की उपलब्धता पर क्या प्रभाव पड़ेगा इत्यादि। तब सरकार और समाज के समक्ष वैकल्पिक नीतियों को रखा जा सकता है। पशुशक्ति से ही जुड़ा हुआ तीसरा पहलू तेल के क्षीण होते प्राकृतिक भंडार पर तथा तेल के आयात पर हमारी बढ़ती निर्भरता का है। पृथ्वी के तेल भंडार सीमित हैं। हमारी तेल आयात करने की क्षमता भी सीमित है। वर्तमान में तेल आधारित कृषि लाभप्रद हो सकती है, परन्तु दीर्घकाल में यह नहीं टिकेगी। इस विषय का दूसरा पक्ष यह है कि मनुष्य की सृजन-क्षमता को नजरन्दाज नहीं किया जा सकता है। वायु एवं परमाणु ऊर्जा गैसें अनेक स्रोतों को बाँधकर तेल के संकट से निदान भी संभव है। हमें इतने लम्बे दीर्घकाल का नहीं सोचना चाहिये कि हम वहाँ तक पहुँच भी न सकें। यदि हमने आज महँगे पशु को अपनाकर अपने कृषक को मार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डाला तो हम उस मुकाम तक पहुँचेंगे ही नहीं जब तेल समाप्ति की समस्या आयेगी। इन तमाम प्रश्नों का संतुलित अध्ययन आवश्यक है।

बहरहाल समस्या यह है कि वर्तमान में किसान को गाय पालना घाटे का सौदा लगता है। इसका एक पक्ष यह है कि गाय के दूध एवं मूत्र आदि से होने वाले लाभ से वर्ग अनभिज्ञ है। दूसरा पक्ष यह है कि आर्थिक नीतियाँ ऐसी हैं कि उन्होंने गाय के सामने भैंस को लाभकारी बना दिया है। ऐसे में गाय के वध को गैरकानूनी घोषित करने की माँग टिकती नहीं।

इस माँग का मतलब यह हो जाता है कि किसान नुकसान बर्दाश्त करे। यह चलने वाला नहीं है। कानून वहाँ बनाया जाता है जहाँ व्यक्ति जनहित के विरुद्ध आचरण करता है। चोर को चोरी करने से इसलिये कानून द्वारा रोका जाता है क्योंकि वह व्यक्तिगत हित को साधने के लिये जनहित की हानि करता है। जब किसान के लिए गाय लाभप्रद हो जाएगी तो वह उसे न तो लावारिस छोड़ेगा न ही उसे कसाई के हाथ बेचेगा। गाय कटना स्वयं बंद हो जाएगा।

एक संभावना यह भी है कि इन सब प्रयासों के बाद भी गाय लाभकारी सिद्ध न हो। ऐसी स्थिति में गहन चिन्तन आवश्यक होगा। हमें यह समझना होगा कि गाय को माता क्यों कहा गया। क्या वे गुण समाप्त हो गए हैं? अथवा तकनीकी बदलाव ने उन्हें अप्रासंगिक बना दिया है। हमारी संस्कृति अर्थविरोधी नहीं है, अतः यह खोजना होगा कि गाय को माता क्यों कहा गया। मात्र शास्त्रीय उद्धरणों से काम नहीं चलेगा। किसान अपना पेट पहले पालेगा फिर बाद में शास्त्र की सुनेगा। जब तक धर्म और अर्थ में समन्वय नहीं होगा तब तक गाय नहीं बचेगी।

□□

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

केंडिया साड़ीज़ प्रा. लि.

बनारसी साड़ी एवं फैन्सी पोत के
निर्माता एवं विक्रेता

चित्रा सिनेमा भवन, चौक, वाराणसी-२२१ ००१

फोन :
(दुकान) ३५१२६८, ३५२९७५, (निवास) २२०३८७, २२०३८९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय और अध्यात्म

श्री कृष्णकुमार खेमका

गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम्॥

(गवोपनिषद्)

मैं सदा गौओं का दर्शन करूँ और गौएँ मुझ पर कृपादृष्टि करें। गौएँ हमारी हैं और हम गौओं के हैं। जहाँ गौएँ रहें, वहीं हम रहें।

गाय भारतीय सनातन संस्कृति की आध्यात्मिक प्रतिष्ठा है। गोसंरक्षण, गोपालन और गोसंवर्धन भारतवर्ष के लिये नया नहीं है। यह भारतवर्ष का सनातन धर्म है। गाय सृष्टि का एक ऐसा प्राणी है, जिसके प्रति युग-युगों से आस्था एवं श्रद्धा का भाव जुड़ा हुआ है। हमारी आर्य-संस्कृति के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थों के साधन का मूल हमारी 'सर्वदेवमयी' यह गोमाता है। वेदादिशास्त्रों में गौ के आध्यात्मिक स्वरूप का विशद वर्णन आया हुआ है। गाय को सभी कल्याण-मंगलों की साधिका बताया गया है और यह बात विशेष रूप से बतायी गयी है कि गाय में सभी देवता तथा तीर्थ निवास करते हैं। इस बात में शास्त्र ही प्रमाण है और शास्त्र सर्वोपरि प्रमाण है। इस प्रमाण में न तो बुद्धि का प्रवेश है और तर्क का। अनादिकाल से सर्वज्ञ ऋषियों-मनीषियों ने अपनी ऋतम्भरा प्रज्ञा से इस बात को देखा है, समझा है, परखा है, उसका लाभ उठाया है और सबको इस तत्त्व-रहस्य की जानकारी हो जाय, इसलिये शास्त्रों में इस बात का विशेष रूप से प्रतिपादन भी कर दिया है। यह उनका हमारे ऊपर महान् अनुग्रह है।

सनातन संस्कृति का साक्ष्य है कि प्राचीनतम काल से ऋषि, मुनि, सन्त, महात्मा तथा सद्गृहस्थ गाय से जुड़े रहे हैं। वही उनके जीवन का प्राण थी और उसी से सबका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से भरण-पोषण भी होता आया है। इसीलिये गोचरभूमि छोड़ना बड़ा भारी पुण्य बताया गया है।

गौ का आध्यात्मिक तथा धार्मिक महत्त्व चाहे आज किसी की समझ में न आये, पर है यह निर्विवाद ही। आध्यात्मिक जगत् का यह रहस्य भौतिक साधनों से सबकी समझ में नहीं आ सकता।

गाय से अर्थ का सम्बन्ध तो इधर लगभग पचास वर्षों से जोड़ा जा रहा है। वह भी इसलिये कि हम गरीब हो गये हैं, हम गरीब इसलिये हो गये हैं कि हमने गाय पालना छोड़ दिया है। यह निश्चित बात है कि यदि अभी भी गाय हमारे जीवन में प्रविष्ट हो जाय और गोसेवा हमारी दैनन्दिन-क्रिया का अंग बन जाय तो सच्ची समृद्धि भी प्राप्त होना दूर नहीं। यह न केवल सैद्धान्तिक बात है अपितु व्यावहारिक सत्य भी है। यदि ऐसा न होगा तो ऋषियों की निम्न आर्षवाणी असत्य हो जायेगी—

गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किञ्चित्

अर्थात् गाय के समान कोई दूसरा धन नहीं है।

इतिहास साक्षी है कि गाय का सम्बन्ध अर्थ या आर्थिक जगत् से कभी नहीं रहा। हाँ, गोसम्पदा से लोगों की समृद्धि का आकलन अवश्य होता रहा। गाय के भारतीयता का जो दृष्टिकोण रहा है वह मात्र धर्म तथा मोक्ष—इन दो पुरुषार्थों तक रहा है। इसी की सिद्धि में अर्थ तथा काम सिद्ध हो जाता रहा, लेकिन उसे महत्त्व कभी नहीं दिया गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारतीय इतिहास गवाह है कि गाय की सदा उपासना-पूजा-सेवा होती आयी है। उससे हमारी आर्थिक समस्या स्वतः हल हो जाती रही, यह अलग बात थी। यह गोसेवा, गोपालन का गौण फल है। गाय को केवल आर्थिक विकास का साधन मान लिया तो यह सच्चे अर्थ में गोसेवा या गोपालन का तात्पर्य नहीं है। गाय के प्रति भारतीयता की जो सोच अनादिकाल से रही है, उसी सोच को लेकर आगे बढ़ा जाय तो समृद्धि तो हमें अनायास ही मिल जायगी, आध्यात्मिक लाभ अलग से मिलेगा। गाय को केवल अर्थ से जोड़ना उसके वास्तविक महत्त्व को समझने में भूल करना है। विश्व के देश गाय के प्रति क्या रुख रखते हैं, किस दृष्टि से गाय को देखते हैं, उसी को हम भी अपने में उतार लें तो समझना चाहिये कि हम गाय से मिलने वाले सच्चे लाभ से वंचित हो रहे हैं, फिर दूसरी गायों और भारतीय गायों तथा दूसरे पशुओं और गायों में अन्तर ही क्या रहा? गाय को छोड़कर किसी पशु की पूजा होती हो, परिक्रमा होती हो, उसका दान होता हो, ऐसा न देखा गया है, न सुना गया है, आखिर ऐसा क्यों होता होगा—यह बुद्धिजीवियों के लिये विचारणीय प्रश्न है। यदि कोई कहे कि हम इस रूप में गाय के महत्त्व को नहीं समझते हैं हमें उसका प्रत्यक्ष किंवा आर्थिक लाभ समझाइये तो ऐसे लोग माना समझ भी गये तो कितने समझदार कहलायेंगे, यह भी वे स्वयं ही समझ सकते हैं।

भारतभूमि ने तो गाय को अपना माना है, मातृरूप में उसकी वन्दना की है। उसके पञ्चगव्य के महत्त्व को समझा है। आरोग्यप्राप्ति में उसकी महिमा को परखा है। गोदान की श्रद्धा-भावना को समझा है। उसकी सेवा करने, स्पर्श करने, दर्शन करने, नाम लेने, परिक्रमा करने, गोग्रास देने तथा उसके रज-कण के स्पर्श करने का लाभ उठाया है। गो-सम्पदा में ही आर्थिक समृद्धि प्रतिष्ठित रहती है। इस बात को भी खूब समझा हैं। भगवान् शंकर, भगवान् श्रीराम, भगवान् श्रीकृष्ण सभी ने गाय को अपने जीवन में उतार कर गोपालन का आदर्श हमारे सामने रखा है। उनका अवतार ही गाय की रक्षा के लिये होता आया है। महर्षि वसिष्ठ, व्यास, वाल्मीकि, पराशर, च्यवन, भरद्वाज आदि ऋषियों ने गोसेवाव्रत को अपनाया था। सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु, मान्धाता, दिलीप, रघु, दशरथ आदि सभी गो-समृद्धि से चक्रवर्ती सम्राट् बने। राजा विराट्, युधिष्ठिर आदि सभी गोसेवक थे। सहदेव तो गोविद्या के आचार्य ही थे। जबाला-पुत्र सत्यकाम जाबाल ने गोसेवा से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था।

आज हमने गोपालन करना छोड़ दिया है, गाय को अपने से दूर कर दिया हैं; इसीलिये उसकी रक्षा और सेवा का प्रश्न उपस्थित हुआ है। यदि सब लोग गाय पालने लगें तो फिर गोरक्षा का प्रश्न ही नहीं उठेगा और न गोहत्या की समस्या सामने रहेगी। यह एक के वश की बात नहीं है। सभी को इसके लिये जागरूक रहना होगा।

पूर्ण रूप से ऐसा न हो सकने पर भी आज गाय के लिये बहुत कुछ किया जा रहा है। गोवंश बचाया जा रहा है, अनाथ, निरीह गौओं की सेवा हो रही है। श्रद्धालु गोसेवी भक्त गोसेवा के उद्देश्य को लेकर साधन और समय दोनों का उत्सर्ग कर रहे हैं, गोशालाओं का वर्धन किया जा रहा है। यह बहुत अच्छी बात है, सराहनीय कार्य है, ऐसे निश्चय को आदर देना चाहिये, मान देना चाहिये, इस सत्कर्म में अपेक्षित सहयोग अवश्य करना चाहिये। पर इस प्रक्रिया में गोमाता के वास्तविक स्वरूप को ध्यान में रखा जायगा तो सच्ची गोसेवा भी होगी और आध्यात्मिक लाभ भी प्राप्त होगा।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सार्वभौम सुख-शान्ति का मूल उपाय—गो सेवा

'बाल व्यास' पं० श्रीकान्तजी शर्मा

प्राचीन भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि अल्पकालिक गोसेवा से ही भगवान् श्रीकृष्ण को भगवत्ता, महर्षि गौतम, कपिल, च्यवन, सौभरि तथा महर्षि आपस्तम्ब आदि को परम सिद्धि की प्राप्ति एवं महाराज दिलीप को रघु जैसे चक्रवर्ती पुत्र की प्राप्ति हुई थी। इसी के आधार पर सम्पूर्ण विश्व में गोत्रों का चलन भी हुआ। महर्षि च्यवन एवं आपस्तम्ब ने अपना मूल्य लगाने के समय स्वयं को सम्पूर्ण पृथ्वी तथा स्वर्गलोक के सम्पूर्ण साम्राज्य से भी अधिक मूल्यवान माना, किन्तु जब तत्कालीन नरेशों द्वारा उनके मूल्य के रूप में एक गाय को उपस्थित किया गया तो वे तत्काल प्रसन्न हो गये। अतः गोसेवा का महत्त्व अत्यधिक है।

भगवान् महावीर और गौतम बुद्ध ने भी गोसेवा से ही अहिंसा-धर्म को सिद्धकर अपने महान् धर्मों को सम्पूर्ण विश्व में फैलाया था। अहिंसा का सीधा सम्बन्ध गोसेवा से ही है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी जीवन के अमूल्य लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गाय को सर्वोत्तम साधन बताया है—

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई।
जो हरि कृपा हृदय बस आई॥
जप तप ब्रत जम नियम अपारा।
जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा॥
तेई तन हरित चरै जब गाई।
भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई॥

इसी का घृत स्वर्ग-प्राप्ति का आधार बनता है। समस्त देवताओं को तृप्त करने वाला मंत्रपूत हविष्य गो-दुग्ध से ही तैयार होता है। वस्तुतः गाय तीनों लोकों को पवित्र करती है। उसके शरीर में तीनों लोकों, देवताओं और ऋषि-मुनियों सहित सम्पूर्ण तीर्थों की स्थिति है। अतः उसकी सेवा से भला ऐसी कौन-सी सिद्धि है जिसकी प्राप्ति न हो?

बड़े खेद की बात है कि समस्त धर्मों, पुण्यों, सुख-सम्पत्ति के भण्डार एवं समस्त फलदायिनी गौ-माता का वर्तमान में घोर तिरस्कार हो रहा है। इसके परिणाम-स्वरूप देश में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में रक्तपात, हिंसा और उपद्रव आदि की भयावह स्थिति उत्पन्न हो गयी है।

वेदों से लेकर सभी पुराणों तथा अन्यान्य धर्मशास्त्रों में धर्म वृष का ही रूप माना गया है। परन्तु इसका वर्तमान राजनीति में कोई स्थान नहीं है। जबकि प्राचीन परम्परा में धर्म के बिना राजनीति विधवा मानी गयी है। आज विश्व के समस्त राजनीतिज्ञ धर्म के वास्तविक स्वरूप को न समझ कर दिशाविहीन, किंकर्त्तव्यविमूढ़, हतप्रभ एवं ज्ञानबुद्धि से शून्य होकर देश-प्रदेश की जनभावनाओं के साथ जनता का और अपना भी अहित ही कर रहे हैं। निःसन्देह इसमें विश्वरूप धर्म और विश्वधारिणी गौमाता की उपेक्षा के साथ-साथ अनीश्वरवादिता एवं देवता आदि के प्रति अश्रद्धा का भाव ही प्रधान कारण है।

समस्त शुभ कर्मों का फल षड्वर्ग—संयम, मन, बुद्धि एवं आत्मा की परिशुद्धि तथा नित्य पराशान्ति की प्राप्ति ही कही गयी और वह गोसेवा से शीघ्र एवं अनायास ही प्राप्त हो जाती है। शास्त्रों का यह उद्घोष है कि गाय विशुद्ध एवं अक्षय लक्ष्मी देने वाली है। उससे विश्व-कल्याण मंगलों से सुरक्षित होता है। गौएँ वेद एवं शुद्ध ज्ञान-विज्ञान की जननी हैं और पवित्रताओं की मूल स्रोत तथा सीमा हैं।

भारत के ऋषि-मुनि सदा से सभी शास्त्रों में गो-सेवा तथा वृषभस्वरूप भगवान् धर्म का संरक्षण ही सार्वभौम सुख-शान्ति का सर्वाधिक सुगम एवं कल्याणकारी उपाय बतलाते रहे हैं। गोमती-विद्या गो-सावित्री स्रोत का परायण करते हुए स्वल्प गोसेवा द्वारा सर्वोत्तम पुरुषार्थ एवं मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। ◻◻

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गायों को बचाने के लिए छः लाख विदेशी मैदान में

श्री मुजफ्फर हुसैन

भारतीय गायों को बचाने के लिए 'पेटा' नाम की विदेशी संस्था को मैदान में उतरना पड़ा है।

इंगलैण्ड स्थित 'पेटा' एक संस्था का नाम है जिसका पूरा अर्थ है 'पीपल फॉर द इथीकल ट्रीटमेंट टू एनीमल।' अब तक छः लाख लोग इसके सदस्य बन चुके हैं। इस संस्था की निर्देशिका हैं इनग्रिड न्यूकिर्क। पशुओं की रक्षा में सक्रिय योगदान देने वाली इस संस्था की अपनी एक पाक्षिक पत्रिका है, जिसका नाम है 'एनिमल टाइम्स।' इस बार के अंक में इस पत्रिका ने अपने रंगीन मुखपृष्ठ पर भारतीय गाय का एक चित्र प्रकाशित किया है और बड़े अक्षरों में लिखा है कि 'भारत में संकट।' पत्रिका जिस उद्देश्य के लिये समर्पित है, उसका घोष वाक्य है—पशुओं के लिये बोलने वाला सामयिक। ४४ पृष्ठों की इस रंगीन पत्रिका को जब हम पढ़ते हैं तो पशुओं के साथ मानव की जो अमानवीय कहानियाँ सामने आती हैं, उनसे बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और मानव होने के नाते शर्म आने लगती है। हम मानव कहलाने वालों को दुनिया में चारों ओर दानवता का नंगा नाच हो रहा है। पत्रिका का एक-एक शब्द अपने आप में शैतानियत का दस्तावेज है। पत्रिका में ढेरों चित्र छपे हैं, जो मांसाहारी इंसान की क्रूर कहानी को व्यक्त करते हैं। मनुष्य के खाने से लेकर अपने शरीर को सजाने तक में इन पशु-पक्षियों को किस प्रकार अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ती है, उसकी यह काली कहानी है।

इनग्रिड न्यूकिर्क लिखती हैं—जब मैं भारत में रहती थी, तब मैंने गाय की पूजा होते हुए देखी थी, बैलों से खेत में काम लिया जाता था और गाड़ी में जोतकर उससे माल की ढुलाई का काम भी करवाया जाता था, परन्तु अब तो मांस और चमड़े के व्यापार के नाम पर बेशुमार गाय-बैल काटे जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि रात-दिन उन्हें काटते रहना ही सबसे बड़ा व्यवसाय बन गया है। इसके लिये किसी एक विशेष वर्ग को जिम्मेदार नहीं माना जा सकता। भारत में प्रायः सभी धर्म और जातियाँ यह धंधा कर रही हैं। मध्य एशिया से यूरोप तक एक बड़ा बाजार है, जहाँ खाने के लिये मांस और उपयोग में लाने के लिये चर्मनिर्मित वस्तुओं का धड़ल्ले से निर्यात होता है। गाय और बैल आकार में मनुष्य से बड़े होते हैं, परन्तु आज तक उन्होंने आदमी को नुकसान नहीं पहुँचाया है। उनके सिर बड़े होते हैं और पाँव मजबूत होते हैं, पर स्वभाव अत्यन्त नम्र होता है। ज्यों ही वे बूढ़े होने लगते हैं, उनके मालिक उन्हें बाजार में लाकर बेच देते हैं।

इनग्रिड न्यूकिर्क लिखती हैं कि तमिलनाडु के बाजारों में मैंने हजारों गाय-बैलों को बड़ी विचित्र एवं दयनीय स्थिति में देखा। सात-आठ की टोली में उन्हें एक रस्सी से बाँध दिया जाता है। कड़ी गर्मी में भी वे धूप में खड़े रहते हैं, सफाई का तो कोई प्रश्न ही नहीं, उन्हें खाना भी कम दिया जाता है। उनके शरीर पर अनेक घाव देखे जा सकते हैं। गौ-हत्या अनेक स्थानों पर निषेध है, इसलिये वहाँ के गाय-बैल अन्य स्थानों पर भेज दिये जाते हैं। जब उनके मालिक उन्हें दूसरे राज्यों में लाते हैं तो उन पशुओं को लगातार सौ से तीन सौ किलोमीटर तक पद-यात्रा करनी पड़ती है। इस बीच न तो उन्हें आराम मिलता है और न ही भरपूर खाना। यदि थककर वे कभी बैठ गये तो उनकी आँखों में मिर्च और तम्बाकू का पाउडर डाल दिया जाता है। गरीब और निःसहाय जानवर क्या कर सकता है? मालिक के क्रूर व्यवहार से दुःखी होकर फिर चलने लगता है। यह सब कुछ अवैध है, इसलिये रात के अंधेरे में इन्हें ट्रकों पर चढ़ा दिया जाता है। जिस एक ट्रक में पाँच या सात जानवरों का स्थान होता है, वहाँ तीस गाय-बैल भर दिये जाते हैं। जगह के अभाव में एक-पर-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक चढ़ जाते हैं। वे एक-दूसरे के सींग से घायल भी हो जाते हैं। सड़क प्राय: खराब होती है। उस पर तेज गति से ट्रक चलाया जाता है, जिससे वे परेशान भी हो जाते हैं और घायल भी। लेखिका इनग्रिड न्यूकिर्क मुम्बई के देवनार कत्लखाने को भी देखने के लिये आयीं। भारी गर्मी, गंदगी और खून के बीच मक्खियों का साम्राज्य देखकर वे परेशान हो गयीं। उन्होंने देखा—वहाँ बीमार और बूढ़े गाय-बैल कटे पड़े थे, जिनका मांस मध्य एशिया के देशों में भेज दिया जाता है।

इतना सबकुछ लिखने के बाद लेखिका कहती हैं कि इस बारे में हम जागरूक लोग क्या कर सकते हैं? सबसे पहले तो हमें यह संकल्प करना चाहिये कि हम चमड़े की कोई भी चीज नहीं खरीदेंगे। अमरीका में गेप नामक कम्पनी तो चमड़े की बनी वस्तुओं का सबसे अधिक व्यापार करती है, उसका बहिष्कार करना चाहिये। कम्पनी को लिखना चाहिये कि 'तुम जिन चीजों का निर्माण करती हो उसके पीछे कितनी बड़ी क्रूरता है।' लेखिका यह भी आग्रह करती हैं कि 'भारत के प्रधानमंत्री को इसके सम्बन्ध में विस्तार से लिखना चाहिये। भारत में कैटल प्रोटेक्शन ऐक्ट को आज तक कभी प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया गया है। पशुओं को अमानवीय ढंग से कत्ल करने पर प्रतिबन्ध लगाया जाय। गौ-हत्या पर पाबंदी लगा देना ही पर्याप्त नहीं है। इसे नेकनीयती से लागू भी करना चाहिये। पशुओं को एक स्थान से दूसरे पर ले जाने के लिये जिन यातायात साधनों का उपयोग होता है, उनके कानूनों का कड़ाई से पालन होना चाहिये।' इनग्रिड न्यूकिर्क अत्यन्त भावुक होकर कहती हैं कि 'भ्रष्टाचार इन भोलेभाले जानवरों की मृत्यु में भी आकर व्याप्त हो गया है। पशु-चिकित्सकों से लेकर राजनीतिज्ञ तक इसमें सिर से पाँव तक डूबे हुए हैं। किसी की जान लेने में भी आदमी रिश्वत खाये, इससे बड़ी नीचता और क्या हो सकती है?'

'पेटा' संस्था की शाखाएँ सारे विश्व में फैली हुई हैं। पशुओं को बचाना तथा उनके साथ दया और सहानुभूति दर्शाना—इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है ही, परन्तु साथ-ही-साथ यह संस्था इस बात का आग्रह भी करती है कि 'सौन्दर्य-प्रसाधन से लेकर अन्य चीजों के निर्माण में भी प्राणियों की हत्या का सहारा न लिया जाय।' इस हेतु उसने कुछ पुरस्कारों की भी घोषणा की है। दो लाख पचास हजार डॉलर का एक पुरस्कार संस्था इस शोधकार्य के लिये देती है, जिसमें पशुओं का कोई अनुचित प्रयोग न किया जाय। पशुओं के स्थान पर किन चीजों का उपयोग किया जा सकता है, इसके शोध के लिये दो लाख डॉलर का एक अन्य पुरस्कार दिया जाता है। 'मेरीलैंड' में इसका नाम 'इंस्टीट्यूट फॉर विट्रो साइंसेज' रखा गया है। पचास हजार डॉलर का एक अन्य पुरस्कार इस क्षेत्र में डॉक्टर बिजोर्न इकबाल साइटोटोक्सी से सम्बन्धित है। इसमें अब तक यह खोज हुई है कि 'मानवीय सेल पर यदि किसी औषधि का प्रयोग किया जाय तो एनिमल सेल पर किये प्रयोग की तुलना में अच्छा परिणाम आता है।'

❑❑

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रोजगार देने के प्रकल्प

श्री पवनकमार अग्रवाल

देश से गरीबी मिटाना है, बेरोजगारों को काम देना है, स्थान-स्थान पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना है, परम्परागत कौशल को नष्ट होने से बचाना है और कम पूँजी में अधिक लोगों को उद्यम व स्वरोजगार में लगाना है, इसीलिए गोरक्षा मूलक स्थानीय उद्योग प्रधान लोक शिक्षण के प्रकल्प सुरभि शोध संस्थान ने वाराणसी में आरम्भ किये हैं। पिछले दशक का कार्यानुभव यह रहा कि लगभग ६० हजार अनुपयोगी गोवंश संरक्षित हुआ, गोबर गैस संयन्त्र लगे, स्लरी व जैविक खाद से सैकड़ों एकड़ ऊसर सुधरा, कृषि विकसित हुई, पूरक उद्योग संकुल खड़ा हुआ, कृषि गोपालन प्रशिक्षण सत्र चले और हर आयु वर्ग के लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा व चिकित्सा सुलभ कराना सम्भव हुआ है।

(१) कलकत्ता के कत्लखानों की ओर जाते हुए गोवंश को वाराणसी में रोका जाने लगा। समुचित चिकित्सा, संतुलित दाना-पानी, अच्छी देखभाल होने से वे उपयोगी बने। उनके गोबर-गोमूत्र का उपयोग ऊसर सुधार में किया। जहाँ तृण नहीं जमता था, वहाँ आज एक हजार गोवंश को वर्षपर्यन्त खिलाने लायक अनेक प्रकार का हरा चारा पैदा होता है। अनुभव का लाभ उठाया जाय तो देश में हो रही ७०% चारे की कमी दूर करने के लिए शुश्क भूमि (सिंचाई की जहाँ व्यवस्था नहीं है) उपयोग में ली जा सकती है। इससे पाँच लाख परिवारों को गाँवों में ही काम दिया जा सकेगा और देश की १२ करोड़ ९५ लाख ८० हजार हेक्टेयर बंजर भूमि भी सुधर जायेगी।

(२) संरक्षित गोवंश के गोबर का उपयोग करने हेतु चार गोबरगैस संयन्त्र लगाये गये हैं। जो बिजली पैदा होती है उससे चारा काटना, दाना पकाना, खाना बनाना, खटालों को रोशन करना तथा खेतों को स्लरी खाद देना सम्भव हुआ है। स्लरी के अलावा नडेप खाद, केंचुआ पालन (बर्मी कल्चर), परम्परागत गोबर खाद भी तैयार की जाती है, जिससे भूमि की उर्वरा-शक्ति बनी रहती है और उपज भी अच्छी होती है। गुणवत्ता श्रेष्ठ रहती है। प्रचार-प्रसार माध्यम, रासायनिक उर्वरकों को प्रोत्साहित करते हैं, जिसके कारण १९६७-६८ में जहाँ ४३४ मैट्रिक टन रासायनिक खेतों में पड़े, वहाँ अब ९० हजार टन से अधिक पड़ रहे हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति निरन्तर क्षीण हो रही है। उसकी जगह देश में प्रतिदिन मिलने वाले करीब २२ लाख टन गोबर का सम्यक् उपयोग करने का निश्चय किया जाय तो ३०० करोड़ टन जैविक खाद मिल जायेगी। देश की आधी आबादी के लायक गैस की आपूर्ति हो जायेगी और करीब १ करोड़ परिवार काम पा जायेंगे।

(३) १० लीटर गोमूत्र में २ किलो नीम की पत्ती डालकर ताँबे के बर्तन में उबालने से ५ किलो पेस्टीसाइड तैयार होता है। उसमें सौ गुना पानी मिलाकर छिड़कने से पौधों को रोग नहीं लगते। सौ रुपये किलो बिकने वाले इस पेस्टीसाइड का महत्व कृषक समझने लगे हैं। प्रचार-प्रसार माध्यमों की मदद मिले तो देशहित में इसका बड़ा योगदान हो सकता है और विदेशी मुद्रा की भी बचत हो सकती है।

(४) बैलचालित चारा काटने की मशीन, बैलचालित ट्रैक्टर, बैलचालित जेनरेटर, सुधरी बैलगाड़ियाँ बनाने से बैलों को वर्ष में २५० से ३०० दिन काम मिलने की सम्भावना है। नाईटी मुम्बई ने ऐसा एक उपकरण भी बनाया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है, जिससे रेहट के साथ बैल घूमता है तो विद्युत-धारा प्रवाहित होने लगती है। दो बैलों से एक हॉर्सपावर तक बिजली पैदा होने की आशा है। ग्रामोपयोगी विज्ञान से जनता को लाभान्वित करने का यह अच्छा अवसर है। पशु ऊर्जा का अधिकतम उपयोग होने से पशुपालक तो रोजगार पायेंगे ही, पूरक उद्योगों में खुरपी, कुदाल, बाल्टी, कृषि यन्त्र भी बनाने का उपक्रम आरम्भ हो जायेगा। कम पूँजी से परम्परागत उद्योग विकसित होंगे, वंश-परम्परा के हूनर से बालक निपुण हो जायेंगे और प्रशिक्षण भी परिणामकारी होगा।

(५) वाराणसी में पहले सौ लीटर गोदुग्ध के ग्राहक भी नहीं मिलते थे, वहाँ अब प्रतिदिन १० हजार लीटर गोदुग्ध पहुँच रहा है। अनुपयोगी गायों को उपयोगी बनाकर उनकी नस्ल सुधारने से गोदुग्ध का उत्पादन बढ़ा। अनेक युवकों ने स्वरोजगार के तहत दस-दस हजार रुपये लगाकर गायें खरीदीं। १३५ गाँवों के गोपालकों को लाभकारी मूल्य दिलाने के लिए गोरस भण्डार खोले गये, जिससे अब प्रतिदिन एक लाख रुपये गाँवों में पहुँच रहे हैं। दो घण्टे सुबह, दो घण्टे शाम गोसेवा में लगाने वाले लोग दिन में अन्य उद्योग कर लेते हैं। उनके घर की महिलाएँ सिलाई, कढ़ाई, कताई, अचार, पापड़ आदि खाद्योत्पाद बनाने से भी कमाई कर लेती हैं। पर्वतीय एवं पठारी क्षेत्रों में जल प्रबन्धन, मृदा संरक्षण से क्षेत्रीय समस्या हल करने के साथ फल, ईमारती लकड़ी और औद्योगिक लकड़ी भी मिलने लगती है। गाँवों से उजड़ते पशुपालक परिवारों को पुनर्स्थापित करने में यह प्रयोग सफल है।

(६) सब्सिडी, ऋण आदि के अतिरिक्त गाँवों में जिनके पास अतिरिक्त पूँजी है, उसका भी देश को आत्म निर्भर बनाने में उपयोग लेने के लिए परस्पर विश्वास का वातावरण बनाने से स्थानीय उद्योग खड़े हो सकते हैं। इसलिए पूँजी वालों को बैंक व अन्य संस्थाओं के चक्कर काटने से भी मुक्ति दिलाने की दृष्टि से सोचने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर हम परस्पर सहयोग से प्रोजेक्ट बनाने, उत्पादन प्रोत्साहन से विक्रय व्यवस्था बिठाने और गुणवत्ता कायम रखने पर भी ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। इसके लिए समय-समय पर कार्यकर्ता-प्रशिक्षण सत्र चलाते हैं।

(७) गोशाला हमारा प्रयोगकेन्द्र है। देश में करीब ८ हजार गोशालाएँ हैं। गोशालाओं के पास गोचर भूमि, भवन, साधन भी हैं। उन्हें नस्ल सुधार, जैविक खाद उत्पादन, गोबरगैस संयन्त्र और भूमि विकास, ग्रामोद्योग विस्तार जैसे बहुआयामी उपयोग का केन्द्र बनाने का साहसिक निर्णय लिया जाय तो देखते-देखते दूध दुगुना, चारा तीन गुना, भूसा पाँच गुना, दाना सात गुना और अनाज-सब्जी फलों का उत्पादन तो बढ़ेगा ही, साथ में स्वावलम्बन, आत्मनिर्भरता का सशक्त स्वाभिमान जागृत होगा।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोरक्षण-गोपालन-गोवर्धन

श्री वसंतराव बोबटकर
गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र)

गोरक्षण

गोरक्षण, गोपालन और गोवर्धन इन तीनों को कई लोग समानार्थी लेने से कर्त्तव्य, कार्यबोध स्पष्ट नहीं होने से सुनिश्चित कार्यदिशा नहीं बनती। इन जीवों में कुछ साम्य है और सूक्ष्म विभाजन भी है।

गोरक्षण-कार्य में मुख्यत: गायों को प्रत्यक्ष कत्ल से बचाना, उसके लिये सरकार से कानून बनवाना, उनका अधिकारी वर्ग से कड़ाई से पालन करवाना, कत्ल के लिये जाने वाले पशुओं को छुड़वाना, आवश्यक कोर्ट कार्रवाई करवाना, कत्ल कारखानों पर धावा बोलकर अवैध कत्ल रोकना, बचाये गये पशुओं की देखभाल विश्वस्त लोगों से करवाना, जनमानस गोवंश हत्या के विरोध में बनाना, अकाल या अन्य प्राकृतिक विपदाओं के समय गोवंश की सहायता करना और गोवंश कत्ल के लिये किसान न बेचे ऐसी परिस्थिति निर्माण करना तीन काम करने होते हैं।

गोपालन

किसान और गोशालायें गोपालन कार्य कर रही हैं। वे लाभदायक लगते हैं तबतक यथाशक्ति उनकी देखभाल की जाती है, लेकिन बूढ़े होने पर उनकी उपेक्षा होती है या बाजार में कसाई के हाथ बिक जाते हैं। कहीं-कहीं तिलक लगाकर खूँटे से छोड़ दिये जाते हैं। उन्नत संकरित गाय के नर बछड़े, या जहाँ बैल से खेती नहीं की जाती वहाँ के नर बछड़े अधिकतर मरने दिये जाते हैं या कसाई के हाथों में पड़ते हैं। गर्भ से लेकर मृत्यु तक सही मात्रा में भोजन, निवास और दवा-दारू का उचित प्रबन्ध रखना इसको सही गोपालन कहा जायेगा।

गोवर्धन

गोवर्धन गोपालन की अगली कड़ी है। इसका सम्बन्ध गोवंश नर-मादा सुधार से है। यह बीजरूप मूलभूत नींव का कार्य है। उन्नत गोवंश होगा तो वह कटने नहीं जायेगा। गायें सूखने पर भी उससे पूर्व में प्राप्त भरपूर दूध और सुन्दर शक्तिशाली बछड़े-बछड़ियाँ प्राप्त होने से इस बूढ़ी गोवंश से स्नेह का रिश्ता बना रहेगा। और उनके मौत के इनेगिने दिन देखकर कृतज्ञता से उनका पालन-रक्षण होगा। भगवान् कृष्ण ने यह गोवर्धन का पहाड़ जैसा महान् कार्य उठाया था। इसी कारण उसे गोवर्धनधारी कहते हैं।

क्या किया गोपाल कृष्ण ने? गोमाता के बछड़े और गोपालकों के बच्चों को भरपूर दूध पिलाया। मथुरा रास्ते जाने वाले दूध-दही-मक्खन की हँडिया रुकवाई। बछड़े और बच्चों का दूध पर प्रथम अधिकार साबित किया। इस कारण स्वाभाविक ही गोवंश और गोपालक समुन्नत होते गये।

जमुना का पानी प्रदूषणरहित किया। बाँसुरी बजाकर गायों को रिझाया, आनन्द की लहर पैदा की। उनके बड़े भाई ने हलधर बनकर उत्तम खुराक का इंतजाम किया। दोनों कृष्ण-बलराम द्वारा डाली परम्परा को पीढ़ी दर पीढ़ी चलाया गया जिसके परिणामस्वरूप दुनिया में सबसे उन्नत बहुआयामी गोवंश भारत में विकसित हुआ।

उन्नत साँड़-नंदी गोनस्ल सुधार का मूलाधार

भारत भर में मैंने कई गोशालायें ऐसी देखीं जहाँ उत्तम देशी प्रजाति का साँड़ नहीं दिखा। उन्नत साँड़ बिना गोशाला एक तरह से बाँझ जैसी ही समझनी चाहिये। जैसा बीज वैसा फल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपने भारत में दूध-घी पिलाकर उत्तम नंदी तैयार करने का शास्त्र विकसित हुआ था। दुधारू गाय और सशक्त तेज दौड़ने वाला सुडौल बैल, इससे हमें अंग्रेजों के राज्य के पहले प्राप्त होते रहे थे। लेकिन चुन-चुन कर यह बढ़िया गायें अंग्रेज मिलिटरी के पेट में डेढ़ सौ साल लुप्त हुईं, और बड़े-बड़े औद्योगिक नगरों में गई उनकी संतान वहीं कत्ल हुईं। यह सिलसिला आज भी जारी है। याने लगातार दो सौ साल इस देश के उत्तमोत्तम गोवंश को लाखों की तादाद में हर साल कत्लखाने चली आने से आज निकम्मा देशी गोवंश कुछ अपवाद छोड़कर बचा है। इसी कारण संकरित गायों और भैंस देशी गायों पर हावी हो गयी हैं।

उत्तम नन्दी और बछियों का पैदास-कार्य युद्धस्तर पर

पुराने जमाने में राजा लोग, बड़े जमींदारों द्वारा नस्ल सुधार, रक्षा-कार्य चल रहा था। अब वे दोनों नहीं रहे। आज की सरकारें उन्नत देशी गोवंश की अनदेखी करके संकरित गायों के पीछे पागल हैं। अकेले किसान के लिये नस्लवर्धन कार्य असंभव है। बेबी ट्रैक्टरों ने बैलों की जगह ली और संकरित गायें और भैंसों ने देशी गाय को घर से निकाला। मतलब है आगे आने वाले बीस-पचीस सालों में देशी गाय-बैल दिखेंगे नहीं। संकरित बैल और भैंसा खेती कर नहीं पायेगा। सारे खेतों का यांत्रिकीकरण होगा। किसान बनेंगे उनके बँधुआ मजदूर।

सावधान-सावधान-सावधान

इस भयंकर होनी से बचना हो तो गो-प्रेमियों को, आजादीपसंदों को, चेत जाना चाहिये। भारत में जहाँ-जहाँ उन्नत देशी नन्दी और दुधारू गाय का बछड़ा दिखे उन्हें लेकर पर्याप्त जल-घास हो ऐसी जगह और जहाँ इस विचार को मानने वाले गोशाला के संचालक हैं उन्हें तुरन्त आदर्श नंदी और बछिया खड़ी करने का काम अग्रक्रम से करना चाहिये। अपने सारे साधन, कौशल, व्यवस्था शक्ति इसी एकमात्र काम में लगाना चाहिये। डेयरी का काम गोपालक अन्य लोगों पर छोड़ दें। उन्नत देशी गोवंश का बीज एक बार नष्ट हो गया तो पछताना पड़ेगा। अच्छा होगा कोई समर्पित समर्थ व्यक्ति इस काम को उठाये जैसा गांधीजी ने आजादी का कार्य उठाया था। पाँच लाख गाँवों के लिये पन्द्रह लाख नन्दी और उत्तम बछिया का निर्माण यह हमारा पंचवार्षिक लक्ष्य हो। गोवर्धन (गो-नस्ल सुधार) से ही गोरक्षा और गोपालन ये दोनों कार्य सध जायेंगे। अन्यथा आज भी हमारी गोशालायें और गोपालक कत्ल के लिये कच्चा माल तैयार करने वाले साबित होंगे। सावधान! केवल दस साल हमारे लिये बचे हैं।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकुल (बावनबीघा) शाखा, स्वावलम्बन की ओर-कैसे ?

श्री सूबेदार सिंह
(पूर्व डेरी अधीक्षक, बी०एच०यू०)
गोकुल (बावनबीघा) शाखा, वाराणसी

श्री काशी गोशाला 'गोकुल' (बावनबीघा) शाखा को स्वावलम्बी एवं समीपस्थ गाँवों के समग्र विकास हेतु, मैंने अनुभव किया व देखा वह इस प्रकार है—

(१) गोकुल (बावनबीघा) शाखा पाण्डेयपुर से आजमगढ़ रोड पर ६ कि०मी० दूरी पर, एक कि०मी० लम्बा फ्रन्टेज, ११० बीघा भूभाग एवं देखने में सुरम्य रूप में स्थित है। परन्तु फार्म के लेआउट में चूक होने से ८२ बीघा कृषि योग्य भूमि में केवल ८ माह ही कृषि कार्य सम्भव हो पाता है। शेष ४ माह जल-प्लावन व खेतों में हार्ड-पेन होने के कारण पानी कम सोखता है जिससे गोशाला की आय प्रभावित होती है। अत: इस समस्या का समाधान व अन्य विकल्प ढूँढ़ना अति आवश्यक है।

(क) मेरे विचार से सिंचाई की नाली के बहाव के अनुसार, उसी से सटे १$^1/_4$ फिट गहरी व १$^1/_4$ फिट चौड़ी एक ड्रेन निकासी नाली बनाते हुये पूरब आम के बाग में एक बड़ा तालाब बनवाया जाय, उसके चारों तरफ शीशम, साखू के वृक्ष लगाये जायें। पानी में सिंघाड़ा की खेती की जाय। अब सूखे खेतों में कृषि कार्य किया जाय। उसी तालाब की कुछ मिट्टी गोवंश के 'ओपेन पैडक' (बाड़ा) में १$^1/_2$ फिट ऊँचाई में डालकर, पानी का बहाव नीचे की ओर कर दिया जाय इससे प्रजनन में वृद्धि होगी एवं दुग्ध उत्पादन बढ़ेगा जिससे अच्छी आय प्राप्त होगी।

अथवा

(ख) खेतों के चक के अनुसार ढलान की तरफ सुविधानुसार चक के एक कोने में गड्ढा बनाया जाय जिसमें उस खेत के चक का पानी एकत्रित हो और उसमें सिंघाड़ा लगाया जा सकता है।

अथवा

(ग) वाटर-हारवेस्टिंग विधि द्वारा हार्ड-पेन को तोड़कर पानी सोखने की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

अथवा

(घ) जल प्लावन वाले खरीफ के खेतों में अगैती 'फाइन' धान की खेती की जा सकती है। ४ माह हरे चारे व सब्जी की व्यवस्था सह-गोशाला फार्म पर करने का विचार किया जा सकता है।

(२) फार्म-लेआउट के समय 'ड्रेनेज' के चूक के पश्चात् दूसरी चूक फार्मबाउन्ड्री, सैकड़ों वर्ष से न बनाने की मन:स्थिति से अत्यधिक आर्थिक हानि का होना है। वर्तमान समय में अराजक व अवांछनीय तत्त्वों से फसलों व भूभाग की सुरक्षा हेतु स्थायी १० मीटर लम्बी व २ मीटर ऊँची पक्की दीवाल, ३ फीट उसके ऊपर एंगल आयरन के पोल तथा कटीला तार लगाकर प्रति दानदाताओं व गोभक्त मन से करायें तो ३ वर्षीय योजना के साथ पूर्ण हो सकता है। दूसरा विकल्प सीमेन्ट खम्भों व कटीला तार द्वारा बाउन्ड्री बनाई जाय और इसी से सटे मेडिसिनल पौध 'करेंज' व 'अणुस' लगाये जायँ तथा इससे २ फीट हटकर बाउन्ड्री के सहारे 'करौंदा' लगा दिया जाय तो ३ वर्ष में एक सघन आयप्रद सुरक्षित बाउन्ड्री हो जायेगी। इससे भूभाग की छिनैती, घड़रोज, पशुओं-आदमियों से बचत कर उत्पादन अधिक कर दुगुनी आय की जा सकती है।

(३) फार्म सुधार के तत्पश्चात रवी, जायद, खरीफ में अगेती सब्जियों की खेती करके अधिक से अधिक आय की जा सकती है।

(४) अच्छे गुणवत्ता के हरे चारे का अधिक उत्पादन करके गोलघर व गोकुल के गोवंश के चारे की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्ण व्यवस्था, तत्पश्चात नगरीय गोपालकों को भी विक्रय की योजना बनाई जा सकती है।

(५) औषधि हेतु जड़ी-बूटियों के पौध व वृक्षारोपण करके प्रति बीघा आय में वृद्धि की योजना बनाई जा सकती है।

(६) फूलों की वैज्ञानिक ढंग से खेती करके अच्छी आय ली जा सकती है। फूलों में 'ग्लोडियस', 'रजनीगंधा', उन्नत व शंकर प्रजाति के गुलाब व गेंदा की खेती करके प्रति बीघा १० से १५ हजार रुपये की आय सम्भावित है। अधिक उत्पादन होने पर निर्यात भी किया जा सकता है।

(७) आधुनिक तकनीकी 'स्पैंकलर' पद्धति से कम से कम सब्जियों हेतु सिंचाई की व्यवस्था करना लाभप्रद होगा।

(८) फार्म पर ३०%×१५% का एक वर्मीकल्चर शेड बनाया गया है जिसे कार्यान्वित करके जैविक खाद का उत्पादन किया जा सकता है। बागवानी करने वाले नागरिकों व नर्सरी वाले लोगों के प्रयोग हेतु विक्रय कर अच्छी आय की जा सकती है। फार्म की सब्जियों में प्रयोग कर गुणवत्ता में वृद्धि हो सकती है।

(९) गोमूत्र से आयुर्वेदिक औषधियाँ बनाकर चिकितसा में प्रयोग की जा सकती है जिससे अच्छी आय होगी तथा देशी गोवंश अपने पैरों पर खड़ा रहकर अपने भोजन की व्यवस्था कर सकते हैं। गोबर से पंचगव्य भी बनाने की योजना पर विचार होना चाहिये। गोमूत्र से कीटनाशक दवा भी बनाई जा सकती है।

(१०) रसायनिक खादों का प्रयोग क्रमशः बन्द करके जैविक खादों का प्रयोग अधिक कर रसायनिक खादों के व्यय से बचा सकता है।

(११) जैविक कृषि हेतु, बायोगैस संयंत्र से निकली स्लरी, कचरा व गोबर से अधीक कम्पोस्ट तथा 'नेडप' पद्धति वाले टैंक व अन्य विधियों का निर्माण करके जैविक खादों कीं मात्रा में वृद्धि करके खेती में प्रयोग किया जा सकता है।

(१२) एक ८५ घनफीट का बायोगैस संयंत्र का निर्माण कराने से अना ६३ के०वी० का जेनरेटर सेट चलाया जा सकता है जिससे ७५ प्रतिशत डीजल की बचत की जा सकती है।

(१३) फूलों, फलों व सब्जियों की नर्सरी तथा प्रमाणित उन्नति प्रजाति के सीरियल्श के बीजों का उत्पादन करके किसानों, संस्थाओं को विक्रय करके बीज से अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है।

(१४) मधुमक्खी पालन से अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है। प्रशिक्षण की व्यवस्था द्वारा महिलाओं व नवयुवकों को प्रशिक्षित किया जा सकता है जिससे लोग अपना जीवन निर्वाह कर सकें।

(१५) समग्र विकास वास्ते एक योजना गृह उद्योग प्रशिक्षण की इस परिसर में बनाई जा सकती है। इस प्रशिक्षण केन्द्र पर महिलाओं, बालिकाओं व आंशिक अपाहिजों को सिलाई, बुनाई, नायलान की रस्सी बनाना, कुर्सी की बिनाई, टोकरी, झउवा, अचार, पापड़, सेवई, फलों व सब्जियों का संरक्षण 'प्रिजर्वेशन' का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

(१६) परिसर में महिलाओं, बच्चों, वृद्धों के नेत्र, दाँत, टी०वी०, जेनरल हेल्थ केयर के जाँच व निदान हेतु चिकित्सकों का शिविर लगवाया जा सकता है जिससे समाज गोशाला के तकनीकी व आदर्शों के समीप आ सकता है।

(१७) देशी नस्ल की गोवंश की योजनानुसार हरियाना गायों व बछियों की संख्या में वृद्धि करके, शंकर नस्ल पर चिकित्सा के अधिक व्यय से बचा जा सकता है क्योंकि देशी में बीमारी अवरोधक क्षमता अधिक है। देशी नस्ल पर चारा व राशन पर कम व्यय होगा। बछड़े हल, बैलगाड़ी व साँड़ खेती वास्ते प्रयोग किये जा सकते हैं।

(१८) ट्रैक्टर का प्रयोग क्रमशः कम करके डीजल, मोबिल, मेन्टीनेस व्यय से बचा जा सकता है। इसके स्थान पर बैलचालित ट्रैक्टर, देशी हल, बैलगाड़ी, बैलों से चलाकर व्यय को घटाया जा सकता है। ग्रामीण समाज के लोग गोशाला के प्रदर्शन को देखकर स्वयं करने वास्ते प्रेरित होंगे।

(१९) गाँव को गोशाला से जोड़ने वास्ते उनके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवंश हेतु देशी वीर्य द्वारा कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र व चिकित्सा योजना बनाना अति आवश्यक है।

(२०) देशी बुल-ब्रीडिंग फार्म, पेडिग्री के साथ गोकुल गोशाला पर बनाकर देश के अन्य गोशालाओं व गाँवों को अच्छे साँड़ प्रजनन हेतु दिया जा सकता है।

(२१) दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादन के प्रतिदिन गुणवत्ता की जाँच हेतु एक छोटी 'लैब' उपकरणों से सुसज्जित अथवा 'कम्प्यूटर जाँच' जो भी उचित हो, होना चाहिये।

(२२) दुग्ध वितरण प्रणाली मिल्क डेलिवरी केन में वेन्डर से न कराकर, शीघ्र व सुरक्षित वितरण हेतु पैकिंग व्यवस्था 'सेमी मैन्युवल पैकिंग मशीन' द्वारा कराया जा सकता है। दूध स्टोरेज हेतु एक 'डीप फ्रीजर' भी होना चाहिये जिससे दूध अधिक होने पर बरबाद नहीं होगा।

उपरोक्त सुझावों पर ध्यान देते हुए विशेष रूप से फार्म का ड्रेनेज, फार्म बाउन्ड्री, देशी गोवंश, सब्जी उत्पादन एवं सीड प्रोडक्शन पर प्राथमिकता देते हुए अन्य कार्यों को भी किया जाय। इससे गोकुल (बावनबीघा शाखा) पूर्ण रूप से स्वावलम्बी हो जायेगा।

□□

गैर शाकाहारी चीजों से बने खाद्य पदार्थों का पता लगाना अब आसान होगा

श्रीलता मेनन

आप जो भी खाद्य वस्तु खरीद रहे हैं, उसमें कहीं गैर शाकाहारी चीजें तो नहीं हैं, यह जानना अब आसान हो जाएगा। इसके लिए अब ऐसे सामान के पैक पर भूरे रंग का लोगो बना रहेगा। इस बारे में सरकार अधिसूचना जारी कर चुकी है और यह कानून चार अक्टूबर २००० से लागू हो गया है। नए नियम के मुताबिक ऐसे किसी भी खाद्य उत्पादन की पैकिंग पर एक चौखाने में भूरे रंग का गोला बना होगा। जो गैर शाकाहारी अवयवों से तैयार किए जाते हैं। दूध और दूध उत्पादों व दवाइयों को इससे अलग रखा गया है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक अगर कोई निर्माता जो ऐसे खाद्य उत्पाद तैयार करता है जिनके निर्माण में गैर शाकाहारी अवयवों का प्रयोग हुआ है तो उसे उपभोक्ताओं को इसकी जानकारी देना अनिवार्य कर दिया गया है।

अधिसूचना में कहा गया है कि यदि किसी खाद्य पदार्थ के निर्माण में किसी जानवर या पक्षी का कोई भी अवयव पूर्ण रूप से अथवा आंशिक रूप से इस्तेमाल किया जाता है तो उसे उत्पादन के पैक पर इसका ब्योरा देना होगा। नए नियम के मुताबिक भूरे रंग का यह लोगो पैकिंग के लेबल पर, परचे पर, विज्ञापन में दिया जाना जरूरी है। यदि किसी उत्पाद में अंडे को गैर शाकाहारी अवयव के रूप में इस्तेमाल किया गया है तो उसकी जानकारी अलग से देनी होगी।

कोला में जो ग्लिसरॉल प्रयोग किया जाता है वह जानवरों या पौधों से ही निकाला जाता है। चुइंगम और चॉकलेटों में जो ग्लिसरीन व जिलेटिन इस्तेमाल होता है उनका स्रोत भी जानवरों के अंग ही होते हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक मिठाइयों पर जो चाँदी के वर्क लगे होते हैं, वे ताजे कटे हुए बैल या गाय की आँतों के बीच चाँदी की परतों को रख कूट कर बनाए जाते हैं। मंत्रालय के मुताबिक कई प्रकार के बिस्कुट बनाने में भी जानवरों से मिलने वाले एंजाइयों का प्रयोग होता है। जिलेटिन जानवरों की हड्डियों और खाल को पानी में उबाल कर प्राप्त किया जाता है। बड़ी संख्या में खाद्य पदार्थों के निर्माण में जिलेटिन का इस्तेमाल होता है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों का कहना है कि यदि कोई निर्माता अपने किसी भी उत्पाद में गैर शाकाहारी घटक के बारे में जानकारी उपभोक्ता को नहीं देता है तो उपभोक्ता इसकी शिकायत दर्ज करा सकता है या मंत्रालय के शिकायत प्रकोष्ठ में शिकायत कर सकता है।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवध-बंदी से राष्ट्रीय एकता व पर्यावरण-पवित्रता

सम्पादक, 'गांडीव', वाराणसी

हिन्दू-मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन के साथ-साथ सूफी, सहजपंथी, बैरागी, वैष्णव, शैव, नाथपंथी, दादूपंथी, कबीरपंथी, अघोरपंथी व बाउल तथा अन्यान्य धर्मों, मत-मतान्तरों व पंथों से भारत भूमि अनादि काल से सिंचित होती आयी है। सभी ने प्राणियों में परमेश्वर की खोज की। विभक्त मानव मन को जोड़ने का कार्य किया। लेकिन जैसा कि गालिब ने कहा—नदियों से सींचे गये फिर भी प्यासे के प्यासे रहे। विभिन्न मत-मतान्तरों के बीच समरसता स्थापित नहीं हो सकी। देश के बँटवारे के समय राष्ट्रीय नेताओं ने कहा कि अलग देश की स्थापना से अशांति का वातावरण खत्म हो जाएगा। लेकिन नेताओं का यह कथन दिवास्वप्न ही साबित हुआ। आज भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश तथा पड़ोसी श्रीलंका में गरीबी, आंतक व अत्याचार बढ़ता ही जा रहा है। संभवत: सद्भाव के महत्त्व को ही समझकर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू व श्रीमती इंदिरा गाँधी तथा भाजपा के वर्तमान अध्यक्ष श्री लक्ष्मण बंगारू ने धार्मिक सद्भाव वृद्धि हेतु कदम उठाया। वस्तुत: सद्भाव के अभाव में आर्थिक विकास की कल्पना साकार नहीं हो सकती। हमने इसी स्तम्भ में लक्ष्मण बंगारु के विचारों पर भी प्रकाश डाला है। लेकिन हमारे मन में गालिब का कथन निरन्तर उठता रहा है और हमारे मन को मथता रहा है। आखिर इतनी पुरानी सभ्यता व संस्कृति के देश में हम प्यासे के प्यासे ही क्यों रह गये?

यही प्रश्न वाराणसी के प्रो० रामचन्द्र सिंह के सम्मुख रहा। यहाँ यह बता देना समीचीन होगा कि प्रो० रामचन्द्र सिंह ऐसे परिवार से सम्बन्धित है जिसने १८५७ ई० से १९४७ ई० तक तैल धारावत देश की स्वातन्त्रता के लिये कार्य किया। प्रो० सिंह ने चीनी आक्रमण के पूर्व ही 'आक्रांत हिमालय पुस्तक' लिखी। नेहरू जी के जमाने में राष्ट्रीय एकता के लिये कार्य किया। इंदिरा जी प्रो० सिंह से विचार-विमर्श किया करती थी जबकि विनोबा भावे जी के गो-रक्षण कार्य से तो प्रो० सिंह जुड़े ही रहे। आज भी राष्ट्रीय एकता व गोरक्षा के कार्यों को प्रो० सिंह अपने हाथ में लिये हुए हैं। प्रो० सिंह ने कहा कि भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दू व मुसलमानों की एकता गाय के सन्दर्भ में बनी थी। लेकिन स्वतन्त्रता संग्राम के दूसरे चरण में देश के नेताओं ने 'गाय' को छोड़ दिया। यद्यपि गो-सेवा का कार्य किया गया। लेकिन सेवा भाव व रक्षण-भाव में अंतर तो होता ही है। इस अंतर ने अंतराल पैदा किया। साथ ही साथ 'सर्वधर्म समभाव' का नारा दिया गया। मगर इस नारे का संदेश बहुत ही सीमित दूरी तक गया। बहुसंख्यक अवाम की समझ से परे था। होना यह चाहिये था कि 'सर्वधर्म आदर भाव' का नारा प्रचारित किया गया होता। इस नारे से सामान्य जनता जुटती। प्रो० सिंह ने बतलाया कि जब सर्वधर्म समभाव का नारा तैयार किया जा रहा था, उस समय भी काका कालेलकर ने नारे की उपयोगिता पर प्रश्न उठाया था। लेकिन काका कालेलकर का प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया। विडम्बना है कि आज भी सर्वधर्म समभाव के उद्‌घोष को जारी रखा गया है। उन्होंने आगे बतलाया कि भारत के महान् गोरक्षकों में महाराजा रणजीत सिंह, मुगल सम्राट् बहादुरशाह जफर, बाजीराव पेशवा, स्वामी दयानन्द सरस्वती व सर सैय्यद अहमद खाँ के नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

वास्तव में गाय की ऐसी उपयोगिता है कि इसका वर्णन कर पाना संभव नहीं है। गाय की उपयोगिता को ही देखकर इस्लाम धर्म के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब ने गाय की सेवा व उसकी रक्षा के लिये हिदायत जारी की थी। अनेक मुसलमान बादशाहों ने गाय की रक्षा के लिए कार्य भी किया। अनादि काल से सम्पूर्ण सृष्टि गाय से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपकृत होती आयी है। हमारे शास्त्र में वचन है—'तिलं न धान्यं पशवो न गावं:।' दूध को अमृत कहा गया है। गौ का मूत्र और गोबर अपवित्र देह को पवित्र बनाते हैं। इसी दृष्टि से अपवित्र स्थान को पवित्र बनाने के लिये गो-मूत्र और गोबर का प्रोक्षण व लेपन किया जाता है। भूमि की उर्वरा शक्ति के संवर्धन में गोबर का महत्त्व वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है। गोमूत्र से असाध्य रोगों का निवारण होता है। पर्यावरण की पवित्रता को बनाये रखने की असीम क्षमता गाय में सन्निहित है। गाय के महत्त्व को इसी कारण कलिकाल के आगमन के पूर्व पूर्णब्रह्म भगवान कृष्ण ने गो-सेवा, गोचारण व गोरक्षा के कार्यों को प्रतिपादित करके प्रतिष्ठित किया। कृष्ण भगवान ने तो 'गाय और ग्वालों' की रक्षा के लिये गोवर्धन पर्वत धारण किया था। आज हम गोवर्धन पर्वत की पूजा करते हैं, लेकिन गायों की रक्षा के संकल्प के अभाव में यह पूजा पूरी कैसे होगी? राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने तो—'गो हमारी माता है, देश धर्म का नाता है' का नारा देकर देश भर में एक नई जागृति पैदा कर दी।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार भी गाय विशिष्ट प्राणी है। विश्वव्यापी होने के कारण इसे जगत माता कहा गया है। औद्योगिक क्रांति व भूमंडलीकरण में गायों का कत्ल बढ़ता जा रहा है। बूचड़ खाने खुलते जा रहे हैं। गाँवों की गरीबी बढ़ती जा रही है। यदि गरीबी खत्म करना है, पर्यावरण शुद्ध रखना है और राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करना है तो हमें पूर्ण गोवध बंदी करना होगा आज समय भी उपयुक्त है क्योंकि हम संविधान समीक्षा करने जा रहे हैं। इस अवसर पर हमारा नम्र सुझाव है कि राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति हेतु संविधान के मूल उद्देश्य में गोवध-बंदी की व्यवस्था की जाय। काशी से यह संदेश जाना चाहिए हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव वृद्धि हेतु हमें स्वतंत्रता संग्राम (प्रथम) के दिनों के संदेश का स्मरण करना होगा— 'गोरक्षा में सृष्टि रक्षा'

भारत के आधुनिक इतिहास में गालिब ने जो प्रश्न रखा और जिस प्रश्न का उत्तर हम लगातार ढूँढ़ रहे थे, उसका उत्तर काशी विद्यापीठ के अवकाश प्राप्त प्रो० रामचन्द्र सिंह ने दिया है। इस उत्तर से हम संतुष्ट हुए हैं कि १८५७ ई० तक हिन्दू-मुसलमानों का सामान्य आदर भाव यदि किसी पर था, तो वह 'गाय' ही थी। गाय के त्यागने से ही देश टूटा। आज शहर, गाँव, गरीब व समाज टूट रहा है। यदि इस टूटन को रोकना है तो 'गाय' की रक्षा करनी ही होगी।

□□

एक के बदले पाँच

अमेरीका के कैलिफोर्निया नगर में एक गोशाला बनाई गई है, जिसमें ८० हजार बूढ़ी और अपंग गायें हैं। इनसे ८०० टन गोबर और इतना ही गोमूत्र प्रतिदिन प्राप्त होता है। इस गोबर और गोमूत्र से चलने वाले बिजलीघरों में जो बिजली उत्पन्न होती है उसे बीस हजार परिवार काम में लेते हैं। १८० टन गोबर की राख भी प्रतिदिन प्राप्त होती है जो उर्वरक के नाते काम में आती है। हिसाब लगाने पर सामने आया कि इस गोशाला के निर्माण में खर्च प्रत्येक एक डालर के एवज में गोशाला को पाँच डालर हर साल प्राप्त हो रहे हैं। पेट्रोल तथा डीजल की जो बचत हो रही है वह इसके अतिरिक्त है।

- क्या भारत में ऐसे प्रयोग हर शहर के पास नहीं हो सकते?
- क्या भारत सरकार या भारतीय उद्योगपति इस हेतु आगे आयेगें?
- क्या जीव-जन्तु कल्याण-बोर्ड ऐसे उद्योग लगा अथवा लगवा सकती है?
- क्या इस प्रकार व्यापक गो-वंश की रक्षा नहीं हो सकेगी?
- गो-वंश रक्षार्थ आपके बहुमूल्य सुझाव निम्न पते पर आमंत्रित हैं।

सर्वोदय विचार परिषद्
१३२/१, महात्मा गांधी रोड,
कलकत्ता-७०००७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय ग्रामोत्थान की कुंजी है

श्री राजनाथ सिंह

हमारी सम्पन्नता और खुशहाली इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे गाँववासी कितने सम्पत्र और खुशहाल हैं। उनकी स्थिति का आँकलन औसत के आधार पर नहीं किया जा सकता। ऐसा करना उन चार मूर्ख विद्वानों की कथा को दोहराना होगा जो नदी पार करने के लिए गहरायी का औसत निकालकर उसमें घुस गए और डूब गए। इस कथा का देश के सभी क्षेत्रों में व्यापक संज्ञान के बावजूद हमारे वे अर्थशास्त्री जो पूँजीवादी या समाजवादी व्यवस्था के अन्धानुकरण के पक्षधर हैं, औसत निकालकर सम्पन्नता का आँकलन करने की पद्धति से अलग होने की मानसिकता नहीं बना पा रहे हैं। गाँव कैसे खुशहाल होंगे? कभी हमारे एक प्रधानमंत्री ने गाँव की खुशहाली पर गर्व करते हुए कहा था कि अब तो हल चलाता हुआ किसान बैल की सींग में ट्रांजिस्टर टाँगकर विविध भारती के गाने सुनता है। अनावश्यक या विलासितापूर्ण भौतिक वस्तुओं तक पहुँच को सम्पन्नता का लक्षण मान लिया गया है। इस अवधारणा ने पहुँच न होने पर पहुँच बनाने के लिए साधन जुटाने हेतु और अधिक श्रम के बजाय घूसखोरी या नाजायज तरीके जिनमें चोरी, डकैती, तस्करी या दादागिरी शामिल हैं, की ओर लोगों को उन्मुख किया है। पिछले तीन-चार दशक से इस दिशा में बढ़ने की होड़ के कारण अब किसी के बारे में ईमानदार होने की चर्चा पर लोगों को विश्वास नहीं होता है। इस मानसिकता का विस्तार रोकने के लिए हमें अपने परिवेश और प्रकृति के अनुकूल आचरण करना होगा न कि अन्धानुकरण। गाँवों की सम्पत्रता और खुशहाली को भी इस दृष्टिकोण से देखना होगा। गाँवों में प्रकाश के लिए हम बिजली के खम्भे गाड़कर तार जरुर खींचते जा रहे हैं लेकिन विद्युत प्रकाश नहीं दे पा रहे हैं, दे भी नहीं सकते। जो विद्युत प्रकाश उनकी अपनी मुट्ठी में बन्द है, उसे खोलने के लिए प्रयास करना होगा। जिस व्यक्ति के घर में दो पशु हो वह गोबर-गैस संयंत्र लगाकर न केवल विद्युत प्रकाश पा सकता है अपितु भोजन पकाने के लिए ईंधन भी उपलब्ध कर सकता है। लेकिन यह तभी सम्भव होगा जब हम धरातलीय सत्य से मुँह फेर खड़े रहने की मानसिकता मे बाहर निकलें और यांत्रिक तथा चमत्कारिक चकाचौंध से निकलकर पशु आधारित कृषि को, जो तमाम आधुनिकताओं के बावजूद अस्सी प्रतिशत से अधिक आज भी प्रचलित है, सम्पूर्णता के साथ प्रोत्साहित करें और ऐसा करने के लिए हमें हीन भावना से उबरकर सनातन काल से इस देश की गौ-आधारित अर्थव्यवस्था को केन्दबिन्दु बनाना पड़ेगा। योरोप या अन्य देशों में गाय को दूध या खाने के लिए ही पाला जाता है लेकिन हमारे देश में गौवंश की सम्पूर्णता में उपयोगिता रही है, आज भी है। इसलिए गाँव की सम्पन्नता और खुशहाली बिना गौवंश के संरक्षण के सम्भव नहीं है तथा गाँवों के खुशहाल हुए बिना देश का सम्पन्न होना असम्भव है।

हमने अनादिकाल से गाय को माता के रूप में पूजनीय माना है। गाय ही क्यों हमने गंगा अर्थात् नदियाँ और धरती को भी जन्मदायिनी माता के समान ही पूजनीय माना है। हमारा ऐसा मानना किसी झख या दकियानूसी चलन का प्रतिफल नहीं है बल्कि उपयोगिता और उपादेयता के कारण है। दूध देने वाले और कृषि-कार्य में उपयोगी साबित होने वाले दुनिया में बहुत से पशु हैं लेकिन जैसे सभी वृक्षों के फल खाने योग्य नहीं होते और जिन-जिन वृक्षों के फल खाने योग्य भी होते हैं उनमें आम, केला आदि वृक्ष के फलों के समान गुण नहीं होता वैसे ही गाय के दूध और बैल की खेती के समान अन्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पशुओं की उपयोगिता भी नहीं है। यही कारण है कि हमारे देश में गौ की महत्ता सर्वाधिक आँकी गई और आज के वैज्ञानिक विश्लेषण से भी यह स्पष्ट हो चुका है। गाय के दूध, दही, मक्खन में जिनकी पौष्टिकता और रोग निरोधात्मकता है उतना किसी अन्य पशु से प्राप्त पदार्थ में नहीं है। हमारे घरों में वर्षों से गाय के गोबर से लिपाई-पुताई होती आ रही है। किसी ने हाथी या घोड़े के गोबर से जिसे लीद कहते हैं, पुताई करने की कल्पना भी नहीं किया है। गाँव की अर्थव्यवस्था का केन्द्रबिन्दु गाय को बनाने की बात महज भावनाओं पर आधारित नहीं है। बल्कि देश के अनेक भागों में इस समय जो निजी आधार पर प्रयोग चल रहे हैं उनसे इसका औचित्य प्रभावित हो चुका है।

महाराष्ट्र के पुसाढ़, में नादेप काका के नाम से विख्यात नारायण देव राव पंढारी गाय के गोबर के उत्पादों—साबुन, मिश्रित खाद, अंगराग भस्म, भित्ति, रंग, पूजा के लिए सुगन्धित सामग्री आदि से प्रतिवर्ष २.४६ लाख रुपये अर्जित करते हैं। यह सिर्फ तीन गायों के सहारे वे कर रहे हैं। उनके द्वारा बनाई गई मिश्रित खाद जो नादेप मिश्रण के रूप में ख्यातिप्राप्त है, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली और आई.पी.सी.एल. बड़ौदा के अतिरिक्त महाराष्ट्र और राजस्थान सरकारों के कृषि विभागों द्वारा अभिप्रमाणित किया गया है। अनुसंधान से स्पष्टतः यह प्रमाण मिला है कि नादेप पद्धति से गाय के एक किलो गोबर से प्रतिवर्ष १४६० टन जैविक उर्वरक तैयार किया जा सकता है जो कि १४.६ एकड़ भूमि के लिए पर्याप्त होता है। इसमें गो-मूत्र और दूध से होने वाली आय सम्मिलित नहीं है।

समय-समय पर जिन लोगों ने भी सात्विक मन से विचार किया उन्होंने गौवंश की रक्षा और संवर्धन को अंगीकार करना ही श्रेयस्कर माना है, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'गौ करुणानिधि' नामक पुस्तक में लिखा है कि एक गाय के मांस से मात्र ८० सामिष व्यक्तियों के लिए एक समय के भोजन की तुलना में गाय अपने जीवन काल में लगभग ४,१०,४४० व्यक्तियों के लिए एक समय का भोजन उपलब्ध करा सकती है।

गो-मूत्र इसके औषधीय गुणों के कारण अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है और कृषि में इसका कीटनाशक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

भारत में अभी भी खेतों की जुताई आदि का ९० प्रतिशत से अधिक कार्य बैलों द्वारा किया जाता है। बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश और रजोकरी गाँव, दिल्ली में बैलों द्वारा खींचे जाने वाले ट्रैक्टरों से कई प्रकार के कृषि संबंधी कार्य किए जा रहे हैं और इसे परिवहन के साधन के रूप में भी प्रयुक्त किया जा रहा है।

गौवंश की अभिवृद्धि के लिए योजनाएँ बनाकर देश के प्रत्येक गाँव में जीविकोपार्जन को सुनिश्चित किया जा सकता है और इससे अतिरिक्त विद्युत उत्पादन भी संभव है। इसके साथ-साथ पशु-मूत्र से कई लाख गैलन कीटनाशक पदार्थों का उत्पादन भी संभव है। १९९९-२००० के दौरान भारत विश्व का सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाला देश रहा और यहाँ ७८० लाख टन दूध का उत्पादन हुआ। ६६ हजार टन दूध उत्पादन के अतिरिक्त २२.५ लाख टन शिशु दुग्ध और दुग्ध पाउडर का उत्पादन किया गया।

अनुसंधान से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि गाय में हैजा के कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता होती है। यदि तपेदिक के रोगी को गायों को बाँधे जाने के स्थान पर रखा जाता है, तो गाय के गोबर और मूत्र की गन्ध से तपेदिक के जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। गाय के एक तोले घी से किए गए यज्ञ से एक टन आक्सीजन बनती है। गाय साँस छोड़ते समय आक्सीजन बाहर निकालती है। गुग्गल की गन्ध जो कि गाय के शरीर से निकलती है, प्रदूषण को संतुलित करती है। यदि शहरों के कूड़े-कचरे के ऊपर गाय का गीला गोबर छिड़क जाता है, तो उससे निकलने वाली दुर्गन्ध नष्ट हो जाती है और वह कूड़ा-करकट अच्छे खाद में बदल जाता है।

पशुओं के गोबर और मूत्र से ऐसी ३२ आवश्यक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

औषधियाँ निर्मित की जा रही हैं जो कि पेट सम्बन्धी रोगों, हृदय, यकृत आदि की विकृतियों और कैंसर के सफलतापूर्वक इलाज के लिए प्रयुक्त की जा रही है। गाय के दूध से कैलस्ट्रोल का स्तर भी नहीं बढ़ता है। गाय के दूध में भैंस के दुध की तुलना में दस गुना अधिक केरोटीन पाया जाता है जोकि मानव शरीर में विटामिन 'ए' का निर्माण करता है।

गाय के गोबर से निर्मित मिश्रित खाद जहाँ एक ओर भूमि की उर्वरता का संरक्षण करती है, वहीं यह कृषि उत्पादों को खतरनाक रसायनों से मुक्त करती है। रासायनिक उर्वरकों से भूमि की उर्वरता धीरे-धीरे समाप्त हो रही है और इससे नए-नए प्रकार के कीट उत्पन्न हो रहे हैं, जिनको समाप्त करने के लिए हमें कीटनाशक पदार्थों के उत्पादन के लिए अधिक संसाधन जुटाने पड़ते हैं और इससे हमारे कृषि उत्पाद विषैले हो जाते हैं। हमें भारत में अपने अतीत को नहीं भूलना चाहिए यदि हम अपने भविष्य के प्रति चिन्तित हैं तो। भगवान् राम के पूर्वज महाराज दिलीप ने नंदी की पूजा की जिससे उन्हें एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठाकर इन्द्र के प्रकोप से गौ-वंश और उनके पालकों की रक्षा की थी।

जो लोग यह प्रचार करते हैं कि मुसलमानों के लिए गाय का मांस खाना इस्लामी कार्य है उन्हें पैगम्बर मोहम्मद साहब के इस कथन का ध्यान रखना चाहिए कि 'गाय का दूध रसायन है, इसका घी अमृत है लेकिन इसका मांस बीमारी है।' यीशूमसीह ने कहा है कि 'गौहत्या मानव हत्या सदृश है।' दसवें गुरु गोविंद सिंहजी ने गाय की रक्षा की प्रार्थना करते हुए चण्डी से यह कहा 'कृपया मेरी यह इच्छा पूरी कीजिए और गाय की रक्षा कीजिए और मुझे अपने दुःखों से मुक्ति दीजिए।'

आधुनिक महान्-पुरुषों में महात्मा गांधी ने कहा है कि 'गाय की रक्षा का प्रश्न स्वशासन के प्रश्न से भी अधिक महत्वपूर्ण है।' लोकमान्य तिलक ने कहा है 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गो-हत्या पूरी तरह से समाप्त कर दी जाएगी।' आचार्य विनोबा भावे ने कहा कि 'मैंने कुरान और बाइबिल दोनों का ही अध्ययन किया है और इन दोनों ग्रन्थों में स्पष्टतः यह उल्लेख किया गया है कि गो-हत्या एक अक्षम्य अपराध है।' जयप्रकाश नारायण कहा करते थे 'हमारे लिए गो-हत्या पर प्रतिबंध आवश्यक है।'

महामना मदनमोहन मालवीयजी की यह अन्तिम इच्छा थी कि 'भारतीय संविधान की पहली धारा में ही गो-हत्या को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।' श्रद्धेय देवरहा बाबा का कहना था कि 'जब तक गाय का रक्त पृथ्वी पर गिरता रहेगा, तब तक कोई भी धार्मिक या सामाजिक अनुष्ठान पूर्ण नहीं होगा।' हकीम अजमल खाँ ने कहा है कि 'कुरान और अरब की परम्पराओं में कहीं भी गो-हत्या को उचित नहीं ठहराया गया है।'

यद्यपि गौवंश की उपयोगिता के लिए किन्हीं महानुभावों के कथनों का प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है लेकिन आज जिस प्रकार से गौवंश की रक्षा के सवाल को मजहबी या दकियानूसी आवरण प्रदान करने की कोशिश होने लगती है उसको देखते हुए ऐसे लोगों का गाय के संदर्भ में अभिमत उद्धृत करना आवश्यक हो गया है। लेकिन असली मुद्दा गाँवों की सम्पन्नता का है। सम्पन्नता उधारीकरण से नहीं आयेगी बल्कि अपने पैरों पर खड़े होने की क्षमता से विकसित होगी। हम अपने पैरों पर अपने साधनों के सहारे ही खड़े हो सकते हैं। ईश्वर ने बड़ी अनुकम्पा करके हमें गौवंश का उपहार दिया है। हमें उसे न केवल नष्ट होने से बचाना है जिसके लिए सम्पूर्ण गौवंश की हत्या पर रोक लगाया जाना चाहिए बल्कि उसका संवर्धन भी करना है जिससे हमारी भौतिक सम्पन्नता में भी वृद्धि हो सके। गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने का यही एकमात्र विकल्प है। गाय ग्रामोत्थान की कुंजी है।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधिकांश बीमारियों का इलाज है गोमूत्र

श्री वीरेन्द्रकुमार जैन
गोमूत्र चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र, इंदौर

गोमाता चलता-फिरता अस्पताल है। उसमें औषधियों का भंडार है। गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से कारगर रीति से घर पर ही अनेकों असाध्य रोगों का इलाज किया जा सकता है। पंचगव्य में रोगों को ठीक करने की अद्‌भुत क्षमता है। हमारे पावन ग्रन्थों एवं वेदों में इसका बहुत ही सटीक वर्णन मिलता है। चरक संहिता, राजनिघंटु, वृद्धभागभट्ट, अमृतसागर में वर्णन आया है कि गोमूत्र कड़क, चरका, कषैला, तीक्ष्ण, उष्ण, पंचरस युक्त है। यह पवित्र, विषनाशक, जीवाणुनाशक, त्रिदोषनाशक, तांत्रिक, मेधाशक्तिवर्द्धक, शीघ्र पाचक, परम रसायन, पथ्य है। हृदय को आनन्द देनेवाला, बल, बुद्धि प्रदान करनेवाला है। यह आयु प्रदान करने वाला, रक्त के समस्त विकारों को दूर करनेवाला, कफ, वात और पित्त जन्य तीनों दोषों, हृदय रोगों, व विष के प्रभाव को दूर करनेवाला है। सुश्रुत संहिता में लिखा है गोमूत्र शूल, गुल्म, उदर, अनाह, कुण्डु, खुजली, मुख रोगनाशक है। यह किलास, कुष्ठ, आमबस्ति रोगनाशक है। नेत्ररोग नाशक है। अतिसार, वायु के द्वारा सब विकार, कास, शोथ, उदर रोग, कीटाणुनाशक, पांडु, तिल्ली, कर्णरोग, श्वास, मलावरोध, कामला बिल्कुल ठीक होते हैं। सभी मूत्रों में गोमूत्र में गुण अधिक है। अत: गोमूत्र सर्वश्रेष्ठ है।

भाव प्रकाश में वर्णन है कि गोमूत्र दीपक, मस्तिष्क के ज्ञान तंतुओं को बढ़ाने वाला है। पेट में दर्द, वायुगोला, पेट में अन्य रोग, नेत्र रोग, मुख के सभी रोगों को नष्ट करता है। सफेद दाग, रक्तविकार, सभी कुष्ठ ठीक हो जाते हैं। गोमूत्र पीलिया, रक्त की कमी, दस्त लगना, सभी कीटाणु नष्ट करता है। लीवर, तिल्ली, सूजन, बवासीर, कर्ण में डालने से कान के रोग नष्ट होते हैं। गोमूत्र मलों का क्षरण करनेवाला, चिपके हुए मल रूप दोषों को उखाड़कर बाहर निकालने वाला, कफ, दमा, भ्रम, ज्वर, खाँसी, मुख रोग, त्वचा रोग, प्रदारादि स्त्री रोग, मूत्रावरोध इन सबका शमन करता है।

गोमूत्र चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र, इंदौर में पिछले 2 वर्षों में किए गये अनुसंधान में यह निष्कर्ष निकला है कि गोमूत्र एवं पंचगव्य से एड्स, अजीर्ण, दस्त, एसिडिटी मिर्गी, चक्कर आना, कैंसर, पाइल्स, प्रोस्टेट, डायबिटीज, कब्जीयत, अल्सर, गैसेस, एनिमिया, एक्जीमा, स्प्लीन वृद्धि, बहुमूत्र, मुखरोग, लीवर ब्लडप्रेशर, कर्णरोग, कृमि, कफ, दंतरोग, दाद, धातुक्षीणता, निंदा नाश, नासारोग, नेत्रजुकाम, किडनी डिसीज, त्वचारोग, माइग्रेन, सिरदर्द, अस्थमा, स्त्रीरोग, हृदयरोग व हैपिटाइटिस बी को दूर किया जा सकता है।

गाय की थम्बी (हम्प) की तुलना पिरामिड से की जा सकती है। गाय हम्प से सभी नक्षत्रों, चंद्र एवं सूर्य शक्ति को समेटकर अपने में समाहित करती है और यह शक्ति गोमाता द्वारा दिए जाने वाले गोबर, गोमूत्र व दूध से हमें प्राप्त होती है। गाय का सींग बहुत ही शक्तिशाली पिरामिड है। दशास्त्र में गो द्वारा चिकित्सा की महत्वपूर्ण बातें विस्तार से वर्णित हैं। शायद इसीलिए पुराने समय में राजा-महाराजाओं या धनवान व्यक्तियों का आकलन गायों की संख्या के आधार पर किया जाता था, किन्तु समय के साथ-साथ गोमूत्र चिकित्सा विज्ञान पद्धति विलुप्त होती गयी।

पिछले दो वर्षों से इंदौर में गोमूत्र चिकित्सा केंद्र प्रारम्भ हुआ, जिसमें चमत्कारिक रूप से असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त हुई। यह चमत्कार ही तो है कि किसी भी प्रकार की टीबी हो, व्यक्ति प्रतिदिन गोमूत्र का सेवन करे एवं ४५ दिन तक उस स्थान पर सोये जहाँ गायें बँधती हैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और टीबी से निजात पाए। श्री जगदीशचंद्र नीमा, जिनकी पत्नी की मृत्यु एड्स से हुई थी। उन्हें स्वयं को जनवरी ९९ में एड्स ग्रसित घोषित किया गया। १४ माह लगातार स्वस्थ देशीगाय का गोमूत्र सेवन करके एड्स से मुक्ति पा गये हैं। शायद यह आधुनिक दुनिया का पहला केस है एवं भारतीय नस्ल की गाय के गोमूत्र का चमत्कार। प्रोस्टेट एवं मूत्र दोषों से पीड़ित व्यक्ति गो मूत्र सेवन कर राहत महसूस कर स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त नजर आ रहे हैं। गोमूत्र के साथ-साथ दिन में तीन बार दो दो, पंचगव्य आधारित आयुर्वेदिक केप्सूल, यूरोसिल का सेवन अति उत्तम है। जिस व्यक्ति को ३ माह से शौच नहीं हो रही हो, ऊपर से कैंसर से ग्रसित ऐसे व्यक्ति की हालत का अंदाजा लगा सकते हैं। गोमूत्र एवं पंचगव्य सेवन के पश्चात चौथे दिन से ही सामान्य रूप से शौच आना प्रारम्भ। ये गोमूत्र का ही तो कमाल है कि १५ वर्ष पुराने डायबिटीज के मरीज की सुबह-शाम चल रही ३० एवं २० मात्रा की इंसुलिन बंद हो गई है। डायबिटीज के मरीजों को नियमित ५०-५० मिलीग्राम गोमूत्र का सेवन एवं गोमूत्र तथा जड़ी-बूटी से बनी डायबिक्योर कैप्सूल का इस्तेमाल करना उचित है। गोमूत्र के ४ से ६ महीने लगातार सेवन के पश्चात् ब्लडप्रेशर सामान्य होना अब आश्चर्य की बात नहीं रही, क्योंकि इंदौर के ही एक हजार से अधिक मरीज इससे लाभान्वित हो चुके हैं। आखिर गोमूत्र में क्या है, जो ५००० तरह की बीमारियों से छुटकारा दिला सकता है। परीक्षण में पाया गया कि इसमें नायट्रोजन, सल्फर, फॉस्फेट, सोडियम, पोटैशियम, मैग्नीज, कार्बोलिक एसिड, आयरन, सिलिकान, क्लोरीन, मैग्नेशियम्, मैलिक एसिड, साइट्रिक एसिड, टार्ट्रिक एसिड, सक्सेनिक एसिड, कैल्शियम, साल्ट, विटामिन ए, बी, सी, डी, ई मिरनल्स, लेक्टोज, एन्जाइम्स, जल, हिप्यूरिक, क्रिएटिनिन, हार्मोंस और स्वर्णक्षार हैं। मनुष्य के शरीर में जो तत्व मौजूद हैं, उनमें कमी या अधिकता होने पर ही अधिकांश बीमारियाँ होती हैं। गोमूत्र में वे तत्व मौजूद हैं, जो मनुष्य के शरीर में होते हैं। अतः इन तत्वों से युक्त प्राकृतिक दवाई याने गोमूत्र का सेवन शरीर में जिन तत्वों की कमी या अधिकता होती है, उनको संतुलित करके असाध्य रोगों को भी ठीक कर देता है। कैंसर के मरीजों के लिए गोमूत्र एवं गोबर रस एक उत्तम प्रकार की कीमोथैरपी है, जिसके कोई साइडिफेक्ट नहीं है। साथ ही प्रतिदिन दो-दो कैंसोक्योर कैप्सूल का तीन बार सेवन करना चाहिए।

नागदा के कैंसर मरीज श्री चाँदमल गुर्जर को १८ माह पूर्व आहारनली का कैंसर होना बताया गया। ऑपरेशन की सलाह दी गयी, किन्तु उन्होंने सिर्फ गोमूत्र एवं पंचगव्य सेवन करने का निर्णय लिया। १८ माह पूर्व से खाना तो दूर, लिक्विड भी मुश्किल से ले पाते थे. अब नियमित खाते-पीते हैं, स्वस्थ हैं एवं अपनी खेतीबाड़ी स्वयं कर रहे हैं। ऐसे हजारों लोग लाभान्वित हो चुके हैं। इंदौर के श्री बजे, जो अस्थमा से १० वर्षों से पीड़ित थे, गोमूत्र चिकित्सा पद्धति से अब पूर्णतः स्वस्थ महसूस कर रहे हैं। गोमूत्र एवं उससे बनी आयुर्वेदिक कैप्सूल कफनाल एवं पंचगव्य घी के ६ माह सेवन से अस्थमा पर नियंत्रण पाया जा सकता है। किसी भी तरह का चर्मरोग याने एक्जीमा, सोरायसिस, दाद, खाज, खुजली का इलाज करना बहुत आसान हो गया है। ३५ वर्ष पुराना एक्जीमा, गोबर, गोमूत्र से बने प्यूरोडर्म मलहम लगाने एवं गोमूत्र सेवन से साफ हो गया है। अब तो मात्र चर्मरोग के मरीज ही नहीं बल्कि स्कूल, कॉलेज की लड़कियाँ भी पिम्पल्स, (मुँहासे) के लिए गोबर, गोमूत्र से बने मल्हम एवं गोमूत्र का सेवन कर चेहरे को साफ एवं सुन्दर कर अतिप्रसन्न हैं। गोमूत्र से बनी आयुर्वेदिक कैप्सूल स्कैबिलेक्स उपयोग की जा सकती है।

हृदय की आर्टरीज में ब्लाकेज के लिए शायद भविष्य में बायपास सर्जरी की आवश्यकता न पड़े। यह कारगर काम कर दिखाया है गोमूत्र ने। साथ में गाय के घी से बने लेप ने। एंजाइना पेन से मुक्ति, श्वास भरना, बंद एवं चुस्ती फुर्ती। स्वस्थ देशी गाय का गोमूत्र एवं पंचगव्य जड़ी-बूटियों से बनी कार्डोरिड कैप्सूल एवं कार्डोइज लेप का इस्तेमाल बेहद खर्चीली बायपास सर्जरी से मुक्ति दिला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकता है। माइग्रेन व सिरदर्द से जो व्यक्ति दस-दस, पंद्रह-पंद्रह वर्षों से पीड़ित थे, गोमूत्र एवं घी के लगातार ६ माह उपयोग से अब बीमारी से पूर्ण मुक्त हो चुके हैं, तनाव से मुक्ति की बात हो या स्मरण शक्ति बढ़ाने की बात गोमूत्र एवं ब्रेनटोन कैप्सूल कारगर है। पिछले दो वर्ष में इंदौर के गोमूत्र चिकित्सा केंद्र पर लगभग ५-६ हजार मरीज आए, जिनमें ८५ से ९० प्रतिशत मरीज कब्जियत से ग्रसित पाए गये। पुरानी कहावत है पेट साफ हो तो आधी बीमारी साफ। गोमूत्र सेवन के एक माह में ही मरीज बोलने लगता है, पेट बिल्कुल साफ हो जाता है, पेट में हल्कापन महसूस होता है और कब्जियत बिल्कुल नहीं रहती है। श्रीमती सुषमा खुराणा को थायरायड की शिकायत थी। गोमूत्र-सेवन के पहले की जाँच रिपोर्ट में टी थ्री ४.०, टी फोर १५.०, टी एस एच ०.२ पाया गया था। गोमूत्र-सेवन के ६ माह बाद की रिपोर्ट में टी पोर ९.९७, टी एस एच १.३५ आया है यानि थायरायड से मुक्ति।

जब गोमूत्र इतना लाभकारी है तो क्यों न हम इसका सेवन 'इलाज से बेहतर सुरक्षा है' (Prevention is better than cure) के आधार पर करें। कई व्यक्तियों के मुँह से सुना है, आज भी कई गाँवों में गोमूत्र करती हुई कोई स्वस्थ देशी गाय दिखाई दे तो कुछ व्यक्ति हाथों में गो मूत्र झेलकर तुरन्त सेवन कर लेते हैं। गोमूत्र या इससे बनी प्रिवेन्टिव कैप्सूल ओमनीफोर्ट का सेवन परिवार के हर सदस्य को स्वस्थ रख सकता है। गोमूत्र से कायाकल्प होता है। इसका नियमित सेवन बूढ़े को जवान बना देता है। गो मूत्र भारतीय नस्ल की किसी भी रंग की स्वस्थ देशी गाय अथवा बछिया का लिया जा सकता है। गोमूत्र खराब नहीं होता है, किन्तु इसे काँच अथवा मिट्टी के बर्तन में रखना चाहिए, फ्रीज में नहीं रखें। वर्तमान में देश में लगभग ५ लाख लोग गोमूत्र सेवन कर लाभान्वित हो रहे हैं। किसान किसानी विकास ट्रस्ट के सहयोग से पूरे देश में १२९ गोमूत्र चिकित्सा केंद्र प्रारम्भ किए जा चुके हैं, जिनमें मरीजों को निःशुल्क मार्गदर्शन एवं गोमूत्र वितरण किया जाता है। गर्भवती गाय का भी मूत्र सेवन किया जा सकता है (बच्चे को जन्म देने के १५ दिन पहले एवं बाद में छोड़कर)। गोमूत्र गंगाजल की तरह पवित्र है। खराब नहीं होता है। मार्गदर्शन हेतु निम्न पते पर सुबह ८ से ९ तक मरीज सम्पर्क करें। टेलीफोन पर मार्गदर्शन हेतु रात्रि ८ से १० के बीच बात करें।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपालन की कुछ बातें

- गायों को साफ हवा और धूप आने वाली खुली जगह में रखना चाहिये। उन्हें जितना नुकसान बन्द घर में रखने से होता है, उतना भूखा-प्यासा रहने से भी नहीं होता।
- गायें बाँधने की जगह बिल्कुल साफ, सूखी होनी चाहिये। उनका शरीर भी खूब साफ रखें, मैली-कुचैली रखने से दूध गन्दा होगा।
- गाय को ठण्डे या गीले स्थान में रखने और कड़ी धूप से न बचाने से दूध में मलाई बहुत कम निकलती है।
- गाय कभी एक जगह बाँधकर न रखें। जहाँ तक हो सके गाय खुली रखी जाय।
- जो गाय कम से कम पाँच किलोमीटर रोज नहीं घूमती, वह रोगी और कम दूध देने वाली होती है।
- चराई से गाय को बड़ा फायदा होता है। उसमें उसे पूरी कसरत हो जाती है। गाय खुश रहती है। चरने को घास न हो तब भी गाय को दो-तीन घण्टा रोज घुमाना चाहिये।
- गाय को औसत 10 किलो हरा चारा खिलाना चाहिये। वैसे चारे की मात्रा दुधारू गाय की आवश्यकतानुसार 15 से 20 किलो खिलाना लाभदायक रहता है।
- गाय की सानी की नाद के बगल में एक साफ पानी की नाद होनी चाहिये ताकि वह जब चाहे पानी पी सके।
- गाय को थोड़ा नमक रोज देना चाहिये।
- दूध देने वाली गायों के थन और सींगों को आठवें दिन सरसों या रेंड़ी के तेल में नमक मिलाकर चुपड़ दें।
- गाय को अधिक रात रहते जगाने से उसके विश्राम में बाधा पड़ती है, उससे दूध कम और पतला देती है।
- दिन में दूध दुहने के समय में ठीक 12 घण्टे का अन्तर होना चाहिये, देर सबेर होने से दूध कम हो जाता है। थनों को दुहने के पहले गीले झाड़न से पोंछकर साफ कर लेना चाहिए।
- गाय कुशल दुहने वाले से बहुत खुश रहती है, दूध भी अधिक देती है।
- दूध सीधे अँगूठे से दुहें, अँगूठा मोड़कर नहीं।
- गाय को हमेशा प्रेमं से रखना चाहिये। दुहते समय उसे खूब प्यार करना चाहिये। डाँटने-मारने से गाय दूध थोड़ा देती है। जब गाय प्रसन्नचित्त रहती है तो शरीर ढीला छोड़ देती है, जिससे मलाई का अधिकतर भाग दूध के साथ चला आता है। दुहते समय नये आदमी को गाय के पास न जाने दें।
- कहावत है कि गाय के शरीर पर एक बार प्यार से हाथ फेर देना, उसे एक सेर घी पिलाने के बराबर होता है। जो मालिक नौकरों के भरोसे गायों को छोड़ देते हैं, स्वयं नहीं देखते, वह गायों का सुख नहीं उठा सकते।
- गायों के थनों में दूध बिल्कुल न छोड़ना चाहिये। बच्चे को जितना पिलाना हो पहले पिला देना चाहिये। पीछे छोड़ने पर बच्चा देर तक गाय के नीचे रह जाने से, थनों को खींच-खींचकर नुकसान पहुँचा देता है और जल्दी से हटा लिया जाय तो थनों में जो दूध बाकी रह जायेगा, वह पशु को रोगी बना देगा।
- दूध को थनों से निकालकर जितनी जल्दी हो सके उबाल लेना चाहिये। फिर तुरन्त ठण्डा करके रखने से दूध जल्दी नहीं बिगड़ता।
- दूध निकालने के बाद गाय को स्वाभाविक प्यास लगती है। उसे तुरन्त पानी पिलाना चाहिये।
- दूध के बर्तन गरम पानी से धोने चाहिये। पानी में थोड़ा सोडा या नमक डाल लेने से बर्तन जल्दी साफ हो जाते हैं।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवंश से समग्र विकास का अभिनव प्रयोग

सुरभि ग्राम

गोवंश से समग्र विकास की अवधारणा को सत्यापित करने के लिए सुरभि शोध संस्थान ने 'सुरभि ग्राम' (डगमगपुर) पो० सिन्धोरा, जिला-मिर्जापुर में प्रयोग कार्य विगत ४ वर्षों से प्रारम्भ किया है। रामेश्वर गोशाला में किये गये प्रयोगों के आधार पर संस्थान ने यह निर्णय लिया कि उन प्रयोगों के मूल्यांकन के साथ ऐसे समग्र विकास के कार्य किये जायँ जिससे गोवंश आधारित कृषि व ग्रामोद्योग प्रारम्भ हो। प्रयोग करने के लिए स्थानीय आधार पर उपलब्ध संसाधन का उपयोग हो, वैज्ञानिक एवं परम्परागत तकनीक का समावेश हो, और कोई भी ग्रामीण यह कार्य अपनी भूमि पर सरलता से कर सके।

मिर्जापुर के पहाड़ी ब्लाक में 'जोहिन्दी' पहाड़ी की तलहटी में ५० एकड़ पथरीली पठारी भूमि पर संस्थान का 'सेठ किशोरीलाल जालान कृषि गो विज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र' चल रहा है। उस स्थान पर पानी का अभाव था। वर्षा का जल मिट्टी कटाव के साथ बहकर गंगा नदी द्वारा समुद्र में चला जाता है। जमीन में बोरिंग ३०० फुट तक कराई गयी वहाँ जल नहीं मिला। लघु सिंचाई विभाग की सर्वे रिपोर्ट में भी जल नहीं मिला। कई ट्यूबवेल बनवाने पर एक जगह थोड़ा जल मिला वह भी गर्मी में सूख जाता था। जमीन पर वृक्ष नहीं था और पास की पहाड़ी नंगी है जिससे गर्मी, ठंड अधिक पड़ती है और वर्षा का पानी बह जाता है। साथ ही मिट्टी भी बहती है। संस्थान ने सर्वप्रथम वर्षा के बहने वाले जल को छोटी-छोटी बंधियों द्वारा रोका। खेतों की ऊँचाई-निचाई के आधार पर मेड़बन्दी किया। छोटे-छोटे टुकड़ों में खेत समतल किया। इस भूमि को अनुपजाऊ मानकर खेती कभी नहीं की गयी थी। मिट्टी में पत्थर के टुकड़ों के चूरे व कंकड़ की अधिकता है। वर्षा के जल को रोककर सिंचाई की व्यवस्था की गयी और खेतों में केवल गोबर-गोमूत्र व वनस्पति द्वारा तैयार खाद ही डाली गयी। संस्था ने निर्णय लिया कि खेत में रासायनिक खाद व कीटनाशक नहीं डाला जायेगा। भूमि को सुधारने के लिए बहुत धैर्य के साथ कार्य हुआ। जमीन में दीमक की समस्या बहुत थी। इससे बचने के लिए केला की खेती की गयी। इससे कंकड़ गलाने एवं दीमक रोकने में मदद मिली। बंधियों की संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि हुई और जल संग्रहण क्षेत्र को बढ़ाया गया। रोके गये जल से रबी की खेती की गयी। खरीफ की फसल वर्षा के सहारे एवं थोड़ी सिंचाई से हुई। जल प्रबंध से धीरे-धीरे भूमिगत जल में सुधार हुआ। आज कई ट्यूबवेल कार्य कर रहे हैं जिसमें २४ घंटे पानी रहता है। संस्थान रोके गये पानी के समाप्त होने पर ही ट्यूबवेल के पानी का प्रयोग करता है। खेतों की अच्छी मेड़बंदी और जल निकासी की व्यवस्था की गयी। खेतों के किनारे वृक्ष लगाये गये जिससे खेतों के तापमान को नियंत्रण करने में सहयोग मिला और पक्षियों की संस्था बढ़ी। गत वर्ष खेतों का वर्षा का जल बाहर न बह कर खेतों में सोख लिया गया। क्योंकि जैविक खाद के प्रयोग से खेतों में केचुओं व अन्य कृषि के लिए आवश्यक जीवाणुओं की वृद्धि हुई। गत वर्षों में मिट्टी परीक्षण में पोटैशियम, कैल्सियम, नाइट्रोजन, कार्बन आदि पोषक तत्त्वों की अत्यधिक कमी पाई गयी जो अब पूरी हो रही है। खेतों के सुधार में गोवंश एवं उनका गोबर मूत्र बहुत उपयोगी हुआ। संस्थान ने गोमूत्र की झटपट खाद निर्माण किया है। इसके परीक्षण से पाया गया कि यह खाद फफूँद को रोकती है जिससे पौधों में बीमारी नहीं लगती है, साथ ही खेत को पोषण मिलता है और कोई जैविक हानि नहीं होती है। इसके अतिरिक्त खेतों से निकलने वाला खर पतवार घास का खाद में एवं भूमि के जल के वाष्पीकरण रोकने में पूरा प्रयोग होता है। इस प्रकार गोमूत्र की झटपट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाद, केचुआ खाद, गोबर कम्पोस्ट, नडेप खाद, स्लरी द्वारा कृषि-कार्य हो रहा है।

कृषि में विविध प्रकार के धान, गेहूँ, दलहनी फसलें अरहर, मूँग, उड़द, राजमा, मक्का, ज्वार, बाजरा, चना, जौ, अलसी, विविध प्रकार की मटर, सरसों, तिल, मूँगफली, मसूर आदि फसलों को अच्छी तरह उगाया जा रहा है। सब्जी के विविध प्रयोग हो रहे हैं, जिसमें टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च, वीन्स, लोबिया (बोड़ा), फूलगोभी, पत्तागोभी, गाँठगोभी, चुकन्दर, सलाद, प्याज, लहसुन, गाजर, मूली, शलजम, पालक, मेंथी, चौराई, बथुआ, लौकी, खीरा, केला, टिंडा, बाकला, परवल, कुँदरू, कद्दू, कोहड़ा, आलू, भिन्डी, सहिजन, नेनुआ, ग्वार, सूरन, बंडा, अरबी, सतपुतिया, झीगा तरोई, पुदीना, चिचिड़ा, धनिया, मीठी नीम की खेती हो रही है।

फलों में आम, आँवला, नीबू, अमरूद की विविध प्रजातियों के अलावा संतरा, खिरनी, आमड़ा, बड़हर के वृक्ष लगाये गये हैं। इसके अलावा पपीता, केला, ककड़ी, खीरा, खरबूजा, तरबूज आदि फलों का उत्पादन होता है।

लकड़ी वाले वृक्षों में सागौन, घमार, नीम, बाँस, शीशम आदि वृक्ष की नर्सरी तैयार कर रोपण किया गया है। इसके साथ पर्यावरण पर ध्यान देने हेतु पीपल, बरगद पाकड़, गूलर के वक्षों को भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

केन्द्र पर मसालों के उत्पादन के विविध प्रयोग चल रहे हैं जिसमें हल्दी, सौंफ, मेथी, धनिया के उत्पादन के साथ काली मिर्च, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, तेजपत्ता, हींग, दालचीनी आदि के पौधे लगाकर अध्ययन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष दस हजार पपीता की नर्सरी तथा बड़ी संख्या में नीम व अन्य पेड़ वाले पौधों की नर्सरी तैयार कर निःशुल्क गाँवों में वितरित कर वृक्षारोपण एवं फल उत्पादन को प्रोत्साहित किया जाता है। प्रतिवर्ष नंगी पहाड़ी पर बरसात में जंगली पौधों के बीज डालने का अभियान चलाया गया है जिससे जंगल बढ़ें और हरियाली हो। इस क्षेत्र की कृषि पिछड़ी होने के कारण गरीबी भी बहुत है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के सहयोग एवं मार्गदर्शन से गाँवों में कृषि को प्रोत्साहित करने का कार्य किया जा रहा है, जिसमें अच्छे बीज आदि दिये जाते हैं। अरहर क्षेत्र होने के कारण किसानों को अरहर के अच्छे बीज दिये गये और मेड़ पर खेती करनी हेतु मेड़ बनाने की मशीन भी उपलब्ध करायी गयी। वर्ष में कई किसान गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है, जिसमें किसानों को कृषि की नई विधियों के साथ गोपालन एवं जैविक कृषि करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। गोरस भण्डार के केन्द्र भी बढ़े हैं जिससे किसान गोदुग्ध उत्पादन कर केन्द्र पर गोरस भण्डार को दे रहे हैं।

संस्था में ४५ घन मी० का गोबरगैस संयंत्र कार्य कर रहा है जिसे प्रकाश व्यवस्था, भोजन पकाने हेतु ईंधन व स्लरी खाद प्राप्त हो रही है। यहाँ विद्युत के अभाव में गोबरगैस उपयोगी है।

किसान प्रतिदिन आकर सुरभि ग्राम की कृषि, वृक्षारोपण, गोशाला एवं जलप्रबंधन का अवलोकन करते हैं। संस्थान की गोशाला में स्थानीय गोवंश (गंगातीरी) प्रजाति के ५० गोवंश हैं। नस्ल सुधार द्वारा गोवंश का विकास हो रहा है। दुग्ध उत्पादन के साथ अच्छे बछड़े-बछड़ी को तैयार करने की ओर संस्थान कार्य कर रही है। गाँव के लोगों को गोसंवर्धन हेतु अच्छे देशी साँड़ उपलब्ध कराये जाते हैं। कृषि-कार्य में बैलों के उपयोग पर बल दिया जाता है तथा बैलचालित यन्त्रों के विकास व प्रयोग पर बल दिया जाता है। इस कृषि एवं गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र द्वारा वनवासी क्षेत्र में कार्य करने वाली अन्य संस्थाओं को सहयोग दिया जाता है जिसे वे भी कृषि एवं गोपालन के विस्तार में सहयोगी बनकर वनवासी गाँवों की सेवा कर सकें।

संस्थान में अधिकारियों, वैज्ञानिकों विशेषज्ञों, देश की अनेक संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं, राजनीतिज्ञों किसानों, विद्यार्थियों का आना-जाना लगा रहता है और विचार-विमर्श होता रहता है। संस्थान अल्पकाल में जल, मिट्टी, वायु व वैचारिक प्रदूषण रोकने के साथ-साथ सभी के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिए पौष्टिक भोजन, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा सुलभ हो इसके लिए अपने ७५ कार्यकर्त्ताओं के साथ प्रयासरत है। संस्था द्वारा यहाँ विद्यालय चलाया जा रहा है जिसमें ८ किमी० दूरी तक के बच्चे आते हैं। इस वर्ष विद्यालय कक्षा ९वीं तक पहुँच गया है जिसे भविष्य में उच्च शिक्षा तक पहुँचाने की योजना है। यहाँ पर वनवासी बच्चों का छात्रावास प्रारम्भ कर दिया गया है जिसमें लखीमपुर के थारू जनजाति के एवं मिर्जापुर, सोनभद्र के वनवासी बच्चे रहकर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

संस्थान ग्रामीण उत्पादों के आधार पर ग्रामोद्योग को प्रोत्साहित करने का कार्य कर रहा है, जिसमें लोगों को अपने गाँव में आय बढ़ाने का अवसर मिले। इसमें हाथकुटा चावल, हाथपिसा आटा, दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद, अनाज व फल द्वारा तैयार पदार्थ प्रमुख हैं।

संस्थान ने महिला जागृति के लिए प्रयास किया है। ग्रामीण महिलाओं को कृषि, ग्रामोद्योग की जानकारी दी जा रही है। सिलाई प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिसके अन्तर्गत गाँवों में दो केन्द्र चल रहे हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं में जागृति एवं विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है। संस्थान के इन कार्यों से जमीन सुधरी, जल संरक्षण हुआ, विविध पक्षी, तितली, मधुमक्खी व अन्य जीव की संख्या में वृद्धि हुई है। हरियाली बढ़ी है जिससे विकास के साथ पर्यावरण-रक्षा हुई है।

□□

गोहत्या रोकने की योजना

केन्द्र सरकार के जीव जन्तु कल्याण बोर्ड ने देश में हर साल होने वाली करीब डेढ़ करोड़ गोहत्याओं को रोकने की योजना शुरू कर दी है। बोर्ड ने बांग्लादेश में तस्करी के माध्यम से हत्या के लिए जाने वाले गोवंश को रोकने के पुख्ता प्रबन्ध करने की घोषणा की। साथ ही बोर्ड ने जैन तीर्थंकर भगवान् महावीर के २६००वें जन्म कल्याण महोत्सव के उपलक्ष्य में उनके अहिंसा, जीवदया व पशु-पक्षी-रक्षा के महान् सिद्धान्तों को प्रचारित-प्रसारित करने के लिए १० करोड़ रुपये खर्च करने की योजना बनायी है।

बोर्ड के अध्यक्ष जस्टिस गुमानमल लोढ़ा ने बताया कि देश से प्रतिदिन करीब २५ हजार गाय-बैल तस्करी के माध्यम से बांग्लादेश जाते हैं। उनके मुताबिक पशुओं की तस्करी रोकने के लिए बोर्ड व्यापक योजना के तहत बांग्लादेश के सीमावर्ती मालदा में निगरानी चौकी स्थापित करेगा, जिसमें पकड़े गए पशुओं के ठहरने, चारे-पानी आदि सभी इन्तजाम स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से होगा। यहाँ तक कि बांग्लादेश जाने वाले पशुओं को पकड़वाने का काम भी स्वयंसेवी संस्थाएँ ही करेंगी। बोर्ड ऐसी संस्थाओं को आर्थिक सहायता के साथ-साथ पुलिस व प्रशासन से भी मदद दिलाएगा।

बोर्ड एक महत्त्वपूर्ण योजना के तहत अकाल पीड़ित राज्यों गुजरात, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और राजस्थान के पशुओं को संरक्षण प्रदान करने के लिए पाँच करोड़ की धनराशि खर्च करेगा। इसके अलावा भगवान् महावीर के जन्म कल्याण महोत्सव के उपलक्ष्य में उनके अहिंसा, जीवदया व पशु-पक्षी-रक्षा के सिद्धान्तों को प्रचारित-प्रसारित करने के लिए १० करोड़ रुपये खर्च होंगे। यह धनराशि प्रमुख तौर से गोशाला/पिंजरापोल व पक्षी चिकित्सालय आदि में उनकी सहायतार्थ दी जाएगी। राशि उन्हीं स्वयंसेवी संस्थाओं को दी जाएगी, जिन्हें बोर्ड व राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोशाला-गोग्रास-गोभक्त

श्री भगवती अग्रवाल (मुन्ना)
गोग्रास मंत्री

भारतवर्ष में नित्य भगवत स्मरण के साथ गोग्रास निकालना हमारी सनातन परम्परा है। समय एवं काल के बदलते परिवेश ने इस परम्परा के निर्वाह में शहरों में गतिरोध पैदा किया है। गऊ भी है, गोग्रास के प्रति समर्पित भाव वाले गोभक्त परिवार भी हैं परन्तु वर्तमान शहरीकरण ने इनके मध्य एक असुविधाजनक दीवार खड़ी कर दी है। गोग्रास के समर्पित भाव वाले गोसेवक एवं गोवंश के बीच का सेतु अब श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी (काशी गोशाला) है। गो ग्रास के प्रति समर्पित परिवारों तक पहुँचने का काम एक नया संकल्प लेकर काशी गोशाला के संचालकों ने आरम्भ किया है। इस अभियान के अन्तर्गत चार गोग्रास योजनाओं का शुभारम्भ किया गया है।

१. गृहलक्ष्मी गोग्रास योजना
२. वार्षिक गोग्रास गोपालन योजना
३. गोग्रास सावधि जमा योजना
४. गोलक पेटी गोग्रास योजना

१. गृहलक्ष्मी गोग्रास योजना—प्रत्येक गृहिणी प्रतिदिन अपने परिवार के समस्त लोगों के भोजन का प्रबंध करती है एवं उन्हें भोजन कराती है। ऐसा करने वाली प्रत्येक गृहलक्ष्मी से सविनय निवेदन है कि जिस प्रकार उन पर आश्रित उनका परिवार भोजन की आशा रखता है, उसी प्रकार प्रतिदिन गोमाता को भी उनसे अपने ग्रास की अपेक्षा रहती है, जिसे वे (गृहिणी) सदैव प्रतिदिन भोजन के पूर्व उन्हें (गोमाता) दिया करती थीं। शहरीकरण एवं बदलते परिवेश ने इसमें व्यतिक्रम उत्पन्न किया है। आइये इसमें सुधार करें। प्रतिदिन भोजन से पूर्व अपने परिवार के प्रति सदस्य एक रुपया के हिसाब से अपने रसोईघर में रखे गोग्रास पेटी में डालें एवं माह के अन्त में इसकी राशि श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला को सौंप दें। इस कार्य से आपकी गोग्रास देने की परम्परा कायम रहेगी एवं गोमाता आपका भण्डार सदैव समृद्ध रखेंगी।

२. वार्षिक गो ग्रास गोपालन योजना—गोशाला से प्राप्त हरा चारा एवं चिकित्सा खर्च के अतिरिक्त पूरे वर्ष एक गोवंश पर सात हजार पाँच सौ रुपये का खर्च आता है। 'वार्षिक गोग्रास गोपालन योजना' के माध्यम से कोई भी गोभक्त किसी एक गाय को अपने नाम से पूरे वर्ष पालन कर सकता है। इस योजना के अन्तर्गत गोभक्त गोशाला की एक गोवंश निमित्त रुपया सात हजार पाँच सौ मात्र गोग्रास निमित्त देंगें। गोभक्त एक या एक से अधिक गोवंश का पालन भी इस योजना के अन्तर्गत करवा सकते हैं। प्रति गोवंश का खर्च रुपया सात हजार पाँच सौ है। गोभक्त अपने दिवंगत गुरुजनों एवं पूर्वजों के नाम से भी यह योजना ले सकते हैं। भारतीय सनातनी परम्परा के अनुरूप मांगलिक अवसरों जैसे संतान की प्राप्ति, गृहप्रवेश, नये प्रतिष्ठान का शुभारम्भ, बच्चों के जन्मदिन एवं विवाह इत्यादि के अवसर विशेष पर इस योजना में योगदान करके गोमाता की सेवा का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। आत्मशान्ति निमित्त किए जाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों के अवसरों पर भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस योजना में अंशदान करने का लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

३. गोग्रास सावधि जमा योजना—कोई भी गोभक्त इस योजना के अन्तर्गत एक निश्चित राशि बैंक में सावधि जमा के अन्तर्गत जमा करायेगा। ऐसे जमा करायी गयी राशि पर एक वर्ष में इतना ब्याज अर्जित हो कि उस राशि से एक गाय का पूरे वर्ष का गोग्रास प्राप्त हो जाये। गोशाला प्रबंधकों का यह अनुमान है कि गोशाला से प्राप्त हरा चारा के अतिरिक्त एक गोवंश का गो-ग्रास रुपया सात हजार पाँच सौ में व्यवस्थित हो सकेगा। इस प्रकार इस योजना के इच्छुक गोभक्त को इतनी राशि किसी अनुसूचित बैंक में जमा कराना होगा जिससे वार्षिक ब्याज रुपया ७५००.०० प्राप्त होता रहे। इस योजना के इच्छुक गोभक्त एक या उससे अधिक गोवंश के लिए भी यह योजना चला सकते हैं। एक से अधिक गोवंश के लिए यह योजना लेने पर उसी गुणांक में जमा राशि की वृद्धि होगी।

४. गोलक पेटी गोग्रास योजना—सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में गोशाला की गोलक पेटी रखें। दैनिक रूप से सहर्ष इसमें राशि डालें एवं प्रेरित करके अपने यहाँ आगन्तुकों से डलवायें। प्रतिमाह गोशाला में सूचित कर गोसेवक को पेटी में एकत्रित राशि सुपुर्द कर निर्धारित पावती प्राप्त करें। प्रतिष्ठानों में गोग्रास गोलक पेटी रखा जाना अपनी परम्परा रही है। कृपया इसकी निरन्तरता को बनाकर गोसेवा में अपने प्रतिष्ठान का अंशदान अक्षुण्ण रखें।

इन सभी योजनाओं के लिए कृपया निम्न सूत्र पर सम्पर्क करें—

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
दुलहिनजी रोड, गोलघर, वाराणसी
दूरभाष : ३३३४१३

■

सुरभि शोध संस्थान
(वाराणसी, लखनऊ, मथुरा एवं दिल्ली)
चित्रकूट लेन नं० ०५, रवीन्द्रपुरी, वाराणसी
दूरभाष : २७६४६०, ३११९८४

■

श्री भगवती अग्रवाल (मुन्ना)
दूरभाष : ३२०११३, ३२७९४२

■

श्री सूर्यकान्त जालान (कानू बाबू)
दूरभाष : ३५२९४२, ३५२९४३, ३५५६००

■

श्री अरुण जैन
दूरभाष : ३१५१३०

■

श्री पवनकुमार अग्रवाल
दूरभाष : ३५३९२९, ३५३४५४

■

श्री अशोक शाह
दूरभाष : ३३०७९५, ३३२४९३, ३३२९२६

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राष्ट्रीय विकास में गोशालाओं की भूमिका

श्री सूर्यकान्त जालान
निदेशक, सुरभि शोध संस्थान

भारत कृषिप्रधान देश है। देश की बहुसंख्यक आबादी की आजीविका का आधार कृषि है। कृषि का आधार गोवंश है। लेकिन औद्योगिक क्रान्ति के नाम पर तथा पेट्रोलियम आदि उत्पादों के चलते गोवंश उपेक्षित हो रहा है और जीवन एवं जीविका की दृष्टि से अनेक समस्यायें पैदा हो गयी हैं। जगह-जगह वैध, अवैध कत्लखानों में अबाध गति से पशुधन कटने के कारण किसानों के दरवाजे से गाय-बैलों के खूँटे उखड़ गये, खेती खर्चीली हो गयी। गोबर, गोमूत्र के सहारे जो किसान खाद के उत्पादन में स्वावलम्बी थे, वे उर्वरक कारखानों के गुलाम बन बैठे। धरती की उर्वराशक्ति घटी। ऐसी स्थिति में गोरक्षा, गोपालन, गोसंवर्धन और गोउपासना को नया आधार देने का चिन्तन आरम्भ हुआ और उसके केन्द्र में गोशालाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

गोवंश हत्याबन्दी आन्दोलन और विभिन्न प्रदेशों में हुए सत्याग्रह के कारण जगह-जगह कत्लखानों की ओर जाने वाला गोवंश रोका जाने लगा, तब २०वीं सदी के ८वें दशक में समस्या खड़ी हुई कि उस रोके गये गोवंश को कौन संरक्षण दे? श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, रामेश्वर ने पहल की और जब हजारों गाय-बैल गोशाला प्रांगण में आ खड़े हुए, तब उन्हें खिलाने-पिलाने, उनकी चिकित्सा करने के काम में दयाधर्म से प्रेरित लोगों से सहायता मिली, समस्या का समाधान खोजने में सहायक समाज-वैज्ञानिक आगे आये और गोरक्षामूलक, स्थानीय उद्योग प्रधान, लोक शिक्षण का कार्य आरम्भ हुआ और गोपाल ग्राम खड़े होने लगे।

गोशाला का योग

- गाय-बैलों को सम्भालना।
- पशु-चिकित्सा की सुविधा जुटाना।
- संतुलित दाना और समुचित साधन सुलभ कराना।
- गोबर-गोमूत्र का उपयोग करने की अनुकूलता बढ़ाना।
- अच्छी नस्ल के साँड़ संरक्षित व संग्रहित करना।
- गोबरगैस संयंत्र लगाना।
- गोचर भूमि में हरा चारा उत्पादित करना।

लाभ

- नस्ल सुधरी।
- दुग्ध उत्पादन बढ़ा।
- नडेप खाद और स्लरी के कारण भूमि की उर्वरता बढ़ी।
- चारों की अनेक जातियाँ विकसित व प्रसारित हुईं।
- गोबरगैस व वैकल्पिक ऊर्जा का उत्पादन हुआ।
- दुग्ध पदार्थों से नये-नये उत्पाद बनने लगे।
- गोसेवकों की रुचि बढ़ी और गोपालक खड़े हुए।

समाज-विकास

- बंजर और बेकार भूमि सुधरने लगी।
- छोटे-छोटे मिट्टी के बाँध बनाकर जल संग्रह करने की भावना जगी।
- चारा, अनाज, फल, सब्जी और सेन्द्रिय खाद पोषित फसलों को प्रोत्साहन मिला।
- गोपालन रोजगार बन गया और रोजी-रोटी कमाने वाले युवक उत्साहित हुए।
- कृषि-गोपालन में रुचि बढ़ाने वाले प्रशिक्षण शिविर चलने लगे।
- गाँवों में बनने वाले छोटे-छोटे परम्परागत औजारों और यंत्रों का विकास होने लगा, जिससे पशु-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चालित चारा कटर मशीनें, पशुचालित ट्रैक्टर, सुधरी बैलगाड़ियाँ बनीं।

- फसल चक्र से किसान लाभान्वित हुए।
- कृषि गोविज्ञान केन्द्र से गोपालक आधुनिक तकनीक सीखने लगे।
- शहर वालों को सुबह का दूध सुबह और शाम का दूध शाम को पहुँचाने वाले गोरस भण्डार खुले।
- बिना मक्खन निकला, ताजा दूध मिलने से शहरी जनता को संतुष्टि मिली और स्वास्थ्य सुधरा।
- कम पूँजी में स्वावलम्बी बनने के अवसर बढ़े।
- गरीबी की रेखा से नीचे जीने को विवश परिवारों को स्वाभिमान के साथ जनाधार मिला।
- कीटनाशक दवाओं के विकल्प रूप में गोमूत्र ने स्थान बनाया।
- गोमूत्र चिकित्सा विधि को प्रश्रय मिला।

गोपाल ग्राम योजना

- बिना कर्ज लिये गाँव में स्वाभिमान के साथ जीने का आधार गोवंश है।
- गोपालक सुबह दो-ढाई घण्टा और अपराह्न में दो-ढाई घण्टा काम करके गाय के सहारे पूरे परिवार का अच्छे ढंग से पालन-पोषण कर सकता है।
- 'अर्निंग एण्ड लर्निंग थ्रू डूइंग' का सूत्र सार्थक करने वाला शिक्षण शुरू हुआ है।
- व्यसन मुक्ति और कोर्ट-कचहरी से परहेज करने का वातावरण बना।
- 'अन्तःशुद्धिः बहिःशुद्धिः श्रमः शान्ति समर्पणम्' का संस्कार फलता-फूलता है।
- योजना गाँव की, साधन गाँव के और क्रियान्वयन करने वाली शक्ति गाँव की होने से स्वयंसेवी संस्थायें जब किसी गाँव को गोद लेती हैं तो उसका लाभ सारे गाँव वालों को मिलता है।
- वृक्षारोपण, जीव-जन्तु, रक्षण, स्वाध्याय, सत्संग और सामूहिक श्रमदान के लिये अनुकूलता बढ़ती है।
- ग्रामप्रधान, जनप्रतिनिधि और सरकारी अधिकारी, साहूकारी आदि गाँव वालों की भूमिका समझकर उत्तम व्यवहार करने लगते हैं।
- स्वच्छ पेय जल, सिंचाई-सुविधा, जीवन की मूल-भूत आवश्यकता पूरी करने वाले साधन जुटाना आसान होता है।
- बैंकिंग तथा अन्यान्य सुविधाओं का लाभ लेने हेतु ग्रामजन प्रेरित होते हैं।
- सामाजिक तनाव घटता है, पड़ोसी के सुख-दुःख में सहभागिता बढ़ती है।
- पोलियो कैम्प, आँख का ऑपरेशन, चल पशु चिकित्सालय, आदि का लाभ हर घर पहुँचता है।
- महिलाओं के लिये शौचालय, घर-घर में कुटीर उद्योग, ग्राम कोष खड़ा करना आसान होता है।
- उत्पादन, उपभोग, वितरण का ढाँचा सहज समझ में आ जाता है।

श्वेत क्रान्ति और हरित क्रान्ति को स्थानीय आधार देते हुए जागृतिक पृष्ठभूमि में नये आयाम देने के लिये सांस्कृतिक क्रान्ति का वाहक बनने की दृष्टि से गोशालाओं की भूमिका प्रशस्त करने का समय आ गया है। वाराणसी में इसकी सम्भावना स्पष्ट हुई है। आशा करना चाहिये कि देश की हजारों गोशालायें इस सम्भावना को और अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होंगी, जिससे कृषिप्रधान देश को २१वीं सदी में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के शोषण से बचाने का मार्ग प्रशस्त हो। इस बारे में सहचिन्तन करने के लिये हमारी गोशाला में 'गांधी, वैश्वीकरण बनाम स्वावलम्बन और स्थायी विकास' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद आगामी २५ दिसम्बर १९९७ से ५ जनवरी १९९८ को आयोजित किया जा रहा है, ताकि वर्तमान दशा व दिशा बदले। इस कार्यशाला में ग्रामविकास, गोविकास से जुड़े कार्यकर्ता सादर आमन्त्रित हैं।

❑❑

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोरक्षा के दो आयाम

श्री राकेशकुमार रस्तोगी

भारतीय अर्थ-व्यवस्था एवं जनजीवन का आधार गोवंश है। गोवंश का संरक्षण, पोषण, संवर्धन करना राष्ट्रीय कर्त्तव्य है। जब-जब इस कर्त्तव्य की उपेक्षा हुई है, तब-तब जन आन्दोलन खड़ा हुआ है। विदेशी शासकों ने गोवंश को नष्ट करने की नीति अपनायी, तो स्वतन्त्रता संग्राम का संचालन करने वाले नेताओं ने घोषणा की कि आजादी मिलते ही कलम की पहली नोंक से गोहत्या बन्दी कर दी जायेगी। इसके बाद भी स्वतन्त्र भारत में पहले से अधिक गोवंश का कत्ल होते रहना चिन्ता का विषय है। सरकार और गोरक्षकों की योजना, संकल्प और विचारशीलता के समक्ष इससे कई प्रश्नचिह्न खड़े हो रहे हैं, जिनका समाधान करने के लिए दो बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वे बिन्दु हैं—गोवंश आहार सुलभता और गोबर-गोमूत्र का उपयोग।

१. गोवंश आहार की सुलभता

आज की उपभोक्तावादी संस्कृति और यांत्रिक युग की उपलब्धियों से परम्परागत मूल्य विनष्ट हो रहे हैं। हर मनुष्य कम से कम समय में कम परिश्रम करके या बिना परिश्रम के अधिक से अधिक सुविधाएँ चाहता है। इसी चाह के फलस्वरूप हारवेस्टर जैसे यन्त्रों का उपयोग बढ़ा, जिससे आसानी से फसल कटने लगी, पर फसल काटने में लगने वाले हजारों कृषि-मजदूर परिवारों की रोजी-रोटी छिन गयी। दूसरा नुकसान यह हुआ कि हारवेस्टर से ऊपर-ऊपर कटाई होती है, जिससे काफी मात्रा में खाद्यान्न का अवशेष बरबाद होता है। आज देश में ३० से ४०% भूसा ही काम आ रहा है। ६०-७०% चारे की कमी दूर करने हेतु गोवंश आहार उत्पादित करना, उत्पादन को सुरक्षित रखना, कागज, दफ्ती, बोर्ड आदि में प्रयुक्त होने वाले भूसे पुआल को बचाना होगा। यह बचाये बिना चारा खरीद कर गोपालन करना उत्तरोत्तर कठिन ही होता जायेगा। अब गायें उतनी ही पलेंगी, जितनी चारे की सुलभता होगी। महात्मा गांधी के स्वावलम्बन के सिद्धान्त को आधार बनाकर गोपालन की योजना बनानी चाहिए और चारे की उपलब्धता को कसौटी मानना चाहिए

२. समग्र दृष्टि

खेतों की फसल काटने के लिए भूमिहीन या कम जमीन वाले लोग काम करते थे। रोपाई, बोआई, कटाई आदि विभिन्न कामों से बारहों मास काम मिलता था। काम करने वाले गोधन के गोबर से जैविक खाद बनाते और संरक्षित बीजों से फसल लेते थे। धीरे-धीरे यह स्थिति बदलने लगी, जिसके परिणामस्वरूप रासायनिक खाद और उर्वरकों का प्रचलन बढ़ा। उन्नत बीजों के नाम पर पुनः काम न आने वाले बीज उपयोग में लिये जाने लगे और कृषि लागत बढ़ गयी। किसान को अपने उत्पादों का उचित मूल्य नहीं मिलता और कृषि-मजदूर साल में जितने दिन काम पाते थे, उसमें भारी कटौती हो गयी। भूमि की उर्वराशक्ति घटी और रासायनिक-उर्वरकों से पोषित उपज ने विष का अंश मानव शरीरों में पहुँचाया, जिससे नाना रोग बढ़े। कृषि वैज्ञानिकों ने स्थिति का अध्ययन कर स्वीकार किया कि समग्र दृष्टि से विचार किये बिना स्थायी कृषि नहीं हो सकती। यह बात सभी गोरक्षक समझेंगे, तब गोपालन बढ़ेगा और गोवंश से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्बद्ध उद्योग विकसित होकर देश की अर्थ-व्यवस्था को मजबूती प्रदान करेंगे। हरित क्रान्ति और श्वेत क्रान्ति परस्पर पूरक हैं।

३. गोबर-गोमूत्र का उपयोग

गोरक्षा का आधार गोबर-गोमूत्र हो सकता है, दूध तो गोमाता का आशीर्वाद या बोनस है। इस आधार को गोरक्षकों को समझना पड़ेगा। गोबर-गोमूत्र के अभाव में देश में करोड़ों हेक्टेयर (१२ करोड़ ८० लाख हेक्टेयर) भूमि ऊसर हो गयी है। निरन्तर गोबर की खाद प्रयोग करने से खेत की उपज बढ़ती है। परन्तु रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से खेत की उर्वरता घटती है। देश में बढ़ती हुई आबादी के लिए अन्न स्वावलम्बन का सफल प्रयोग रासायनिक खादों के प्रयोग से हुआ, परन्तु धरती को पोषक खाद न मिलने से खेतों की उत्पादन क्षमता घट रही है। उदाहरण सामने है। भारत में हजारों वर्ष खेती करने के बाद भी उसकी उर्वरता बनी हुई है, क्योंकि यहाँ प्रारम्भ से ही जैविक खाद का उपयोग होता रहा है। किन्तु अनेक विकासशील देशों ने रासायनिक उर्वरकों का अन्धाधुन्ध प्रयोग करके अपनी भूमि की उर्वरता नष्ट कर ली है। इस स्थिति को भारतीय कृषि वैज्ञानिकों ने भी अच्छी तरह से समझ लिया है। कुछ वर्षों पूर्व सरकार ने गोबर की कमी से चिन्तित होकर नार्वे से गोबर आयात करना चाहा था, परन्तु गोरक्षकों के विरोध के कारण उनको अपना निर्णय बदलना पड़ा। आयातित गोबर रु० २.५० प्रति किलो पड़ रहा था, जबकि भारत में गोबर का मूल्य दस पैसे से पच्चीस पैसे प्रति किलो है। ऐसी स्थिति में गोबर भारत-भूमि को अधिक से अधिक सुलभ हो, जो सुलभ है उसका खाद के रूप में सदुपयोग किया जाय। इस चक्र एवं अर्थशास्त्र को जब भारतीय किसान ठीक प्रकार से समझ जायेंगे तभी कृषि बचेगी, किसान बचेगा, जमीन बचेगी। विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंगदल, अ०भा०कृषि गोसेवा संघ, सर्वोदय समाज आदि से सम्बद्ध लोग जितनी शक्ति गोरक्षा में लगाते हैं, वे आन्दोलन को सृजनात्मक बनाने में भी लगायें, तब गोरक्षा सम्भव है। एकपक्षीय आन्दोलन कभी सफल नहीं होगा।

४. अतिशयोक्तिपूर्ण आँकड़े न दें

गोरक्षा आन्दोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं को प्रत्यक्ष काम का अनुभव न होने से कभी-कभी ऐसी बातें बोल देते हैं, जिससे वे उपहास के पात्र बन जाते हैं। पिछले दिनों ८५ एकड़ भूमि का एक गोसदन आरम्भ करते हुए एक बड़े विचारक ने कहा था कि विश्व का सबसे बड़ा गोसदन बनायेंगे और यहाँ दस हजार गोवंश रखेंगे। यह अतिशयोक्ति है। एक एकड़ में कितनी गायें रह सकती है—इसकी जानकारी किये बिना ऐसे आँकड़ें बताने या गोबर-गोमूत्र से होने वाली आय को बढ़ा-चढ़ा कर बताने से काम बढ़ता नहीं है। सरकारी या गैरसरकारी सहायता से खड़े गोसदन करोड़ों रुपये खर्च करके भी हजार पाँच सौ गायों को संभाल नहीं सकते और न ही उनकी नस्ल सुधार कर क्षेत्रीय विकास में योग दे सकते हैं तो गोपालक कैसे प्रेरणा लेंगे? स्थानीय परिस्थिति, स्थानीय संसाधन, स्थानीय उत्पाद और स्थानीय प्रतिभाओं के समन्वय से ही गोरक्षा का काम प्रभावी होगा और परिणामप्रद भी।

□□

गौ में समस्त देवों का वास माना गया है। गौ को ग्रहों में शुक्र से सम्बन्धित कहा गया है। शुक्र को प्रसन्न करने के लिए देवी लक्ष्मी की आराधना की जाती है। भवन के वायव्य कोण में वास्तुशास्त्र के अनुसार गौशाला रखने का विधान किया गया है। जिस भवन के वायव्य कोण में गौशाला हो, उस भवन के निवासियों को आर्थिक विपन्नता का सामना नहीं करना पड़ता। गम्भीर वास्तुदोषों के बावजूद वे अपेक्षाकृत अर्थकष्ट से मुक्त रहते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्धकार से प्रकाश की ओर 'गोपाल ग्राम योजना'

श्री जटाशंकर

गोशालाओं की स्थापना गोरक्षा, गोसंवर्धन, गोपालन व गोसंस्कृति के लिए हुई थी। देश में आजादी की ५०वीं स्वर्ण जयन्ती मनायी जा रही है। इन ५० वर्षों में देश की अनेक समस्याओं का हल निकला परन्तु साढ़े पाँच लाख गाँवों का अपेक्षित विकास नहीं हुआ और ग्रामीणों का नगरों की ओर पलायन हो रहा है जिससे गाँवों का विकास बाधित हुआ और शहरों की समस्याएँ बढ़ीं। ऐसी स्थिति में गोशालाओं की भूमिका सामने है।

गोशालाओं को केन्द्र बनाकर बिगड़ती हुई ग्राम्य व्यवस्था को सुदृढ़ करने का चिंतन प्रारम्भ हुआ है, जिससे लोगों की प्रमुख आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा की पूर्ति हो सके और व्यक्ति स्वाभिमान के साथ जीवन-यापन कर सके। और अच्छे विचार का लोगों में समावेश हो। इसी चिन्तन से गोरक्षा मूलक, स्थानीय उद्योग प्रधान, लोक शिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

भारतीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह से गाँवों पर निर्भर रही है और यही कारण है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था इस देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थायित्व देती आयी है। और इसका विश्व में एक अलग महत्त्व रहा है। और अनेक झटके खाकर भी यहाँ की संस्कृति नष्ट नहीं होने पायी।

ग्रामीण जीवन में गाय-बैलों का विशेष स्थान रहा है। गाय-बैलों के महत्त्व के बिना कोई ग्रामीण उत्सव फीका होता है। आज आजादी के बाद पश्चिमीकरण के कारण सबसे अधिक गाँवों की उपेक्षा हुई है, जिसमें गोधन प्रमुख है। जहाँ गाँवों में हर घर की शोभा गाय-बैलों से बढ़ती थी वहाँ अब सूना लगता है। इसी गाय-बैलों की उपेक्षा ने गाय-बैल की हत्या को प्रोत्साहित किया। जो यहाँ की भूमि को उर्वरा करते थे। लोगों को दूध एवं दुग्ध पदार्थ उपलब्ध कराते थे, खेत जोताई एवं परिवहन की समस्या को हल करते थे, घोर अज्ञानतावश उनकी उपेक्षा हुई है। इसी उपेक्षा को ध्यान में रखकर गोशाला ने गोपाल ग्राम योजना प्रारम्भ किया है। जिसके अन्तर्गत गाय-बैलों को सम्भालना, पशु चिकित्सा की सुविधा जुटाना, समुचित दाना और समुचित साधन सुलभ कराना, गोबर-गोमूत्र का उपयोग करने की अनुकूलता बढ़ाना, अच्छी नस्ल के साँड़ संरक्षित-संग्रहित करना। गोबरगैस संयंत्र लगाना, गोचर भूमि में हरा चारा उत्पादित करना प्रमुख हैं।

इस कार्यक्रमों से अनेक लाभ हुए हैं जो गोशाला एवं उसके परिक्षेत्र में देखने को मिलता है। जिसमें प्रमुख निम्न हैं—नस्ल सुधरी है, दुग्ध उत्पादन बढ़ा है, पेड़, खाद और स्लरी के कारण भूमि की उर्वरता बढ़ी है। चारों की अनेक जातियाँ विकसित व प्रसारित हुई हैं। गोबरगैस व वैकल्पिक उर्जा का उत्पादन हुआ है। दुग्ध पदार्थ से नये-नये उत्पाद बनने लगे। गोसेवकों की रुचि बढ़ी है और गोपालक खड़े हुए। गोपाल ग्राम अर्थात् प्रकाश की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। और गोपालन सम्मानित रोजगार बन गया।

गोपालन एवं गोपाल ग्राम योजना से सामाजिक विकास को गति मिली है और उल्लेखनीय बदलाव आया है, जो निम्नलिखित है। बंजर और बेकार भूमि सुधरने लगी है। मिट्टी के छोटे बाँध द्वारा जल संग्रह की तरफ जागरूकता आयी है। गोबर खाद पोषित फसलों को प्रोत्साहन मिलता है। गोपालन द्वारा रोजी-रोटी कमाने वाले युवक उत्साहित हुए हैं। कृषि-गोपालन में रुचि बढ़ाने वाले प्रशिक्षण शिविर चलने लगे। गाँव में बनने वाले छोटे-छोटे परम्परागत औजारों और यंत्रों का विकास होने लगा, जिससे पशुचालित चारा कटर मशीनें, पशुचालित ट्रैक्टर, सुधरी बैलगाड़ियाँ बनीं।

शेष पृष्ठ ७० पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपका संकल्प गोशाला का स्वावलम्बन

श्री चन्द्रकान्ती पाल

प्राचीन काल से गोशालाएँ भारतीय हिन्दू समाज का अभिन्न अंग रही हैं। ऐसी गोशालाओं को चलाने के पीछे विभिन्न कालों में विभिन्न कारण रहे हैं। कभी इसके पीछे केवल धार्मिक आस्था, कभी इसके पीछे आस्था तथा कर्त्तव्य एवं कभी इसके पीछे कुछ और रहा है। आज के परिवेश में भी गोशालाएँ संचालित हो रही हैं। कुछ लोगों का यह मानना है कि कुछ गायों को गोशाला में इकट्ठा कर, गोशाला में रखने/संभालने से गोशालाएँ चल जाती हैं और इतने से संचालक गण अपने कर्त्तव्यों की इति समझ लेते हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि भारतीय मानव समाज की समृद्धि में गोधन एक प्रबल आधार रहा है। उसका संवर्धन अत्यन्त आवश्यक है। इस दृष्टि से गोशालाओं में ४-५ सौ गायों को रखकर और कुछ लोगों से चन्दा माँग कर उनके धन से गोपालन, गोरक्षा, गोसंवर्धन का उद्देश्य कदाचित् पूरा नहीं होता।

सुरभि शोध संस्थान, वाराणसी ने गोशाला के स्वरूप में एक नये आयाम का सृजन किया है और सिद्ध कर दिखाया है कि गोशाला का अर्थ अधिकाधिक गोपालन है। जो लोग किसी भी रूप में गोसेवा से जुड़ना चाहते हैं, परन्तु ऐसा नहीं कर पाते उनके लिए केवल इतना पर्याप्त होगा कि वे संकल्प लें कि वे जहाँ भी रहेंगे केवल गोदुग्ध का ही उपयोग करेंगे। ऐसे संकल्पित परिवारों की संख्या से गोदुग्ध का उत्पादन बढ़ेगा, गोपालन बढ़ेगा जिससे स्वत: गोवंश संरक्षित, संवर्धित होगा।

आजकल साधारणत: यह प्रचलित है कि कुछ लोग गोशाला में चन्दा देकर यह मान लेते हैं कि गोपालन और गोसेवा के प्रति उन्होंने अपने समस्त कर्त्तव्यों का निर्वाह कर लिया है। उनकी इस मानसिकता ने एक विकट परिस्थिति को जन्म दिया है, जिससे गोशालाएँ आत्मनिर्भर होने की जगह ऐसे चन्दे देने वाले लोगों पर पूर्ण रूप से निर्भर हो गयी हैं। इस चन्दा-संग्रह के कार्य में गोभक्तों की ८० प्रतिशत से अधिक ऊर्जा लग जाती है, जिस कारण उनका महती उद्देश्य गोपालन पूरी तरह प्रभावित हुआ है। वस्तुत: चन्दा पर गोशाला चलाना मूलभूत रूप से एक त्रुटिपूर्ण व्यवस्था है।

सुरभि के अनुसार गोशाला की जो नयी परिकल्पना है, वह पूर्णरूप से आत्मनिर्भर गोशाला की है। आत्मनिर्भर गोशाला से आशय यह है कि गोशाला संचालन (रेवेन्यू एक्सपेंडिचर) का जो व्यय है, वह गोशाला अपने स्रोतों से अर्जित करें। केवल पूँजीगत व्यय (कैपिटल एक्सपेंडिचर) के लिए गोशाला चन्दा पर निर्भर रह सकती हैं। प्रश्न यह है कि यह परिकल्पना किस प्रकार सार्थक हो सकती है? इसका उत्तर यह है कि गोशालाएँ सेवायोग्य गायों का केन्द्र एवं गोपालकों का मार्गदर्शक एवं गोदुग्ध के इच्छुक लोगों को गोदुग्ध दिलाने का माध्यम बनें। यदि किसी भी शहर, उदाहरणार्थ वाराणसी शहर के ३-४ हजार परिवार यह संकल्प लें कि वे अपने यहाँ केवल गोदुग्ध का ही व्यवहार करेंगे तो इनके इस संकल्प से लगभग १० हजार ली० गोदुग्ध इन परिवारों के बीच बिक सकता है। ऐसी परिस्थिति का निर्माण होने से गोशाला अपने आसपास के गाँवों में गोपालन को बढ़ावा देकर गोशाला में एक ऐसी सहकारी समिति की स्थापना करें, जो सभी गोपालकों से गोदुग्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकत्रित कर उसी रूप में (प्रातः का दूध प्रातः और सायं का दूध सायं) वितरित करें तो इससे गोपालन करने वाले गोपालकों को उनके गोदुग्ध का उचित मूल्य मिलेगा, साथ ही इस कार्य में लगने वाले काफी लोगों को रोजगार प्राप्त होगा। इसका दूसरा प्रभाव यह होगा कि इस दूध के वितरण से जो लाभ गोशाला में स्थापित सहकारी समिति को होगा उससे गोशाला का संचालन-व्यय पूरा हो जाएगा। ऐसे स्थायी प्रबंध के पश्चात् कम से कम संचालन निमित्त (रेवेन्यू एक्सपेंडिचर) गोशाला को किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। सुरभि शोध संस्थान ने वाराणसी में गोरस भण्डार के माध्यम से इस कार्य को करने का प्रयास किया, जिसे आरम्भिक तौर पर सफलताएँ मिली हैं।

देश में जहाँ भी गोशालाएँ है, वहाँ ऐसी व्यवस्था लागू की जाय तो कम से कम वहाँ पर स्थापित गोशालाओं को अपने संचालन के लिए चन्दों पर आश्रित नहीं होना पड़ेगा। फलस्वरूप गोशाला में गोसेवक की ऊर्जा गोशाला चलाने में लगेगी और गोशालाएँ समग्र विकास के केन्द्र के रूप में देश में खड़ी होंगी। इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव यह भी होगा कि गाँवों से शहरों में जो पलायन हो रहा है, उस पर प्रभावी अंकुश लगेगा एवं बिना किसी सरकारी सहयोग या विनियोजन के एक लाभ एवं रोजगार देने की शृंखला का सृजन होगा। इसमें मात्र आवश्यकता इस बात की है कि जो गोसेवक चन्दा देना, गाय को गुड़ खिलाना धार्मिक कर्त्तव्य समझते हैं, वे सभी संकल्प लें कि वे केवल गोदुग्ध का व्यवहार करेंगे एवं करायेंगे तो निश्चित रूप से यह सार्थक गोसेवा होगी। केवल गोदुग्ध के उपयोग का आपका संकल्प स्थायी रूप से स्वावलम्बी गोशालाएँ खड़ी करने का अधिष्ठान बनेगा।

□□

पृष्ठ ६८ का शेषांश

फसल चक्र से किसान लाभान्वित हुए। कृषि गोविज्ञान केन्द्र से गोपालक आधुनिक तकनीक सीखने लगे। शहर वालों को सुबह-शाम बिना मक्खन निकला ताजा दूध पहुँचाने वाले गोरस भण्डार खुले जिससे लोगों का स्वास्थ्य सुधरा। कम पूँजी में स्वावलम्बन के अवसर बढ़े। कीटनाशक दवाओं के विकल्प के रूप में गोमूत्र ने स्थान बनाया एवं गोमूत्र चिकित्सा विधि को स्थान मिला। इस प्रकार गरीबी उन्मूलन एवं स्वाभिमान के साथ जीने का आधार मिला।

इस प्रकार गोपाल ग्राम योजना के चलते सामाजिक तनाव में कमी आयी है। बेकारी एवं निर्धनता में कमी आने पर युवा शक्ति की ऊर्जा का उपयोग राष्ट्र-विकास में हो रहा है जिससे सामाजिक सौहार्द बढ़ा है। इसके अतिरिक्त अनेक ग्रामोद्योग प्रशिक्षण की सम्भावनाओं पर प्रयास चल रहा है जिससे स्थानीय कुटीर उद्योग को विकसित किया जा सके, उन्हें बैंकिंग सुविधायें प्रदान की जा सकें, लोगों को स्वास्थ्य सुविधायें मिल सकें। लोगों को व्यसन मुक्ति की तरफ प्रेरित किया जा सके। सफाई, पर्यावरण रक्षा, वृक्षारोपण की ओर लोगों को प्रेरित किया जा सके। गाँवों को कोर्ट-कचहरी से दूर कर खशहाली की ओर ले जाया जा सके।

गोशाला का प्रयास इस दिशा में गागर में सागर के समान है। देश में गोशालाओं को केन्द्र बनाकर गोपाल ग्राम योजना को पूरे देश में स्थापित किया जा सकता है जिसके लिए सहयोगी जनता, शासन, संस्थाओं एवं दानदाताओं के सहयोग की अपेक्षा है।

आपका सबको गोपाष्टमी मंगलमय हो।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'ग्रामवासिनी भारत माता' की सेवा का संकल्प लें

आचार्य शरदकुमार साधक

भारत विशाल देश है। २८ प्रदेशों एवं ७ केन्द्रशासित क्षेत्रों में तरह-तरह की बोलियाँ हैं। रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, राज-काज एवं धर्म-सम्प्रदायों में भिन्नता होते हुए भी अभिन्नता की प्रतीति कराती है—भारतमाता, जो ग्रामवासिनी है। **'विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम्'**, परिपुष्ट विश्व-दर्शन भारतीय ग्रामों में होता है। अनाज, दूध, सब्जी फल-फूल, जड़ी-बूटी, गोबर गैस, ऊर्जा आदि जीवन व जीविका के लिए अपेक्षित संसाधनों से गाँव समृद्ध तो हैं ही, संस्कारी भी हैं, जहाँ माना जाता है—

माता मानें पर नारी को, पर पति को सब भाई जानें।
पत्थर समझें पर धन को, तब कहलाते जन यहाँ सयाने॥

सयानापन उम्र से नहीं, समझ से आता है। इसी समझ से हम मनुष्यों और मनुष्येतर प्राणियों का भारतीय परिवार बना है। मत्स्यावतार, कच्छपावतार, शूकरावतार, नृसिंहावतार, वामनावतार की अवधारणा हमारे पारिवारिक विकास की परिचायक है, जिसे ब्रह्मदर्शन की मान्यता देते हुए कहा गया है—

व्यापक विश्व रूप भगवाना।
तेहि धरि देह चरित कृत नाना॥

ब्रह्मदर्शन ने हिमालय से हिन्द महासागर तक फैले विशाल भू-भाग के पेड़-पौधौं और पशु-पक्षियों को भी आत्मीय बना दिया है। सर्वेक्षणकर्ता देश के ४७ हज़ार किस्म के पेड़-पौधों या ८९,४५१ किस्म के जीव-जन्तुओं को ही पहचानते हैं, पर हम भारतीय ८४ लाख जीव योनियों के साथ सृष्टि व स्रष्टा में भी अपना ही प्रतिबिम्ब पाते हैं। इसीलिए विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा और जलधि का राष्ट्रगान में स्थान है तथा बाघ को राष्ट्रीय पशु, मयूर को राष्ट्रीय पक्षी, कमल को राष्ट्रीय पुष्प तथा सांड़ व घोड़े सहित शेरों को राज चिह्न में **'सत्यमेव जयते'** के फलक पर प्रतिष्ठा मिली है।

सत्य भगवान है **'सच्चं खु भगवं'**। अन्न ब्रह्म है **'अन्नं वै ब्रह्मः'**। अन्नोत्पादन करना राष्ट्र व्रत है **'अन्वनं बहु कुर्वीत तद् व्रतम्'**। महर्षि धौम्य के खेत की मेड़ टूट गयी तो बहती मिट्टी को रोकनेवाला आरुणि ब्रह्मज्ञान का अधिकारी हो गया। ४०० दुबली पतली अस्वस्थ गायों का रक्षण, पोषण, संवर्धन कर सत्यकाम ने गो-उपासना से उनकी संख्या एक हजार कर दी तो उसे ब्रह्मज्ञानी की उपाधि प्रदान कर दी गयी। असि (शस्त्र), मसि (साहित्य) कृषि विशेषज्ञ ऋषभदेव ने ऋषि परम्परा को एक सूत्र में पिरोया तो वे तीर्थंकर मान लिये गये। तपस्वी गृत्समद ने कपास से रूई, रूई से सूत निकालने की विधियाँ सिखायीं और वस्त्र बने। झीनी झीनी चदरिया बिननेवाले सन्त कबीर की सबद-साखी में शाश्वत सत्य बोलता है।

'सर्वोपनिषदो गावो दुग्धा गोपालनन्दनः'-उपनिषद रूपी गायों का दोहन कर गीतामृत पान कराने वाले गोपालकृष्ण ने हलधर (बलदाऊ) की अगुआई में बिना कृषि-गोपालन किये मौज़-मस्ती मारने वाले शासकों को धराशायी किया और **'कृषिगोरक्षवाणिज्यम्'** की संगति बिठाकर भारत को सोने की चिड़िया बनाया। दैहिक, दैविक, भौतिक तापों को शमित कर हम श्रीसम्पन्न हुए। हमारी सम्पन्नता की कहानियाँ सुनकर ईरानी-यूनानी आये। फिर तो आनेवालों की कतारें लग गयीं। अंग्रेज आये, फ्रांसीसी आये, पुर्तगाली आये, डच आये, चीनी आये। सबसे प्रशंसित होकर हम फूल गये और अपना स्वधर्म भूल गये। **'जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना, जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना'** समझ कर भी हम बेसमझ बन बैठे। सिकन्दर से क्लाइव तक का इतिहास हमारी बेसमझी का दस्तावेज है। इसलिए युगानुरूप समझ को वैज्ञानिक आयाम देने की पहल महात्मा गांधी ने की। उन्होंने कृषि, गोपालन, ग्रामोद्योगों को महत्त्व देने के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथ-साथ अस्पृश्यता निवारण, शराबबन्दी, साम्प्रदायिक एकता, श्रमिक-किसान-मजदूर-विद्यार्थी-महिला जागरण, आदिवासी सेवा और रुग्ण सेवा विशेष कर कुष्ठ सेवा को रचनात्मक कार्य घोषित किया। राष्ट्रभाषा प्रचार, नयी तालीम, स्वास्थ्य, शिक्षा की रचनात्मक विधाओं से आन्दोलित होकर देश भर में हर आयु वर्ग के लोग अपनी और राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा करने को संकल्पित हुए और सृजनशीलता अपनायी, तब राजनैतिक परिवेश बदला। सामन्तवाद सिकुड़ा और व्यवस्था-परिवर्तन की आशा बँधी, किन्तु उसी बीच गांधी हमारे बीच से उठ गये।

गांधी की वृत्ति एवं कृति के अनुरूप भूदान मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अंहिसक क्रान्ति के लिए सन्त विनोबा ने देश भर की पदयात्रा की और विषमता मिटाने हेतु आन्दोलन खड़ा किया। लोकनायक जयप्रकाश जैसे विख्यात नेताओं के साथ हम जैसे अनेक कार्यकर्ताओं ने बड़े-बड़े भूमिवानों तथा छोटे-चोटे काश्तकारों से भूदान माँगा। भूमिहीनों के लिए लाखों एकड़ जमीन मिली, साधनहीनों को साधन मिले। सिंचाई के लिए कुएँ व छोटे-छोटे बाँध बने। कत्ल और कानून से जितना काम नहीं हुआ, उससे अधिक काम करुणा से हुआ। यलवाल कांफ्रेंस में देश की सभी पार्टियों के प्रमुख नेताओं और विचारकों ने विनोबा के अभियान की सफलता समझी, लेकिन जब भूमि, सम्पत्ति, मकान, संसाधनों और वेतन-भत्तों में कमी करने की माँग उठी तो ध्यान बँटाने हेतु शासनकर्ता स्वदेशी, स्वावलंबन, ग्रामोद्योग आदि की महत्ता का अवमूल्यन कर जीवन स्तर को उठाने का नारा बुलन्द करने लगे। 'सादा जीवन उच्च विचार' में आस्था रखने वाली जनता आदर्श से विचलित हो गयी। दर्शन से अधिक प्रदर्शन, त्याग से अधिक अनुत्पादक कार्यों की तूती बोलने के कारण साधन-शुद्धि, आहार-व्यवहार-व्यापार-कारोबार शुद्धि और सांस्कृतिक मूल्य महत्त्वहीन लगने लगे। महत्त्व पाने वाले अधिकांश नेता व अफसर अवश्य मालामाल हो गये, पर देश कंगाल हो गया, कर्जदार हो गया। विकास की कृत्रिम चकाचौंध में 'कल्याण-पथ' खो गया। म० गांधी की नसीहत केवल पुस्तकों में लिखी रह गयी कि "स्वराज्य की रक्षा वहीं हो सकती है, जहाँ देशवासियों की ज्यादा बड़ी संख्या ऐसे आदमियों की हो, जिनके लिए दूसरी सब चीजों से—अपने निजी लाभ से भी, देश की भलाई का ज्यादा महत्त्व हो।"

लोकतंत्र के नाम पर विधानसभाओं व संसद में पहुँच कर 'लोक' से हजारों गुना वेतन-भत्ता पाने वाले प्रतिनिधियों, नौकर होकर भी मालिक (जनता) पर हुकूमत करने वाले अधिकारियों और काला धंधों में लिप्त रहने वाले लोगों ने क्या नहीं किया? देश की दौलत विदेशी बैंकों में जमा करायी और देशवासियों की खून-पसीने की कमायी लूटने में शक्ति लगायी। लूटने वालों की तब बन आयी, जब उनके उत्पादों का उपभोग करने हेतु जनता को प्रचार माध्यमों ने उकसाया। भाई अरुण ऋषि के शब्दों में हम प्रतिदिन प्रातः शैम्पू और सौन्दर्य साधनों के अप्राकृतिक उत्पादों में ४०० करोड़ रुपये लुटाते हैं, तत्पश्चात् रात्रि आठ बजे तक चाकलेट, चिप्स, शीतल पेय, सिगरेट, मदिरापान, गुटकों में ६०० करोड़ रुपये खर्च कर आधुनिक बनने का दंभ भरते हैं। अप्राकृतिक उत्पादों के उपयोग से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में फैल रही बीमारियों के कारण एक हजार करोड़ रुपये रोज दवाओं में लगाने पड़ जाते हैं। हम अपनी आदतें बदल कर और देशी उत्पादों का विवेक पूर्वक उपयोग कर भारत के दो हजार करोड़ रुपये प्रतिनिद बचा सकते हैं औ बेकार व अर्ध बेकार लोगों को रोजी-रोटी सुलभ करा सकते हैं। श्री गांधी आश्रम, सर्व सेवा संघ, सर्वोदय मंडल, आचार्यकुल, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान सहित देश की २२३४ रचनात्मक संस्थाओं ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं किया, जबकि सम्पूर्ण क्रान्ति का नारा लगाने वाले हम सब अपने आप को गांधी, विनोबा, जयप्रकाश का वास्तविक उत्तराधिकारी मान बैठे हैं। केवल विदेशी कम्पनीयों का विरोध करने मात्र से देशवासियों की दशा व दिशा नहीं बदलेगी, उसके लिए तो देशी उत्पादों से अपना काम चलाने, उपलब्ध साधनों से निर्मित उत्तम सामान बाजार में लाने, देश का कर्ज उतारने के लिए राष्ट्रीय आय के अनुपात में ही वेतन-भत्ता लेने और अपने-अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संकल्प लेना होगा। राजनैतिक या अन्यान्य हित साधन के लिए हो रही हड़ताल, बंदी, घेराव के साथ राष्ट्रीय संपत्ति बरबाद करना प्रतिबंधित करना होगा। स्व विकास की आड़ में सर्व का विनाश करना लोकतंत्र नहीं है। जाति, भाषा, धर्म, प्रादेशिकता का दुरुपयोग करने वाले राजनीति का अपराधीकरण और अपराधों का राजनीतिकरण करके खुलेआम राष्ट्रघात कर रहे हैं। उन्हें समझाकर कर्त्तव्यनिष्ठ 'कल्याण-मित्र' बनाना होगा।

कर्तव्यपरायण विचारक नवभारत के निर्माणार्थ आगे आयें। वे प्रेरक बन जायँ और बतायें कि आम जनता को, शिक्षाविदों को, उद्योगपतियों को, संतों को एवं प्रशासन को क्या करना है और क्या नहीं करना है। किसान दिन भर खेत में काम करते हैं, मजदूर मेहनत करते हैं, कर्मचारी खटते हैं, उनका मूल्य है; पर वे प्रेरक नहीं बन सकते। मशीनें सैकड़ों मजदूर, किसान, कर्मचारियों के बराबर काम करने लगी हैं, लेकिन वे प्रेरणास्रोत नहीं बन सकतीं। प्रेरणा तो विचारक ही देंगे, जो कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य समझते हैं और जल, जंगल, जमीन, प्राकृतिक संसाधन, परम्परागत कौशल और मानवीय तथा पशुऊर्जा का उपयोग कर औद्योगीकरण, वैश्वीकरण और बाजारीकरण की अंधी दौड़ में अपनी अस्मिता खोते भारत को बचा सकते हैं। गांधी बहुत पहले समझा चुके हैं कि आर्थिक मामलों में अपने गाँव को ही विश्व मानो तथा सांस्कृतिक मामलों में सारे जगत् को गाँव मानो, तब न गाँव या ग्रामोद्योग उजड़ेंगे और न अप्राकृतिक उत्पाद बढ़ानेवाले ही अपने लाभ के लिए धरती पर संकट खड़ा कर सकेंगे। गांधीजी के मतानुसार भारत अपने चन्द शहरों में ही नहीं, बल्कि सात लाख गाँवों में बसा हुआ है। लेकिन शहरवासियों का खयाल है कि भारत शहरों में ही है और गाँवों का निर्माण शहरों की जरूरतें पूरी करने के लिए हुआ है। शहर गावों की सारी दौलत खींच लेते हैं। उसे रोकने के लिए वे चीजें शहरों में न बनने दी जायँ, जो गाँवों में बनायी जा सकती हैं। गाँवों में बनी चीजों का सम्भव है, शुरू में हमें साधारण भाव से कुछ अधिक देना पड़े और चीजें हल्की मिलें, पर आग्रह रखें कि वे बढ़िया माल तैयार करें। सिर्फ आग्रह ही न रखें, बल्कि गाँव वालों को पूरी मदद भी दें तो यह नहीं हो सकता कि गाँवों में बनी चीजों में दिन-दिन तरक्की न होती जाय। गाँव वाले लोग आजकल के उन यंत्रों और औजारों से भी काम ले सकते हैं, जिन्हें वे बना और खरीद सकते हैं। शर्त सिर्फ यही है कि दूसरों को लूटने के लिए उनका उपयोग नहीं होना चाहिए। ग्राम-व्यवस्था के अंग—ग्रामोद्योग टूट गये। आज कपड़ा, आटा, चावल, तेल—सब कुछ मशीन की स्पर्द्धा के आगे महँगे हैं। यदि उनको देहातों में फिर संजीवित करना है तो समूची ग्राम अर्थ-व्यवस्था में हाथ डालना होगा।

मर्ज, कर्ज, गरीबी, गंदगी, अंधविश्वास आदि के गढ़ बने गाँवों को नये युग की अपेक्षाएँ पूरी करने योग्य बनाना है तो पहले भूखिया, फिर दुखिया, तब सुखिया की समस्या का समाधान खोजें। एक-दूसरे की कमियों को सहते हुए उनकी विशेषताओं को उजागर करें, तब सज्जन संगठित होंगे और सज्जनता संवर्धित होगी। वे मिलकर काम करेंगे तो आज की अपेक्षा अगले पाँच वर्षों में दूध दुगुना, चारा तीन गुना, अनाज चार गुना, भूसा पाँच गुना, फलोत्पादन छः गुना, दाना सात गुना, रोजगार आठ गुना हो सकता है। रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों का उत्तरोत्तर प्रयोग बढ़ाकर हमारे लोगों ने धरती की उर्वरा-शक्ति घटायी, जैविक खाद के जरिये उसकी आपूर्ति करने की योजना बनालें तो देश की १२ करोड़ ५ लाख ८० हजार हेक्टेयर ऊसर भूमि का भी कायाकल्प हो जायेगा और ७ करोड़ ८२ लाख किसानों तथा ४ करोड़ ४ लाख खेतिहर मजदूरों को भी ग्रामीण उद्योगों में पुनर्स्थापित किया जा सकेगा। रासायनिक उर्वरकों के मद में देश का लगनेवाला लगभग ९० लाख अरब रुपया बचाने से गोरक्षा मूलक स्थानीय उद्योगप्रधान लोक-शिक्षण के प्रयोग व प्रशिक्षण का बुनियादी काम हो सकता है। पिछले पचास वर्षों में संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य-कृषि संगठन की रिपोर्ट के अनुसार लगभग ५० हजार किस्म की फसलें तथा ४ हजार किस्म की मवेशी नस्लें नष्ट हुईं। उससे सबक लेकर हम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शेष गोवंश बचाने और उसके गोबर-गोमूत्र का उपयोग करना ठान लें तो किसानों को जरूरत भर का ईंधन, (गैस) नाइट्रोजन, पोटाश, फास्फोरसयुक्त जैविक खाद भी मिल जायेगी तथा परम्परागत कृषि, गोपालन, व्यापार, व्यवहार में रचनात्मकता आयेगी। रचनात्मकता न होने से भारत का तो नुकसान हुआ ही, पाकिस्तान, श्रीलंका, बंगलादेश, भूटान, नेपाल, मालदीव, अफगानिस्तान, म्यांमार के भी १२ करोड़ ६० लाख बच्चे प्राथमिक स्कूल, ६९ करोड़ लोग स्वास्थ्य केन्द्र, ७७ करोड़ लोग पेय जल, ८ करोड़ ७० लाख बालक-बालिकाएँ पौष्टिक आहार से वंचित हो गये हैं। विश्व बैंक के एक वरिष्ठ अधिकारी ने साउथ एशिया के इन देशों को लगातार १० वर्षों तक अपने रक्षा बजट में ५ प्रतिशत की कटौती करने का सुझाव दिया है। संहार में लगने वाले साधनों को सृजन में लगाने और हथियारों की होड़ को रोके बिना विश्व के नागरिकों को इस समय जितने साधन सुलभ हैं—वैज्ञानिकों ने आगाह किया है कि वे भी अगले दशक में घटकर आधे रह जायेंगे। इसलिए विश्व को बचाने के लिए गाँव-व्यवस्था का पुनर्निर्माण करने का हम हर स्तर पर संकल्प लें, और 'पदे पदे निधानानि योजने रस कूपिका'—कदम-कदम पर छिपी निधियाँ और अमृत कलश ढूँढ़ निकालें, तब ग्राम लक्ष्मी, ग्राम सरस्वती, ग्राम दुर्गा, ग्राम भारती, ग्राम पंचायत तो सुरक्षित होगी ही, शहर भी अतिरिक्त उत्पादों के निकास के साथ विदेश से आयात किये जाने वाले माल के उत्पादक केन्द्र बन जायेंगे। विवेक संगत पारस्परिकता बढ़ने से ही सब एक नेक रहेंगे।

२०वीं सदी तक के सारे अनुभवों से सबक लेकर २१वीं सदी में नयी दष्टि, नयी तकनीक और नयी विधा से विकास करना है, विगत की अपेक्षा अधिक उत्तम आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, जागतिक व्यवस्था कायम करनी है और सहजीवन को निरापद रखना है तो हम अपने-अपने गाँव, नगर, मुहल्लों में दो काम करें—

१. करोड़ों किसान, मजदूर, कारीगर, डॉक्टर, वकील, व्यापारी, अधिकारी विकास के कामों में लगे हैं, लेकिन वे एक-दूसरे का शोषण करने वाली मानसिकता से ग्रस्त हैं। उनमें परस्पर पोषण करने वाली वृत्ति और प्रवृत्ति पैदा करनी है, ताकि विकास में सर्वसाधारण की सहभागिता बढ़े, पारस्परिक भाईचारा गहरा हो एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का विचार आचार में प्रतिबिम्बित हो जाय।

२. देश में दस लाख से अधिक शिक्षा-संस्थाएँ हैं, पैंतालीस लाख से अधिक शिक्षक हैं, उन्नीस करोड़ से अधिक शिक्षार्थी हैं—उन्हें योग, उद्योग, सहयोग की प्रयोगशाला बनाना है, ताकि प्रकृतिद्रोही/मानवद्रोही व्यवस्थाजन्य समस्याओं का सामना करते हुए अभाव, अन्याय, अज्ञान व अशान्ति से मुक्ति पा सकें।

परस्पर पोषण करने वाले योग, उद्योग, सहयोगनिष्ठ व्यक्ति अनीतिपूर्ण साधन त्यागे बिना नहीं रहते। वे जीवन विज्ञान के साथ जीविका विज्ञान को समझकर न्यायपूर्ण, समाधानकारी, सर्वहितकारी 'कल्याण-कार्य' करने लगते हैं।

हम सौ करोड़ से अधिक भारतीयों को जन्मघूँटी के साथ अपनी माता (जननी) ने सिखाया है कि तुलसी माता, गौ माता, गंगा माता, भारत माता की भाँति धरती भी हमारी माता है। 'माताभूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः' हम धरती पुत्र हैं। आज संसार 'धरती बचाओ' की गुहार लगा रहा है तो हम अपने जीवन का लक्ष्य सत्य, जीवन की पद्धति संयम, जीवन का कार्य सेवा, सह जीवन की कसौटी शान्ति एवं सफलता का निकष सर्वोदय मान लें, तो नयी शताब्दी की आशा का संदेश मिल सकता है और 'स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन' के प्रसिद्ध लेखक विल डूरेंट का यह लिखना सार्थक हो सकता है कि ''भारत समस्त प्रजातियों की माँ है। वह माँ है दर्शन की, गणित की, लोकतंत्र की। बहुत से अर्थों में भारत माँ हम सबकी माँ है।'' ग्रामवासिनी भारत माँ की सेवा-समाराधना करने से हमें हर अक्षर को मंत्र, हर जड़ को औषधि, हर चेतन को रिद्धि-सिद्धि-साधक बनाने का वरदान प्राप्त होता है।

अमन्त्रं अक्षरो नास्ति नास्त्यमूलमनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः॥

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

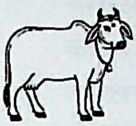

॥गावो विश्वस्य मातरः॥

प्राणी-मात्र के जीवन रक्षक 'भारतीय गोवंश' में निरन्तर ह्रास

मानवसहित समस्त जीव-जंतु विनाश की ओर

प्राचीन काल में बैल वर्ष में औसतन 8-9 महीने में काम आता था। सम्पूर्ण देश में खेती की जुताई, बुवाई सिंचाई व तेल पिराई के अतिरिक्त बैलगाड़ी द्वारा अनाज, फल, शाक-सब्जी, चारा, खाद व ढुलाई के अन्य अनेक कार्यों तथा यात्रा हेतु बैलों का उपयोग होता था। आजकल देश के कुछ भाग में ही केवल जुताई, बुवाई आदि हेतु बैल का उपयोग हो रहा है। देश के सभी प्रदेशों विशेषकर (पंजाब, हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश) में टैक्ट्र ट्रॉली, ट्रकों, पम्प सेटों आदि का प्रचलन बढ़ जाने के कारण बैलों की उपयोगिता कम हो गई है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रचार कें कारण भी इनके प्रयोग को बढ़ावा मिला है। प्रारम्भ में इन यन्त्रों की कीमतें काफी कम थीं, डीजल भी सस्ता था जिससे किसान इस ओर आकर्षित हुआ था। परन्तु अब कीमतों में लगातार वृद्धि (डीजल में तो 10-12 गुना तक) होने के कारण कृषि की लागत में लगातार बढ़ोत्तरी हुई है। किसान कर्ज लेकर इसके ब्याज व अन्य खर्चे वहन करने में असमर्थ हो गया, समय पर बैकों की किस्त नहीं चुकाने के कारण पंजाब व आन्ध्र आदि प्रदेशों में किसानों द्वारा बड़ी संख्या में आत्महत्या तक करने की घटनायें प्रकाश में आई हैं। देश में मशीनीकरण के कारण, श्रम की महत्ता कम हो गई, श्रम-साध्य बैल अनुपयोगी हो गया परिणामस्वरूप गोपालक एवं किसान अपने बछड़ों व सभी उम्र के बैलों को बेचने पर मजबूर हो गया।

भारतीय स्वदेशी साँड प्रतिवर्ष लगभग 100 गायों का 10-12 वर्ष तक प्रजनन करने में सक्षम होता है। बूढ़ा होने के पश्चात् भी वह ग्रामवासियों पर बोझा नहीं बनता क्योंकि उसकी खुराक का खर्चा उसके गोबर-गोमूत्र से प्राप्त हो जाता है। कुछ समय पूर्व तक किसान बछड़ों को अपेक्षित मात्रा में गाय का दूध पिलाकर उत्तम बैल व साँड़ तैयार करता था। पुष्ट साँड़ के द्वारा उत्पन्न बछड़ियाँ (गाय) अधिक दूध देती थीं, बछड़े मजबूत बैल बनकर कृषि-कार्य में किसान का सहयोग करते थे। साँड़ो की व्यवस्था व देखभाल सामूहिक रूप से ग्रामीण जनता करती थी, वह खुला रहकर कहीं भी विचरण करता था। परंतु पंचायतीराज व्यवस्था आने के बाद इसमें काफी बदलाव आया, गाँवों में साँड़ों के पालने व रखने की व्यवस्था समाप्त प्राय: हो गई। परिणामत: स्वदेशी नस्ल के साँड़ों की कमी हो गई। पशुपालन विभाग ने स्वदेशी साँड़ों के पालन की व्यवस्था नहीं करके विदेशी साँड़ों द्वारा कृत्रिम गर्भाधान को प्रोत्साहन देने का कार्य किया। भोला-भाला किसान मजबूरी में इस प्रक्रिया को अपनाने लगा। उसको यह ज्ञात ही नहीं हो रहा है कि भारतीय नस्ल का उसका अपना अमूल्य गोधन नष्ट और समाप्त प्राय होता जा रहा है। यह सारा षड्यंत्र मांस उत्पादन व विक्रय करने वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा रचा गया है। जिनके पास अरबों डालर की पूँजी है वे इस घृणित प्रक्रिया द्वारा हमारी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को चौपट करने के कुकृत्य में लगे हुए हैं।

किसान प्राचीन समय से अपनी खेती के लिए उपयुक्त बीज स्वयं तैयार करता था परन्तु आज अधिक उत्पादन के लोभ में सरकारी व गैर सरकारी बीज भण्डारों से बहुत ऊँची कीमत देकर संकरित बीजों को खरीद कर प्रयोग में ला रहा है। रासायनिक खाद व जहरीले कीटनाशक का प्रयोग इन संकरित बीजों की आवश्यकता

शेष पृष्ठ ८० पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्तर प्रदेश में गोरक्षा, गोपालन, गोसंवर्धन के लिए विचारणीय बिन्दु

सुरभि शोध संस्थान

उत्तर प्रदेश भारतवर्ष का मस्तक प्रदेश है। यह प्रदेश भगवान राम व गोपालकृष्ण की जन्मभूमि है। गोपूजा, गोसेवा, गोपालन की विशेष परम्परा प्राचीन काल से ही इस प्रदेश की रही है। भारतीय नस्ल के गोवंश का इतिहास में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। किन्तु पिछले कई सौ वर्षों से उसकी पूरी उपेक्षा हुई है। स्वतंत्र भारत में भी उस पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया, जबकि विदेशों में भारतीय नस्ल संरक्षित, पोषित व विकसित हो रही है। आज इजराइल ने भारतीय नस्ल की गाय को संवर्धित कर दुनिया में सबसे अधिक दूध देने वाली गाय के रूप में प्रस्तुत कर दिया है। दुःख की बात है कि हमारे राजनेताओं, वैज्ञानिकों एवं इस क्षेत्र में उत्तरदायित्व निभाने वाले लोगों ने भारतीय नस्ल की विशिष्ट क्षमताओं को विस्मृत कर विदेशी नस्ल में ही अधिक दूध देने की क्षमता है यह मान लिया। इसलिए भारतीय नस्ल की पूरी उपेक्षा हुई है। भारतीय नस्ल क्यों कमजोर हुई इस पर अध्ययन व सुधार कार्य की आवश्यकता है। अब इने गिने केन्द्रों में ही भारतीय नस्ल पर कार्य हो रहा है। सरकार ने भारतीय नस्ल के विकास के लिए कुछ केन्द्र खोले किन्तु उसमें वांछित परिणाम नहीं आये। इनमें कुछ केन्द्र तो अत्यधिक दुर्दशाग्रस्त हैं और कुछ केन्द्रों ने तो अपने लक्ष्यों के विपरीत विदेशी नस्लों से ही संकरित नस्ल अपना ली है।

भारत में अभी भी जहाँ भारतीय शुद्ध नस्ल बची है, वह गोपालकों के ही अथक प्रयास का परिणाम है। गीर नस्ल विकास पर बम्बई गोशाला का प्रयास विशेष सराहनीय है। उन्होंने गीर नस्ल को विकसित कर ३३-३४ लीटर दूध प्रतिदिन देने की क्षमता तक पहुँचाया है। कस्तूरबा ग्राम इन्दौर व गुजरात में भी अनेक स्थानों पर गीर नस्ल पर परिणामदायी कार्य हो रहा है।

भारतीय नस्ल के गोवंश के रख रखाव की समुचित व्यवस्था हो तो नस्ल सुधार सम्भव है। नस्ल सुधार के प्रति आस्था जागृत होने पर देश में पूर्ण गोहत्या बन्दी के अनुकूल वातावरण का निर्माण होगा। भारत में लगभग ३५ भारतीय नस्लों के गोवंश है, उनमें ११-१२ नस्ल प्रख्यात हैं।

गोरक्षा कार्यक्रम

१. गोवंश की रक्षा धार्मिक ही नहीं आर्थिक दृष्टि से भी बहुत आवश्यक है। गाय भारतीय संस्कृति के साथ घुली-मिली है। इसके विनाश से भयावह स्थिति होगी। भारत सरकार व उत्तर प्रदेश सरकार गोहत्या बंदी एवं गोसंवर्धन हेतु वचनबद्ध है इसके लिए अपने संकल्प की आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार आदि प्रचार माध्यमों से जनता को जानकारी दें, और स्वयं सेवी संगठनों एवं जनता से सहयोग की अपील करें।

२. चोरी छिपे गोवंश हत्या व तस्करी रोकने के लिए भी जिलाधिकारियों को निर्देश दें और गोरक्षा समितियों द्वारा मिली सूचना को आधार मानकर आवश्यक कदम उठायें।

३. अन्य वन्य जीवों के समान गोवध को दण्डनीय अपराध घोषित करवाना चाहिए।

४. गोरक्षण गोसंवर्धन से संतुलित समग्र विकास के प्रति निष्ठा व चेतना जागृत करना व प्रचार प्रसार।

५. इस कार्य में सरकारी, अर्ध सरकारी, सामाजिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संस्थाओं व ग्रामसभा के लोगों की भूमिका व कर्त्तव्य निर्धारण किया जाना चाहिए।

६. गोपालन के प्रति जागृति हेतु पाठ्यक्रमों में गोपालन के लाभों का प्रेरणादायी समावेश हो।

उत्तर प्रदेश में नस्ल सुधार के लिए निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए

१. प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों के लिए जलवायु एवं परिस्थिति के अनुरूप नस्ल चयन व विकास व्यवस्था होनी चाहिए। इसमें प्रदेश को क्षेत्रीय अनुकूलता के अनुसार चार भागों में बाट सकते हैं— (क) पश्चिमी उत्तर प्रदेश, (ख) मध्य उत्तर प्रदेश, (ग) पूर्वी उत्तर प्रदेश और (घ) पर्वतीय उत्तर प्रदेश।

२. भारतीय नस्लों का परिचय एवं उनके गुण का अध्ययन एवं जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए जिनमें मुख्यतः हरियाणा, गंगा तीरी, शाहीवाल, थारपारकर, राठी, गीर, लालसिंधी नस्ल उपयुक्त है।

३. सांड़ केन्द्र—उत्तम सांड़ प्राप्त हों। हर ग्राम में नन्दी शाला स्थापित हो जहाँ सम्भव न हो वीर्य केन्द्र बनाया जाय। प्रत्येक दूसरे वर्ष सांड़ बदलने की व्यवस्था हो।

४. उत्तर प्रदेश में किन-किन क्षेत्रों में कौन-कौन सी नस्ले उपलब्ध हैं। सरकार द्वारा देशी नस्लों पर कहाँ कार्य हो रहा है इसकी जानकारी प्राप्त की जाय एवं नस्ल विकास के लिए पशुपालन विभाग को भी उत्तरदायी बनाया जाय।

५. उत्तर प्रदेश गोपालकृष्ण की जन्म भूमि है यहाँ पर प्रत्येक नस्ल के विकास के एक-एक सरकारी एवं एक-एक गैर सरकारी केन्द्र होने चाहिए जिसमें इच्छुक व्यक्ति को ये नस्लें उपलब्ध करायी जा सकें।

६. भारतीय नस्ल की विश्व में अधिक दूध देने की क्षमता सिद्ध हो चुकी है। इजराइल, डेनमार्क आदि दुग्ध उत्पादक देशों में अधिक दूध देने वाली गायों हेतु की जा रही व्यवस्था के अध्ययन से एक पाठ्यक्रम बनाया जाए और ग्रामीण परिवेश में लोगों को शिक्षित प्रशिक्षित किया जाय।

७. भारतीय नस्लों के प्रोत्साहन हेतु ग्राम, विकास खण्ड तहसील स्तर पर गोष्ठियाँ करायी जाय और ग्रामीण की सहभागिता एवं सुझाव लिया जाय क्योंकि अनेक वर्षों से कृषक यह कार्य कर रहा है उसकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

८. आधुनिक विज्ञान व प्राचीन ग्रंथों में गोवंश संवर्धन हेतु जो उपाय बताये गये हैं उन पर शोध और उनका प्रचार प्रसार किया जाय।

९. प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों को भारतीय गोवंश विकास व संवर्धन हेतु कुछ दायित्व दिया जाये।

१०. पशुपालन विभाग में गो विकास एवं गोसंवर्धन हेतु एक अलग सेल स्थापित हो।

११. गोशालाओं के प्रतिनिधियों एवं अच्छे गोपालकों को देश की प्रेरणादायी गोशालाओं एवं सरकारी केन्द्रों का भ्रमण शासकीय खर्च पर करना चाहिए।

चिकित्सा व्यवस्था

१. गोवंश चिकित्सा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

२. सरकार सस्ते मूल्य पर दवायें उपलब्ध कराये।

३. परम्परागत एवं देशी चिकित्सा पद्धति का अध्ययन एवं उपयोग सुनिश्चित किया जाय।

४. गोशालाओं के प्रतिनिधि एवं गोपालकों को सामान्य चिकित्सा का ज्ञान शिविर के माध्यम से दिया जाय।

५. सचल चिकित्सा यूनिट की व्यवस्था प्रत्येक विकास खण्ड में होनी चाहिए।

६. प्रत्येक गोशाला में एक शासकीय चिकित्सालय होना चाहिए जिससे गोशाला व स्थानीय गोपालकों को लाभ मिले।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृषि का मूल आधार बैल

१. गोवंश के विकास में बैलों का सही उपयोग आवश्यक है। डीजल आदि की कमी, पर्यावरण असन्तुलन, रासायनिक खादों के दुष्परिणाम से भविष्य में होने वाली भयावह स्थिति से कृषकों को अवगत करा उन्हें बैल आधारित कृषि करने को प्रोत्साहित किया जाय।

२. बैलों के कार्य दिवस बढ़ाने हेतु बैल चालित उन्नत कृषि यंत्रों का निर्माण, उन्नत बैलगाड़ी व यंत्रों के क्रय में सरकारी सहायता व ऋण सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए।

३. बैल से चलने वाले यंत्र, जेनरेटर, चारा मशीन, कटाई यंत्र, थ्रेसर, सिंचाई पम्प आदि विकसित किये जायँ और विकसित करने वालों को प्रोत्साहित किया जाय।

हरा चारा एवं आहार

१. हरा चारा अधिक बोने एवं खिलाने के प्रति जागृति पैदा करना।

२. हरे चारे के उन्नत बीज विकसित करना। उन्नत बीजों का प्रसार व समय से सुलभ कराने की व्यवस्था करना।

३. हरे चारे के अतिरिक्त गाजर, शलजम चुकन्दर आदि खिलाने के प्रति जागृति उत्पन्न करना व इनके बीजों का विकास व सुलभता सुनिश्चित करना।

४. पूरे वर्ष के लिए हरे चारे के फसल चक्र से पशु पालकों को अवगत कराना।

५. विविध पदार्थों से पशु आहार बनाना, शोध व जानकारी उपलब्ध कराना।

६. संतुलित पशु आहार की जानकारी देना। क्षेत्र व जलवायु के अनुसार आहार सुनिश्चित करना।

७. मंडियों में हरे चारे के विक्रय हेतु स्थान आवंटन किया जाय।

८. दैवीय आपदाओं के समय सरकार द्वारा रियायती दर पर चारा उपलब्ध कराना।

९. विभिन्न स्थिति एवं उम्र के गोवंश के आहार का कैलेंडर बनाया जाय।

गोशालाओं का विकास

१. प्रदेश की सभी गोशालाओं का विवरण प्राप्त किया जाय।

२. प्रत्येक जनपद में गोशाला होनी चाहिए। जिन जनपदों में गोशाला नहीं हैं वहाँ बनाई जाय।

३. जो गोशालायें रुग्णावस्था में हैं उन्हें पुनर्जीवित किया जाय।

४. उ०प्र० की गोशालाओं का सर्वेक्षण हो, १९४७ में कितनी भूमि थी, वर्तमान में कितनी है।

५. कानूनन गोशालाओं की भूमि विक्रय पर प्रतिबंध हो।

६. गाशोलाओं की भूमि को संरक्षित भूमि घोषित किया जाय। जिस प्रकार सार्वजनिक भूमि से अवैध कब्जा तत्काला हटाया जाता है उसी प्रकार बिना मुकदमें के गोशालओं पर हुए कब्जे हटाये जायें एवं गोशाला भूमि का राजस्व रिकार्ड में विशेष स्थान हो।

७. किराया नियंत्रण कानून और सीलिंग (शहरी व ग्रामीण) से गौशालाओं की भूमि को मुक्त किया जाय।

८. गोशाला व्यवस्थित चले इसमें सरकार व समाज की भूमिका व दायित्व का निर्धारण हो।

९. गोशालाओं की विवादित भूमि, या उनके कब्जे से बाहर हो गयी भूमि उन्हें सुलभ कराने की व्यवस्था की जाय।

१०. गोशालाओं को मिलने वाली कटौती आदि उचित मात्रा में मिलती रहे इसकी व्यवस्था सुनिश्चित की जाय।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११. मंडी समितियाँ अपनी आय का पाँच प्रतिशत गोवंश विकास हेतु गोशालाओं को दें। इसका कानूनी प्रावधान बने और वह राशि गोशालाओं को समयबद्ध व व्यवस्थित मिलती रहे यह सुनिश्चित किया जाय।

१२. गोशालाओं में शिक्षण-प्रशिक्षण कार्य चलाने हेतु योजनायें बनाई जायें।

१३. अनुसंधान कार्य में रूचि लने वाली गौशालाओं को आवश्यक सुविधा दी जाय।

गोचर भूमि की समीक्षा

१. राजस्व विभाग से जानकारी प्राप्त की जाय कि गाँवों में गोचर भूमि कितनी छोड़ी गयी है और उसका क्या उपयोग हो रहा है।

२. गोचर भूमि का दुरुपयोग रोका जाय और उसके सही उपयोग की व्यवस्था की जाय।

३. गोचर भूमि में पेयजल आदि की व्यवस्था की जाय।

उत्तर प्रदेश के गोसदनों की समीक्षा

१. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित किये गये गोसदन का विवरण व सूची उपलब्ध हो।

२. कितने गोसदन चल रहे हैं और उनकी पशु संख्या क्या है इसकी जानकारी दी जाय।

३. जो गोसदन बंद हैं उनकी समीक्षा व पुनरुद्धार किया जाय।

४. जो गो सदन व्यवस्थित नहीं चल रहे हैं उनकी समीक्षा, समस्याओं का निवारण, आगे सुव्यवस्थित चलें इसकी कार्य योजना।

५. गो सदनों में जल और पशु संरक्षण की क्या व्यवस्था है इसकी जानकारी उपलब्ध हो।

६. कितने गोसदन बन्द हुए उनकी आवंटित भूमि की क्या स्थिति है।

७. गो सदनों के पास कुल कितनी भूमि है।

८. जिन जनपदों में गो सदन न हों वहाँ स्थापित किया जाय।

गाय से समग्र विकास व स्वरोजगार

१. ग्राम विकास में गोरस भण्डार का योगदान हो सकता है। इससे गोपालन व स्वरोजगार बढ़ेगा।

२. गोपालकों को उनके उत्पादन का उचित मूल्य प्राप्त हो उनका शोषण न हो इस हेतु गोरस भण्डार समितियाँ गठित की जाय।

३. गोपालन उद्योग से सम्बन्धित सहायक उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाय।

४. सुरभि शोध संस्थान के अन्तर्गत वाराणसी व वर्धा में चल रहे गोरस भण्डार के अनुभवों के आधार पर योजना बनाई जाय।

५. गोशालाओं में समग्र विकास के कार्यक्रम चलाये जायँ जिससे लोगों को रोजगार मिले और संस्था को आय हो।

६. चर्मालय मृतचर्म उपयोग केन्द्र विकसित किये जाय मृत गोचर्म से बनी सामग्री को क्रय करने हेतु प्रोत्साहन दिया जाय।

७. दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों को उचित मूल्य दिलाया जाय।

८. शासकीय प्रतिष्ठानों व सार्वजनिक स्थलों पर दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों व ग्रामोद्योग उत्पाद की बिक्री हेतु स्थान सुलभ कराया जाय।

९. गोरस भण्डार समितियों को शासकीय सहयोग प्रदान किया जाए एवं अनेक कानूनी रुकावटों को हटाया जाय।

गोबर-गोमूत्र पर अनुसंधान एवं प्रयोग

१. गोबर-गोमूत्र पर अनुसंधान हेतु प्रयोगशालायें निर्मित हों एवं इस पर देश विदेश में जो शोध कार्य हो रहें हैं उनकी जानकारी एकत्रित की जाय।

२. गोबर-गोमूत्र से खाद, कीटनाशक बनाने की विधि ज्ञात कराना व इसे प्रोत्साहित करना।

३. जैविक खेती को प्रोत्साहित करना। जैविक खेती से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्पादित सामान को उचित मूल्य प्राप्त हो तदनुसार व्यवस्था।

४. आयुर्वेदिक औषधालयों में गोमूत्र औषधियों का समावेश हो। आयुर्वेद के ग्रन्थों में गोमूत्र औषधियों का वर्णन है उस पर शोध कार्य हो एवं प्रोत्साहन दिया जाय।

५. गोबर गैस को ऊर्जा हेतु प्रोत्साहन दिया जाय।

६. विविध खाद का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाय। मूल्य एवं उत्पादन लागत का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय।

प्रशिक्षण एवं अनुसंधान

१. कृषि गो विज्ञान अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया जाय।

२. बैल चालित कृषि यंत्रों पर अनुसंधान व उत्पादन हो।

३. गोबर गोमूत्र की खाद, औषधि, कीटनाशक पर अनुसंधान हो और उपयोगी सामग्री का उत्पादन व प्रयोग हो।

४. गोबर-गैस व गोबर ऊर्जा पर अनुसंधान हो।

५. बैल ऊर्जा का उपयोग हो, बैल के कार्य दिवस पर अनुसंधान हो।

६. दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थ पर शोध हो एवं विभिन्न उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो।

७. चारा एवं आहार पर अनुसंधान प उसकी जानकारी उपलब्ध करायी जाय।

८. अलग उम्र व स्थिति के पशुओं के आहार पर अनुसंधान हो लाभदायक जानकारी दी जाय।

९. दुग्ध वृद्धि एवं नस्ल सुधार पर प्रयोग हो।

१०. पशुओं को बीमारी से मुक्ति हेतु अनुसंधान एवं औषधि पर शोध हो।

११. प्रदेश के गोपालन की जानकारी हेतु मासिक पत्रिका प्रकाशित की जाय।

□□

पृष्ठ ७५ का शेषांश

है। परिणामस्वरूप उत्पादित अन्न, फल, साग-सब्जी व चारा भी दूषित व रोगकारक हो रहा है, भूमि की उर्वरा शक्ति निरन्तर घटती जा रही है, पानी की खपत बढ़ने से भूमि-जल-स्तर नीचे जा रहा है।

रासायनिक खाद व कीटनाशक हवा में मिलकर पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं। भूमि व जल में घुलकर पीने के पानी को दूषित तथा अस्वास्थ्य-कर बना रहे हैं। इसी कारण पशु-पक्षी, कीट-पतंगों की विभिन्न प्रजातियाँ जो प्रकृति द्वारा निर्मित एक-दूसरे की पूरक तथा मानव जीवन के लिए उपयोगी हैं, निरन्तर नष्ट हो रही हैं। इनमें से अधिकांश प्रजातियाँ आज लुप्त प्राय: हो गई हैं। यह मीठा जहर प्राणी-मात्र के जीवन में घुलकर असंख्य बीमारियों को जन्म दे रहा है। दवाइयों की खपत सौ गुनी बढ़ गई है फिर भी नये-नये रोग उत्पन्न होते जा रहे हैं, नित्य बड़े-बड़े आधुनिक हॉस्पिटल खुलते जा रहे हैं लेकिन रोगियों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

□□

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपाष्टमी दानदाताओं की सूची-२०००

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
१.	श्री घनश्याम प्रिण्टर्स		५१,०००.००
२.	स्व० गौरीशंकरजी सर्राफ		५१,०००.००
३.	शुभम् सारीज	चौक, वाराणसी	१४,२००.००
४.	श्री नवनीतदास मुकुन्ददास		११,०००.००
५.	श्री रघुनाथ लक्ष्मीनारायण (स्पाइसेस लिमिटेड)	विशेश्वरगंज, वाराणसी	११,०००.००
६.	श्री रघुनाथ लक्ष्मीनारायण (स्पाइसेस लिमिटेड)	विशेश्वरगंज, वाराणसी	८,६३०.००
७.	भगवती ट्रेडर्स	मच्छोदरी, वाराणसी	५,१००.००
८.	मनीराम ट्यूब कम्पनी	मलदहिया, वाराणसी	५,१००.००
९.	अग्रवाल साल्ट ट्रेडर्स	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५,१००.००
१०.	विश्वनाथप्रसाद नन्दलाल		५,१००.००
११.	श्री नन्दलाल मुकुन्दलाल		५,१००.००
१२.	श्री जमुनादास एण्ड कम्पनी		५,१००.००
१३.	कलाकुञ्ज एण्ड कम्पनी		५,१००.००
१४.	कला मन्दिर		५,१००.००
१५.	श्री राजेन्द्र प्रसाद एण्ड ब्रदर्स (प्रा०) लि०		५,१००.००
१६.	श्री पल्लवी प्रिण्टर्स		५,१००.००
१७.	श्री गोपीचन्दजी अग्रवाल	विशेश्वरगंज, वाराणसी	३,१००.००
१८.	श्री जयदयाल एण्ड सन्स	विशेश्वरगंज, वाराणसी	३,१००.००
१९.	श्री बजरंग ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,६००.००
२०.	श्री बृजमोहनदास शाह चैरिटेबल ट्रस्ट	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,५०१.००
२१.	श्री श्री मारुति ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,५००.००
२२.	श्री शक्ति इण्डस्ट्रीज		२,३२९.००
२३.	श्री जायसवाल स्पाइसेस (प्रा०) लि०	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,१००.००
२४.	श्री एन०के० ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,१००.००
२५.	श्री बजरंग ऑयल मिल	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,१००.००
२६.	श्री ओम नमः शिवाय	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,१००.००
२७.	श्री पुरुषोत्तम श्रीकृष्णदास	मच्छोदरी, वाराणसी	१,५००.००
२८.	श्री रजतकुमार सुभमकुमार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
२९.	तिरूपति बालाजी ट्रेडर्स	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
३०.	श्री तुलसी राम एण्ड सन्स	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
३१.	श्री गोपालदास विनीतकुमार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
३२.	श्री तुलस्यान इण्टरप्राइजेज	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
३३.	श्री महावीर ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
३४.	श्री काशी केराना	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
३५.	श्री राधेलाल एण्ड सन्स	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
३६.	श्री मुकुन्ददास एण्ड कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
३७.	श्री सुनरायजी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
३८.	श्री रामनारायण काशीनाथ	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
३९.	श्री गोपालदास राज किशनदास	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
४०.	श्री तिरूपति ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
४१.	श्री चौधरी इण्टरप्राइजेज	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
४२.	श्री राधेश्यामजी खेमका	मिसिर पोखरा, वाराणसी	१,१००.००
४३.	श्री मातादीनजी अग्रवाल	रथयात्रा, वाराणसी	१,१००.००
४४.	श्रीमती प्रभा बाई	कोलकाता	१,१००.००
४५.	श्री वृन्दावन कोठी		१,००१.००
४६.	श्री गुलाबदासजी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,००१.००
४७.	श्री ओमप्रकाश देवेन्द्रकुमार		१,०००.००
४८.	श्री ओम दाल मिल		१,०००.००
४९.	श्री मथुराप्रसाद कैलाशप्रसाद राठी	लक्खी चौतरा, वाराणसी	९००.००
५०.	श्री राधिका ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	७५०.००
५१.	श्री माँ वैष्णो इण्टरप्राइजेज	विशेश्वरगंज, वाराणसी	७५०.००
५२.	श्री इण्डिया टेक्सटाइल्स कम्पनी लि०	ज्ञानवापी, वाराणसी	६७५.००
५३.	श्री चौथीराम चुन्नीलाल		५५१.००
५४.	श्री भरतजी		५११.००
५५.	श्री कमलेशजी बाजोरिया	महमूरगंज, वाराणसी	५०५.००
५६.	कु० तरू बजाज		५०१.००
५७.	कु० स्तुति बजाज		५०१.००
५८.	श्रीमती चन्द्रा बजाज		५०१.००
५९.	श्रीमती नीता बजाज		५०१.००
६०.	श्री सरस्वती केराना स्टोर		५०१.००
६१.	श्रीमती लीला भगत देवेन्द्र भगत	कमच्छा, वाराणसी	५०१.००
६२.	श्री अजय ट्रेडिंग कम्पनी		५०१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
६३.	विश्वम्भरी सारीज	चौक, वाराणसी	५०१.००
६४.	श्रीमती आशा अग्रवाल		५०१.००
६५.	श्री रघुनाथप्रसादजी अग्रवाल		५०१.००
६६.	श्री सत्यनारायण अग्रवाल	भदऊँ, वाराणसी	५०१.००
६७.	श्री प्रकाश ट्रेडर्स	मच्छोदरी, वाराणसी	५००.००
६८.	श्री भावसिंहका एजेन्सी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५००.००
६९.	श्री अजयकुमार अजीतकुमार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५००.००
७०.	श्री मालपानी ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५००.००
७१.	श्री राम ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५००.००
७२.	श्री नत्थुलालजी शाह		५००.००
७३.	श्री विजय साड़ी इम्पोरियम		३०१.००
७४.	श्री कुमुद टेक्सटाइल्स		३०१.००
७५.	श्री हीरालाल मनमोहन पाठक	भैरोनाथ, वाराणसी	२५१.००
७६.	श्री आनन्द ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२५१.००
७७.	श्री आर०के० ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२५१.००
७८.	श्री अभिषेक ट्रेडर्स		२५१.००
७९.	श्री आत्मारामजी खेमका	लक्सा, वाराणसी	२५१.००
८०.	श्री परमानन्दजी खेमका	लक्सा, वाराणसी	२५१.००
८१.	श्री महेशकुमार केदारनाथ	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२५१.००
८२.	श्री रामजीवन भरतकुमार	ठठेरी बाजार, वाराणसी	२०१.००
८३.	श्री अरविन्द इण्टरप्राइजेज		२०१.००
८४.	श्री डी०के० इण्टरप्राइजेज	ठठेरी बाजार, वाराणसी	२०१.००
८५.	श्री आर०बी० कलेक्शन	चौक, वाराणसी	२०१.००
८६.	श्री झँवरमलजी बाजोरिया		२०१.००
८७.	श्री श्याम इण्टरप्राइजेज	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१५१.००
८८.	श्री मनसुखदास वीरमचन्द		१५१.००
८९.	श्री रामदासजी सत्यनारायण		१५१.००
९०.	श्री जवाहरलाल मोतीलाल	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१५१.००
९१.	श्री भैरो शुगर ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१५१.००
९२.	श्री मदनमोहनजी		१५१.००
९३.	श्री गोपालजी अग्रवाल	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१०१.००
९४.	श्री गगनेन्द्रकुमार केडिया	चौक, वाराणसी	१०१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
९५.	श्री सिद्धार्थ गौतम मोदी		१०१.००
९६.	श्री सुनीलकुमारजी सिंह	विजयानगरम्, वाराणसी	१०१.००
९७.	श्री नीलम साड़ी सेन्टर	नारियल बाजार, वाराणसी	१०१.००
९८.	श्री अर्चना साड़ी सेन्टर		१०१.००
९९.	श्री रानी सती (दादी)		१०१.००
१००.	श्री राधा कृष्णजी मारोलिया		१०१.००
१०१.	श्री ढाँढनिया केमिकल्स	इंगलिशिया लाईन, वाराणसी	१०१.००
१०२.	श्री अन्नपूर्णा मिल्स	इंगलिशिया लाईन, वाराणसी	१०१.००
१०३.	श्री भण्डारी साड़ी केन्द्र	रानी कुँआ, वाराणसी	१०१.००
१०४.	श्री किशनचन्द अग्रवाल सर्राफ		१०१.००
१०५.	श्री एस० सुमनकुमार सजनकुमार ट्रेडिंग कं०लि०	लक्खी चौतरा, वाराणसी	१०१.००
१०६.	श्री हरसिद्धी सिल्क हाउस		१०१.००
१०७.	श्री किशनदास एण्ड सन्स		१०१.००
१०८.	श्री राम भण्डार	ठठेरी बाजार, वाराणसी	१०१.००
१०९.	श्री ज्ञानचन्द साड़ी वाले		१०१.००
११०.	श्री हरिहर महराज		१०१.००
१११.	श्रीमती गोदावरी देवी		१०१.००
११२.	श्री घनश्यामदास प्रकाशचन्द झँवर		१०१.००
११३.	श्रीमती पारो देवी		१०१.००
११४.	श्रीमती सीता देवी शर्मा		१०१.००
११५.	श्री जीतमल (साल्ट)	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१०१.००
११६.	श्री विनयकुमार	पहड़िया, वाराणसी	१०१.००
११७.	श्री लाडली	ज्ञानवापी, वाराणसी	१०१.००
११८.	श्री पवनजी बाजोरिया	मच्छोदरी, वाराणसी	१०१.००
११९.	श्री जयकुमार ठाकुर		१०१.००
१२०.	श्री गोपीरामजी		१०१.००
१२१.	श्री गोवर्धनदास लक्ष्मीदास		१०१.००
१२२.	श्री मीतेश ट्रेडर्स		१०१.००
१२३.	श्री अश्वनीकुमार एण्ड कम्पनी		१०१.००
१२४.	श्री जी सेल्स		१०१.००
१२५.	श्री भूपेन्द्रकुमारजी		१०१.००
१२६.	श्री जयेशकुमारजी		१०१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
१२७.	श्री मीतेशकुमारजी		१०१.००
१२८.	श्री हृशीकुमारजी		१०१.००
१२९.	श्री मिहिरकुमारजी		१०१.००
१३०.	श्री विशालकुमारजी		१०१.००
१३१.	श्री हार्दिककुमारजी		१०१.००
१३२.	श्री कश्यबकुमारजी		१०१.००
१३३.	श्री कविता देवी		१०१.००
१३४.	श्री राकेश बजाज		१०१.००
१३५.	श्री देवेन्द्र बजाज	जद्दूमण्डी, वाराणसी	१०१.००
१३६.	श्री जगदम्बा शुगर ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१०१.००
१३७.	श्री हरेकृष्णजी		१००.००
१३८.	श्री सुशीलकुमार बाजोरिया	बिरदोपुर, वाराणसी	१००.००
१३९.	श्री इन्दरचन्दजी श्रीबल्लभ		१०५.००
१४०.	श्रीमती मिश्री देवी जालान		१००.००
१४१.	श्री कामतांप्रसाद रामप्रसाद		१००.००
१४२.	श्री रूपकला	कुंजगली, वाराणसी	१००.००
१४३.	श्री ओ ब्रदर्स	भैरोनाथ, वाराणसी	१००.००
१४४.	श्री मनोहरदासजी		५१.००
१४५.	श्री सुभंकी प्रह्लादका		५१.००
१४६.	श्री टी सेन्टर	इंगलिशिया लाईन, वाराणसी	५१.००
१४७.	श्री राजेशकुमारजी मिश्रा		५१.००
१४८.	श्री नारायणदासजी शाह	लक्खी चौतरा, वाराणसी	५१.००
१४९.	श्री जय नारायण		५१.००
१५०.	श्री शंकर आभूषण भण्डार		५१.००
१५१.	श्री विश्वनाथ जगन्नाथ		५१.००
१५२.	श्री हरी साव	खोजवाँ बाजार. वाराणसी	५१.००
१५३.	श्री नारायण मिष्ठान्न भण्डार	ठठेरी बाजार, वाराणसी	५१.००
१५४.	श्री नारायणदास जगदीशदास		५१.००
१५५.	श्री महेन्द्रकुमार मगनलाल		५१.००
१५६.	श्री शीतलप्रसाद रस्तोगी		५१.००
१५७.	श्री शान्तिलाल सकल चन्द		५१.००
१५८.	श्री कमला जरी स्टोर		५१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
१५९.	श्री मंगलम् स्टोर		५१.००
१६०.	श्री बाऊनाथ खन्ना		५१.००
१६१.	श्री गणेशप्रसाद		५१.००
१६२.	श्री रामनारायण		५१.००
१६३.	श्री पूजालाल		५१.००
१६४.	श्री सत्यनारायण मिष्ठान्न भण्डार	ठठेरी बाजार, वाराणसी	५१.००
१६५.	श्री रामदास अग्रवाल		५१.००
१६६.	श्री घनश्यामदासजी		५१.००
१६७.	श्री विष्णुप्रसादजी गुप्ता		५१.००
१६८.	केतकी		५१.००
१६९.	अंकिता		५१.००
१७०.	रेणुका देवी		५१.००
१७१.	श्रीमती नयना देवी		५१.००
१७२.	श्री घनश्यामदास श्रीनाथजी		५१.००
१७३.	श्री बाम्बे स्टेनलेस स्टील सेन्टर		३१.००
१७४.	श्री श्यामदास रामादास		३१.००
१७५.	श्री काशीप्रसादजी		२५.००
१७६.	श्री राम रोरी वाले		२५.००
१७७.	श्री घनश्यामदास जमुनादास		२५.००
१७८.	श्रीमती कृष्णा लड्ढा		२१.००
१७९.	श्री सुरेशकुमारजी		२१.००
१८०.	श्री अशोककुमारजी ढाँढनिया	इंगलिशिया लाईन, वाराणसी	२१.००
१८१.	श्री मोहन चित्रकार		२१.००
१८२.	श्री मारवाड़ी पापड़ भण्डार		२१.००
१८३.	श्री आर०के		२१.००
१८४.	श्री बच्चाजी रस्तोगी		२१.००
१८५.	श्री राधाकृष्ण सारीज		२१.००
१८६.	श्री तिवारीजी बर्तन वाले	ठठेरी बाजार, वाराणसी	२१.००
१८७.	श्री भरत सिल्क		२१.००
१८८.	श्री जगन्नाथ (मुरब्बा वाले)	ठठेरी बाजार, वाराणसी	२१.००
१८९.	श्री रामजी मालवीय		२१.००
१९०.	श्री सरयूजी दीक्षित		२१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पतां	धनराशि
१९१.	श्री रामजी	गोलागली, वाराणसी	२१.००
१९२.	श्री पवन कुमार ढाँढनियाँ	इंगलिशिया लाईन, वाराणसी	११.००
१९३.	श्री स्वदेशी पापड़ भण्डार	ठठेरी बाजार, वाराणसी	११.००
१९४.	श्री इन्द्रासन तिवारी		११.००
१९५.	श्री महादेवप्रसाद मुकुन्दलाल		११.००
१९६.	श्री छन्नूलाल राजेश कुमार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	११.००
१९७.	श्री नटराज ज्वेलर्स		११.००
१९८.	श्री राम खेलावन (मुरब्बा वाले)		११.००
१९९.	श्री मिठाई लाल		११.००
२००.	श्री बलवीर सिंह		११.००
२०१.	श्रीमती सीताजी देवशंकरजी		११.००

गोपाष्टमी दानदाताओं की सूची

२०००-२००१

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
१.	श्री डालमिया जनकल्याण कोष ट्रस्ट	कोलकाता	४,००,०००.००
२.	श्री डालमिया जनकल्याण कोष ट्रस्ट	कोलकाता	४,००,०००.००
३.	श्री सरोवर साड़ीज प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	१,११,१११.००
४.	श्री बद्रीप्रसाद चम्पालाल सरावगी मेमोरियल ट्रस्ट	कोलकाता	१,००,०००.००
५.	सेठ किशोरीलाल जालान सेवा ट्रस्ट	कोलकाता	६,००,०००.००
६.	स्वर्गीय भोलारामजीकोलकाता		५६,७००.००
७.	श्री कुञ्जलाल श्यामसुन्दरदास	कोलकाता	५१,०००.००
८.	श्री स्वास्तिक साड़ीज प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	५१,०००.००
९.	श्री सुमीत साड़ीज प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	५१,०००.००
१०.	स्वर्गीय सीतारामजी	कोलकाता	५०,०००.००
११.	श्री आकांक्षा साड़ी प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	५०,०००.००
१२.	श्री निर्मल टॉवर्स प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	४१,०००.००
१३.	झुनझुनवाला आयल मिल्स	आशापुर, वाराणसी	३९,७०५.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
१४.	श्री रचिता फैशन प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	३७,०००.००
१५.	श्री रूपाली साड़ी प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	३७,०००.००
१६.	श्री रागिनी साड़ी प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	३७,०००.००
१७.	श्री सीता सेवा ट्रस्ट	कोलकाता	२५,५००.००
१८.	श्री नन्दलाल मातादीन सेवा ट्रस्ट	रथयात्रा	२५,५००.००
१९.	श्री सीताराम सेवा ट्रस्ट	कोलकाता	२५,५००.००
२०.	श्री नन्दलाल मातादीन सेवा ट्रस्ट	रथयात्रा	२५,५००.००
२१.	श्री नन्दराम भिवानी चैरिटेबल ट्रस्ट		२५,५००.००
२२.	श्री नन्दलाल मातादीन सेवा ट्रस्ट	रथयात्रा	२५,०००.००
२३.	श्री निर्मल फैशन प्रा० लिमिटेड		२५,०००.००
२४.	श्री स्वर्गीय राम विमलजी		२५,०००.००
२५.	श्री प्रकाश चौधरी	कोलकाता	२१,०००.००
२६.	श्रीमती सरिता चौधरी	कोलकाता	२१,०००.००
२७.	श्री आशीश मूँदड़ा		२१,०००.००
२८.	श्री बी०एल० लढ्ढा एण्ड कम्पनी		२१,०००.००
२९.	श्री आशीष मूँदड़ा		२१,०००.००
३०.	श्री बी०एल० लढ्ढा एण्ड कम्पनी		२१,०००.००
३१.	स्वर्गीय बावरलाल राठी		२१,०००.००
३२.	श्री राजकुमार कोठारी		२१,०००.००
३३.	श्री पूरनमलजी		२०,०००.००
३४.	श्री निर्मल क्रियेशन	कोलकाता	२०,०००.००
३५.	श्री प्रकाश चौधरी	कोलकाता	१८,१११.००
३६.	श्री आनन्द लढ़िया	कोलकाता	१८,०००.००
३७.	श्री दिलीपकुमार लढ़िया	कोलकाता	१८,०००.००
३८.	श्री आशीष लढ़िया	कोलकाता	१८,०००.००
३९.	श्री भारत लढ़िया	कोलकाता	१८,०००.००
४०.	श्री देवीप्रसाद अग्रवाल	कोलकाता	१६,०००.००
४१.	श्री अमित लढ़िया	कोलकाता	१६,०००.००
४२.	श्रीमती मोहनी लढ़िया	कोलकाता	१६,०००.००
४३.	श्रीमती शकुन्तला देवी	कोलकाता	१६,०००.००
४४.	श्रीमती सुनीता डिडवानिया	कोलकाता	१५,०००.००
४५.	श्री गोपाली अग्रवाल	कोलकाता	१३,०००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
४६.	श्री हरिप्रसाद सरावगी	कोलकाता	१३,०००.००
४७.	श्री नन्दलाल गाड़ोदिया	कोलकाता	१२,०००.००
४८.	श्री ईश्वरचन्द्र अग्रवाल	कोलकाता	१२,०००.००
४९.	श्री सुन्दरलाल राटेरिया	कोलकाता	१२,०००.००
५०.	श्री शंकरलाल राटेरिया	कोलकाता	१२,०००.००
५१.	श्री राकेश अग्रवाल	कोलकाता	१२,०००.००
५२.	श्री पवन सरावगी	कोलकाता	१२,०००.००
५३.	श्री रघुनाथ लक्ष्मीनारायण स्पेशेस प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	११,०००.००
५४.	श्री आर०पी० अग्रवाल	कोलकाता	११,०००.००
५५.	श्री श्यामसुन्दर गौसरिया	कोलकाता	११,०००.००
५६.	कु० गिरधर गोपाल	कोलकाता	११,०००.००
५७.	कु० भारत लढ़िया	कोलकाता	११,०००.००
५८.	श्री भारत लढ़िया	कोलकाता	११,०००.००
५९.	श्री नन्दलाल भगवानदास जनसेवा ट्रस्ट	कोलकाता	११,०००.००
६०.	श्री राजकुमार कोठारी	कोलकाता	११,०००.००
६१.	श्रीमती कुसुम अग्रवाल	कोलकाता	११,०००.००
६२.	श्री मनोहरलालजी	कोलकाता	११,०००.००
६३.	श्री विश्वनाथ जैकान्त चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	१०,२००.००
६४.	श्री विश्वनाथ जैकान्त चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	१०,२००.००
६५.	श्री विश्वनाथ अग्रवाल	कोलकाता	१०,०००.००
६६.	श्री जयप्रकाशजी	कोलकाता	१०,०००.००
६७.	श्री निर्मल फैशन प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	१०,०००.००
६८.	श्री आत्मप्रकाश महाराजजी	कोलकाता	१०,०००.००
६९.	श्रीमती त्रिवेनी बाई	कोलकाता	१०,०००.००
७०.	श्री निर्मल साड़ी मन्दिर प्रा० लिमिटेड	कोलकाता	१०,०००.००
७१.	स्वामी आत्मप्रकाशजी	कोलकाता	१०,०००.००
७२.	श्री वेंकटेशजी		१०,०००.००
७३.	श्री प्रभुनाथ अग्रवाल	कोलकाता	९,७००.००
७४.	श्री पवन अग्रवाल	कोलकाता	९,६००.००
७५.	श्रीमती सुमन अग्रवाल	कोलकाता	९,६००.००
७६.	श्री देवकीनन्दन	कोलकाता	९,६००.००
७७.	श्रीमती मनीशा अग्रवाल	कोलकाता	९,६००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
७८.	श्री राजेश अग्रवाल	कोलकाता	९,६००.००
७९.	श्री मनमोहनलाल अग्रवाल	कोलकाता	९,६००.००
८०.	श्रीमती लतादेवी	कोलकाता	९,६००.००
८१.	श्री रामनारायणजी	कोलकाता	९,६००.००
८२.	श्री रामनाथ सर्राफ	कोलकाता	९,६००.००
८३.	श्रीमती रूक्मणीदेवी	कोलकाता	९,६००.००
८४.	श्री रमेश सर्राफ	कोलकाता	९,६००.००
८५.	श्रीमती प्रभादेवी सर्राफ	कोलकाता	९,६००.००
८६.	श्रीमती मंजू सर्राफ	कोलकाता	९,६००.००
८७.	श्री राजेन्द्र सर्राफ	कोलकाता	९,६००.००
८८.	श्रीमती सावित्रीदेवी सर्राफ	कोलकाता	९,६००.००
८९.	श्री कृष्णकान्त सर्राफ	कोलकाता	९,६००.००
९०.	श्री सनराय जिब्राल्का	कोलकाता	९,५००.००
९१.	श्री निरंजनकुमार लढ़िया	कोलकाता	९,५००.००
९२.	श्री ताप्ती अग्रवाल	कोलकाता	९,५००.००
९३.	श्री दिनेश धौकानिया	कोलकाता	९,५००.००
९४.	श्री अनिल धौकानिया	कोलकाता	९,५००.००
९५.	श्री दीपक थौकानिया	कोलकाता	९,५००.००
९६.	श्री भावना धौकानिया	कोलकाता	९,५००.००
९७.	श्री लोकनाथ लखौड़िया	कोलकाता	९,५००.००
९८.	श्री भारत लखौड़िया	कोलकाता	९,५००.००
९९.	श्री सन्तोष मुरारका	कोलकाता	९,५००.००
१००.	श्री नरेन्द्र गौसरिया	कोलकाता	९,५००.००
१०१.	श्री अशोक दीवान	कोलकाता	९,५००.००
१०२.	श्री कान्ता देवी चौधरी	कोलकाता	९,५००.००
१०३.	श्री अमित खेमका	कोलकाता	९,५००.००
१०४.	श्री महेश खेमका	कोलकाता	९,५००.००
१०५.	श्री सुशीलकुमार खेमका	कोलकाता	९,५००.००
१०६.	श्रीमती ऊषादेवी अग्रवाल	कोलकाता	९,५००.००
१०७.	श्री मोतीलाल सर्राफ	कोलकाता	९,५००.००
१०८.	श्री ओंकारमल	कोलकाता	९,५००.००
१०९.	श्रीमती रामादेवी खेमका	कोलकाता	९,५००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
११०.	श्री अशोककुमार मरोलिया	कोलकाता	९,५००.००
१११.	श्री रामअवतार सुल्तानिया	कोलकाता	९,५००.००
११२.	श्रीमती लतादेवी सर्राफ	कोलकाता	९,५००.००
११३.	श्रीमती कविता अग्रवाल	कोलकाता	९,५००.००
११४.	श्री गनेशप्रसाद अग्रवाल	कोलकाता	९,५००.००
११५.	श्री वेलविशर	कोलकाता	९,५००.००
११६.	श्री प्रदीप सरावगी	कोलकाता	९,५००.००
११७.	श्रीमती शीतल अग्रवाल	कोलकाता	९,५००.००
११८.	श्री मिहिर चौधरी	कोलकाता	९,१००.००
११९.	श्रीमती रुकमनीदेवी चौधरी	कोलकाता	९,१००.००
१२०.	श्री विश्वनाथ चौधरी	कोलकाता	९,१००.००
१२१.	श्री अनिल खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१२२.	श्री प्रदीप खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१२३.	श्रीमती अनिता खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१२४.	श्री रमाकान्त खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१२५.	श्री राकेश खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१२६.	श्रीमती तारादेवी खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१२७.	श्री ओंकारमल खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१२८.	श्री अशोक खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१२९.	श्री जगदीश खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१३०.	श्री ज्योतिप्रसाद खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१३१.	श्री नारायणलाल खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१३२.	श्री मदनलाल खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१३३.	श्रीमती विमलादेवी खेमका	कोलकाता	९,१००.००
१३४.	श्री रविकान्तजी	कोलकाता	९,१००.००
१३५.	श्री रामअवतार अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१३६.	श्री रमेशकुमार अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१३७.	श्री अन्नपूर्णा शाह	कोलकाता	९,१००.००
१३८.	श्री गनेशप्रसाद चौधरी	कोलकाता	९,१००.००
१३९.	श्री मनोहरजी सरावगी	कोलकाता	९,१००.००
१४०.	श्रीमती मधु सरावगी	कोलकाता	९,१००.००
१४१.	श्री मनोज सरावगी	कोलकाता	९,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
१४२.	श्रीमती सन्ध्या सरावगी	कोलकाता	९,१००.००
१४३.	श्रीमती प्रभावती अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१४४.	श्री महादेव अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१४५.	श्रीमती दुर्गादेवी अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१४६.	श्री हनुमानप्रसाद अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१४७.	श्रीमती सावित्रीदेवी अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१४८.	श्री अमितलाल चौधरी	कोलकाता	९,१००.००
१४९.	श्रीमती रेखा अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१५०.	श्रीमती महिमा चौधरी	कोलकाता	९,१००.००
१५१.	श्रीमती रूपक धौकानिया	कोलकाता	९,१००.००
१५२.	श्री राजकुमार धौकानिया	कोलकाता	९,१००.००
१५३.	श्री रतनकुमार अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१५४.	श्री राजू अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१५५.	श्री निसिद्ध मोदी	कोलकाता	९,१००.००
१५६.	श्री निर्मल मोदी	कोलकाता	९,१००.००
१५७.	श्री निहार चौधरी	कोलकाता	९,१००.००
१५८.	श्री भगवानदास मुरारका	कोलकाता	९,१००.००
१५९.	श्री घनश्यामदास मुरारका	कोलकाता	९,१००.००
१६०.	श्रीमती पद्मादेवी मुरारका	कोलकाता	९,१००.००
१६१.	श्री गनेशप्रसाद मुरारका	कोलकाता	९,१००.००
१६२.	श्रीमती सरिता मुरारका	कोलकाता	९,१००.००
१६३.	श्री गोपाल गौसरिया	कोलकाता	९,१००.००
१६४.	श्रीमती शीतल गौसरिया	कोलकाता	९,१००.००
१६५.	श्री किशन गौसरिया	कोलकाता	९,१००.००
१६६.	श्री घनश्याम सुन्दर गौसरिया	कोलकाता	९,१००.००
१६७.	श्री नन्दकिशोर गौसरिया	कोलकाता	९,१००.००
१६८.	श्री विमल दीवान	कोलकाता	९,१००.००
१६९.	श्रीमती रंजनादेवी दीवान	कोलकाता	९,१००.००
१७०.	श्री विश्वम्भरलाल दीवान	कोलकाता	९,१००.००
१७१.	श्री सनराय दीवान	कोलकाता	९,१००.००
१७२.	श्री मनोज दीवान	कोलकाता	९,१००.००
१७३.	श्री वासुदेव पोद्दार	कोलकाता	९,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
१७४.	श्रीमती पूजा पोद्दार	कोलकाता	९,१००.००
१७५.	श्रीमती शशिदेवी पोद्दार	कोलकाता	९,१००.००
१७६.	श्री राजेश पोद्दार	कोलकाता	९,१००.००
१७७.	श्री ज्योति पोद्दार	कोलकाता	९,१००.००
१७८.	श्री रामप्रसाद पोद्दार	कोलकाता	९,१००.००
१७९.	श्रीमती गंगादेवी चौधरी	कोलकाता	९,१००.००
१८०.	श्री सुभाष अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१८१.	श्री आदित्यकुमार मारविका	कोलकाता	९,१००.००
१८२.	श्रीमती पुष्पा मारविका	कोलकाता	९,१००.००
१८३.	श्रीमती तारादेवी मारविका	कोलकाता	९,१००.००
१८४.	श्री महेश मारविका	कोलकाता	९,१००.००
१८५.	श्री रामअवतार सुल्तानिया	कोलकाता	९,१००.००
१८६.	श्री रामअवतार सुल्तानिया	कोलकाता	९,१००.००
१८७.	श्री रामअवतार सुल्तानिया	कोलकाता	९,१००.००
१८८.	श्री रामअवतार सुल्तानिया	कोलकाता	९,१००.००
१८९.	श्री रामअवतार सुल्तानिया	कोलकाता	९,१००.००
१९०.	श्री राजेन्द्र सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
१९१.	श्रीमती कमलादेवी सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
१९२.	श्री रामरतन सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
१९३.	श्री रविप्रसाद सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
१९४.	श्रीमती मनीषादेवी सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
१९५.	श्री महेश अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१९६.	श्रीमती सोनल अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१९७.	श्री अजीतकुमार चौधरी	कोलकाता	९,१००.००
१९८.	श्री महावीरप्रसाद अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
१९९.	श्री सज्जन अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
२००	श्रीमती रंजनादेवी अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
२०१.	श्री ध्रुव अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
२०२.	श्रीमती सुमन अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
२०३.	श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
२०४.	श्री महावीर प्रसादजी	कोलकाता	९,१००.०
२०५.	श्रीमती निर्मलादेवी	कोलकाता	९,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
२०६.	श्रीमती भगवतीदेवी	कोलकाता	९,१००.००
२०७.	श्रीमती मनोरमा अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
२०८.	श्री सनराय अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
२०९.	श्री प्रभुनाथ सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
२१०.	श्री मनीष सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
२११.	श्रीमती सविता सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
२१२.	श्रीमती राधादेवी सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
२१३.	श्री कान्ता सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
२१४.	श्री नरेन्द्र सर्राफ	कोलकाता	९,१००.००
२१५.	श्री वेलविशर	कोलकाता	९,१००.००
२१६.	श्री वेलविशर	कोलकाता	९,१००.००
२१७.	श्री वेलविशर	कोलकाता	९,१००.००
२१८.	श्री वेलविशर	कोलकाता	९,१००.००
२१९.	श्री वेलविशर	कोलकाता	९,१००.००
२२०.	श्री रामअवतार सरावगी	कोलकाता	९,१००.००
२२१.	श्री बजरंगलाल सर्राफ		९,१००.००
२२२.	श्री हरिराम सर्राफ		९,१००.००
२२३.	श्री विष्णुप्रसादजी		९,१००.००
२२४.	श्री दीनदयाल सर्राफ		९,१००.००
२२५.	श्री लक्ष्मीप्रसाद सर्राफ		९,१००.००
२२६.	श्री भगवतीप्रसाद	कोलकाता	९,१००.००
२२७.	श्री अजयजी	कोलकाता	९,१००.००
२२८.	श्रीमती माया देवी	कोलकाता	९,१००.००
२२९.	श्रीमती तुलसी देवी	कोलकाता	९,१००.००
२३०.	श्री शंकरलाल माल्या	कोलकाता	९,१००.००
२३१.	श्री रामनाथ खेमका	कोलकाता	९,१००.००
२३२.	श्री बद्रीप्रसाद खेमका	कोलकाता	९,१००.००
२३३.	श्रीमती सावित्री खेमका	कोलकाता	९,१००.००
२३४.	श्री विष्णुदेव खेमका	कोलकाता	९,१००.००
२३५.	श्रीमती ऊषादेवी खेमका	कोलकाता	९,१००.००
२३६.	श्री मदनमोहनजी	कोलकाता	९,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
२३७.	श्री लक्ष्मनदासजी	कोलकाता	९,१००.००
२३८.	श्री वीरबल अग्रवाल	कोलकाता	९,१००.००
२३९.	श्री प्रभुदयालजी	कोलकाता	९,१००.००
२४०.	श्री बिशनकुमार	कोलकाता	९,१००.००
२४१.	श्री चाँदमलजी	कोलकाता	९,१००.००
२४२.	श्री रमेश सर्राफ	कोलकाता	८,५००.००
२४३.	श्रीमती विद्या गुप्ता	कोलकाता	८,५००.००
२४४.	श्री हीरालाल गुप्ता	कोलकाता	८,५००.००
२४५.	श्री मिहिर गुप्ता	कोलकाता	८,५००.००
२४६.	श्रीमती अंजली गुप्ता	कोलकाता	८,५००.००
२४७.	श्रीमती माया गुप्ता	कोलकाता	८,५००.००
२४८.	श्री गोपाल किशन	कोलकाता	८,५००.००
२४९.	श्रीमती माला अग्रवाल	कोलकाता	८,५००.००
२५०.	श्रीमती तारादेवी मुरारका	कोलकाता	८,५००.००
२५१.	श्री रमेश गौसरिया	कोलकाता	८,५००.००
२५२.	श्रीमती दिव्यादेवी दीवान	कोलकाता	८,५००.००
२५३.	श्रीमती प्रभादेवी पोद्दार	कोलकाता	८,५००.००
२५४.	श्री गोबिन्द चौधरी	कोलकाता	८,५००.००
२५५.	श्री दीपक खेमका	कोलकाता	८,५००.००
२५६.	श्री महेन्द्रू खेमका	कोलकाता	८,५००.००
२५७.	श्री जगमोहन खेमका	कोलकाता	८,५००.००
२५८.	श्री रामप्रकाश अग्रवाल	कोलकाता	८,५००.००
२५९.	श्री आलोक कुमारजी	कोलकाता	८,५००.००
२६०.	श्री ओमप्रकाश	कोलकाता	८,५००.००
२६१.	श्री राजकिशोर	कोलकाता	८,५००.००
२६२.	श्री छोटेप्रसाद सर्राफ	कोलकाता	८,५००.००
२६३.	श्रीमती दुर्गादेवी अग्रवाल	कोलकाता	८,५००.००
२६४.	श्री नारायणप्रसाद माल्या	कोलकाता	८,५००.००
२६५.	श्रीमती लक्ष्मीदेवी खेमका	कोलकाता	८,५००.००
२६६.	श्री सन्तोषकुमार	कोलकाता	८,५००.००
२६७.	श्री रामअवतार सुल्तानियाँ	कोलकाता	८,५००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
२६८.	श्री राजीव सर्राफ	कोलकाता	८,५००.००
२६९.	श्री अमित अग्रवाल	कोलकाता	८,५००.००
२७०.	श्रीमती लक्ष्मीदेवी अग्रवाल	कोलकाता	८,५००.००
२७१.	श्री वेलविशर	कोलकाता	८,५००.००
२७२.	श्रीमती सरिता सरावगी	कोलकाता	८,५००.००
२७३.	श्री गोपाल अग्रवाल	कोलकाता	८,५००.००
२७४.	श्री देवेन्द्रू दोषी	कोलकाता	८,५००.००
२७५.	श्रीमती कौशल्या देवी दीवान	कोलकाता	८,१००.००
२७६.	श्रीमती पूनम दीवान	कोलकाता	८,१००.००
२७७.	श्रीमती सावित्री देवी पोद्दार	कोलकाता	८,१००.००
२७८.	श्री गौरव पोद्दार	कोलकाता	८,१००.००
२७९.	श्री दीपक पोद्दार	कोलकाता	८,१००.००
२८०.	श्री रमेश चौधरी	कोलकाता	८,१००.००
२८१.	श्री पुनीत चौधरी	कोलकाता	८,१००.००
२८२.	श्री राकेश चौधरी	कोलकाता	८,१००.००
२८३.	श्री स्वाती चौधरी	कोलकाता	८,१००.००
२८४.	श्री हेमन्त चौधरी	कोलकाता	८,१००.००
२८५.	श्रीमती पुष्पा देवी खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२८६.	श्रीमती सावित्री देवी खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२८७.	श्रीमती सरला देवी खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२८८.	श्रीमती रुक्मणी देवी खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२८९.	श्रीमती शशिदेवी खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२९०.	श्री सज्जन खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२९१.	श्रीमती सुलोचना खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२९२.	श्री अमित खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२९३.	श्री अर्जुनलाल खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२९४.	श्री श्वेता खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२९५.	श्रीमती उषादेवी खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२९६.	श्री बेनीप्रसाद खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२९७.	श्री चन्दन खेमका	कोलकाता	८,१००.००
२९८.	श्री ललित पोद्दार	कोलकाता	८,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
२९९.	श्री मुरारीलाल	कोलकाता	८,१००.००
३००.	श्री किशन गोपाल	कोलकाता	८,१००.००
३०१.	श्री गिरधरलाल	कोलकाता	८,१००.००
३०२.	श्री अनिल दीवान	कोलकाता	८,१००.००
३०३.	श्री मोहन अग्रवाल	कोलकाता	८,१००.००
३०४.	श्री मदनलाल	कोलकाता	८,१००.००
३०५.	श्रीमती मायादेवी अग्रवाल	कोलकाता	८,१००.००
३०६.	श्री वेलविशर	कोलकाता	८,१००.००
३०७.	श्री वेलविशर	कोलकाता	८,१००.००
३०८.	श्री वेलविशर	कोलकाता	८,१००.००
३०९.	श्री वेलविशर	कोलकाता	८,१००.००
३१०.	श्री वेलविशर	कोलकाता	८,१००.००
३११.	श्री वेलविशर	कोलकाता	८,१००.००
३१२.	श्री अमित सरावगी	कोलकाता	८,१००.००
३१३.	श्रीमती ऊषादेवी सरावगी	कोलकाता	८,१००.००
३१४.	श्री महादेव सरावगी	कोलकाता	८,१००.००
३१५.	श्रीमती रीता सरावगी	कोलकाता	८,१००.००
३१६.	श्री विनोद सरावगी	कोलकाता	८,१००.००
३१७.	श्रीमती मीना देवी अग्रवाल	कोलकाता	८,१००.००
३१८.	श्री सनराय अग्रवाल	कोलकाता	८,१००.००
३१९.	श्री ज्योति अग्रवाल	कोलकाता	८,१००.००
३२०.	श्री मनोज अग्रवाल	कोलकाता	८,१००.००
३२१.	श्री राकेश अग्रवाल	कोलकाता	८,१००.००
३२२.	श्री पारस अग्रवाल	कोलकाता	८,१००.००
३२३.	श्रीमती प्रतिमा लढ़िया	कोलकाता	८,१००.००
३२४.	श्री पवनकुमार	कोलकाता	८,१००.००
३२५.	श्री रामप्रसाद लढ़िया	कोलकाता	८,१००.००
३२६.	श्री रंजित लढ़िया	कोलकाता	८,१००.००
३२७.	श्री बनवारीलाल गोयनका	कोलकाता	८,१००.००
३२८.	श्रीमती आशा गोयनका	कोलकाता	८,१००.००
३२९.	श्री सुरेन्द्र गोयल	कोलकाता	८,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
३३०.	श्रीमती सरस्वती गोयल	कोलकाता	८,१००.००
३३१.	श्री ललित बंसल	कोलकाता	८,१००.००
३३२.	श्री कोमल बंसल	कोलकाता	८,१००.००
३३३.	श्रीमती सुनीता बंसल	कोलकाता	८,१००.००
३३४.	श्रीमती कौशल्यादेवी मुरारका	कोलकाता	८,१००.००
३३५.	श्री गोपाल मुरारका	कोलकाता	८,१००.००
३३६.	श्रीमती मीनादेवी मुरारका	कोलकाता	८,१००.००
३३७.	श्री विमल मुरारका	कोलकाता	८,१००.००
३३८.	श्री श्यामसुन्दर गौसरिया	कोलकाता	८,१००.००
३३९.	श्रीमती शकुन्तलादेवी गौसरिया	कोलकाता	८,१००.००
३४०.	श्री सन्तोष गौसरिया	कोलकाता	८,१००.००
३४१.	श्री विजयजी	कोलकाता	८,१००.००
३४२.	श्रीमती सरोज	कोलकाता	८,१००.००
३४३.	श्रीमती चन्दा दीवान	कोलकाता	८,१००.००
३४४.	श्री हीरालाल सर्राफ		८,१००.००
३४५.	श्री शंकरलाल सर्राफ		८,१००.००
३४६.	श्री रामकृष्ण सर्राफ		८,१००.००
३४७.	श्रीमती चन्दा देवी सर्राफ		८,१००.००
३४८.	श्रीमती सुनीता देवी सर्राफ		८,१००.००
३४९.	श्रीमती प्रभा देवीजी	कोलकाता	८,१००.००
३५०.	श्रीमती दुर्गादेवी माल्या	कोलकाता	८,१००.००
३५१.	श्री आत्माराम माल्या	कोलकाता	८,१००.००
३५२.	श्रीमती रुकमनीदेवी	कोलकाता	८,१००.००
३५३.	श्री आत्माराम माल्या	कोलकाता	८,१००.००
३५४.	श्री रमेश माल्या	कोलकाता	८,१००.००
३५५.	श्री सन्तोष खेमका	कोलकाता	८,१००.००
३५६.	श्री अजय खेमका	कोलकाता	८,१००.००
३५७.	श्री सुरेश खेमका	कोलकाता	८,१००.००
३५८.	श्री दीपक खेमका	कोलकाता	८,१००.००
३५९.	श्री भरत खेमका	कोलकाता	८,१००.००
३६०.	श्रीमती अनिता खेमका	कोलकाता	८,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
३६१.	श्री रामनिरंजन मारविका	कोलकाता	८,१००.००
३६२.	श्री रमेशकुमार मारविका	कोलकाता	८,१००.००
३६३.	श्रीमती दुर्गादेवी मारविका	कोलकाता	८,१००.००
३६४.	श्री रघुनाथ मारविका	कोलकाता	८,१००.००
३६५.	श्रीमती मैनादेवी मारविका	कोलकाता	८,१००.००
३६६.	श्री रमेशकुमार मारविका	कोलकाता	८,१००.००
३६७.	श्री रामअवतार सुल्तानियाँ	कोलकाता	८,१००.००
३६८.	श्री रामअवतार सुल्तानियाँ	कोलकाता	८,१००.००
३६९.	श्री रामअवतार सुल्तानियाँ	कोलकाता	८,१००.००
३७०.	श्री रामअवतार सुल्तानियाँ	कोलकाता	८,१००.००
३७१.	श्री रामअवतार सुल्तानियाँ	कोलकाता	८,१००.००
३७२.	श्री रामअवतार सुल्तानियाँ	कोलकाता	८,१००.००
३७३.	श्री रामअवतार सुल्तानियाँ	कोलकाता	८,१००.००
३७४.	श्री हरीराम सर्राफ	कोलकाता	८,१००.००
३७५.	श्री महेन्द्र सर्राफ	कोलकाता	८,१००.००
३७६.	श्रीमती मंजू सर्राफ	कोलकाता	८,१००.००
३७७.	श्रीमती रेणुकादेवी	कोलकाता	८,१००.००
३७८.	श्रीमती सुधा सर्राफ	कोलकाता	८,१००.००
३७९.	श्री सुनील सर्राफ	कोलकाता	८,१००.००
३८०.	श्री मनोज अग्रवाल	कोलकाता	८,१००.००
३८१.	श्री लोकेन्द्र करवा	भुल्लनपुर, वाराणसी	८,०००.००
३८२.	श्री राजकुमार अग्रवाल	कोलकाता	७,५००.००
३८३.	श्री महावीर बंसल	कोलकाता	७,५००.००
३८४.	श्रीमती सुषमा बंसल	कोलकाता	७,५००.००
३८५.	श्री रवि बंसल	कोलकाता	७,५००.००
३८६.	श्री ललित कुमार		७,२००.००
३८७.	श्री भगवान दास		७,१००.००
३८८.	श्रीमती रेखा पोद्दार	कोलकाता	७,१००.००
३८९.	श्री चन्द्रमोहन सरावगी		७,००१.००
३९०.	श्रीमती जयदेवी शुभाकरण रूईया	मुम्बई	७,०००.००
३९१.	श्री राधेश्याम बंका		७,०००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
३९२.	श्री मनोजकुमार सरावगी	बैंगलोर	७,०००.००
३९३.	श्री राजकुमार सरावगी	बैंगलोर	७,०००.००
३९४.	श्री शिवशंकरदास अग्रवाल		७,०००.००
३९५.	श्री शिव सिल्क	रानी कुँआ, वाराणसी	७,०००.००
३९६.	श्रीमती कमलादेवी सर्राफ		७,०००.००
३९७.	श्री देवीप्रसाद मरोलिया	कोलकाता	७,०००.००
३९८.	श्री अनूपकुमार खेमका	कोलकाता	७,०००.००
३९९.	श्री कृष्णगोपालजी	कोलकाता	७,०००.००
४००.	श्री रामअवतारजी		७,०००.००
४०१.	श्री अनिल सर्राफ	कोलकाता	७,०००.००
४०२.	श्री शंकरलालजी	कोलकाता	७,०००.००
४०३.	श्री वेलविशर	कोलकाता	७,०००.००
४०४.	श्री अशोककुमार सरावगी	कोलकाता	७,०००.००
४०५.	श्री पुनीत अग्रवाल	कोलकाता	७,०००.००
४०६.	श्री रीता मुरारका	कोलकाता	७,०००.००
४०७.	श्री स्वाती चौरसिया	कोलकाता	७,०००.००
४०८.	श्री रामकृष्ण दीवान	कोलकाता	७,०००.००
४०९.	श्री सृष्टि पोद्दार	कोलकाता	७,०००.००
४१०.	श्री सुधा खेमका	कोलकाता	७,०००.००
४११.	श्री श्रवण खेमका	कोलकाता	७,०००.००
४१२.	श्री शंकरलाल जाजोदिया	कोलकाता	७,०००.००
४१३.	श्रीमती शशिदेवी चौधरी	कोलकाता	७,०००.००
४१४.	श्री आदित्य अग्रवाल	कोलकाता	६,७००.००
४१५.	श्री श्यामसुन्दर सर्राफ	कोलकाता	६,५००.००
४१६.	श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल	कोलकाता	६,५००.००
४१७.	श्री पवनकुमार	कोलकाता	६,४००.००
४१८.	श्री अग्रवाल ट्रेडर्स	विशेश्वरगंज, वाराणसी	६,१००.००
४१९.	श्री लक्ष्मी एजेन्सी	मलदहिया, वाराणसी	६,१००.००
४२०.	श्री विजयकुमार		६,१००.००
४२१.	श्री मुकुन्दलाल रामशंकर	विशेश्वरगंज, वाराणसी	६,००१.००
४२२.	श्री गगनेन्द्र केडिया	चौक, वाराणसी	६,०००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
४२३.	श्रीमती मोहिनीदेवी केडिया	महमूरगंज, वाराणसी	६,०००.००
४२४.	श्री अजयकुमार		६,०००.००
४२५.	श्री निर्मलकुमार		५,८००.००
४२६.	श्री गोपाल खेदान	बिरदोपुर, वाराणसी	५,६००.००
४२७.	श्री नन्दलाल भगवानदास	जवाहरनगर, वाराणसी	५,५००.००
४२८.	श्रीमती दौपदीदेवी	कोलकाता	५,४११.००
४२९.	श्री देवीप्रसाद अग्रवाल	बाँसफाटक, वाराणसी	५,३६४.००
४३०.	श्री रामजी बृजेशकुमार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५,१००.००
४३१.	श्री अजय बलदुआ	कोलकाता	५,१००.००
४३२.	श्री मोहन अग्रवाल	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५,१००.००
४३३.	श्रीमती मीरादेवी		५,१००.००
४३४.	श्री प्रभुदास गुजराती		५,१००.००
४३५.	श्री गोविन्ददास अग्रवाल		५,१००.००
४३६.	श्री सुखराम जोशी		५,१००.००
४३७.	श्री श्यामसुन्दर गुजराती		५,१००.००
४३८.	श्री भालोटिया सिल्क हाउस		५,१००.००
४३९.	श्री अग्रवाल निकेतन		५,१००.००
४४०.	श्री कन्हैयालाल सतपुरिया	पटना	५,१००.००
४४१.	श्री राजीवकुमार अग्रवाल		५,१००.००
४४२.	श्री तन्मय अग्रवाल		५,१००.००
४४३.	श्री दिनेशकुमार देवड़ा		५,१००.००
४४४.	श्री लड्ढा फार्मास्यूटिकल्स	गोलघर, वाराणसी	५,१००.००
४४५.	श्री लाडिया बन्धु	लक्खी चौतरा, वाराणसी	५,१००.००
४४६.	श्री आनन्द ड्रोलिया	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५,१००.००
४४७.	श्री आनन्द ड्रोलिया	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५,१००.००
४४८.	श्री लाडिया बन्धु	लक्खी चौतरा, वाराणसी	५,१००.००
४४९.	श्री केशरी इण्टरप्राइजेज	रानीकुँआ, वाराणसी	५,१००.००
४५०.	श्री लक्ष्मणदास सर्राफ		५,१००.००
४५१.	श्री एस०कुमार इण्टरनेशनल		५,१००.००
४५२.	श्री अमित साड़ी		५,१००.००
४५३.	श्री चौबे सिल्क एक्सपोर्ट (प्रा०) लि०	गोलघर, वाराणसी	५,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
४५४.	श्री केशरी इण्टरप्राइजेज	रानीकुँआ, वाराणसी	५,१००.००
४५५.	श्री बाबा साड़ी		५,१००.००
४५६.	श्री नेशनल स्टोर		५,१००.००
४५७.	श्री दम्मानी एण्ड कम्पनी	बुलानाला, वाराणसी	५,१००.००
४५८.	श्री काबरा पेपर मार्ट	नीचीबाग, वाराणसी	५,१००.००
४५९.	श्री हीरो इण्डस्ट्रीज	नीचीबाग, वाराणसी	५,१००.००
४६०.	श्री शिवकुमार रायेमका		५,१००.००
४६१.	श्री किशनलाल हृषिकेश	गोलघर, वाराणसी	५,१००.००
४६२.	श्री शिवहरि सर्राफ	कुंजगली, वाराणसी	५,१००.००
४६३.	श्रीमती स्नेहलता डिडवानियाँ		५,१००.००
४६४.	श्री मोहनलाल लड्ढा	गोलघर, वाराणसी	५,१००.००
४६५.	श्री मेहता इण्टरप्राइजेज	वाराणसी	५,१००.००
४६६.	स्व० दुर्गा बाई सांगनेरिया		५,१००.००
४६७.	श्री गोकुल खेमका	कोलकाता	५,०००.००
४६८.	श्रीमती स्वतंत्र गोयल		५,००१.००
४६९.	श्री रामकृष्ण धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७०.	श्री रामकृष्ण धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७१.	श्री रामकृष्ण धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७२.	श्री रामकृष्ण धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७३.	श्री रामकृष्ण धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७४.	श्री रामकृष्ण धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७५.	श्री रामकृष्ण धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७६.	श्री रामकृष्ण धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७७.	श्री रामकृष्ण धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७८.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४७९.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४८०.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४८१.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४८२.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४८३.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४८४.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
४८५.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४८६.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४८७.	श्री धानुका चैरिटेबल ट्रस्ट	कोलकाता	५,०००.००
४८८.	श्री अभयराम चुन्नीलाल	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५,०००.००
४८९.	श्री अभयराम चुन्नीलाल	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५,०००.००
४९०.	श्री विश्वविद्यालय प्रकाशन	चौक, वाराणसी	५,०००.००
४९१.	श्री सुनरे बाबू		५,०००.००
४९२.	श्री निर्मल साड़ी कलेक्शन	कोलकाता	५,०००.००
४९३.	श्री विष्णु गुड्स कम्पनी		४,०००.००
४९४.	श्री सुरेका पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट	दिल्ली	४,०००.००
४९५.	श्री रामनारायण		४,०००.००
४९६.	श्री सुरेका पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट	दिल्ली	४,०००.००
४९७.	श्री खेदन यादव	जलालगंज	३,७००.००
४९८.	श्री गंगाधर आप्टे	कोल्हापुर	३,३००.००
४९९.	श्री नन्दलाल भगवानदास सेवा ट्रस्ट	जवाहरनगर, वाराणसी	३,२४०.००
५००.	मेसर्स गोपालचन्द्र अग्रवाल		३,१००.००
५०१.	श्री परमेश्वरलाल		३,१००.००
५०२.	श्री देवता कलेक्शन		३,०००.००
५०३.	श्री सुरेका पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट	दिल्ली	३,०००.००
५०४.	श्री जोशीजी	लक्खी चौतरा, वाराणसी	२,७००.००
५०५.	श्री नारायण ब्रदर्स	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,५००.००
५०६.	श्री छन्नूलाल राजेशकुमार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,५००.००
५०७.	श्री मालपानी ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,५००.००
५०८.	श्रीमती सरिता मेहता		२,४००.००
५०९.	श्री वाराणसी प्लाई एजेन्सी		२,१००.००
५१०.	श्री अरुण मेहता	कोलकाता	२,१००.००
५११.	श्री अमित कला केन्द्र		२,१००.००
५१२.	श्री संकठा जबरी एण्ड कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,१००.००
५१३.	श्री हरीप्रसाद खेमका	गोदौलिया, वाराणसी	२,१००.००
५१४.	श्री साहू इण्टरप्राइजेज	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,१००.००
५१५.	श्रीराम ट्रेडिंग कम्पनी		२,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
५१६.	श्री बग्गा ऑयल मिल्स		२,१००.००
५१७.	श्री नारायणप्रसाद विष्णुप्रसाद	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,१००.००
५१८.	श्री भँवरलाल राठी		२,०००.००
५१९.	श्री अनुरागकुमार		२,०००.००
५२०.	श्री शम्भूनाथ अभयकुमार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	२,०००.००
५२१.	श्री अंजनी सर्राफ	सुड़िया, वाराणसी	१,९००.००
५२२.	श्री जयकृष्णदास रणधीरप्रसाद		१,८४०.००
५२३.	श्री छन्नूलाल बालकृष्णदास		१,६००.००
५२४.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५२५.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५२६.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५२७.	श्री जिन्दल ट्रेडर्स		१,५००.००
५२८.	श्री प्रभुराम	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,५००.००
५२९.	श्री मुरारीलाल भारतीय		१,५००.००
५३०.	श्री शिव शक्ति उद्योग	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,५००.००
५३१.	श्री सिन्धी ट्रेडिंग कम्पनी		१,५००.००
५३२.	श्री मोहनलाल जायसवाल	वाराणसी	१,५००.००
५३३.	श्री जमुना साड़ी केन्द्र	लक्खी चौतरा, वाराणसी	१,५००.००
५३४.	श्री शिवनारायण शम्भूनाथ	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,५००.००
५३५.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५३६.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५३७.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५३८.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५३९.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५४०.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५४१.	श्री राजीव अरोड़ा (गांडीव)		१,५००.००
५४२.	श्री शम्भूनाथ अभयकुमार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१९२.००
५४३.	श्री लक्ष्मीनारायण भण्डार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१६७,००
५४४.	श्रीमती शान्तिदेवी		१,२००.००
५४५.	श्रीमती परमेश्वरी बाई बबुआ		१,२००.००
५४६.	श्री सत्यभामा बाई भौलका	कोलकाता	१,२००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
५४७.	श्री भग्गूलाल रघुनाथप्रसाद	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१६१.००
५४८.	श्री रचना पशु खाद्य भण्डार		१,१०१.००
५४९.	श्री लव-कुश उद्योग	कबीरचौरा, वाराणसी	१,१०१.००
५५०.	श्री विजयकुमार गिनोडिया		१,१००.००
५५१.	श्री जनरल ट्रेडर्स		१,१००.००
५५२.	श्री एम०बी० अग्रवाल		१,१००.००
५५३.	श्री नन्दलाल भगवानदास		१,१००.००
५५४.	श्री एम०पी० सारीज	नन्दनसाहू लेन, वाराणसी	१,१००.००
५५५.	श्री संजीव इण्टरप्राइजेज	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५५६.	श्री बनारस ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५५७.	श्री हनुमान ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५५८.	श्री गोपालदास	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५५९.	श्री सिद्धा सिल्क स्टोर	जलालीपुरा, वाराणसी	१,१००.००
५६०.	श्री नुरूलुद्दीन हाजी	लोहता, वाराणसी	१,१००.००
५६१.	श्री ओमप्रकाश सतीशकुमार	लोहता, वाराणसी	१,१००.००
५६२.	श्री प्यारेलाल	लोहता, वाराणसी	१,१००.००
५६३.	श्री बच्चालाल केशरी	लोहता, वाराणसी	१,१००.००
५६४.	श्री श्यामजी साव	लोहता, वाराणसी	१,१००.००
५६५.	श्री लक्ष्मण साव	लोहता, वाराणसी	१,१००.००
५६६.	श्री वैष्णो यार्न ट्रेडर्स		१,१००.००
५६७.	श्री यार्न हाउस	लक्खी चौतरा, वाराणसी	१,१००.००
५६८.	श्री अभिषेक इण्टरप्राइजेज		१,१००.००
५६९.	श्री त्रिलोचन साव	लोहता, वाराणसी	१,१००.००
५७०.	श्रीमती सोनादेवी डागा		१,१००.००
५७१.	श्री शिवनारायण शम्भूनारायण	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५७२.	श्री जयकिशन मूँदड़ा	सहसेपुर	१,१००.००
५७३.	श्री राधादेवी कृष्णचन्द		१,१००.००
५७४.	श्री राजू अरोड़ा		१,१००.००
५७५.	श्री शंकरलाल खेतान		१,१००.००
५७६.	श्री रीवान गैस फैक्ट्री (प्रा०) लि०	बैढ़न (म०प्र०)	१,१००.००
५७७.	श्री अनिल एजेन्सी	कटनी (म०प्र०)	१,१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
५७८.	श्री गोवर्धनदास सुधीरकुमार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५७९.	श्री कन्हैयालाल एण्ड सन्स	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५८०.	श्री शिवशंकर उमाशंकर	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५८१.	श्री अम्बर ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५८२.	श्री बालाजी गल्ला भण्डार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५८३.	श्री राजेन्द्रनाथ बनारसीदास	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५८४.	श्री रानी सती इण्टरप्राइजेज		१,१००.००
५८५.	श्री राजेन्द्रकुमार अशोककुमार		१,१००.००
५८६.	श्री भुरारिया ब्रदर्स	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५८७.	श्री अन्नपूर्णा नगर	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,१००.००
५८८.	श्री आत्माराम अशोककुमार		१,१००.००
५८९.	श्री वाराणसी शुगर सप्लाई		१,१००.००
५९०.	श्री आशीषकुमार		१,००७.००
५९१.	श्री भटनागर मेमोरियल ट्रस्ट		१,००१.००
५९२.	श्री भटनागर मेमोरियल ट्रस्ट		१,००१.००
५९३.	श्री कमला मेडिकल हाल	गोलघर, वाराणसी	१,००१.००
५९४.	श्री विन्ध मेडिकल्स हाल		१,००१.००
५९५.	श्री छन्नूलाल बालकृष्णदास अग्रवाल एण्ड कं०	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,००१.००
५९६.	श्री अनूप अग्रवाल		१,००१.००
५९७.	श्रीमती अंजना अग्रवाल		१,००१.००
५९८.	श्रीमती प्रेमलता		१,००१.००
५९९.	श्री गोपालाचार्या	वाराणसी	१,०००.००
६००.	श्री अंकित		१,०००.००
६०१.	श्री विश्वनाथ साव बर्नवाल		१,०००.००
६०२.	श्री मुरारीलाल डिडवानियाँ		१,०००.००
६०३.	श्री ओंकारनाथ		१,०००.००
६०४.	श्री मालपानी ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	१,०००.००
६०५.	श्री जिन्दल ट्रेडर्स		१,०००.००
६०६.	श्री आकाश इण्टरप्राइजेज		१,०००.००
६०७.	डॉ० कुमार अग्रवाल		१,०००.००
६०८.	श्री अंजनी सर्राफ	सुड़िया, वाराणसी	१,०००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
६०९.	श्री बंसल जैन		१,०००.००
६१०.	श्री अतुल फार्मास्यूटिकल्स		५०१.००
६११.	श्री लक्ष्मीनारायण भण्डार	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५०१.००
६१२.	श्री श्याम इण्टरप्राइजेज	विश्वनाथ गली, वाराणसी	५०१.००
६१३.	स्व० (श्रीमती) सहोदादेवी		५०१.००
६१४.	श्री गाभा एण्ड गाभा		५०१.००
६१५.	श्री विश्वनाथ आर्य		५०१.००
६१६.	श्री बलदेव मेडिसीन		५०१.००
६१७.	श्री सोमानी एण्ड फार्मा	बुलानाला, वाराणसी	५०१.००
६१८.	श्री चेतन फार्मास्युटिकल्स		५०१.००
६१९.	श्री अतुल फार्मा	गोलघर, वाराणसी	५०१.००
६२०.	श्री लड्ढा एण्ड लड्ढा		५०१.००
६२१.	श्री सीताराम पंसारी		५०१.००
६२२.	श्री पुरुषोत्तमलाल		५०१.००
६२३.	श्री रामेश्वरलाल अग्रवाल		५०१.००
६२४.	श्री लक्ष्मी फूड्स ग्रीन मर्चेन्ट		५०१.००
६२५.	श्री विशनदास जगदीशप्रसाद		५०१.००
६२६.	श्री राधादेवी किशनचन्द		५०१.००
६२७.	श्री रामनारायण रेशम एण्ड कम्पनी		५०१.००
६२८.	श्री सन्तोष जायसवाल	लोहता, वाराणसी	५०१.००
६२९.	श्री लक्ष्मी नारायण	लोहता, वाराणसी	५०१.००
६३०.	श्री कमल किशोर लखानी		५०१.००
६३१.	श्री मुकेश गुप्ता		५००.००
६३२.	श्री कमलेश गुप्ता		५००.००
६३३.	श्री राधेश्याम गुप्ता		५००.००
६३४.	श्री नन्दलाल मल्ल		५००.००
६३५.	श्री अशोककुमार		५००.००
६३६.	श्री केशव पंसारी		५००.००
६३७.	श्री दीनानाथ झुनझुनवाला		५००.००
६३८.	श्री राजस्थान कॉर्पोरेशन	गोला दीनानाथ, वाराणसी	५००.००
६३९.	श्री अग्रवाल मिल्स		५००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
६४०.	श्री महादेवप्रसाद ओमप्रकाश		५००.००
६४१.	श्री लक्ष्मीनारायण		५००.००
६४२.	श्री महादेवप्रसाद रामजी		५००.००
६४३.	श्रीमती राधादेवी	बिरदोपुर, वाराणसी	५००.००
६४४.	श्री कमल किशोर		५००.००
६४५.	श्री मालपानी ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५००.००
६४६.	श्री वाराणसी आयरन उद्योग		५००.००
६४७.	श्री अग्रवाल आयल स्टोर	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५००.००
६४८.	श्री मदनलाल जगदीशप्रसाद	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५००.००
६४९.	श्री विकास ट्रेडिंग कम्पनी	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५००.००
६५०.	श्री कैलाशनारायण माहेश्वरी	कानपुर	५००.००
६५१.	श्री पंजक राठी	गोला, वाराणसी	५००.००
६५२.	श्री मनीष जाजू	इन्दौर	५००.००
६५३.	श्रीमती सुमन केडिया		५००.००
६५४.	श्री राधेश्याम अजयकुमार		५००.००
६५५.	श्री मानिकचन्द मेहता	ब्रह्मनाल, वाराणसी	५००.००
६५६.	श्री लल्लूजी (भूसा वाले)	कतुआपुरा, वाराणसी	५००.००
६५७.	श्री शम्भूनाथ मिश्रा		५००.००
६५८.	श्री बिहारी		५००.००
६५९.	श्री हृशीकुमार		५००.००
६६०.	श्री मिसिरकुमार		५००.००
६६१.	श्री विशालकुमार		५००.००
६६२.	श्री कश्यबकुमार		५००.००
६६३.	श्री केतकी		५००.००
६६४.	श्री अंकित		५००.००
६६५.	श्री कपिला		५००.००
६६६.	श्री हार्दिक		५००.००
६६७.	श्री भूपेन्द्रकुमार		५००.००
६६८.	श्री रविन्द्रकुमार		५००.००
६६९.	श्री शशि नेवर		५००.००
६७०.	श्री लोक मंगल संस्थान		५००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
६७१.	श्रीमती उषादेवी		५००.००
६७२.	श्री आर०एस० मन्त्री		५००.००
६७३.	श्रीमती राधादेवी किशनचन्द		५००.००
६७४.	श्री रामशरण सेठ	रविन्द्रपुरी, वाराणसी	५००.००
६७५.	श्री जिन्दल ट्रेडर्स		५००.००
६७६.	श्री पुरुषोत्तमदास डिडवानियाँ		५००.००
६७७.	श्री जिन्दल ट्रेडर्स		५००.००
६७८.	श्री प्रेमकुमार जायसवाल	विशेश्वरगंज, वाराणसी	५००.००
६७९.	श्री रामेश्वरलाल रूवाड़िया	कोलकाता	५००.००
६८०.	श्री मुरारीलाल डिडवानियाँ	वाराणसी	५००.००
६८१.	श्री जयलक्ष्मी केराना		५००.००
६८२.	श्री चेतन फार्मास्यूटिकल्स		५००.००
६८३.	श्री बालाजी इण्डस्ट्रीज		५००.००
६८४.	श्री तिरुपति ओवर प्रिन्ट्स		५००.००
६८५.	श्री तिरुपति आटो इण्डस्ट्रीज		५००.००
६८६.	श्री तिरुपति कॉपर (प्रा०) लि०		५००.००
६८७.	श्रीमती विभा गुप्ता		५००.००
६८८.	श्री संदीप गुप्ता		५००.००
६८९.	श्री अरुणकुमार गुप्ता		५००.००
६९०.	श्री रितेशकुमार		५००.००
६९१.	श्री मदनमोहन बल्दुआ		५००.००
६९२.	श्री दत्तात्रेय गणेश आप्टे		५००.००
६९३.	श्री भटनागर मेमोरियल ट्रस्ट		५००.००
६९४.	श्री गजानन्द		४५०.००
६९५.	श्री त्रिलोकी जैन		४५०.००
६९६.	श्री भगवानदास लोहारी		४४०.००
६९७.	श्री अरुणकुमार आशर		४०४.००
६९८.	श्री जवाहरजी		४०२.००
६९९.	श्री भटनागर मेमोरियल ट्रस्ट		४००.००
७००.	श्री बनारसीदास डिडवानियाँ		३५१.००
७०१.	श्री बालाजी स्पाइसेस		३५१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
७०२.	श्री पंकजकुमार केजरीवाल		३५१.००
७०३.	श्री विजय सारीज इम्पोरियम		३०१.००
७०४.	श्री मुकुन्द टेक्सटाइल्स		३०१.००
७०५.	श्री सतीश मेडीसीन		३०१.००
७०६.	श्री रामस्वरूप अग्रवाल		३०१.००
७०७.	श्री छन्नूलाल	विशेश्वरगंज, वाराणसी	३००.००
७०८.	श्री वासुदेव दत्तात्रेय	कोल्हापुर	३००.००
७०९.	श्री गोपालदास पुरुषोत्तमदास		२५२.००
७१०.	श्री लोकेश करवा		२५१.००
७११.	श्री सोमानी इण्टरप्राइजेज		२५१.००
७१२.	श्री ओम फार्मा		२५१.००
७१३.	श्री अजय फार्मास्यूटिकल्स		२५१.००
७१४.	श्री ललित फार्मास्यूटिकल्स		२५१.००
७१५.	श्री गुप्ता फार्मास्यूटिकल्स		२५१.००
७१६.	श्री ललिता इण्टरप्राइजेज		२५१.००
७१७.	श्री वर्मन एजेन्सी		२५१.००
७१८.	श्री विवेक फार्मास्यूटिकल्स		२५१.००
७१९.	श्री विवेक मेडिकल्स		२५१.००
७२०.	श्री एस०एल० फार्मास्यूटिकल्स		२५१.००
७२१.	श्री नटराज मेडिकल्स		२५१.००
७२२.	श्री वाराणसी कला केन्द्र		२५१.००
७२३.	श्री हीरालाल गोपालदास		२५१.००
७२४.	श्री शिवा स्पाइसेस		२५१.००
७२५.	श्री ड्रोलिया कलर		२५१.००
७२६.	श्री काशी साड़ी केन्द्र		२५१.००
७२७.	श्री निरंजन टेक्सटाइल्स		२५१.००
७२८.	श्री पंचरतन ज्वेलरीज		२५१.००
७२९.	श्रीमती मञ्जू		२५१.००
७३०.	श्री राजकुमार		२५१.००
७३१.	श्री गिन्नी सारीज		२५१.००
७३२.	श्री किशनदास बृजमोहनदास		२५१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
७३३.	श्री विनयशंकर पाण्डेय		२५१.००
७३४.	श्री चौधरी ब्रदर्स		२५१.००
७३५.	श्री महेश ब्रदर्स		२५१.००
७३६.	श्री गोपी साव		२५१.००
७३७.	श्री विनोद		२५१.००
७३८.	श्री शंकरप्रसाद		२५१.००
७३९.	श्री अशोककुमार		२५१.००
७४०.	श्री कमल		२५०.००
७४१.	श्री राजकुमार बंसल		२५०.००
७४२.	श्री अनूपकुमार सर्राफ		२५०.००
७४३.	श्री लालजीप्रसाद केशरी		२५०.००
७४४.	श्री सालिकराम केशरी		२५०.००
७४५.	श्री वसुदेव		२५०.००
७४६.	श्री सदानन्द झँवर		२५०.००
७४७.	श्री हरीनाथ		२५०.००
७४८.	श्री कमल गुप्ता		२०५.००
७४९.	श्री मितेश ट्रेडर्स		२०२.००
७५०.	श्री अश्वनीकुमार एण्ड कम्पनी		२०२.००
७५१.	श्री जी सेल्स		२०२.००
७५२.	श्री श्याम इण्टरप्राइजेज		२०१.००
७५३.	श्रीमती गायत्री भावसिंहका		२०१.००
७५४.	श्री अजन्ता ट्रेडिंग		२०१.००
७५५.	श्री फार्मा		२०१.००
७५६.	श्री राजेन्द्र मेडिकल एजेन्सी		२०१.००
७५७.	श्री महादेव मेडिकल्स		२०१.००
७५८.	श्री अग्रवाल एण्ड कम्पनी		२०१.००
७५९.	श्री शिव फार्मा		२०१.००
७६०.	श्री रामचन्द रामविलास		२०१.००
७६१.	श्री परमानन्द स्टोर		२०१.००
७६२.	श्री सर्राफ ब्रदर्स		२०१.००
७६३.	श्री अशोक साड़ी इम्पोरियम		२०१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
७६४.	श्री अंजनीकुमार		२०१.००
७६५.	श्री अजय इण्टरप्राइजेज		२०१.००
७६६.	श्री रामलखन सन्तोष		२०१.००
७६७.	श्री प्रदीपकुमार विशम्भरी		२०१.००
७६८.	श्रीमती ईश्वरीदेवी लक्ष्मणदास		२००.००
७६९.	श्रीमती किशोरीदेवी		२००.००
७७०.	श्री मदनलाल किशनलाल		२००.००
७७१.	श्रीमती गंगाधर आप्ते		२००.००
७७२.	श्री मथुराप्रसाद कैलाश		२००.००
७७३.	श्री कृष्ण प्रिया		२००.००
७७४.	श्री सन्तोष जायसवाल		१५१.००
७७५.	श्री सोलर इण्टरप्राइजेज		१५१.००
७७६.	श्री अर्जुन मेडिकल्स		१५१.००
७७७.	श्री रामस्वरूप मूँदड़ा		१५१.००
७७८.	श्री रामविलास चाण्डक		१५१.००
७७९.	श्रीमती श्याम लड्डादेवी		१५१.००
७८०.	श्री बद्रीप्रसाद केशरवानी		१५१.००
७८१.	श्री हीरालाल पुरुषोत्तम		१५१.००
७८२.	श्री नन्दलाल बरनवाल		१५१.००
७८३.	श्री मलहोत्रा कालका		१५१.००
७८४.	श्री राम ओंकारमल		१५०.००
७८५.	श्री आनन्द ट्रेडिंग कम्पनी		१५०.००
७८६.	श्री हीरालाल रामप्रसाद		१५०.००
७८७.	श्री रमेश घी वाले		१५०.००
७८८.	श्री राहुल कोठारी		१५०.००
७८९.	श्री विजय मोदी		१२१.००
७९०.	श्री कन्हैयालाल लोहिया		१२१.००
७९१.	श्री मालूराम सिंघानियाँ		१०५.००
७९२.	श्री श्रीनाथ तिवारी		१०१.००
७९३.	श्री सरावगी एण्ड सरावगी		१०१.००
७९४.	श्री शुभम् मेडिकल्स		१०१.००
७९५.	श्री पंकज फार्मा		१०१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
७९६.	श्री महेन्द्र एण्ड महेन्द्र		१०१.००
७९७.	श्री विश्वकर्मा		१०१.००
७९८.	श्री मितत्ल एजेन्सी		१०१.००
७९९.	श्री सञ्जू ड्रग इम्पोरियम		१०१.००
८००.	श्री लक्ष्मी मेडिकल्स		१०१.००
८०१.	श्री सूरज एण्ड कम्पनी		१०१.००
८०२.	श्री तुलानी फार्मास्यूटिकल्स		१०१.००
८०३.	श्रीमती सुशीलादेवी		१०१.००
८०४.	श्री कृष्णा फार्मास्यूटिकल्स		१०१.००
८०५.	श्री अतुल		१०१.००
८०६.	श्री अश्वनी		१०१.००
८०७.	श्री संकटमोचन फार्मास्यूटिकल्स		१०१.००
८०८.	श्री न्यू भण्डार फार्मा		१०१.००
८०९.	श्री रामरति फार्मा		१०१.००
८१०.	श्री सी०एम० फार्मा		१०१.००
८११.	श्री कमल फार्मा		१०१.००
८१२.	श्री अग्रवाल एण्ड अग्रवाल		१०१.००
८१३.	श्री केशरी फार्मास्यूटिकल्स		१०१.००
८१४.	श्री दुर्गेश मेडिकल्स		१०१.००
८१५.	श्री आनन्द फार्मा		१०१.००
८१६.	श्री केशरी मेडिकल्स		१०१.००
८१७.	श्री फार्मा		१०१.००
८१८.	श्री एम०डी० फार्मा		१०१.००
८१९.	श्री अपार मेडिकल्स		१०१.००
८२०.	श्री कपिल फार्मास्यूटिकल्स		१०१.००
८२१.	श्री मदनलाल खुशलाल		१०१.००
८२२.	श्री दामोदर शर्मा		१०१.००
८२३.	श्री विजय इण्टरनेशनल		१०१.००
८२४.	श्री वाराणसी प्राइवेट स्टोर		१०१.००
८२५.	श्री गुप्ता केराना स्टोर		१०१.००
८२६.	श्री शीतल केराना स्टोर		१०१.००
८२७.	श्री सतीश पाल		१०१.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. संख्या	दानदाता का नाम	पता	धनराशि
८२८.	श्री शम्भू केराना स्टोर		१०१.००
८२९.	श्री मदनगोपाल नारायणदास		१०१.००
८३०.	श्री नन्दकिशोर प्रह्लादका		१०१.००
८३१.	श्री गोविन्दजी		१०१.००
८३२.	श्री श्यामसुन्दर तुलस्यान		१०१.००
८३३.	श्री गोविन्दप्रसाद भौतिका		१०१.००
८३४.	श्री विश्वम्भरी म्यूजियम		१०१.००
८३५.	श्री निर्मल सेठ		१०१.००
८३६.	श्री गोवर्धनदास		१०१.००
८३७.	श्री बृजकिशोर अग्रवाल		१०१.००
८३८.	श्री जयप्रकाश		१०१.००
८३९.	श्री राहुलजी		१०१.००
८४०.	श्री ललितकुमार		१०१.००
८४१.	श्री शिवराम त्रिपाठी		१०१.००
८४२.	श्रीमती सुमन केडिया		१०१.००
८४३.	श्री श्यामसुन्दर मुल्तान		१०१.००
८४४.	श्रीमती प्रभावती देवी		१०१.००
८४५.	श्रीमती मुल्तानी		१०१.००
८४६.	श्रीमती दीपा अग्रहरि		१०१.००
८४७.	श्री घनश्यामदास प्रकाश		१०१.००
८४८.	श्रीमती रामजीवनी देवी		१०१.००
८४९.	श्री ह्शीकुमार		१०१.००
८५०.	श्री रामजी		१००.००
८५१.	श्री जाजू		१००.००
८५२.	श्रीमती गीतादेवी अग्रवाल		१००.००
८५३.	श्री राम भरोस		१००.००
८५४.	श्री वासुदेव दत्तात्रेय		१००.००
८५५.	श्री सुशीलकुमार		१००.००
८५६.	श्री मातादीन अग्रवाल		१००.००
८५७.	श्रीमती....		१००.००
८५८.	श्री अप्कला		१००.००
८५९.	श्री रामजी माहेश्वरी		१००.००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संख्या 2637/2-11-2000

सोसाइटी के नवीकरण का प्रमाण-पत्र

नवीकरण संख्या 600 ~~199~~ 2000

फाइल संख्या I 5-1210

एतद्द्वारा प्रमाणित किया जाता है कि श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गौशाला एवं पशुशाला वाराणसी, के. 50/25 दुल्हिन जी रोड गोलघर, वाराणसी को दिये गये रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र संख्या 70/1934-35 दिनांक 26-2-1935 को दिनांक 10-10-2000 से पांच वर्ष की अवधि के लिए नवीकृत किया गया है।

200.00 रुपये की नवीकरण फीस सम्यक् रूप से प्राप्त हो गयी है।

सोसाइटी के रजिस्ट्रार,
उत्तर प्रदेश।

दिनांक 21-10 ~~199~~ 2000

पी०एस०यू०पी०–ए०पी०–9 फर्स्ट निबन्धक–5.10.93–(1754)–80,000–(कम्प्यूटर/आफसेट)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
प्रादेशिक आयकर आयुक्त
वाराणसी ।

पत्रांक आयुक्त/62/मुख्यालय-II/317/ 99-2000/1947 दिनांक : ~~सितम्बर 99~~ 1.11.99

प्रधान मंत्री
के. श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गौशाला एवं पशुशाला
K. 60/85 दुर्गाहिन जी रोड
वाराणसी

विषय :- आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी (5)(vi) के अधीन मान्यता प्रदान करने के लिए अनुरोध -

उपरोक्त विषय पर दिनांक शून्य को दाखिल आपकी यथानिर्दिष्ट आवेदन के सन्दर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि

के. श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गौशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

दिया गया संदाय आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी के अन्तर्गत दाता के हाथ में कर मुक्त होगा, यदि उसकी उक्त प्रावधान में निहित सीमा से अधिक न हो।

यह कर मुक्ति तारीख 1-4-1999 से 31-03-2002 तक वैध है ।

(पी.के. ...)
आयकर आयुक्त
वाराणसी

पत्रांक आयुक्त/62/मुख्या.-II/317/99-2000/1948 दिनांक : 1-11-99

(सीताराम ...)
आयकर अधिकारी (मुख्यालय-II)
कृते आयकर आयुक्त, वाराणसी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
वाराणसी

सदर (गोलघर), रामेश्वर, मधुबन, वृन्दावन, पाँचो शिवाला, गोकुल (बावनबीघा), सारंग

आय-व्यय २०००-२००१

चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट

दीपक यशदीप एण्ड कम्पनी, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GAUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

BALANCE SHEET AS AT 31.03.2001

Source of Fund	Amount
Gaushala Fund	1,815,528.98
Capital Fund	16,557,970.40
Current Liabilities	1,241,190.56
	19,614,689.94

Application of Fund	
Fixed Assets	15,402,910.40
Investments	954,001.50
Live Stock	1,656,631.00
Inventories	253,840.65
Sundry Debtors	73,747.00
Advances	606,112.06
Security Deposits	45,331.00
Cash & Bank Balances	622,116.33
	19,614,689.54

For Deepak Yashdeep & Co.
Chartered Accountants
Sd/-
(DEEPAK AGRAWAL)
(Proprietor)

PLACE : VARANASI
DATED : 06.10.2001

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.2001

		31.3.2001	31.3.2000
Income			
By Donation from Sadar Branch			2,648,417.09
General	5,206,073.23		
Specific (Vrindavan Water Tank)	461,298.00		
Specific (Bawan Bigha Khatal	56,600.00		
Harit Kyari Jama Yojna	30,013.00		
Golak Peti	125,829.35		
Godan	20,151.00	5,899,964.58	
By Donation from Bawan Bigha Branch			19,088.00
General	5,221.00		
Gograss	1,953.00	7,174.00	
By Donation from Rameshwar Branch			1,134,783.47
General		82,944.00	
By Dividend from U.T.I.		40,396.00	37,968.74
By Interest on S/B A/c			91.00
Sub Total :		6,030,478.58	3,840,348.30
Expenditure			
To Statutory Audit Fees		10,500.00	10,500.00
To Loss from Sadar Branch		702.889.06	840,597.52
To Loss from Bawan Bigha Branch		418,470.85	844,351.48
To Loss from Rameshwar Branch		2,351,619.94	2,507,409.29
To Investment in Fixed Assets			
Golghar (Sadar) Branch			93,442.25
Summerceable Pump		14,350.00	
Bawan Bigha Branch			161,803.00
Khatal Construction	56,600.00		
Thresher Purchases	14,000.00	70,600.00	
Rameshwar Branch			33,744.00
Vrindawan Water Tank	461,298.00		
Agriculture Equipments	13,000.00		
Gobar Gas Plant	20,090.71	494,388.71	
Sub Total :		4,062,818.56	4,491,847.54
Excess of Income over Expenditure		1,967,660.02	(-) 651,499.24

For Deepak Yashdeep & Co.
Chartered Accountants
Sd/-
(DEEPAK AGRAWAL)

PLACE : VARANASI
DATED : 06.10.2001

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SCHEDULE FORMING PART OF BALANCE SHEET AS AT 31.03.2001

Schedule '01' : Gaushala Fund :

Opening Balance		
Less : Excess of Income over Expenditure		(-) 152,131.04
		1,967,660.02
		1,815,528.98

Schedule '02' : Capital Fund

A. GOLGHAR (SADAR) BRANCH		
Add : Investment during the year	1,176,083.27	
B. RAMESHWAR BRANCH	14,350.00	1,190,433.27
Opening Balance	11,159,851.33	
Add : Investment during the year	494,388.71	11,654,240.04
C. BAWANBIGHA BRANCH		
Opening Balance	3,323,018.99	
Add : !nvestment during the year	70,600.00	3,393,618.99
D. SARANG BRANCH		
Opening Balance		319,678.10
		16,557,970.40

SCHEDULE '03' : Current Liabilities

A. Deepak Yashdeep & Co.	10,500.00
B. Golghar (Sadar) Branch	544,568.75
C. Bawan Bigha Branch	427,598.80
D. Rameshwar Branch	258,523.01
	1,241,190.56

Schedule '04' : Fixed Assets

A. BAWAN BIGHA BRANCH

Particulars	Opening Balance	Addition	Closing Balance
Furniture	14,250.20	-	14,250.20
Gobar Gas Plant	19,837.79	-	19,837.79
Bullock Cart	4,863.25	-	4,863.25
Tractor	282,595.00	-	282,595.00
Tubewell	598,008.23	-	598,008.23
Godown	58,648.00	-	58,648.00
Khatal	233,652.98	56,600.00	290,252.98
Agricultural Equipment	7,500.00	-	7,500.00
Moped	27,384.75	-	27,384.75
Generator	303,514.25	-	303,514.25

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Building	756,178.95	-	756,178.95
Water Pump	3,700.00	-	3,700.00
Summerciable Pump	39,317.22	-	39,317.22
Water tank	630,150.37	-	630,150.37
Cooler Purchase	7,700.00	-	7,700.00
Tullu Pump	520.00	-	520.00
Thresher Purchases	-	14,000.00	14,000.00
	2,987,820.99	70,600.00	3,058,420.99

B. RAMESHWAR BRANCH

Hand Pump	15,777.25	-	15,777.25
Tube Well	1,186,474.13	-	1,186,474.13
Gobar Gas Plant	138,423.81	20,090.71	158,514.52
Fan	10,635.00	-	10,635.00
Generator	23,400.00	-	23,400.00
Bullock Cart	74,943.00	-	74,943.00
Electric Fittings	155,112.54	-	155,112.54
Khatal	1,089,004.31	-	1,089,004.31
Threasar	9,500.00	-	9,500.00
Hospital Construction	1,500.00	-	1,500.00
Building	6,591,334.69	-	6,591,334.69
Cycle	22,992.00	-	22,992.00
Furniture	56,017.31	-	56,017.31
Chara Machine	39,274.85	-	39,274.85
Delivery Van	137,000.00	-	137,000.00
Trolley	4,789.00	-	4,789.00
Krayocan Container	17,525.20	-	17,525.00
Engine Pump	29,630.00	-	29,630.00
Electric Meter	22,198.00	-	22,198.00
Tempo	138,724.00	-	138,724.00
Refrigerator	9,750.00	-	9,750.00
Wall Clock	728.00	-	728.00
Weight Balance	11,329.50	-	11,329.50
Tractor & Equipments	218,953.54	-	218,953.54
Telephone	9,600.00	-	9,600.00
Land Development	26,384.00	-	26,384.00
Dairy Equipments	106,417.20	-	106,417.20
Agricultural Equipments	123,025.00	13,000.00	136,025.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Water Tank Consruction	109,800.00	461,298.00	571.098.00
Mobile Ambulance	311,000.00	-	311,000.00
Pumping Set	204,301.00	-	204,301.00
Heat Convertor	700.00	-	700.00
Scooter	8,000.00	-	8,000.00
	10,904,243.33	494,388.71	11,398,632.04
C. GOLGHAR (SADAR) BRANCH			
Land	7,745.72	-	7,745.72
Furniture	13,193.00	-	13,193.00
Rickshaw Trolley	125.00	-	125.00
Khatal	30,290.00	-	30,290.00
Luna Moped	4,300.00	-	4,300.00
Engine Pump	21,383.25	-	21,383.25
Chara Machine	4,942.90	-	4,942.90
Hand Pump	3,600.00	-	3,600.00
Weighting Balance	5,644.17	-	5,644.17
Krayocan Container	11,429.00	-	11,429.00
Cycle	21,105.00	-	21,105.00
Fans	6,000.00	-	6,000.00
Building	373,322.93	-	373,322.93
Golak Peti	8,180.00	-	8,180.00
Exhaust Fan	3,500.00	-	3,500.00
Cooler	13,100.00	-	13,100.00
Summerciable Pump	21,475.00	14,350.00	35,825.00
Generator	19,900.00	-	19,900.00
Pashu Chikitsa Equipments	35,070.00	-	35,070.00
Utensils	7,523.30	-	7,523.30
	611,829.27	14,350.00	626,179.27
D. SARANG BRANCH			
Boundary Construction	147,438.00	-	147,438.00
Building Constructions	172,240.10	-	172,240.10
	319,678.10	-	319,678.10
TOTAL (A + B + C + D)	14,823,571.69	579,338.71	15,402,910.40

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GAUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

GOLGHAR (SADAR) BRANCH

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.2001

	31.3.2001	31.3.2000
A. Income		
By Milk Production	184,752.00	117,367.00
By Smarika Advertisement	79,000.00	96.000.00
By Miscellaneous Income	11,519.36	14,303.50
By Interest	5,426.00	708.90
By Godakhila	6,802.00	7,025.00
By Gobardai	11,540.00	6,780.00
By Gograss Coupon	200.00	1,550.00
	299,239.36	243,734.40
B. Expenditure		
To Pashu Ahar Expenses		
Developing Govansh Ahar Exps.	-	238,139.00
Thath Govansh Ahar Exps.	540,092.80	357,202.00
To Govansh Medical Expenses	19,915.90	48,993.00
To Daily Wages		
Administrative	57,437.00	54,468.00
Developing Govansh	-	53,844.00
Thath Govansh	80,275.00	21,253.00
Thath Govansh Medical Chikitsa	7,508.00	18,522.00
To General Wages	24,492.00	27,957.00
To Stationary Expenses	28,282.25	27,027.10
To Electricity Expenses	43,543.50	36,930.50
To Miscellaneous Expenses	29,984.17	52,119.71
To Telephone Expenses	13,189.00	11,536.00
To Legal Expenses	30,231.50	6,510.00
To Gopashtami Expenses	40,502.00	18,536.50
To Water Tax	2,772.80	2,772.80
To Smarika Expenses	47,875.00	45,820.00
To Bank Commission	1,782.80	1,068.00
To Repairs & Maintenance	13,436.40	1,626.00
To Building Tax	4,528.60	4,528.60

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

To Cartage	396.00	608.00
To Security Expenses	-	16,925.00
To Internal Audit Fees	7,560.00	7,560.00
To Generator Expenses	-	2,311.00
To Petrol & Diesel Expenses	2,063.70	4,904.71
To Golak Peti Expenses	3,360.00	12,020.00
To Accounting Charges	2,000.00	9,600.00
To Travelling & Conveyance	900.00	-
	1,002,128.42	1,082,781.92
To Excess of Expenditure over Income (B – A)	702,889.06	839,047.52

For Deepak Yashdeep & Co.
Chartered Accountants
Sd/-
(DEEPAK AGRAWAL)

PLACE : VARANASI
DATED : 06.10.2001

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GAUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

RAMESHWAR BRANCH

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.2001

	31.3.2001	31.3.2000
A. Income		
By Milk Production	1,415,969.50	1,262,046.50
By Gobar and Khad	172,600.00	30,250.00
By Intrest on S/B A/c	450.33	-
By Godakhila	23,601.00	10,951.00
By Golak Peti	2,200.00	8,410.00
By Agriculture Receipt	1,063,270.10	1,532,934.16
By Other Receipt	5,006.00	22,970.50
By Gobansh Sahayata Receipt	175,651.00	56,467.00
By Gardening Income	210.00	-
By Gobansh Upyoga	5,038.00	-
By Medical Receipt	1,070.00	-
By Fruit & Flowers	42,800.00	-
By Type School Receipt	680.00	-
	2,908,545.93	2,924,029.16
B. Expenditure		
To Pashu Ahar Expenses	2,674,368.51	2,772,163.84
To Pashu Medical Expenses	44,439.30	46,827.59
To Daily Wages		
Milk Production	-	307,962.00
Agricultural	-	399,893.00
General	1,385,555.50	765,116.10
To Diesel & Mobil Expenses	236,594.75	65,110.56
To Electricity Expenses	38,655.10	39,332.32
To Petrol Expenses	92,156.96	65,984.34
To Repairs and Maintenance		
Building	-	15,388.15
Cart	10,514.00	29,530.50
Cycle	1,526.00	363.00
Bus	5,700.00	-
Scooter	5,672.00	-
Chara Machine	21,924.50	-
Ambulance Repair	24,004.00	-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Maruti Car Repair	28,336.00	-
Generator	52,261.00	14,802.65
General	265.00	27,610.75
To Telephone Expenses	17,076.00	3,872.50
To Misc. Expenses	-	29,624.85
To General Expenses	53,311.20	101,112.78
To Tractor and Machinery Expenses	62,226.00	63,390.30
To Agricultural Expenses	187,007.60	248,186.20
To Horticulture Expenses	1,499.00	18,822.50
To Pooja Expenses	4,845.50	8,690.50
To Milk Distribution Expenses	38,184.00	140,829.00
To Bank Charges	20.00	45.00
To Legal Expenses	10,572.00	35,805.50
To News Paper & Periodicals	954.00	1,668.00
To Printing & Stationary	2,440.00	6,966.50
To Staff Welfare	9,267.95	126,347.94
To Travelling & Conveyance	1,894.68	5,311.18
To Consumption & Wastage of Milk	232.00	3,504.00
To Pumping Set Expenses	15,206.00	989.50
To Gobar Gas Plant Expenses	3,904.50	3,485.00
To Vehicle Insurance	-	9,473.00
To Accounting Charges	12,000.00	8,000.00
To Interest on T.D.S.	-	260.00
To Cash Shortage	(-) 33.00	92.40
To Dairy Expenses	8,500.00	-
To Gopastmi Expenses	4,969.50	-
To Guest Expenses	919.00	-
To Khatal Expenses	2,098.50	-
To Mess Expenses	193,023.82	-
To Office Expenses	1,182.00	-
To Pashu Ahar Frieght	985.00	-
To Silai Kendra	5,908.00	-
	5,260,165.87	5,366,561.45
To Excess of Expenditure over Income (B-A)	2,351,619.94	2,442,532.29

For Deepak Yashdeep & Co.
Chartered Accountants
Sd/-
(DEEPAK AGRAWAL)
Proprietor

PLACE : VARANASI
DATED : 06.10.2000

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SHREE KASHI JEEVDAYA VISTARINI GAUSHALA & PASHUSHALA VARANASI

BAWANBIGHA BRANCH

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31.03.2001

	31.3.2001	31.3.2000
A. Income		
By Agricultural Receipt	728,486.55	1,039,662.00
By Receipt from Gobar Khad	27,084.00	13,200.00
By Milk Production	2,986,648.00	3,176,871.50
By Sarang Agricultural Receipt	-	8,600.00
By Horticulture	500.00	-
By Other Income	4,538.00	22,485.00
	3,747,256.55	4,260,818.50
B. Expenditure		
To Agriculture Expenses	238,838.50	334,068.15
To Pashu Ahar Expenses	2,068,187.95	2,738,567.55
To Pashu Medical Expenses	176,304.15	262,560.07
To Daily Wages		
Agricultural	179,099.00	214,892.00
Medical	32,881.00	62,024.00
Bagwani	30,755.00	39,801.00
Administrative	120,309.00	95,975.00
Khatal	312,752.00	661,049.40
To Milk Distribution Expenses	358,823.00	-
To Diesel Expenses	102,113.10	99,840.70
To Tractors Repairs	12,240.50	48,783.18
To Moped Repairs	4,731.00	3,387.00
To Scooters Repairs	3,379.95	379.00
To Tempo Repairs	758.00	1,531.00
To Petrol Expenses	7,456.00	13,550.37
To Electricity Charges	65,930.85	45,936.00
To Repairs & Maintenance	3,372.20	3,275.77
To Bullock Cart Expenses	3,447.30	6,260.00
To Telephone Expenses	15,879.00	12,209.00
To Printing & Stationary	2,708.00	4,616.50
To Staff Welfare	59,262.30	29,221.25

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

To Legal Expenses	710.00	2,691.00
To Sarang Expenses	15,800.00	55,138.00
To Accounting Charges	-	9,600.00
To Cycle Repairs	13,813.50	11,862.50
To Misc. Expenses	25,052.40	21,630.57
To Bagwani Expenses	3,210.00	9,935.50
To Lagan Expenses	833.45	833.45
To Milk Wastage	240.381.00	58,235.00
To Mess Expenses	33,903.65	97,077.43
To Gopashtami Expenses	-	460.00
To Internal Audit Fees	5,040.00	5,040.00
To Development Expenses	-	5,310.00
To Mobile Ambulance Expenses	-	2,140.00
To Travelling Expenses	3,176.60	2,028.50
To Electric Repairs & Maintenance	-	27,755.00
To Generator Expenses	7,154.00	16,924.00
To Goods Expenses	-	15,639.10
To Building Repairs	10,780.00	77,040.50
To Gobansh Ahar Freight	6,645.00	7,600.00
To Cash Shortage	-	2.49
	4,165,727.40	5,105,169.98
To Excess of Expenditure over Income (B–A)	418,470.85	844,351.48

For Deepak Yashdeep & Co.
Chartered Accountants
Sd/-
(DEEPAK AGRAWAL)
Proprietor

PLACE : VARANASI
DATED : 06.10.2000

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाराणसी क्षेत्र में पशु-चिकित्सालयों में कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों की सूची वर्ष २००१-२००२

क्रमांक	नाम	पद	पता	फोन नं०
१.	डॉ० आर०एन० प्रसाद	उप निदेशक वाराणसी मडंल	रामनगर	६६९१३४ कार्यालय
२.	" आर०पी० यादव	सी०वी०ओ० वाराणसी	विकास भवन, कचहरी	३४०७८६ कार्यालय
३.	" टी०के० तिवारी	कृ०गर्भा० अधिकारी	"	" "
४.	" पी०के० सिंह	प्र०तक०अधि० कुक्कुट	रामनगर	५८२८१५ निवास ६६९१३४ कार्यालय मो० (९८३९०५९८८१)
५.	" के०के० वैश्य	प०चि०अधि० स्टेट पुलोरम लैब	रामनगर	६६९१३४ कार्यालय ३५४७०७ निवास
६.	" यू०वी० सिंह	प०चि०अधि० सचल	रामनगर	६६९१३४ कार्यालय मो० (९८३९०४९९१८)
७.	" देवेन्द्र गुप्ता	प०चि०अधि० मण्डलीय (प्रयोगशाला)	रामनगर	६६९१३४ कार्यालय ३२२२२० निवास
८.	" एल०वी० सिंह	प०चि०अधि० सदर मोतीझील	सदर मोतीझील	३८३६१९ निवास
९.	" जे०एन० सिंह	प०चि०अधिकारी	हरहुआ	५११७२८ निवास
१०.	" के०यस० सिंह	"	बड़ागाँव	६२३०१२ कार्यालय ५८६२७४ निवास
११.	" रामविजय सिंह	"	बी०एच०यू०	मो० (९८३९०५८७७२)
१२.	" विजयशंकर सिंह	"	चोलापुर	६१२११४ निवास
१३.	" अरविन्दकुमार सिंह	"	सिन्धोरा	
१४.	" वी०के० सिंह	"	चिरईगाँव	६१६३६४ कार्यालय
१५.	" आर०के० उपाध्याय	"	सेवापुरी	
१६.	" वीरबहादुर सिंह	"	ग्रा०स०खं०, आराजी लाइन	५१०२६१ निवास
१७.	" ए०के० सिंह	"	लढ़िया	३१७६१२ मो० (९८३८०३६३३४)
१८.	" पद्माकर शुक्ला	"	पशु चिकित्सालय, जक्खिनी	४६०४७० निवास
१९.	" आर०पी० सिंह	"	पशु चिकित्सालय, विद्यापीठ	३७२६५७ निवास मो० (९८३८०४३१५७)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२०.	श्री ए०के० सिंह	प०चि०अधिकारी	पशु चिकित्सालय, रामनगर	६६८९१८ कार्यालय
२१.	'' दरोगा सिंह	''	पशु चिकित्सालय, चौबेपुर	
२२.	'' ओ०पी० शर्मा	''	पशु चिकित्सालय, राजातालाब	६३२५०९ कार्यालय ६६८४०५ निवास
२३.	'' रामचन्द्र तिवारी	प०चि०अधिकारी	पशु चिकित्सालय, पिण्डरा	६२२६९१
२४.	'' ए०पी० सिंह	प०चि०अधि० नगर निगम	पशु चिकित्सालय, सेनपुरा	२२१७०९ कार्यालय ३५४५३६ निवास
२५.	'' पी०सी० श्रीवास्तव	मु०त०अ० (भेड़)	मकबूल आलम रोड	३११९५६ निवास
२६.	'' वशिष्ठनारायण सिंह	प्रान्तीय अध्यक्ष	डी०प०चि० संघ, उ०प्र०	२७५०७६ निवास
२७.	'' सत्यनारायण प्रसाद	पशुधन प्रसार अधिकारी	काशी गोशाला, गोलघर	३८२७५९ निवास
२८.	'' देवेन्द्रकुमार सिंह	''	सलारपुर, राजघाट	३४४७३८ निवास
२९.	'' वाई०एन० गुप्ता	''	शिवपुर, वाराणसी	
३०.	'' भगवन्त सिंह	''	कन्दवा, वाराणसी	
३१.	'' अशोक सिंह	''	बच्छाँव, वाराणसी	३६७१४४ निवास
३२.	'' श्री कान्त पाण्डेय	''	गोवपुर, वाराणसी	
३३.	'' बिगन सिंह	''	जाल्हूपुर, वाराणसी	५८१६७०
३४.	'' जितेन्द्रकुमार सिंह	''	इमिलियाँ, वाराणसी	५८९४२१
३५.	'' कन्हैयालाल	पशुधन प्रसार अधिकारी	चिरईगाँव, वाराणसी	६१६३६४ कार्यालय ६१२९४३ निवास
३६.	'' सहतीराम मौर्य	''	पिण्डरा बाजार, वाराणसी	
३७.	'' कालीचरण	''	'' ''	
३८.	डॉ० आर०पी० सिंह	सेवा नि०उप० निदेशक	अशोकनगर, वाराणसी	५८५८४५ निवास
३९.	'' डी०यस० सिंह	''	सुन्दरपुर, वाराणसी	३१६०९३ निवास
४०.	'' आर०एन० प्रसाद	उपनिदेशक		६६९१३४ कार्यालय
४१.	'' आर०पी० यादव	सी०वी०ओ०		३४०७८६ कार्यालय
४२.	'' टी०के० तिवारी	कृ०गर्भा० अधिकारी		३४०७८६ कार्यालय ५८२८१५ निवास
४३.	'' के०के० वैश्य	प०चि० अधिकारी	स्टेट पुलोरम लैब, वाराणसी	६६९१३४ कार्यालय ३५४७०७ निवास मो० (९८३९०६२७०८)
४४.	'' राम विजय सिंह		बी०एच०यू०	मो० (९८३९०५८७७२)
४५.	'' आर०के० उपाध्याय	प०चि० अधिकारी	सेवापुरी	
४६.	'' आर०पी० सिंह	से०नि० उपनिदेशक	राजातालाब	५८५८४५ निवास
४७.	'' डी०एस० सिंह	से०नि० उपनिदेशक	सुन्दरपुर	३१६०९३ निवास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूध का उत्पादन २०००-२००१

नाम	रामेश्वर	मधुबन	योग	सदर से वितरण
अप्रैल	६४७३.०	१२६.०	६५९९.०	५५१८.५
मई	६८३२.०	११९.०	६९५१.०	५९५२.०
जून	८०६२.०	१४९.०	८२११.०	७१५०.५
जूलाई	८१४६.०	२३३.०	८३७९.०	७१७०.०
अगस्त	७१९१.५	२०५.०	७३९६.५	६१०६.५
सितम्बर	६४०६.०	१३६.०	६५४२.०	५३५५.०
अक्टूबर	६५३४.०	२०३.०	६७३४.०	५५२४.०
नवम्बर	६१९०.०	२०८.०	६३९८.०	५२२९.०
दिसम्बर	६५२४.०	२८४.०	६८०८.०	५७१३.०
जनवरी	६९७४.०	४८४.०	७४५८.०	६६२६.०
फरवरी	७०४९.०	६७६.०	७७२५.०	६८८४.०
मार्च	८८२२.०	७६३.०	९५८५.०	८४६४.०
योग	८५२०३.५	३५८६.०	८८७८९.५	७५६९२.५

दूध का उत्पादन २००१-२००२

नाम	रामेश्वर	मधुबन	योग	सदर से वितरण
अप्रैल	८४१९.०	४५८.०	८८७७.०	७९०३.०
मई	८६२२.०	४०३.०	९०२४.०	७९५२.०
जून	८७४४.०	३१०.०	९०५४.०	८०११.०
जूलाई	८५०६.०	४८७.०	९०६३.०	७९९७.०
अगस्त	८०४७.०	४००.०	८४४७.०	७२५१.०
सितम्बर	७४९०.०	२४९.०	७७३९.०	६५५४.०
योग	४९८२८.०	२३०७.०	५२२०५.०	४५६६८.०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूध उत्पादन का विवरण
२००० से २००१
गोकुल-बावनबीघा, वाराणसी

	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर
दूध ली० में २००० से २००१	१४६०२	१४३२९	१३१३९	१२९११	१२२४१	११८२५
मूल्य	२३३६३२	२२९२६४	२१०२२४	२०६५७६	१९५८५६	१८९२००
नगद बिक्री	१९	१६	१५	२२.५	१८	९.५
मूल्य	१९०	१६०	१८८	२९४	२२८	११४
कर्मचारी व मेस	१२२	१२३	१२२	१०९	१३३.५	१२३
मूल्य	१९५२	१९६८	१९५२	१७४४	२१३६	१९६८
टोटल दूध	१४७४३	१४४६८	१३२७६	१३०४२.५	१२३९.५	११९५७.५
मूल्य	२३५७७४	२३१३९२	२१२३६४	२०८६१४	१९८२२०	१९१२८२

	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च
दूध ली० में २००० से २००१	१४८२२५	१६२६३	१७७४५	२००४४	१८१९२	१८६३२
मूल्य	२३७२००	२६०२०८	२८३९२०	३२०७०४	२९१०७२	२९८११२
नगद बिक्री	११.५	२३.५	१९	११	५७	७५.५
मूल्य	१३८	२८२	२८८	१३२	६६२	९२६
कर्मचारी व मेस	१५९.५	२०२.५	१२६.५	१४३	१२०.५	१३५.५
मूल्य	२५५२	३२४०	२०२४	२२८८	१९२८	२१६८
टोटल दूध	१४९९६	१६४८९	१७८९०.५	२०१९८	१८३६९.५	१८८४३
मूल्य	२३९८९०	२६३७३०	२८६२३२	३२३१२४	२९३६६२	३०१२०६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अप्रैल-सितम्बर २००१

	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर
दूध ली० में २००१ से २००२	१६८७८	१५६५८	१३९०९	११७१८	१११२७	११२७८
मूल्य	२७००४८	२५०५२८	२२२५४४	१८७४८८	१७८०३२	१८०४४८
नगद बिक्री	५२.५	६६.५	७६.५	१०७.५	१०७	१२४.५
मूल्य	६३०	८०२	९१८	१२९०	१२८४	१४९४
कर्मचारी व मेस	१३३.५	१२७	१४४.५	१२८.५	११९	१४०.५
मूल्य	२१३६	२०३२	२३१२	२०५६	१९०४	२२४८
टोटल दूध	१७०६४	१५८५१.५	१४१३०	११९५४	११३५३	११५४३
मूल्य	२७२८१४	२५३३६२	२२५७७४	१९०८३४	१८१२२०	१८४१९०

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
गौवंश विवरण (२०००-२००१)

	गाय	बैल	साँड़	बाछा	बाछी	योग
बावनबीघा	१०२	५	६	४४	६९	२२६
सदर गोशाला	५५	-	२	९	५४	१२०
रामेश्वर	८७	४	१	३४	६०	१८६
मधुबन	१०३	६२	१२	७६	७१	३२४
वृन्दावन	६७	२	७	२५	-	१०१
						कुल योग ९५७

दुग्ध उत्पादन वर्ष (२०००-२००१)

रामेश्वर	८४९३५.५ लीटर
मधुबन	३९३२ लीटर
बावनबीघा	१८६६६५.५ लीटर
सदर गोशाला	११५४७ लीटर

हरा चारा उत्पादन (२०००-२००१)

बावनबीघा	९७७७.८८ कुन्तल
मधुबन	९१८८.६२ कुन्तल
वृन्दावन	४३०१.३७ कुन्तल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकुल (बावनबीघा)

क्र०	जिन्स	उत्पादन कु० २००० से २००१	उत्पादन कु० २००१ से २००२
१.	गेहूँ	२६५.७८	२४४.६१
२.	आलू	२४१.९०	---
३.	सरसों	१६.९०	---
४.	राजमा	१.४२	२.२८
५.	हल्दी	७.५०	११.५०
६.	धान	१५५.८७	---
७.	मटर	३.५०	---
८.	हरा चारा	९७७७.८८	३९४५.३३
९.	गोबर खाद : ट्रैक्टर	१००.००	२८.००

श्री मधुबन गोशाला-२०००

गेहूँ उत्पादन

उत्पादन	वितरण बावनबीघा	स्वतः खर्च	योग
४५७२ कि०ग्रा०	९६१ कि०ग्रा०	३६११ कि०ग्रा०	४५७२ कि०ग्रा०

सूरजमुखी उत्पादन

उत्पादन—७४८ कि०ग्रा० सदर गोशाला—७४८ कि०ग्रा०

धान उत्पादन

उत्पादन	वितरण सदर गोशाला	कुटाई	योग
२४०.३ कुन्तल	१६०.३ कुन्तल	८० कुन्तल	२४०.३ कुन्तल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चावल उत्पादन

उत्पादन	वितरण बावनबीघा	स्वतः खर्च	योग
४३६२ कि०ग्रा०	१७२ कि०ग्रा०	४१९० कि०ग्रा०	४३६२ कि०ग्रा०

श्री मधुबन गोशाला-२००१

गेहूँ उत्पादन

उत्पादन पाँचो गोशाला	स्वतः खर्च	वितरण सदर गोशाला	योग
१७९४४ कि०ग्रा०	४१९४ कि०ग्रा०	१३७५० कि०ग्रा०	१७९४४ कि०ग्रा०

राजमा उत्पादन

मधु०/वृ० उत्पादन	स्वतः खर्च	सदर गोशाला	योग
८६ कि०ग्रा०	६ कि०ग्रा०	८० कि०ग्रा	८६ कि०ग्रा०

चना उत्पादन

मधु०/वृ० उत्पादन	स्वतः खर्च	सदर गोशाला	योग
१०६८ कि०ग्रा०	१०६८ कि०ग्रा०	—	१०६८ कि०ग्रा०

प्याज उत्पादन

उत्पादन	स्वतः खर्च	रामेश्वर गोशाला	योग
१३०० कि०ग्रा०	११७६ कि०ग्रा०	१२४ कि०ग्रा	१३०० कि०ग्रा०

सरसों उत्पादन

१४४० कि०ग्रा० कुल सदर गोशाला भेजा गया।

आलू उत्पादन

उत्पादन	स्वतः खर्च	कोल्ड स्टोर	योग
६७२४ कि०ग्रा०	२२९६ कि०ग्रा०	४४२८ कि०ग्रा	६७२४ कि०ग्रा०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चारा उत्पादन

माह अप्रैल २००० से सितम्बर २००१ तक

श्री वृन्दावन गोशाला

क्रमांक	माह	उत्पादन	योग	वितरण				योग
				वृन्दावन	मधुवन	रामेश्वर	बावनबीघा	
१.	अप्रैल	२००.९ कु०	२००.९ कु०	७५.७० कु०	—	१२५.२० कु०	—	२००.९ कु०
२.	मई	४०५.०६ कु०	४०५.०६ कु०	२९.८० कु०	—	३७५.२६ कु०	—	४०५.०६ कु०
३.	जून	३४५.२४ कु०	३४५.२४ कु०	२१५.८४ कु०	७.४० कु०	१२२ कु०	—	३४५.२४ कु०
४.	जुलाई	४८७.२७ कु०	४८७.२७ कु०	३२३.४७ कु०	४९.६० कु०	११४.२० कु०	—	४८७.२७ कु०
५.	अगस्त	६३४.१८ कु०	६३४.१८ कु०	२४४.३८ कु	२१ कु०	३६८.८० कु०	—	६३४.१८ कु०
६.	सितम्बर	३२९ कु०	३२९ कु०	२११.६ कु०	३८ कु०	७९.४ कु०	—	३२९ कु०
७.	अक्टूबर	८५.४० कु०	८५.४० कु०	७५.४० कु०	१० कु०	—	—	८५.४० कु०
८.	नवम्बर	१९ कु०	१९ कु०	—	—	१९ कु०	—	१९ कु०
९.	दिसम्बर	१२५.४० कु०	१२५.४० कु०	७५.८ कु०	१५ कु०	५२.६० कु	—	१२५.४० कु०
१०.	जनवरी	५२३.५५ कु०	५२३.५५ कु०	१७३.४५ कु०	१४७.८० कु०	२०२.३० कु०	—	५२३.५५ कु०
११.	फरवरी	४९९ कु०	४९९ कु०	२६०.७० कु०	२३८.३० कु०	—	—	४९९ कु०
१२.	मार्च	५४८.२० कु०	५४८.२० कु०	३४४.८०	१९२.४०	११ कु	—	५४८.२० कु०
१३.	अप्रैल	१५२ कु०	१५२ कु०	१५२ कु०	—	—	—	१५२ कु०
१४.	मई	१३७.१० कु०	१३७.१० कु०	—	१६.५० कु०	११०.६० कु०	—	१३७.१०
१५.	जून	४८५.२ कु०	४८५.२ कु०	६९ कु०	५० कु०	३६६.२० कु०	—	४८५.२ कु०
१६.	जुलाई	५२२ कु०	५२२ कु०	१०० कु०	६० कु०	३६२ कु०	—	५२२ कु०
१७.	अगस्त	३८२.६० कु०	३८२.६० कु०	९५.६० कु०	२५ कु०	२६२ कु०	—	३८२.६० कु०
१८.	सितम्बर	३८३ कु०	३८३ कु०	११९ कु०	१८ कु०	२३८ कु०	८ कु०	३८३ कु०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चारा उत्पादन

माह अप्रैल २००० से सितम्बर २००१ तक

मधुवन गोशाला

क्रमांक	माह	उत्पादन	योग	वितरण		योग
				मधुवन	रामेश्वर	
१.	अप्रैल	३३४.१२ कु०	३३४.१२ कु०	९८.६२ कु०	२३५.५० कु०	३३४.१२ कु०
२.	मई	१५१.४२ कु०	१५१.४२ कु०	११ कु०	१४०.४२ कु	१५१.४२ कु०
३.	जून	७९२.७८ कु०	७९२.७८ कु०	१२४.२९ कु०	६६८.४९ कु०	७९२.७८ कु०
४.	जुलाई	११४३.५९ कु०	११४३.५९ कु०	४९८.३५ कु०	६४५.२४ कु०	११४३.५९ कु०
५.	अगस्त	७१५ कु०	७१५ कु०	५००.२० कु०	२१५.८० कु०	७१५ कु०
६.	सितम्बर	४२८.७२ कु०	४२८.७२ कु०	१९१.७२ कु०	२३७ कु०	४२८.७२ कु०
७.	अक्टूबर	४७८.२० कु०	४७८.२० कु०	१६३.६९ कु०	३१४.५१ कु०	४७८.२० कु०
८.	नवम्बर	४७२.६० कु०	४७२.६० कु०	१४६.७० कु०	३२५.९० कु०	४७२.६० कु०
९.	दिसम्बर	४७१.५० कु०	४७१.५० कु०	१५९.५० कु०	३१२ कु०	४७१.५० कु०
१०.	जनवरी	१५४०.५५ कु०	१५४०.५५ कु०	७४५.०५ कु०	७९५.५० कु०	१५४०.५५ कु०
११.	फरवरी	१६४३.३४ कु०	१६४३.३४ कु०	६४७.१८ कु०	९९६.१६ कु०	१६४३.३४ कु०
१२.	मार्च	१६८३.४९ कु०	१६८३.४९ कु०	७६२.५९ कु०	९२०.९ कु०	१६८३.४९ कु०
१३.	अप्रैल	४७८ कु०	४७८ कु०	२०५ कु०	२७३ कु०	४७८ कु०
१४.	मई	२०४.९३ कु०	२०४.९३ कु०	—	२०४.९३ कु०	२०४.९३ कु०
१५.	जून	६७४.०४ कु०	६७४.०४ कु०	३३६.५७ कु०	३३७.४७ कु०	३७४.०४ कु
१६.	जूलाई	५९९ कु०	५९९ कु०	३०६ कु०	२९३ कु०	५९९ कु०
१७.	अगस्त	८९६ कु०	८९६ कु०	२९४ कु०	६०२ कु०	८९६ कु०
१८.	सितम्बंर	५८१ कु०	५८१ कु०	१५३ कु०	४२८ कु०	५८१ कु०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री काशी जीवदया विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला
वाराणसी

पन्द्रह वर्षों के शासक-मण्डल तथा प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष एवं मंत्री

	शासक मण्डल		प्रबन्धकारिणी समिति	
वि०सं०	अध्यक्ष	मंत्री	अध्यक्ष	मंत्री
२०४४-४५	श्री काशीप्रसाद अग्रवाल	श्री राजकुमार जैन	श्री बृजपालदास	श्री रघुनाथप्रसाद अग्रवाल
२०४५-४६	"	"	"	"
२०४६-४७	"	"	"	श्री अशोककुमार सराफ
२०४७-४८	"	"	"	"
२०४८-४९	"	"	"	"
२०४९-५०	"	"	"	"
२०५०-५१	श्री पुरुषोत्तमदास मोदी	"	"	"
२०५१-५२	"	"	श्री राधेश्याम खेमका	"
२०५२-५३	"	"	श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा	श्री अरुण आशर
२०५३-५४	"	"	"	श्री देवेन्द्रकुमार बजाज
२०५४-५५	श्री राधेश्याम खेमका	श्री ब्रजमोहन मूँदड़ा	श्री श्रीगोपाल गोयल	श्री भरत लढ़िया
२०५५-५६	"	"	"	"
२०५६-५७	"	"	"	श्री रामऔतार अग्रवाल
२०५७-५८	"	"	"	"
२०५८-५९	श्री राकेशकुमार रस्तोगी	श्री सूर्यकान्त जालान	श्री इन्दरचन्द अग्रवाल	श्री दीपक प्रकाश नवलगढ़िया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्

तृणानि खादन्ति वसन्त्यरण्ये पिबन्ति तोयान्यपरिग्रहाणि।
दुह्यन्ति वाह्यन्ति पुनन्ति पापं गवां रसैर्जीवति जीवलोकः॥
तुष्टास्तु गावः शमयन्ति पापं दत्तास्तु गावस्त्रिदिवं नयन्ति।
संरक्षिताश्चोपनयन्ति वित्तं गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्॥
शष्पं समश्नाति ददाति नित्यं पापापहं मित्रविवर्धनं च।
स एव चाऽऽर्यः परिभुज्यते च गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्॥
तृणानि शुष्कानि वने चरित्वा पीत्वापि तोयान्यमृतं स्रवन्ति।
यद्गोमयाद्याश्च पुनन्ति लोकान् गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्॥

गौएँ जंगल में निवास करती हैं, तृणों का भक्षण करती हैं और बिना किसी के अधिकृत क्षेत्र का जल अथवा गड्ढा, नदी, तालाब का जल पीती हैं, वे दूध देती हैं, भार वहन करती हैं, पापों को दूर करती हैं, गायों के इस गोरस (दूध-दही) आदि पर सारा विश्व-प्राणि समुदाय टिका है-जीवनयापन करता चला आ रहा है। प्रसन्न होने पर गायें सारे पाप-ताप को धो डालती हैं और दान देने पर गायें सीधे स्वर्गलोक को ले जाती हैं। ये ही विधिपूर्वक पालन करने पर वैभव-धन या समृद्धि का रूप धारण कर लेती हैं। ऐसी गायों के समान संसार में कोई भी सम्पत्ति या समृद्धि नहीं है। गौएँ सामान्य घास चरती हैं और बदले में दूध-दही, गोमय आदि निरन्तर कुछ-न-कुछ देती ही रहती हैं, लेती भी कुछ नहीं। ये पाप को दूर करती हैं और मित्रों का संवर्धन करती हैं। बैल भी सबसे सीधा देवता है और अन्न-उत्पादन कर सबको खिलाता-जिलाता रहता है। उसी के द्वारा जो अन्न उत्पन्न किया जाता है उससे संसार जीता है। गाय के तुल्य ही सजातीय गोधन अर्थात् बैल के समक्ष कोई सम्पत्ति नहीं है। जंगल में रूखे-सूखे तृणों का भक्षण कर साधारण जल का पान कर गौएँ दुग्धरूपी अमृत का क्षरण करती हैं और जिसकी गोबर-गोमूत्र आदि वस्तुएँ संसार को पवित्र कर डालती हैं, ऐसी गौओं के समान और अन्य कोई सम्पत्ति नहीं है।

श्रीनिकेतन सारीज़ प्रा. लि.

द्वारा

सभी गौभक्तों

को

गोपाष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'गोवध-निषेध का प्रश्न अब दीर्घकाल तक स्थगित नहीं रखा जा सकता। जनतंत्र के सिद्धान्तानुसार जनता की माँग को स्वीकार करना ही चाहिए।'

—ऋषिस्वरूप राजनेता रफी अहमद किदवई
(पूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार)

वन्दना
साड़ी इम्पोरियम

14 सी, लिन्डसे स्ट्रीट, कलकत्ता-700087
फोन : 2523362, 2520509, निवास : 4791977, 4792056
फैक्स : 033-2527665

सुचित्रा
साड़ीज़ प्रा० लिमिटेड

सीके० 23/27, चौक, वाराणसी-221001
फोन : 320079, 400601

फैक्ट्री
चित्र निर्माण
इण्डस्ट्रियल स्टेट, चाँदपुर
वाराणसी-221106
फोन : 370092, 370594

कार्यालय
"रामायण"
बी० 37/116 जी, पं० बेनीराम बाग
रथयात्रा क्रांसिंग, वाराणसी-221010
फोन: 360861, 360862, 363863
निवास : 363864, फैक्स : 0542-363865

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रह्मा-विष्णु-महेश द्वारा कामधेनु की स्तुति

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्। त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे॥
शशिसूर्यारुणा यस्या ललाटे वृषभध्वजः। सरस्वती च हुंकारे सर्वे नागाश्च कम्बले॥
क्षुरपृष्ठे च गन्धर्वा वेदाश्चत्वार एव च। मुखाग्ने सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च॥
(स्कन्द०, ब्रह्म० धर्मारण्य० १०। १८-२०)

'हे निष्पापे! तुम सब देवताओं की माता, यज्ञ की कारणरूपा और सम्पूर्ण तीर्थों की तीर्थरूपा हो। हम तुम्हें सदा नमस्कार करते हैं। तुम्हारे ललाट में चन्द्रमा, सूर्य, अरुणा और वृषभध्वज शंकर हैं, हुंकार में सरस्वती, गलकम्बल में नागगण, खुरों में गन्धर्व और चारों वेद तथा मुखाग्न में चर एवं अचर सम्पूर्ण तीर्थ विराजमान हैं।'

राधेश्याम पेपर स्टोर्स

अधिकृत विक्रेता

ओरिएन्ट पेपर मिल्स, अमलाई

✤

दि सिरपुर पेपर मिल्स लिमिटेड, कागजनगर

कर्णघण्टा, वाराणसी-२२१ ००१

फोन :
(कार्यालय) ३५३९५२, ३५३५४६, ३५४८२६
(निवास) ३५०२८४, ३५१४०७, ३६२५६५

फैक्स : 0542-359024

E-mail : Khcuhapapers@satyam.net.in

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एवं व्रजस्त्रियों राजन् कृष्णलीला नु गायतीः।
रेमिरेऽहः सु तच्चितास्तन्मनस्का महोदयाः ॥२६॥

श्री शुकदेवजी कहते हैं–परीक्षित! बड़भागिनी गोपियों का मन श्रीकृष्ण में ही लगा रहता था। वे श्रीकृष्ण दिन में गौओं को चराने के लिए वन में चले जाते, तब वे उन्हीं का चिन्तन करती रहतीं और अपनी-अपनी सखियों के साथ अलग-अलग उन्हीं की लीलाओं का गान करके उन्हीं में रम जातीं। इस प्रकार उनके दिन बीत जाते॥ २६॥

With Best Compliment on Gopastmi

Hast Kala

Exclusive Sarees

3, Tirupati Apartment, Bhulabhai Desai Road
Opp. Mahalaxmi Temple
MUMBAI-400 026

Phone : 4973258, 4932853

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों के साधन का मूल गो देवता हैं।'

—गोजीवन बालकृष्ण मार्तण्ड चौंडेजी महाराज

WORLD CLASS TELEPHONE
AT AN UNBEATABLE PRICE

One Year Warranty

ORPAT®
TELEPHONE

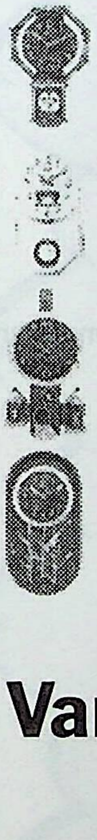

Orpat - India's Largest Telephone Manufacturer by 2000

REWA®
WALL CLOCKS

ORPAT®
CALCULATOR

Authorised Depot of
for

VARANASI • SONEBHADRA • MIRZAPUR • BHADOHI • AZAMGARH • BALLIA • MAU • JAUNPUR • GHAZIPUR • CHANDAULI

Varanasi Marketing Pvt. Ltd.

42, Hathua Market, Chetganj, VARANASI
Phone : (Office) 351656, (Resi.) 336206
Fax No. : 391098, Mobile No. : 9839056767

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्न-धान्य से भले भूख इस जगती की है मिट सकती।
दुर्मति नाशन की क्षमता हम सुरभी-दुग्ध में ही पाते॥

ऋग्वेद १०/४२/१० का रूपान्तर

Agrawal
Electric Company

Authorised Dealer

L & T Switchgear, Alstom Motors, Philips Lighting, Dowells, Parmecel, Crompton, HPL

Visheshwarganj, VARANASI-221 001

Phone : (Off.) 331670-72, (Resi.) 310735, 311001

SISTER CONCERN

General Electricals

Whirlpool, Samsung, Videocon-Freeze, Sony, Onida, BPL-TV, Video Camera and Washing Machine, Venus Gyser, Milcent Chakki

Bansphatak, VARANASI-221 001

Phone : (Shop) 352055, 352723, (Resi.) 310734, 312001

Agrawal Electric Agencies

Dealer in All kinds of Electrical and Machanical Goods

Authorised Dealer

GE Power Control, 'Kirloskar' & 'Atul' Diesel Generating Set,
Honda Portable Generator Set, Wolt Electrical Portable Tools, Varuna Pump,
'Sugnuna' Deep Well & Submersible Pump

Machhodari, VARANASI-221 001 • Phone : 330080

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सद्भावना इन्टरप्राइजेज

निर्माता एवं विक्रेता

फैन्सी प्लेन पोत आकर्षक डाईड, प्रिन्टेड साड़ियाँ

एवं

बनारसी साड़ियाँ

सी०के० ५७/१-४, गोविन्दपुरा, चौक
वाराणसी-२२१ ००१

फोन
३५३०७६, ३५११८५, ३५११९२ (दुकान)
२७६११०, २७६११२ (निवास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

The Belsund Sugar & Industries Limited

Manufacturers of

"HARABHARA" Fertiliser

Regd. Office

14, Netaji Subhas Road
CALCUTTA-700 001

Phone : 220-5194/9576/ 0848/0681
Gram : WELSUGAR, CALCUTTA
Fax : 033-220 3663
Telex : 021-7573 HWP IN

Factory

P.O. Riga (N.E. Rly.)
Distt. Sitamarhi (Bihar)

Phone : 06226-20385, 20205
Gram : MITHA, RIGA
Fax : 06226-20385

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूरभाष : ३१११८४, २७६४६०

गो रक्षा, गो संवर्धन से ग्राम विकास के पथ पर

सुरभि शोध संस्थान

प्रधान कार्यालय : डी० २७/७५ डी० रवीन्द्रपुरी वाराणसी
कार्यालय : चित्रकूट, लेन० नं० ५, रवीन्द्रपुरी, वाराणसी

(सबके के लिए रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा)

सुरभि की अन्य संस्थायें—

(१) अन्नपूर्णा सेवा समिति (वाराणसी, चित्रकूट, लखनऊ)
(२) गोरक्ष भंडार समिति, वाराणसी
(३) जन शिक्षा समिति, वाराणसी
(४) सरस्वती मनोविकास केन्द्र, वाराणसी
(५) देवशीला जालान ट्रस्ट (वनवासी प्रकल्प) नौगढ़, चन्दौली
(६) सेठ किशोरी जालान कृषि गो अनुसंधान केन्द्र, डगमगपुर, मिर्जापुर
(७) श्री लक्ष्मण गोशाला जनाकीपुरम, लखनऊ
(८) श्रीकृष्ण गोशाला, बवाना, दिल्ली
(९) अन्नपूर्णा ग्रामोत्थान समिति, वाराणसी
(१०) सुरभि ग्रामोत्थान समिति (महिला उद्यमिता) वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

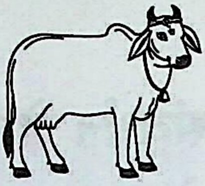

नमो गोभ्य: नमो नमो

गौओं के लिए नमस्कार

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः।
बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नमः॥

'हे अवध्य गौ! उत्पन्न होते समय तुम्हें नमस्कार और उत्पन्न होने पर भी तुम्हें प्रणाम। तुम्हारे रूप (शरीर), रोम और खुरों को भी प्रणाम।'

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एवं च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥

'श्रीमती गौओं को नमस्कार। कामधेनु की संतानों को नमस्कार। ब्रह्माजी की पुत्रियों को नमस्कार। पावन करने वाली गौओं को नमस्कार।'

पञ्च गावः समुत्पन्ना मध्यमाने महोदधौ।
तासां मध्ये तु या नन्दा तस्यै देव्यै नमो नमः॥
सर्वकाकामदुघे देवि सर्वतीर्थाभिषेचिनि।
पावनि सुरभिश्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमो नमः॥

'क्षीरसमुद्र के मथे जाने पर उसमें से पाँच गौएँ प्रकट हुईं, उनमें से जो नन्दा नामकी श्रेष्ठ गौ है, उस देवी को बारंबार नमस्कार है। हे श्रेष्ठ सुरभिदेवी! तुम समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली तथा समस्त तीर्थों में स्नान करने वाली हो। अतः हे पवित्र करने वाली देवि! तुम्हें बार-बार नमस्कार है।'

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजङ्गमम्।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्॥

'जिस गौ से यह स्थावर-जंगम अखिल विश्व व्याप्त है, उस भूत और भविष्य की जननी गौ को मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

What Hindalco offers which others don't?

A Long Lasting Relationship

BUILT ON

- Mutual Trust
- Adherence to Delivery Commitment
- Fast Response
- Priority Customer Service

Quality Product and Quality Service is what Hindalco Stands for.

HINDALCO

Where Success Comes From Commitment

HEAD OFFICE & WORKS : P.O. Renukoot-231 217, Distt. Sonbhadra (U.P.) India
Phone : (05446) 52077-9 Fax : (05446) 52107, 52427
E-Mail : hindalco.rkt@rmj.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
ZONAL OFFICES AT : MUMBAI, NEW DELHI, CALCUTTA, BANGALORE & CHENNAI

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

हमारे पूर्व-पुरुष सदा से ही गो रक्षा का महत्त्व जानते थे। वेदों से पुराणों तक सर्वत्र शास्त्रों के ये ही विधान हैं कि गो की रक्षा करो, गो का पूजन करो। मानव जीवन के सभी अंगों का अपने अन्दर समावेश करने वाले हिन्दूधर्म ने गो के प्रति मनुष्यों के कर्त्तव्य का विधान विशेष आग्रह के साथ किया है। शास्त्र इसकी रक्षा और पूजा करने को कहते हैं और संस्कृत का काव्य-नाटक-इतिहास आदि सारा साहित्य उसे 'माता' कहकर पुकारता है—माता के प्रति वत्स का जो अत्यधिक स्नेह होता है, वही उसके प्रति होना चाहिए। पर शास्त्रों ने केवल भावनावश ही नहीं, प्रत्युत भारतीय जीवन की आवश्यकताओं को वास्तविक रूप में समझकर ही मनुष्यों के साथ गो का यह नाता जोड़ा है।

—डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

RKBK

RKBK Limited

C.26/35, Ramkatora, First Floor, Varanasi-221 001

Ph. : (0542) 206217, 203668, 202414, 207664

Fax : (0542) 205579

Dealing in

Kerosene, Petrol, Diesel, Mobil Oil,
Fertilizer, Cement & Tea

Regd. Office
Shree Ganesh Centre, 216, Acharya Jagdish Chandra Bose Road
KOLKATA-700 017
website : www.rkbk.com

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi